मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास

बाल संस्करण

मैथिली बाल उपन्यास

गोहि सभक बीच जलसमाधि

गजेन्द्र ठाकुर

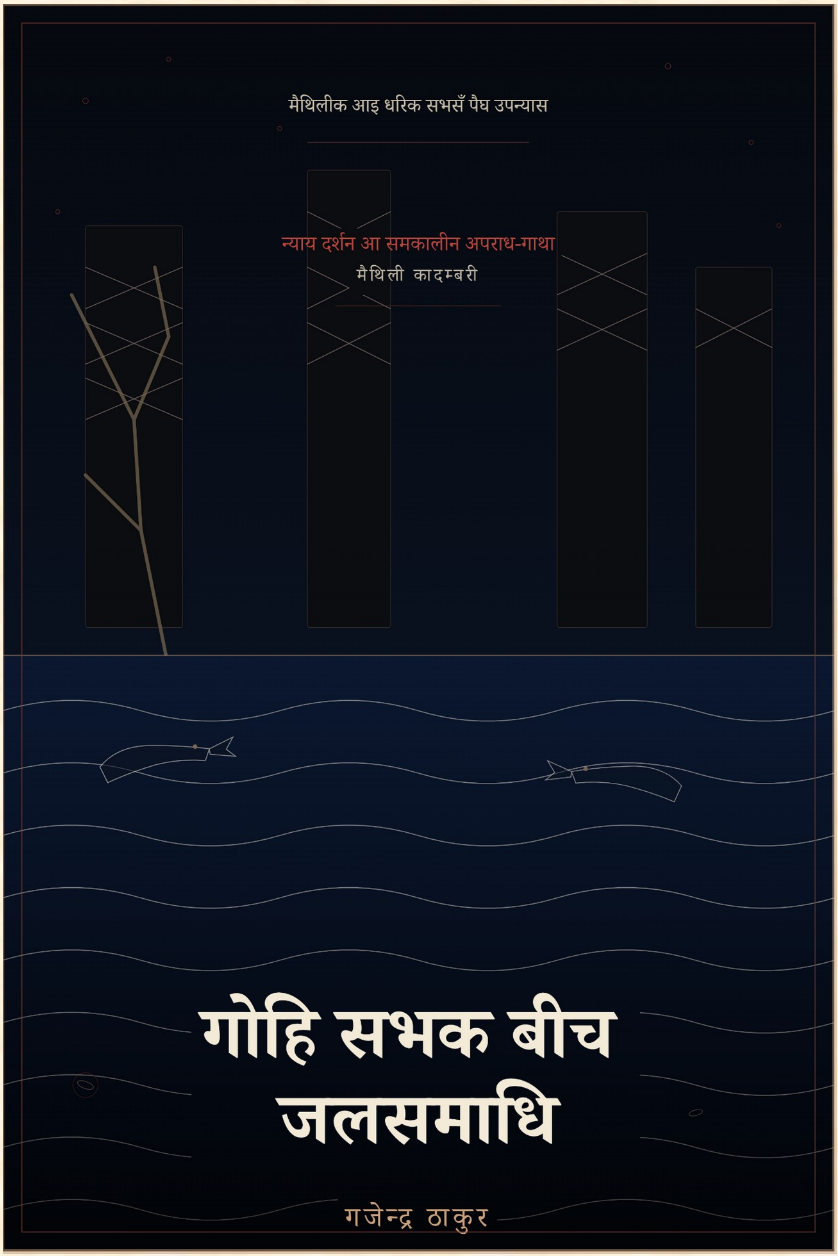
मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास
न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथा
मैथिली कादम्बरी
गोहि सभक बीच
जलसमाधि
गजेन्द्र ठाकुर

गोहि सभक बीच जलसमाधि

गजेन्द्र ठाकुर

बाल संस्करण

प्रकाशन एवं कॉपीराइट

गोहि सभक बीच जलसमाधि — बाल संस्करण– गजेन्द्र ठाकुर

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
विदेह: मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
www.videha.co.in
ISSN 2229-547X
ISBN **978-93-5937-277-8**
Designed By: Aum Gajendra Thakur

अनुक्रम

भूमिका — गाम अपने बाजल

खण्ड–० — पूर्व–कथाकाल

अध्याय –१०० — शंख आ रजत
अध्याय –९९ — आत्मसिद्धि–वाद
अध्याय –९८ — केऽ बनौलक ई जगत?
अध्याय –९७ — चिंतामणि रत्न
अध्याय –९६ — स्मृति–रक्षा
अध्याय –९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि
अध्याय –९४ — चारि मुखक मौन
अध्याय –९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न
अध्याय –९२ — जल–घड़ीक कैदी
अध्याय –९१ — चर्मकार टोलाक उजास
अध्याय –९० — बुधुआक जलसमाधि
अध्याय –८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि
अध्याय –८८ — डाइनक आरोप
अध्याय –८७ — टोलाक द्वारपर
अध्याय –८६ — समयक गोहि
अध्याय –८५ — आमिलक आदेश
अध्याय –८४ — जंगलक मौन
अध्याय –८३ — सोनमा माझिन
अध्याय –८२ — पहिल कबड्डी
अध्याय –८१ — आक्रमणक छाया
अध्याय –८० — गीतक पहिल पाँति
अध्याय –७९ — क्षमाक पारी
अध्याय –७८ — पंजीक बाहर
अध्याय –७७ — बूढ़बाक मौन
अध्याय –७६ — नारिकेल पातक पहिल पाठ
अध्याय –७५ — तर्कक पहिल विद्रोह
अध्याय –७४ — गाछक रोग
अध्याय –७३ — मोहनक धुन
अध्याय –७२ — विवाहक साक्षी
अध्याय –७१ — महामारीक राति
अध्याय –७० — चन्ना गाछीक रोपाई
अध्याय –६९ — गज–ग्राहक कथा

अध्याय –६८ —– अदालतक पहिल तारीख
अध्याय –६७ —– परदेशक पुकार
अध्याय –६६ —– स्त्री सभक राति–सभा
अध्याय –६५ —– नकली भूतक जुलूस
अध्याय –६४ —– सुखदेवक बदला
अध्याय –६३ —– छापाखानाक पहिल पन्ना
अध्याय –६२ —– राहतक प्रतीक्षा
अध्याय –६१ —– आकाशक पुच्छलतारा
अध्याय –६० —– अगिनक राति
अध्याय –५९ —– दोसर बाढ़ि
अध्याय –५८ —– तेसर बिपत्ति
अध्याय –५७ —– साहेबक नोटबुक
अध्याय –५६ —– स्वाधीनताक पुकार
अध्याय –५५ —– स्वतंत्रताक भोर
अध्याय –५४ —– जमींदारीक अन्त
अध्याय –५३ —– बिजलीक पहिल दीप
अध्याय –५२ —– सीमाक पुकार
अध्याय –५१ —– हरित क्रान्तिक बीया
अध्याय –५० —– आपातकालक अन्हार
अध्याय –४९ —– सूखाक बरख
अध्याय –४८ —– रेडियो आ टेलीविजनक अवाज
अध्याय –४७ —– खाड़ी देशक बजार
अध्याय –४६ —– सद्भावक परीक्षा
अध्याय –४५ —– उदारीकरणक हवा
अध्याय –४४ —– पहिल कम्प्यूटर
अध्याय –४३ —– सुखल होइत धार
अध्याय –४२ —– हाथक फोनक चमत्कार
अध्याय –४१ —– शहरक बजार
अध्याय –४० —– सूचनाक अधिकार
अध्याय –३९ —– काजक गारंटी
अध्याय –३८ —– इंटरनेटक जाल
अध्याय –३७ —– स्क्रीनक पहिल छाया
अध्याय –३६ —– अनदेखल ठगक पहिल आहट
अध्याय –३५ —– देहक बजार खुजैत अछि
अध्याय –३४ —– उज्ज्वलक स्वप्न
अध्याय –३३ —– वकीलक कोटक छाया

अध्याय –३२ — समुद्रपारक साये
अध्याय –३१ — सत्यव्रतक मौन
अध्याय –३० — गोप कुमारक दस्तावेज
अध्याय –२९ — चन्द्रपालक सपना
अध्याय –२८ — राघवक कोड
अध्याय –२७ — आरुणिक निर्माण
अध्याय –२६ — देविकाक गीत
अध्याय –२५ — मीराक निजता
अध्याय –२४ — निशांतक बैंक
अध्याय –२३ — नन्दक जन्म
अध्याय –२२ — बारह सयक निकट
अध्याय –२१ — अनन्याक प्रश्न
अध्याय –२० — छपाकक पहिल हिसाब
अध्याय –१९ — सत्यव्रतक निर्णय
अध्याय –१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट
अध्याय –१७ — शीशाक मीनारक जाल
अध्याय –१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़
अध्याय –१५ — चन्द्रपालक खाता
अध्याय –१४ — पुलक निर्माण
अध्याय –१३ — गोप कुमारक संकलन
अध्याय –१२ — चन्ना गाछीक कँपकँपी
अध्याय –११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद
अध्याय –१० — पुलपर पहिल छपाक
अध्याय –९ — जाँचक आरम्भ
अध्याय –८ — प्रमाणक बाहर आएब
अध्याय –७ — आधा–भूतक अनुभव
अध्याय –६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना
अध्याय –५ — जालक उजागर होएब
अध्याय –४ — नामक अन्तिम सूची
अध्याय –३ — बारह सय बरखक पूर्णता
अध्याय –२ — अगिला पीढ़ीक वचन
अध्याय –१ — अन्तिम साक्षी
अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी
अध्याय २ — दहिन कातक गाम
अध्याय ३ — छपाकक हिसाब
अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

अध्याय ५ — तारीखक गोहि
अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स
अध्याय ७ — श्वासक भाव
अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि
अध्याय ९ — फूलमतिक नाम
अध्याय १० — मीराक साहस
अध्याय ११ — धनक कारी नदी
अध्याय १२ — पीपरक खोखरमे राखल राज
अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण
अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता
अध्याय १५ — नामक जल
अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत
अध्याय १७ — जीतक शोक
अध्याय १८ — खाली अदालत
अध्याय १९ — नामक अभिलेख
अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला
अध्याय २१ — निजताक शपथ
अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण
अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज
अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू
अध्याय २५ — मोन टांगल
अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा
अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन
अध्याय २८ — राघव सिन्नलक चुप्पी
अध्याय २९ — लाउ किन–हंगक सपना
अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत
अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज
अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी
अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा
अध्याय ३४ — सुनैत नदी
अध्याय ३५ — नामक देहरी
अध्याय ३६ — घर, भय, सपना
अध्याय ३७ — तीन कंकड़
अध्याय ३८ — नामक उच्चारण
अध्याय ३९ — बीजक शान्ति
अध्याय ४० — ओसक अक्षर

अध्याय ४१ —— नामक नाव
अध्याय ४२ —— भारक वृत्त
अध्याय ४३ —— चलैत भार
अध्याय ४४ —— पोतीक कापी
अध्याय ४५ —— भीतरक हवा
अध्याय ४६ —— उत्तराधिकारक अन्हार
अध्याय ४७ —— गज–ग्राह आख्यान
अध्याय ४८ —— पुकार
अध्याय ४९ —— मौनक अभिलेख
अध्याय ५० —— देहक बादक नाम
अध्याय ५१ —— साक्षीक भार
अध्याय ५२ —— अगिला आवाज
अध्याय ५३ —— कटानक बादक बिहान
अध्याय ५४ —— ठूँठक चारू कात
अध्याय ५५ —— नगरपालिकाक पीयर सूचना–पत्र
अध्याय ५६ —— स्मृतिक पहिल नक्शा
अध्याय ५७ —— गंगेशक प्रश्न
अध्याय ५८ —— चन्द्रपालक स्मारक–अनुप्रयोग
अध्याय ५९ —— राघव सिग्नलक नव कोड
अध्याय ६० —— सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन
अध्याय ६१ —— पहिल नाम–उत्सव
अध्याय ६२ —— ठूँठमे हरियर बिंदु
अध्याय ६३ —— गढ़ नारिकेल विरासत–परियोजना
अध्याय ६४ —— स्मृति पर निविदा
अध्याय ६५ —— ब्रूमक पुनरागमन
अध्याय ६६ —— हार्वर्डक शोध–दल
अध्याय ६७ —— मीरा आ दृष्टिक अधिकार
अध्याय ६८ —— देविका बनाम श्रद्धांजलि–अनुप्रयोग
अध्याय ६९ —— नामक चोरी
अध्याय ७० —— पनिडुब्बीक गवाही
अध्याय ७१ —— नकली भूतक जुलूस
अध्याय ७२ —— चन्ना गाछीक हँसी
अध्याय ७३ —— बटुकनाथक स्वप्न–दरबार
अध्याय ७४ —— चन्द्रपालक पहिल स्वीकार
अध्याय ७५ —— राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क
अध्याय ७६ —— लाउ किन–हंगक भारत–यात्रा

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि
अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन–संवाद
अध्याय ७९ — ब्रूमक दान–पत्र
अध्याय ८० — हरिहरनक संतान
अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम
अध्याय ८२ — अंदरक गज–ग्राह
अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला
अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित
अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति–सभा
अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव
अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास
अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ
अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन–सुनवाई
अध्याय ९० — नामक संविधान
अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति
अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह
अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि
अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी
अध्याय ९५ — लाउ किन–हंगक अंतिम सौदा
अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर–सँ–आयल क्षमा
अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट
अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश
अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही
अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ
अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न–आमन्त्रण
अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी
अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम–पाठ
अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि
अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा
अध्याय १०६ — बीजक गवाही
अध्याय १०७ — बीजक चोरी
अध्याय १०८ — माटिक मुँह
अध्याय १०९ — जलक स्मृति
अध्याय ११० — आगिक साक्षी
अध्याय १११ — वायुक प्रश्न
अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अध्याय ११३ — शब्दक देह
अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा
अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा
अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार
अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण
अध्याय ११८ — देहक अधिकार
अध्याय ११९ — श्रमक देह
अध्याय १२० — न्यायक देह
अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा
अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति
अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात
अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि
अध्याय १२५ — निर्णयक धान
अध्याय १२६ — अन्नक न्याय
अध्याय १२७ — भूखक नाम
अध्याय १२८ — प्यासक नाम
अध्याय १२९ — नूनक शपथ
अध्याय १३० — स्वादक न्याय
अध्याय १३१ — साझा थारी
अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य
अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट
अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य–पाठ
अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन
अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा
अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही
अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस
अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच
अध्याय १४० — चल चौपाल
अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला
अध्याय १४२ — रेकर्ड–घरक अन्हार
अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही
अध्याय १४४ — नामक यात्रा
अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार
अध्याय १४६ — मुहरक दाग
अध्याय १४७ — घर–घरक दस्तक
अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

अध्याय १४९ —— जालक नक्शा
अध्याय १५० —— मुहरक छाया
अध्याय १५१ —— मुहर चलौनिहार हाथ
अध्याय १५२ —— आदेशक स्रोत
अध्याय १५३ —— संकेतक पाछाँ नाम
अध्याय १५४ —— बाबाक वचन
अध्याय १५५ —— सेवाक खाता
अध्याय १५६ —— दानक ऋण
अध्याय १५७ —— लोहेक संदूक
अध्याय १५८ —— सहमति–कापीक मिलान
अध्याय १५९ —— मृतकक सहमति
अध्याय १६० —— गोदामक छाया
अध्याय १६१ —— फोनक कैद
अध्याय १६२ —— आवाजक मोहर
अध्याय १६३ —— हटायल कागजक निशान
अध्याय १६४ —— चन्द्रपालक छायाक पेट
अध्याय १६५ —— छायाक देह
अध्याय १६६ —— इमली घाटक कोठार
अध्याय १६७ —— नदी पारक आवाज
अध्याय १६८ —— शहरक गला
अध्याय १६९ —— चन्द्र दूक दरबज्ज़ा
अध्याय १७० —— चन्द्र एकक खोल
अध्याय १७१ —— चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत
अध्याय १७२ —— गाँठक पढ़नाइ
अध्याय १७३ —— पंजीक पहरा
अध्याय १७४ —— अदृश्य अदालतक चौखट
अध्याय १७५ —— मुहरबाहकक नाम
अध्याय १७६ —— सेवा–समारोहक अन्हार
अध्याय १७७ —— घर–घरक कागज
अध्याय १७८ —— ऊपरक कोठरी
अध्याय १७९ —— मुहरक पगचिन्ह
अध्याय १८० —— शहरक खाता
अध्याय १८१ —— सिमक छाया
अध्याय १८२ —— हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा
अध्याय १८३ —— फोनक भीतरक चेहरा
अध्याय १८४ —— आवाजक नकाब

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा
अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम
अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी
अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर
अध्याय १८९ — लोहेक पेटी
अध्याय १९० — नील पंजी
अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी
अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर
अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा
अध्याय १९४ — साँसक समन
अध्याय १९५ — रोकल खाता
अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ
अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम
अध्याय १९८ — अपराधीक धरती
अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान
अध्याय २०० — नामक पहरुआ
परिशिष्ट १ — गढ़ नारिकेल लोककोश (बाल संस्करण)
परिशिंष्ट २ — अनाम ग्रह प्रसगक मूल गीत (बाल संस्करण)
परिशिष्ट ३ — न्याय–दर्शनक मूल अन्तःकथा (बाल संस्करण)

भूमिका

गाम अपने बाजल

एकटा गाम छल —— गढ़ नारिकेल। ई गाम माटिसँ बनल छल, पानिसँ साँस लैत छल, आ अपन सभटा पुरान बात गाछ–पातमे सम्हारि राखल छल।

कथा शुरू होबासँ एक साँझ पहिने बा नारिकेल पातपर बैसल छलीह। बच्चा सभ पुछलक —— "काल्हि सँ कथा सुनाउ न!"

बा हँसलीह। "कथा सुनबासँ पहिने गाम सुनू। जे गाम नहि सुनलक, ओ कथाक आधे बात बुझत।"

आ ओहि राति गढ़ नारिकेल अपने बाजय लागल —— अपन माटि, अपन पानि, अपन गीतक भाषामे।

ई गाममे ज्ञान पोथीमे नहि रहैत छल, ई हाथमे, कानमे, आँखिमे रहैत छल। बा नातिनकेँ कथा कहैत छथि, माए बेटीकेँ गीत सिखबैत छथि, खेतमे एकटा स्त्री दोसराकेँ रोपनी सिखबैत छथि। कियो एक्केटा किताब नहि पढ़ैत छल —— सभ किताब जिनगीए छल।

गढ़ नारिकेलमे नदी छल —— कमला–बलान। ओ नदी कहियो जीवन दैत छल, कहियो संकट अनैत छल। ओ खेत सिंचैत छल, माछ दैत छल, मुदा कहियो–कहियो घरो बहा दैत छल। तेँए गामक लोक नदीक गीत गबैत काल एक कात खुशी गबैत छल, दोसर कात डर।

गामक बीचमे एकटा पोखरि छल। ओहिमे माछ छल, कमल छल, बच्चा सभ नहाइत छल। एकटा गाछी सेहो छल —— चन्ना गाछी —— जतय बच्चा सभ भोर–साँझ खेलैत छल।

गढ़ नारिकेलक लोक कहैत छल —— "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।" एकर मतलब छल —— कियो मरि सकैत अछि, कियो कागचसँ ककरो नाम मेटा सकैत अछि, मुदा जँ गामक लोक ओकरा मोन राखय, त ओ कहियो पूरा नहि मेटाइत अछि।

बा सभ बच्चाकेँ सिखबैत छलीह —— जे धीरे–धीरे चलैत अछि, ओकरा गहींर समय भेटैत अछि। जे बूढ़ लोक, जिनकर पएर धीम पड़ि गेल छन, हुनका सभसँ बेसी बात मोन रहैत छन।

गढ़ नारिकेलमे एकटा नियम छल —— भूखल कियो खाली नहि घुरत। घरक देवता कोनो पैघ मूर्ति नहि छल; ओ त एहि नियमे छल।

एहि गाममे मिथिला चित्रकला छल —– देबालपर माछक चित्र, जकर आँखि कहियो नहि मुनैत छल, कारण ओ घरक पहरा दैत छल।

गामक बच्चा सभ पहेली पुछैत छल —– "देह नहि, पाँखि नहि, तैयो गाम–गाम उड़ैत अछि। की?" उत्तर छल —– गीत।

आब एहि गामक कथा शुरू होइत अछि —– जतय एकटा पुरान गाछी अछि, जतय भूत सेहो खेलैत अछि, जतय एकटा नदी बहैत अछि जकरा सभटा बात मोन रहैत छैक, आ जतय बच्चा सभ मिलिकऽ एकटा पैघ रहस्य खोलताह।

चलू, कथा शुरू करी।

खण्ड–०

पूर्व–कथाकाल · अध्याय –१०० सँ –१

अध्याय –१००

शंख आ रजत

बहुत बरख पहिने, मिथिलाक एक कोनमे गढ़ नारिकेल नामक एकटा गाम छल। गामक बीचमे एकटा पुरान गाछ छल — चन्ना गाछी।

एक दिन एकटा बच्चा दूरसँ किछु चमकैत देखलक। ओ दौड़ल —– ‘चानी! चानी!’ मुदा लग जा कऽ देखलक, ओ तँ एकटा उज्जर शंख छल। बूढ़बा हँसि कऽ कहलनि —– ‘चमकैत सभटा चानी नहि होइ छै, बुच्चा। पहिने देखू, पुछू, तखन मानू।’

ओहि दिनसँ गामक बच्चा सभ सिखलक —– आँखि खोलि कऽ देखबाक चाही, बिनु बुझने कोनो बात नहि मानबाक चाही।

अध्याय –१९

आत्मसिद्धि-वाद

एक दिन एकटा बच्चा बूढ़बाकेँ पुछलक — ‘हम केना जानी जे हम हम छी? ’

बूढ़बा मुस्कुरा कऽ कहलनि — ‘तौँ साँस लइ छह, तौँ मोन राखै छह, तौँ हँसै–कानै छह — इएह तँ तौँ छह। जेना पोखरि अपन गहिराइ केकरोसँ नहि पुछै, तहिना तौँ अपन होयब केकरोसँ नहि पुछ।’

बचाकेँ बात बुझा गेलैक — अपन नाम आ अपन मोन, इएह ओकर सभसँ पैघ सचाइ छी।

अध्याय –९८

केऽ बनौलक ई जगत?

एक साँझ बच्चा सभ पीपरक गाछ तर बैसल छल। एकटा बच्चा आकाश दिस देखि पुछलक — 'ई गाछ, ई नदी, ई तारा — केऽ बनौलक?'

केओ कहलक ‘माटि’, केओ कहलक ‘भगवान’। बूढ़बा कहलनि — ‘गाछ अपने पुछलक, हमरा केऽ रोपलक? मुदा माटि हँसि कऽ कहलक — जे रोपलक, से पुछबे नहि करै।’

बच्चा सभ बुझलक — सभसँ नीक बात ई जे प्रश्न पुछैत रहू, किएक तँ पुछनिहारे आगू बढ़ै छै।

अध्याय –१७

चिंतामणि रत्न

गाममे एकटा कथा चलैत छल —– एकटा चिंतामणि रत्न होइ छै, जे मनक हर इच्छा पूरा करै छै। एकटा बच्चा ओकरा ताकय निकलल, मुदा कतहु नहि भेटलैक।

थाकि कऽ ओ बूढ़बा लग आयल। बूढ़बा कहलनि —– ‘मन थिर रहै तँ माटिक ढेलो हीरा जकाँ लगै छै; मन डोलै तँ हीरो ढेला बुझाइ छै। रत्न बाहर नहि, चिन्हैबला आँखिमे छै।’

बच्चा बुझलक —– असली रत्न तँ शान्त मोन आ नीक नजरि छी।

अध्याय –९६

स्मृति–रक्षा

एक दिन गामक एकटा बूढ़ मरि गेलाह। बच्चा सभ उदास भऽ पुछलक —
'आब ओ कहाँ गेलाह?'

बा कहलीह — 'देह तँ माटिमे मिलि जाइ छै, बुच्चा। मुदा नाम पातपर टिकल रहै छै। जकरा गाम मोन राखै छै, तकरा केओ मेटा नहि सकै।'

ओहि दिनसँ बच्चा सभ हर गेल लोकक नाम मोन राखय लगलाह — किएक तँ नाम बचल, तँ मनुख बचल।

अध्याय –९५

जलमग्न पाण्डुलिपि

एक बरख भयंकर बाढ़ि आयल। पानि गाममे घुसल आ बहुत पुरान पोथी भीजि गेल। सभ उदास छल — ‘आब ई ज्ञान हेरा जायत!’

मुदा जीवन्ती नामक एकटा बच्ची हँसलि। ओ ओहि पोथीक हर बात अपन मोनमे कण्ठस्थ कऽ लेने छलि। ओ कहलक — 'बाढ़ि पोथीकेँ डुबा सकै छै, मुदा कण्ठकेँ नहि। जे बात हृदयमे लिखल, से पानिसँ नहि भीजै।'

गाम बुझलक — जे मोनमे राखल, से कहियो नहि डुबै।

अध्याय –१४

चारि मुखक मौन

एक दिन गाममे पैघ सभा भेल। चारि विद्वान् आयल आ हर प्रश्नक उत्तर देलनि। मुदा बूढ़बा देखलनि —– चारू मुँह बाजल, तैयो एकटा बात नुकाएल रहि गेल।

ओ कहलनि —– 'हर उत्तरक पाछाँ एकटा मौन ठाढ़ रहै छै। जतेक जानू, ततेक आर जानबाक बाकी रहै छै।'

बच्चा सभ बुझलक —– कोनो प्रश्नक अन्त नहि होइ छै; सिखैत रहब सभसँ नीक।

अध्याय -१३

शंखक अन्तिम प्रश्न

गाममे एकटा बूढ़ आक्षेपक छलाह, जे जीवन भरि गाम–गाम घूमि सभसँ सवाल पुछैत रहलाह। एक दिन ओ फेर आबि पुछलनि — 'जे बात तौं काल्हि बुझलह, ओ आइ फेर साँच छै की?'

उदयनाचार्य शान्त भऽ कहलनि — 'हँ, भोर हर बात फेर पुछै छै। मुदा जकर उत्तर मनमे थिर छै, से प्रश्नसँ नहि डरै।'

बच्चा सभ सिखलक — बेर–बेर पुछब नीक; जँ साँचमे बुझि लेलहुँ, तँ कोनो सवालसँ डर नहि।

अध्याय -१२

जल-घड़ीक कैदी

बहुत पुरान बात छी। तखन गढ़ नारिकेलकेँ लोक 'नारिकेल–घाट' कहैत छल। गामक बीचमे एकटा पैघ पोखरि छल —— जोड़ी पोखरि। ओतय एकटा जल–घड़ी छल, जाहिसँ बूनि–बूनि पानि खसैत छल आ समय बीतैत छल।

बुधुआ नामक एकटा बूढ़ सेवक ओतय रहैत छलाह। ओ एतेक बूढ़ छलाह जे लोक हुनकर उमेर गनब छोड़ि देने छल। मुदा ओ अपन प्रतिज्ञा —— गामक नाम आ स्मृति बचेबाक —— कहियो नहि छोड़लनि।

बूनि–बूनि समय बीतल, मुदा ओकर वचन थिर रहल।

अध्याय –९१

चर्मकार टोलाक उजास

गामक पछबरिया छोरमे चर्मकार टोला छल। ओतय रहैत छलि मालती — एकटा तेजस्वी, गहींर आँखिवाली किशोरी। ओकर पिता सोमर गामक सभसँ नीक ढोल बनबैत छलाह।

पैघ लोक ओहि टोला दिस कहियो नहि तकैत छलाह। मुदा बूढ़बा कहलनि — 'जकर हाथ चाम सिऔ, ओकरो नाम पातपर छै। टोलक दीप आ महलक दीप — तेल एक्के जरै छै।'

ओहि दिनसँ गाम बुझलक — हर नाम बरोबरि चमकै छै, चाहे गरीब होउ वा धनी।

अध्याय –१०

बुधुआक जलसमाधि

बुधुआ आब एतेक बूढ़ भऽ गेलाह जे हुनकर देह थाकि गेल। एक दिन ओ जोड़ी पोखरि लग गेलाह आ शान्तिसँ जलमे समा गेलाह। गामक लोक कानय लागल।

मुदा बूढ़बा कहलनि —– 'गोहि देहकेँ लऽ लेलक, मुदा नामकेँ नहि। जे जलमे समाधि लै छै, से पोखरिक तलमे नहि, गामक मनमे बसै छै।'

ओहि दिनसँ ई गाम बुझलक —– जे अपन वचन आ नाम बचा कऽ जाइ छै, से कहियो नहि मरै।

अध्याय –८९

पहिल राति, पहिल बाढ़ि

एक राति आधा बीतल छल, तखन आकाश जेना फाटि गेल। तेज हवा, बिजुरी आ मूसलधार पानि — पहिल पैघ बाढ़ि आयल। बहुत घर बहि गेल।

मुदा गामक लोक एक–दोसराक हाथ धेने, ऊँच ठाम जुटि, राति काटि लेलनि। भोर भेल, गाम बाँचल छल।

बूढ़बा कहलनि —– 'बाढ़ि घर लऽ सकै छै, गाम नहि। जे राति सभ मिलि बचल, सैह भोरक बीया बनल।'

अध्याय –८८

डाइनक आरोप

चर्मकार टोलामे गौरी नामक एकटा स्त्री रहैत छलि, जकरा जड़ी–बूटीसँ बीमार लोककेँ नीक करबाक ज्ञान छल। एक बेर गाममे किछु लोक ओकरा ‘डाइन’ कहि आरोप लगाबय लागल।

मुदा केओ ओकर नाम, ओकर बात नहि पुछलक। बूढ़बा कहलनि —— ‘आरोप देहकेँ जरबै छै, मुदा सत्य पातपर रहि जाइ छै। बिनु पुछने, बिनु बुझने केकरो दोषी नहि कहबाक चाही।’

अध्याय –८७

टोलाक द्वारपर

एक राति किछु क्रोधित लोक मशाल लऽ कऽ चर्मकार टोलाक द्वारपर आबि गेल। गौरी पीपरक जड़ि लग हाथ जोड़ि बैसलि —– 'बूढ़बा, रक्षा करू।'

हवा एक क्षण थमकल, पीपरक पात काँपल। पूरा टोला जागि कऽ, एक भऽ, ठाढ़ भऽ गेल। बूढ़बा कहलनि — 'द्वारपर मशाल आबि सकै छै, मुदा भीतरक नाम नहि जरै। जे टोल जागल रहै, तकर देबारि आगिसँ ऊँच होइ छै।'

मशालवला लोक हारि कऽ घुरि गेल।

अध्याय –८६

समयक गोहि

बहुत बरख बीति गेल। पुरनका लोक गेलाह, नव लोक आयल। गौरी एक दिन पीपर लग बैसि सोचलक — 'एतेक लोक कतय गेलाह?'

बूढ़बा कहलनि –– 'समय सेहो एकटा गोहि छी, गौरी। ओ पीढ़ी–पीढ़ी निगलैत जाइ छै। मुदा जे नाम गाम मोन राखै छै, तकरा समयो नहि निगलि सकै।'

गौरी बुझलक –– तेँ हमरा हर नाम मोन राखबाक अछि, ताकि समयक गोहि ओकरा नहि खा सकय।

अध्याय –८५

आमिलक आदेश

एक भोर एकटा आमिल (राजाक अधिकारी) जयसिंह हाथीपर सवार, दस सिपाही आ यशपतिक संग गाममे आयल। चौपालपर ओ एकटा आदेश टाँगि देलक — गौरीकेँ दण्ड देबाक हुकुम। यशपति खुशीसँ गौरी दिस आङुर उठौलक।

मुदा गाम डरल नहि। बूढ़बा कहलनि — ‘साहेबक आदेश कागचपर होइ छै, गामक न्याय पातपर। हुकुम मेटा सकै छै, मुदा फकरा (गामक सचाइ) नहि मेटाइ।’

अध्याय –८४

जंगलक मौन

यशपति भागि गेल। गामक मुखिया आ किछु युवक ओकरा खोजय कमला–बलानक ओहि पार, घन जंगल दिस गेलाह। गौरी नहि गेलि — ओकरा घरपर अपन बेटी सावित्रीक देखभाल करय पड़लैक।

ओ भोरे बूढ़बा लग आशीर्वाद लेबय गेलि। बूढ़बा कहलनि — 'जंगल चुप रहै छै, तैयो सभ किछु सुनै छै। जे मौनकेँ बुझय सिखै, तकरासँ जंगलो बाजि उठै छै।'

अध्याय –८३

सोनमा माझिन

किछु दिन बाद गाममे नव भय पसरल — पहिने एकटा बकरी, फेर एकटा भैंसक बच्चा जोड़ी पोखरि लगसँ गायब भऽ गेल। सभ डरल। गौरी सावित्रीकें लऽ बूढ़बा लग गेलि — 'ई की भऽ रहल अछि?'

ओहि पोखरिमे सोनमा माझिन माछ मारैत छलि। ओ कहलक — 'जाल माछ पकड़ै छै, मुदा हम नामकें नहि पकड़ि राखी।' ओ हर गेल जीवक नाम लऽ कऽ ओकरा मोन राखैत छलि — किएक तँ नदी सभक माए छी।

अध्याय –८२

पहिल कबड्डी

तीन बरखमे स्थिति आओर बिगड़ल — आब कहियो–कहियो मनुख सेहो राति–बिरात नदी लगसँ गायब भऽ जाइत छल। सोरह बरखक सावित्री आब बूढ़बाक आवाज दिनहुँ सुनि सकैत छलि।

भयकेँ हरेबाक लेल गाम एकटा नव खेल शुरू केलक — कबड्डी। ‘एक साँसमे जाउ, छूबि कऽ, एक साँसमे घुरू।’ ई खेल सिखौलक — पकड़ि कऽ नहि राखू, मुदा हिम्मतसँ सोझाँ जाउ आ मिलि कऽ ठाढ़ रहू।

अध्याय –८१

आक्रमणक छाया

बीस बरख बीति गेल। अमावस्याक कबड्डी आब गामक जीवनक हिस्सा बनि गेल छल; बच्चा सभ ओकरा सहजतासँ खेलैत छल।

मुदा एक साँझ, गामक सीमापर धूरिक एकटा नव बादर उठल —– घोड़ाक टापक बादर, आ ओकर संग भागल लोकक भीड़। खतरा लग आबि रहल छल। बूढ़बा कहलनि —– 'छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ। जकर नाम थिर छै, से अपन छायासँ नहि डरै।'

अध्याय –८०

गीतक पहिल पाँति

ओहि समय गढ़ नारिकेलमे हरिपति नामक एकटा युवा भ्रमणशील कवि आयल। एक साँझ ओ एकटा गीतक पहिल पाँति गाओल।

ओकर बाद गामक लोक अपने–आप बाकी पाँति जोड़य लागल, आ पूरा गीत बनि गेल। बूढ़बा हँसि कऽ कहलनि –– 'गीतक पहिल पाँति एक कण्ठ उठबै छै, बाकी सारा गाम उठा लै छै। लेखक एक नहि, गामे रचयिता छी।'

अध्याय –७९

क्षमाक पारी

बहुत बरख बाद, एक साँझ एकटा अत्यन्त वृद्ध पुरुष, डण्टाक सहारे, चर्मकार टोलाक द्वार लग आयल। ओकर वस्त्र कहियो कीमती छल, मुदा आब फाटल आ मैलगर। ओ ओएह लोक छल जे कहियो गामक संग अन्याय केने छल।

गाम चाहितो बदला लऽ सकैत छल। मुदा बूढ़बा कहलनि —— 'कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी देल जाइ छै। क्षमा सेहो एकटा पारी छी, बदला नहि।' आ गाम ओकरा क्षमा कऽ देलक।

अध्याय –७८

पंजीक बाहर

मिथिलामे एकटा पुरान व्यवस्था छल — पंजी — जाहिमे परिवारक नाम लिखल जाइत छल। मुदा ओहिमे केवल किछु कुलक नाम रहैत छल। एक युवा पंजीकार यादवानन्द झा आयल आ बुझलक — कतेको नीक लोकक नाम ओहि कागचमे नहि छल।

बूढ़बा कहलनि — ‘पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि। कागच जकरा छोड़ि दै, तकरा माटि अपना लै छै।’ ओहि दिनसँ यादवानन्द सभक नाम राखय लगलाह।

अध्याय –७७

बूढ़बाक मौन

एक अमावस्याक राति कबड्डी शुरू भेल, मुदा बूढ़बा निर्णायक बनि नहि आयलाह। बच्चा सभ प्रतीक्षा केलक, फेर कानाफूसी करय लागल — 'बूढ़बा किएक नहि आयलाह? '

धीरे–धीरे ओ सभ बुझलक — बूढ़बा चाहैत छलाह जे आब बच्चा सभ अपने निर्णय लेब सिखय। बूढ़बा कहने रहथिन — 'हम जखन चुप रही, तखन सभसँ बेसी बाजी। मौन सेहो एकटा उत्तर छी।'

अध्याय –७६

नारिकेल पातक पहिल पाठ

मंदाकिनी नामक एकटा बालिका पढ़य–लिखय चाहैत छलि। मुदा गामक पुरनका पाठशालामे केवल उच्च–जातिक बालक जा सकैत छल —– कोनो बालिका आ कोनो गरीब बच्चा नहि।

तँ गाम एकटा नव पाठशाला शुरू केलक —– नारिकेलक गाछ तर, जतय हर बच्चा नाम लिखब सिखि सकैत छल। बूढ़बा कहलनि —– 'पहिल पाठ पातपर होइ छै —– नाम केना लिखल जाइ। जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।'

अध्याय –७५

तर्कक पहिल विद्रोह

मंदाकिनीक पाठशाला तीन पीढ़ी धरि फलल–फूलल। आब गामक हर बच्चा —– चर्मकार होउ, ब्राह्मण होउ, कायस्थ होउ —– अक्षर पढ़ि आ हिसाब लगा सकैत छल।

ओहि पाठशालाक सभसँ तेज छात्र विश्वनाथ एक दिन अपन गुरुकेँ एकटा कठिन प्रश्न पुछलक। गुरु क्रोधित नहि भेलाह —– ओ मुस्कुरा उठलाह। बूढ़बा कहलनि —– 'जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरौलक नहि, जगौलक। तर्कक पहिल विद्रोह इएह —– ज्ञानक पहिल भोर।'

अध्याय –७४

गाछक रोग

केदार आब गामक अनुष्ठान–रक्षक बनल छल — किएक तँ ई परम्परा आब स्त्री आ पुरुष दुनूकेँ, योग्यताक आधारपर, सौंपल जाइत छल। एक दिन ओ देखलक जे बूढ़ साक्षी–गाछ किछु बीमार लगैत अछि।

ओ चिन्तित भऽ पुछलक — 'बूढ़बा, ई गाछ बीमार अछि की?' बूढ़बा कहलनि — 'एक पातक रोग पहिनहि सम्हारू, नहि तँ ओ पूरा गाछमे फैलि जायत। गामक रोगो एहिना, एक छोट चुप्पीसँ शुरू होइ छै।'

अध्याय –७३

मोहनक धुन

शीलावतीक जमानामे चर्मकार टोला सभसँ नीक ढोल–मृदंग बनबैत छल। ओहि टोलाक सभसँ प्रतिभाशाली संगीतकार छल मोहन। मोहनक एकटा

छोटकी बेटी छलि —— राधिका, चारि बरखक —— जकरा ओ अपन प्राणसँ बेसी प्रेम करैत छल।

एक जाड़, राधिका बहुत बीमार पड़ि गेलि आ गामकेँ छोड़ि चलि गेलि। मोहन दुखसँ टूटि गेल। एक साँझ ओ पीपर तर बैसि, बाँसुरीपर अपन दुखक धुन बजौलक। ओ धुन एतेक मीठ आ मार्मिक छल जे पूरा गामक कान ओकरा राखि लेलक।

बूढ़बा कहलनि —— 'बाँसुरीक धुन हवामे मिलि जाइ छै, तैयो कान ओकरा राखि लै छै। जे धुन मन छुबै, से कहियो बिसरल नहि जाइ।' ओहि दिनसँ गाम हर आयोजन एकटा गीतसँ शुरू करय लागल —— अध्यायारम्भ लोकगीतक परम्परा एतहिसँ जन्मल।

अध्याय –७२

विवाहक साक्षी

अनुराधा आ गोपीनाथ बचपनक मित्र छलाह — दुनू एक संग नारिकेल पात पाठशालामे पढ़ल छलाह। दुनू बियाह करय चाहैत छलाह, मुदा ओ दुनू

भिन्न–भिन्न जातिक छलाह, आ गामक किछु पुरान लोक अखनहु जाति–भेद मानैत छलाह।

अनुराधाक माए चिन्तित छलि। मुदा पूरा गाम मिलि कऽ ओहि बियाहक साक्षी बनल — आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी। बूढ़बा कहलनि — ‘जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर लिखा गेल।’

अध्याय –७१

महामारीक राति

अनुराधा आ गोपीनाथक बियाहक दस बरख बाद, पूब दिससँ एकटा अनदेखल बिपत्ति आयल —— एकटा महामारी। ई समय बहुत कठिन छल, कतेको परिवारकेँ दुख भेल।

मुदा गाम हिम्मत नहि हारल —— हर राति घर–घर दीप जरल, लोक एक–दोसराक हाल पुछलक, आ मिलि कऽ गीत गाओल ताकि हिम्मत बनल रहय। बूढ़बा कहलनि —— 'महामारी देहकेँ लऽ सकल, मुदा गीतकेँ नहि। जे राति सभ मिलि जागल, सैह भोरकेँ बचा लेलक।'

अध्याय –७०

चन्ना गाछीक रोपाई

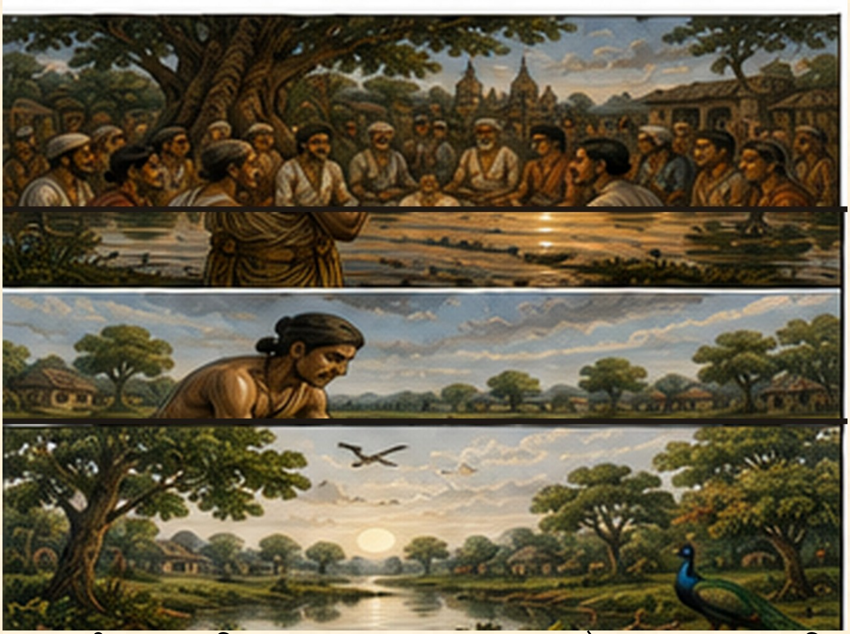

महामारीक बाद, विमला आ गामक बुढ़–पुरान लोक एकटा सुन्दर विचार पओलक। विमला बजलि — 'बूढ़बा, हम चाहैत छी जे गामक हर पैघ दुःख आ हर पैघ आशा, केवल मनमे नहि, एकटा गाछ रोपि कऽ सेहो मोन राखल जाय।'

बूढ़बा प्रसन्न भेलाह। गाम एकटा नव गाछी रोपलक — चन्ना गाछी। बूढ़बा कहलनि — 'जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै। सबर राखू — जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति।'

अध्याय –६९

गज–ग्राहक कथा

सूर्यनाथक जमानामे गामक मन्दिरमे एकटा हाथी छल — गजराज। एक दिन पोखरिमे नहाइत काल, एकटा विशाल गोहि गजराजक पएर जकड़ि लेलक। गजराज बहुत काल धरि लड़ल, थाकि गेल।

मुदा जखन ओ अन्तमे पुकारल, तखन ओकर मदति आयल। बूढ़बा कहलनि — 'गज पानिमे, ग्राह पानिमे — लड़ाइ बरखों चलै छै। मुदा जे नाम पुकारै छै, तकरे हाथ उद्धार आबि जाइ छै।'

अध्याय –६८

अदालतक पहिल तारीख

कमलिनीक जमानामे राजा गाम सभक हेतु एकटा औपचारिक अदालत बनौलक। पहिने सभ ओकर स्वागत केलक –– लिखित कानून हर जातिक लोककेँ समान अधिकार देबाक वादा करैत छल।

मुदा धीरे–धीरे लोक देखलक –– अदालत 'तारीखपर तारीख' दैत छल, केवल देह आ कागच पुछैत छल, आ गाम अपन नाम अपने राखैत छल। बूढ़बा कहलनि –– 'तारीखपर तारीख अदालतमे, मुदा असली न्याय पातपर रहै छै।'

अध्याय –६७

परदेशक पुकार

जानकीक जमानामे, गामक द्वारपर एकटा नव तरहक मनुख आयल — मीठ जीभ, चमकदार वस्त्र, हाथमे कागच — जे गरीब परिवारकेँ दूर परदेश कमाय जेबाक लोभ देखबैत छल। भोलाक पोता रामसेवक, अपन परिवारक तंगहाली देखि, ललचा गेल।

बूढ़बा चेतौलनि — 'परदेश धन दै छै, मुदा नाम लऽ जा सकै छै। मुदा जे गाम मोन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ। अपन नाम संग राखू।'

अध्याय –६६

स्त्री सभक राति–सभा

सुलोचनाक जमानामे, नव अदालतक एकटा स्पष्ट कमी देखल गेल —– ओ स्त्रीक दुखकेँ ठीकसँ नहि सुनैत छल। पद्मा नामक एकटा स्त्री, जकर पति ओकरा बरखों धरि सतबैत छल, न्याय माँगय अदालत गेलि, मुदा ओतय ओकर बात नहि सुनल गेल।

तेँ गामक स्त्री सभ अपन एकटा राति–सभा शुरू केलक, जतय स्त्रीक स्वर जुटैत छल आ ओ एक–दोसराक मदति करैत छलि। बूढ़बा कहलनि —– 'जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर भऽ जाइ छै। राति–सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ि दै छै।'

अध्याय –६५

नकली भूतक जुलूस

हरिनन्दनक जमानामे, कालीचरण नामक एकटा भ्रमणशील ठग गाम–गाम घूमि, स्वयंकेँ ‘बूढ़बाक असली आत्मा’ कहि प्रचारित करय लागल। ओ रातिमे भूतक जुलूस निकालि लोककेँ डराबैत आ ठगैत छल।

मुदा गढ़ नारिकेल नहि डरल। लोक पुछलक —– ‘तोँ साँचमे के छह? ’ आ ठग भागि गेल। बूढ़बा कहलनि —– ‘नकली भूत ओकरे डेराबै छै, जे अपन नाम बिसरि गेल। जे नाम थिर छै, से भूतक जुलूसपर हँसै छै।’

अध्याय –६४

सुखदेवक बदला

चम्पावतीक जमानामे, नव भूमि–सर्वेक्षणसँ गरीब परिवार फेर डरल। सुखदेव नामक एकटा मनुष्यक संग पैघ अन्याय भेल छल, आ ओकर मनमे बदलाक आगि जरैत छल।

मुदा चम्पावती आ बूढ़बा ओकरा समझौलनि — 'बदला आगि छी, सुखदेव। ओ पहिने अपने हाथ जराबै छै। जे क्षमा चुनै, से पूरा गाम बचा लै छै।' सुखदेव अपन क्रोध छोड़ि देलक, आ गाम घृणाक आगिसँ बाँचि गेल।

अध्याय –६३

छापाखानाक पहिल पन्ना

देवकीनन्दनक जमानामे, लग नगरमे पहिल बेर एकटा छापाखाना खुजल। हरिपति गंगाधर —— पुरनका कवि हरिपतिक वंशज —— एकटा युवा लेखक–प्रकाशक बनल।

आब गामक नाम आ कथा छपि सकैत छल —— पूरा गाम पढ़ि सकैत छल, आ ओकरा मेटाएब कठिन छल। बूढ़बा कहलनि —— 'पहिल छपल पन्ना —— आब नाम मेटाएब कठिन। जे छपल, से गाम भरि पढ़त।'

अध्याय –६२

राहतक प्रतीक्षा

सावित्रीदेवीक जमानामे, ई क्षेत्र अंग्रेजी शासनमे आबि गेल। एक बेर पैघ अकाल पड़ल। अधिकारी राहतक घोषणा केलनि —— अन्न–केन्द्र, काज–

बदला–अनाज, चिकित्सा — मुदा ई सभटा प्रायः कागचपर रहल, धीरे–धीरे आयल।

गामक आँखि बाट जोहैत थाकि गेल। मुदा लोक अपन थोड़–बहुत मिलि बाँटि, संग बाट जोहलक। बूढ़बा कहलनि — 'राहतक बाट जोहैत आँखि थाकै, तैयो गाम ठाढ़ रहै। जे मिलि कऽ बाट जोहै, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक भऽ जाइ।'

अध्याय –६१

आकाशक पुच्छलतारा

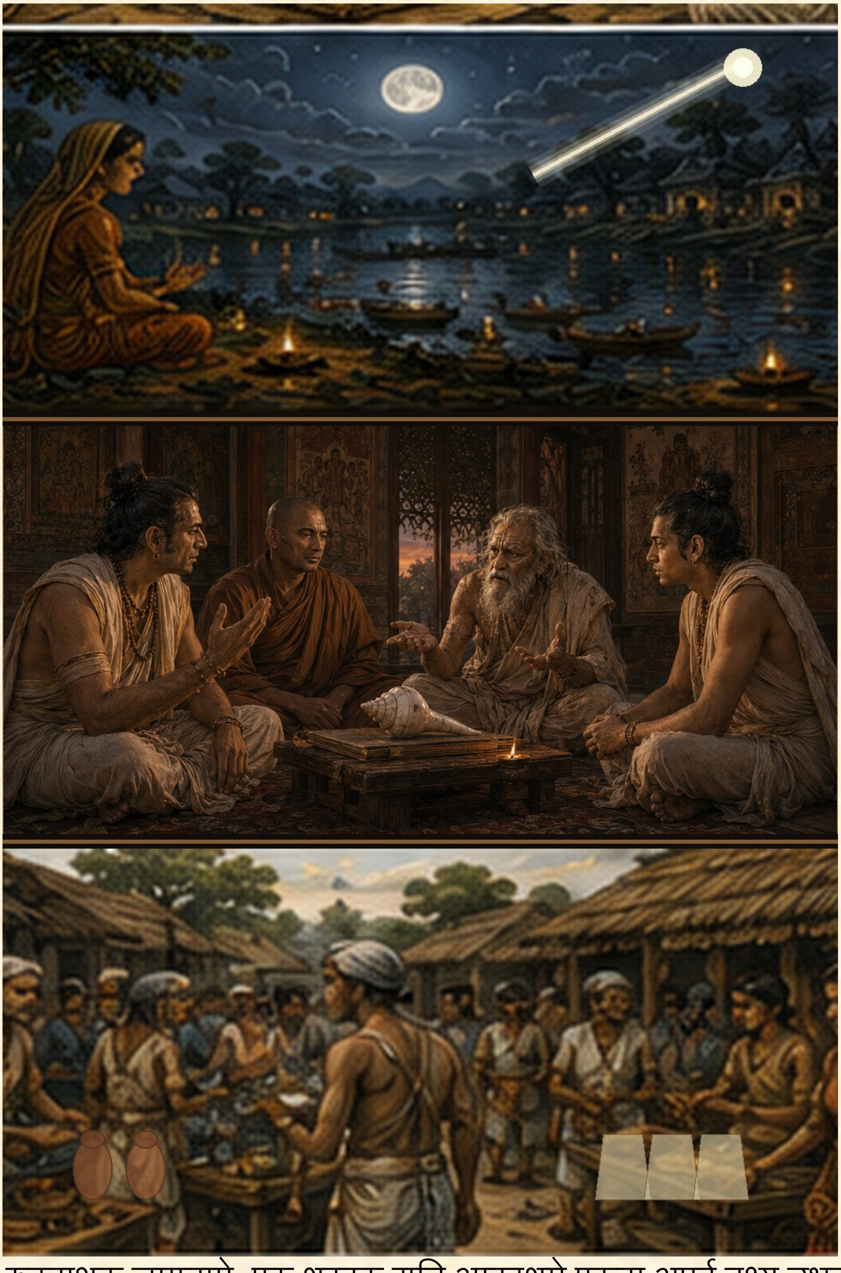

रुद्रनाथक जमानामे, एक शरदक राति आकाशमे एकटा अपूर्व दृश्य उभरल — एकटा लम्बा, चमकदार पुच्छ लेने तारा। गामक एकटा वृद्ध ज्योतिषी

चिचिआएल — ‘ई अशुभ अछि! पुच्छलतारा राजाक मृत्यु, युद्ध, अकाल वा महामारीक सूचना दै छै!’ गाम डरि गेल।

मुदा बूढ़बा शान्त रहलाह — ‘पुच्छलतारा आबै–जाइ छै, गाम अपना ठाम रहै छै। जे ऊपर चमकल, से नीचाँक नाम नहि बदलै। आकाशसँ नहि डरू — अपन जड़ि माटिमे राखू।’

अध्याय –६०

अगिनक राति

जेठक एकटा तीव्र गर्मीक राति, गामक धान–भंडार लग रखल एकटा दीप, तेज हवाक झोंकासँ खसि पड़ल आ आगि लपकि उठल। रुद्रनाथक बेटी

इन्द्राणी, आब अनुष्ठान–रक्षिका, अपन खिड़कीसँ आगिक लाली देखि चिचिआएलि –– 'आगि! आगि!'

ओ गामक हर द्वारपर दौड़ल, आ पूरा गाम जागि, मिलि कऽ आगि सोझाँ ठाढ़ भेल। घर जरल, मुदा केओ नाम नहि हेराएल। बूढ़बा कहलनि –– 'आगि घर लेलक, नाम नहि। जे राति जरल, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।'

अध्याय –५९

दोसर बाढ़ि

अगिनक तीन मास बाद, बिनु रुकने बरखा भेल, आ कमला–बलान फेर बाढ़िसँ भरि गेल। इन्द्राणी, जे आगिसँ गाम बचौने छलि, आब पानिक सोझाँ छलि।

मुदा गाम पुरनका बाढ़िसँ सिखने छल — लोक पानिकेँ 'पढ़ि' पाकल बान्ह मजगूत केलक आ ठीक समयपर ऊँच ठाम चलि गेल। बूढ़बा कहलनि — 'दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है छै, तैयो नव घाव दै छै। मुदा जे गाम बाढ़ि झेललक, से पानिकेँ पढ़ब सिखि लै छै।'

अध्याय –५८

तेसर बिपत्ति

बाढ़िक पानि उतरलाक बाद, ठहरल सड़ल पानिसँ एकटा नव रोग पसरल — पेट-दर्द आ दस्त। इन्द्राणी, अगिन आ बाढ़ि दुनूसँ जूझि चुकल, आब

तेसर परीक्षाक सोझाँ छलि। ओ थाकि कऽ बजलि — 'बूढ़बा, पुच्छलतारा सही छल — तीन बिपत्ति, अगिन, बाढ़ि आ रोग।'

बूढ़बा कहलनि — 'एक बिपत्ति सिखबै छै, तेसर पकबै छै। जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ छै। पानि उसीनू, सफाइ राखू, एक-दोसराक देखभाल करू।' गाम झेलि गेल आ आओर मजगूत भऽ गेल।

अध्याय –५७

साहेबक नोटबुक

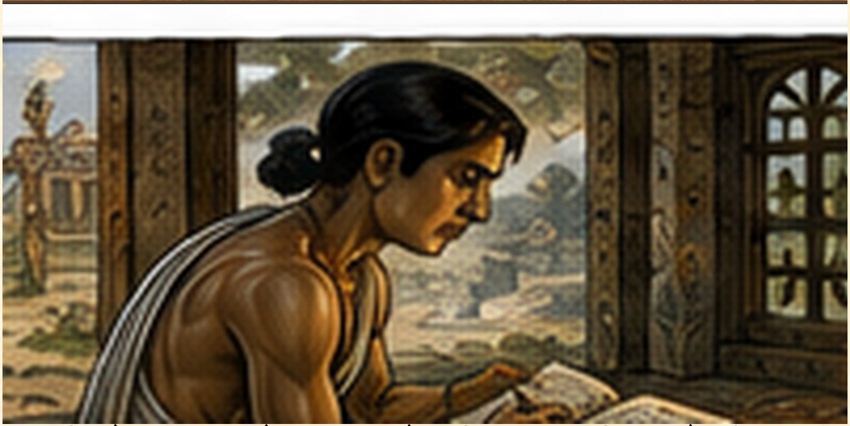

नन्दकिशोरक जमानामे, एकटा अंग्रेज विद्वान — मिस्टर हेनरी थॉम्पसन, जकरा गाम 'थॉम्पसन साहेब' कहलक — भारतीय लोक-परम्परा पढ़य

गाममे आयल। ओ अपन नोटबुक आ कलम लऽ गामक हर बुढ़–पुरानसँ पुछलक —– बूढ़बा के छथि? कबड्डीक अर्थ की? चन्ना गाछी की? आ सभटा लिखि लेलक।

बूढ़बा कहलनि —– 'साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब। गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य। दुनू रहि सकै, मुदा बाहरीक कागचकेँ अपन स्मृतिक ठाम नहि लेबय दियौ।'

अध्याय –५६

स्वाधीनताक पुकार

लक्ष्मीदेवीक जमानामे, सम्पूर्ण भारतमे स्वाधीनता–आन्दोलनक लहर तीव्र भऽ चुकल छल। एकटा युवा स्वाधीनता–सेनानी रामाश्रय, नगरसँ यात्रा कऽ

गढ़ नारिकेल पहुँचल आ पुकारल —– ‘भाइयो–बहिनो, स्वाधीनताक आन्दोलनमे शामिल होउ!’

जे गाम सदिखन हर नाम आ हर लोकक मान राखने छल, ओ स्वाधीनताकेँ नीक जकाँ बुझलक। बूढ़बा कहलनि —– ‘जे पुकार गाम–गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि। स्वाधीनता सेहो एकटा साझा गीत छी —– सभकेँ मिलि गाबय पड़ै छै।’

अध्याय –५५

स्वतंत्रताक भोर

विश्वम्भरनाथक जमानामे, पन्द्रह अगस्तक भोरे, सम्पूर्ण भारतमे — गढ़ नारिकेल सहित — एकटा नव सूरज उगल। गामक चौपालपर पहिल बेर तिरंगा फहरायल गेल।

नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा 'जन गण मन' गाबय सिखने छल, आ ओहि भोरे हर कण्ठसँ ई गीत उठल। बूढ़बा कहलनि — 'भोर भेल, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि। जे नाम आजाद, तकर भोर सभसँ पहिने। असली स्वतंत्रता तखन, जखन हर नाम आजाद होइ।'

अध्याय –५४

जमींदारीक अन्त

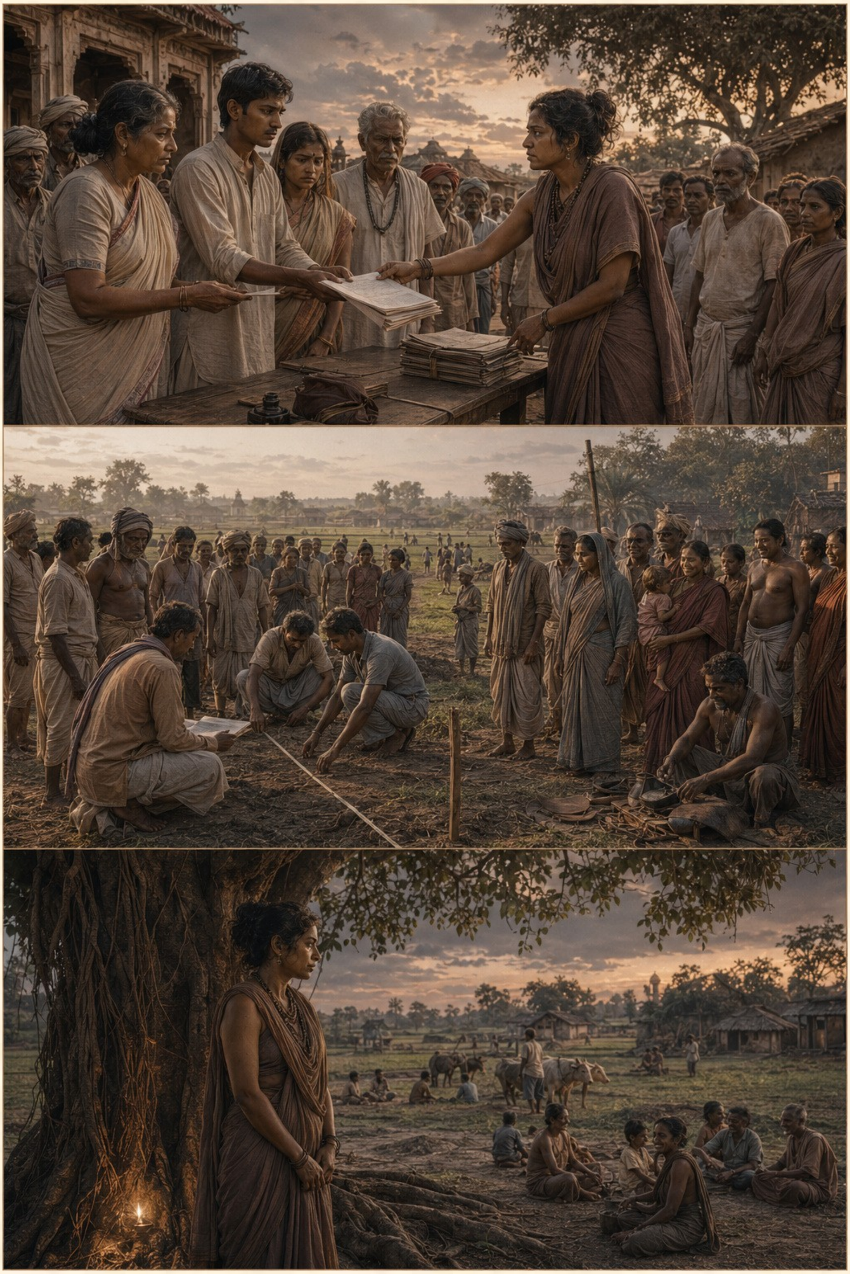

कमला देवीक जमानामे, नव भारत सरकार जमींदारी–व्यवस्था समाप्त केलक। गामक अन्तिम जमींदार परिवार — प्रतापसेन ठाकुरक वंशज — अपन अधिकांश भूमि सरकारकेँ सौंपय बाध्य भेल।

ओहि भूमिक पैघ हिस्सा भूमिहीन किसान आ चर्मकार टोलाकेँ भेटल। बूढ़बा कहलनि — 'जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल। जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै छै।'

अध्याय –५३

बिजलीक पहिल दीप

हरिवंशक जमानामे, एक साँझ चौपालपर पहिल बिजलीक दीप एकाएक जरल। सम्पूर्ण गाम — बच्चासँ वृद्ध धरि — अचम्भासँ ठमकि गेल। बल्बक पीयर इजोत डकही पोखरिक पानिपर काँपल।

बूढ़बा कहलनि — 'बिजलीक दीप जरल, मुदा पुरान दीपक तेल नहि बिसरू। नव इजोत आबे — मुदा ओ पुरान नाम नहि मेटाबे।'

अध्याय –५२

सीमाक पुकार

हरिवंशक जमानामे, दूर सीमापर युद्धक ढोल बाजल —— पहिने चीन दिससँ, फेर पाकिस्तान दिससँ। समाचार रेडियोक फुसफुसाहटमे गाम धरि पहुँचल। कतेको घर अपन बेटाकेँ सीमापर पठौलक।

भयक बीचहुँ गामक जीवन चलैत रहल —— जन्म होइत रहल, सोहर गबाइत रहल। बूढ़बा कहलनि —— 'सीमापर तोप बाजल, गाममे सोहरो बाजल। जे गाम युद्धो झेललक, से नामकेँ नहि छोड़लक।'

अध्याय –५१

हरित क्रान्तिक बीया

हरित क्रान्तिक हवा जखन गढ़ नारिकेल धरि पहुँचल, तखन खेतक रूप बदलय लागल —— नव, अधिक उपजाऊ बीया आ बोरा–बोरा रासायनिक खाद आयल। पहिल बेर धान एतेक बेसी उपजल।

मुदा हरिवंशक बेटी सुनयना पुछलक —— 'बूढ़बा, नव बीयासँ अन्न बेसी भेटत, मुदा हमर पुरनका बीया हेराइत जा रहल अछि। की ई नीक अछि?' बूढ़बा कहलनि —— 'नव बीया बेसी उपजा दै, मुदा पुरान बीया माटि चिन्है छै। दुनू राखू। जे बीया गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै छै।'

अध्याय -५०

आपातकालक अन्हार

१९७५मे, जखन राष्ट्रीय आपातकाल घोषित भेल, तखन ओकर छाया दिल्लीसँ चलि गाम-गामक चौपाल धरि पहुँचल। सभा-गोष्ठीपर रोक लागि

गेल। सुनयना, भयभीत, पीपर लग गेलि —– 'बूढ़बा, सभापर रोक अछि। हमर राति–सभा बन्न करय पड़त की? '

बूढ़बा कहलनि —– 'अन्हारक दौर थिर नहि रहै छै। मुदा जे दीप बुतल, तकरा फेर जरबैमे बेर लागै छै। तेँ नामक छोट लौ चुपचाप जगल राखू आ बाट जोहू —– भोर जरूर आओत।'

अध्याय –४९

सूखाक बरख

एक बरख मानसून फेर असफल भेल। आकाश महीनों कोरा रहल, पोखरिक पानि घटल, आ खेतक माटि फाटि–फाटि पियास कहय लागल।

मुदा एहि बेर सरकारी राहत आ गामक अपन संगठन दुनू समयपर सक्रिय भेल।

सुनयनाक बेटा गोपाल, गामक युवा प्रधान, अधिकारीक संग मिलि राहत जुटौलक, आ गाम मिलि कऽ इनार खुनलक। बूढ़बा कहलनि — 'सूखल बरख पोखरि सुखबै, नाम नहि। जे गाम मिलि इनार खुनलक, से पानि फेर पओलक।'

अध्याय –४८

रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

गोपालक जमानामे, गामक चौपालपर पहिल रेडियो आयल। पहिल राति, ओहि छोट बाकसमेसँ दिल्लीक स्वर निकसल, आ सम्पूर्ण गाम ओकरा घेरि बैसल।

मुदा ओहि नव उजासक संग एकटा चुप्पी सेहो आयल —– जे बच्चा साँझमे पीपर लग बूढ़बाक कथा सुनय अबैत छल, से आब स्क्रीनक सोझाँ बैसय लागल। बूढ़बा कहलनि —– 'यन्त्रक अवाज दूरसँ आबै, गामक गीत भीतरसँ। जे भीतरक स्वर सुनैत रहल, से बाहरक शोरमे नहि हेराइ।'

अध्याय –४७

खाड़ी देशक बजार

अस्सीक दशकमे, खाड़ी देशमे तेलक उछालसँ, गामक युवा निर्माण–मजदूरी हेतु दुबई, कुवैत आ सऊदी अरब जाय लागल। कुसुमक पति रमेश

तीन बरखक करारपर दुबई गेल। मुदा एहि बेर, रमेश नियमित पत्र आ पैसा घर पठबैत रहल, आ कहियो–कहियो ओकर अवाज फोनपर सेहो अबैत छल।

बूढ़बा कहलनि —— 'परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै। जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी बनि जाइ। तेँ जतय जाउ, अपन नाम आ अपन लोक संग राखू।'

अध्याय –४६

सद्भावक परीक्षा

अस्सीक दशकक अन्तमे, आसपास साम्प्रदायिक तनावक एकटा लहर उठल, आ ओकर आँच अफवाहक रूपमे गढ़ नारिकेल धरि पहुँचल। किछु बाहरी लोक गाम आबि, हिन्दू–मुसलमानकेँ बाँटय चाहलक।

मुदा गढ़ नारिकेलक मुस्लिम परिवार पीढ़ी–दर–पीढ़ी गामक जीवनमे घुलल–मिलल छल —– जकर पुरखा एकहि पोखरिसँ पानि भरने, एकहि खेतमे काज केने, एकहि बाढ़िमे एक–दोसराकेँ बचौने छलाह। तेँ गाम एक भऽ ठाढ़ भेल आ बाहरी झगड़ाबाजकेँ विदा कऽ देलक। बूढ़बा कहलनि —– 'जखन आगि लागल, तखन गाम एक भेल। सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल जाइ छै।'

अध्याय –४५

उदारीकरणक हवा

१९९१क आर्थिक सुधारक बाद, गामक बजारक रूप बदलय लागल —
रंग–बिरंगक प्लास्टिक, चिक्कन नव कपड़ा, आ बादमे पहिल केबल टेलीविजन

आयल। कुसुमक बेटा दिनेश, नगरमे एकटा निजी कम्पनीमे नौकरी पओलक — जे पहिने असम्भव छल।

नव जीवनक गतिमे एकटा चमक छल। मुदा बूढ़बा कहलनि — ‘नव हवा दरबज्ञा खोललक, मुदा जड़ि हिलल नहि। जे गाम जड़िसँ जुड़ल, से हवामे नहि उड़ै।’

अध्याय –४४

पहिल कम्प्यूटर

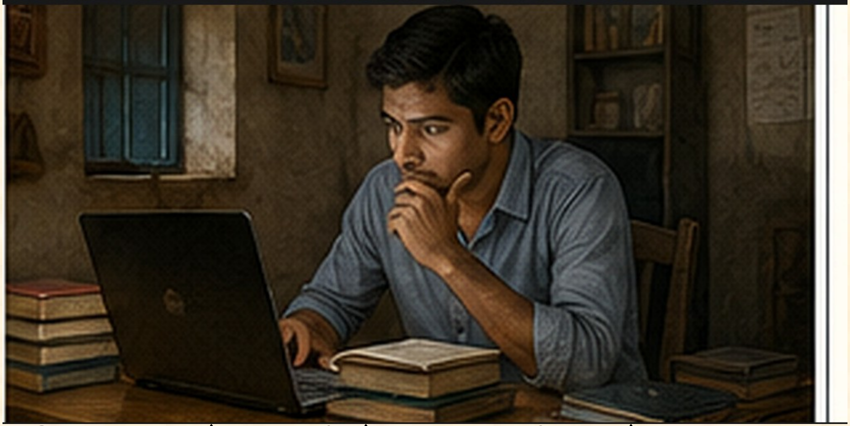

प्रतिमाक जमानामे, सरकारी योजनाक अन्तर्गत नारिकेल पात पाठशालामे पहिल कम्प्यूटर पहुँचल –– एकटा पैघ, धूसर यन्त्र। बच्चा सभ आँखि फाड़ि

ओकरा देखलक — जे अक्षर हाथसँ लिखय बरख लगैत छल, से आब पल भरिमे स्क्रीनपर उतरि अबैत छल।

मुदा एकटा बूढ़ शिक्षक मुस्कुरा कऽ बूढ़बाक बात दोहरौलनि — 'नव यन्त्र गिनती सिखबै, मुदा नाम नहि गिनै। जे नाम गाम राखै, से यन्त्रक कोनो संख्यासँ पैघ।'

अध्याय –४३

सुखल होइत धार

प्रतिमाक जमानामे, गामक बुढ़–पुरान एकटा नव, धीमा बिपत्ति देखलक — कमला–बलानक जल–स्तर बरख–दर–बरख घटैत जा रहल छल। जे

धार कहियो घर बहा लऽ जाइत छल, से आब पातर होइत जा रहल छल। बूढ़ लोक पीपरक छाहरिमे बैसल चिन्तित छलाह।

बूढ़बा कहलनि — 'धार पातर भेल, तैयो पुरान बाट चिन्है छै। जे धार सुखल, से बाढ़िकेँ नहि बिसरल। पानिक रक्षा करू, ताकि ओहो अहाँकेँ नहि बिसरय।'

अध्याय –४२

हाथक फोनक चमत्कार

सत्यनारायणक जमानामे, पहिल मोबाइल फोन गाम पहुँचल —– पहिने एकटा, गामक मुखियाक हाथमे। जखन ओहि छोट यन्त्रमेसँ दूर शहर गेल बेटाक अवाज निकसल, तखन पूरा गाम अचम्भासँ जुटल।

धीरे–धीरे फोन कतेको घर पहुँचल —– दूर परदेश गेल पुत्र माए–बापसँ तुरंत बात कऽ सकल, हर समाचार क्षण भरिमे पहुँचय लागल। बूढ़बा कहलनि —– 'हाथमे यन्त्र, दूर लग भऽ गेल। मुदा जे लग बैसल अछि, तकरो नाम पुछब बिसरू नहि।'

अध्याय –४१

शहरक बजार

अंजलिक जमानामे, भारतक आइटी–उद्योगक उछालसँ, गामक शिक्षित युवा बंगलोर, हैदराबाद आ दिल्ली जकाँ शहरमे सॉफ्टवेयर–नौकरीक हेतु जाय

लागल। जे बच्चा कहियो पातपर नाम लिखय सिखने छल, से आब कम्प्यूटरक कोड लिखय लागल।

मुदा ओहि उड़ानक संग एकटा दूरी सेहो आयल — गामक कतेको घर बरख भरि, अपन जवान सन्तानक बिनु, ताला लागल रहय लागल। बूढ़बा कहलनि — 'शहर देह किनै, मुदा गाम नाम नहि बेचै। जे बजारमे नाम बेचलक, से घुरि कऽ खाली हाथ। ऊँच उड़ू — मुदा अपन नाम आ गाम मनमे राखू।'

अध्याय –४०

सूचनाक अधिकार

करुणाकरक जमानामे, भारतमे सूचनाक अधिकार कानून पारित भेल — एकटा एहन कानून जे साधारण नागरिककेँ सरकारी दफ्तरसँ अपन कागच माँगबाक हक दैत छल।

गामक युवा, यादवानन्दक पुरान परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, सरकारी अभिलेखागारसँ गामक जमीन आ इतिहासक कागच माँगय लागल — जे कागच कहियो केवल अधिकारीक आलमारीमे बन्न रहैत छल। बूढ़बा कहलनि — 'जकरा जानबाक हक, से आब पुछि सकै। सूचना दीप छी — जे अन्हारमे नाम देखबै छै।'

अध्याय –३९

काजक गारंटी

विभाक जमानामे, केंद्र सरकारक ग्रामीण रोजगार–गारंटी योजना गाम धरि पहुँचल — जे हर परिवारकेँ, गामहिमे, सौ दिनक निश्चित काजक हक दैत

छल। पोखरि खुनाइ, बान्ह बन्हाइ, बाट बनाइ — गामक काज गामहिमे होमय लागल, आ जे हाथ पहिने खाली छल, से आब काजमे लागल।

हर काजक हाजिरी एकटा पंजीमे चढ़ाओल जाइत छल। बूढ़बा कहलनि — 'जकरा काज भेटल, तकर हाथ ठाढ़ भेल। काज नाम दै छै, भीख नहि।'

अध्याय –३८

इंटरनेटक जाल

सुरेशक जमानामे, स्मार्टफोन आ सस्ता इंटरनेट गाम धरि पहुँचल। जे बच्चा कहियो नारिकेल पातपर अक्षर सिखने छल, से आब अपन हथेलीमे सम्पूर्ण संसार धेने घूमय लागल।

मुदा ओहि नव जालक संग नव समस्या सेहो आयल — झूठ समाचार सत्य जकाँ फैलल; लोक दोसराक चमकैत जीवन देखि असन्तुष्ट भेल; आ अनजान लोक ककरो लग पहुँचि सकल। बूढ़बा कहलनि — 'नव जाल दूरकेँ लग आनै, मुदा नामकेँ नम्बर बनबै। जे जालमे फँसल, से अपन चेहरा हेरा दै। जालक उपयोग करू, मुदा जालकेँ अपन उपयोग नहि करय दियौ।'

अध्याय –३७

स्क्रीनक पहिल छाया

नीरजक जमानामे, फेसबुक आ व्हाट्सएप गामक हर हाथमे पहुँचि गेल। दूर बसल नातेदार लग आबि गेलाह, पुरान संगी फेर भेंट भेलाह, गामक हर सुख–दुःख पल भरिमे पसरय लागल।

मुदा संगहि अफवाह, ठगी आ ऑनलाइन उत्पीड़नक नव कथा सुनाइ पड़य लागल — कियो केकरो फोटो लऽ, कियो अन्हारमे नुकाएल झूठ फैला, केकरो जीवन कठिन कऽ दैत छल। बूढ़बा कहलनि — 'पहिल परदापर चेहरा चमकल, पाछाँ नाम अन्हार। जे स्क्रीन देखलक, से अपन आँखि असली गामकेँ बिसरए नहि दिअय।'

अध्याय –३६

अनदेखल ठगक पहिल आहट

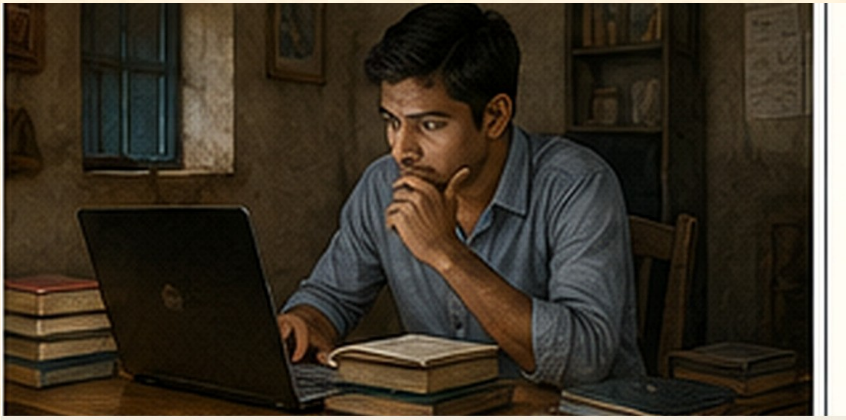

सपनाक जमानामे, गामक एकटा युवक, नौकरीक झांसामे, अपन सम्पूर्ण जमा–पूँजी एकटा फर्जी ऑनलाइन कम्पनीकेँ गमा देलक। कम्पनी असली

लागैत छल — ओकर वेबसाइट छल, दफ्तरक पता छल — मुदा ओ दूर देशसँ, अनदेखल हाथसँ, संचालित भेल छल।

पुलिसमे रपट लिखाओल गेल, मुदा जकरा देखिये नहि सकल जाय, तकरा केना पकड़ल जाय? बूढ़बा गम्भीर भऽ कहलनि — 'जे ठग देखाइ नहि दै, से सभसँ पैघ। ई नव गोहि छी — ई पोखरिमे नहि, जालमे बसै छै। आहट सुनू, नाम पुछू; कागचपर नहि, अपन आँखिपर विश्वास राखू।'

अध्याय –३५

देहक बजार खुजैत अछि

राजीवक जमानामे, नौकरीक झांसाक ठगी आओर भयावह भऽ गेल — पहिने ठग केवल पाइ लैत छल, आब ओ ‘अच्छा काज’क झूठ वादापर लोककेँ बहला कऽ दूर लऽ जाय लागल, आ किछु लोक फेर घुरि नहि आयल।

गामक एकटा घरमे, एकटा बेटा एहने वादापर गेल आ बरखों धरि कोनो समाचार नहि आयल; ओकर माएक आँखि हर बाट ताकैत रहलि। बूढ़बा बहुत विचलित भेलाह — ‘जतय मनुखकेँ बेचबाक चीज बुझल जाय, ओतय नाम सस्त भऽ जाइ। मुदा जे गाम अपन नाम राखै, से अपन लोककेँ बजार बनए नहि दै। पुछू, जाँचू — अनजानक वादापर अपन बच्चा कहियो नहि पठाउ।’

अध्याय –३४

उज्ज्वलक स्वप्न

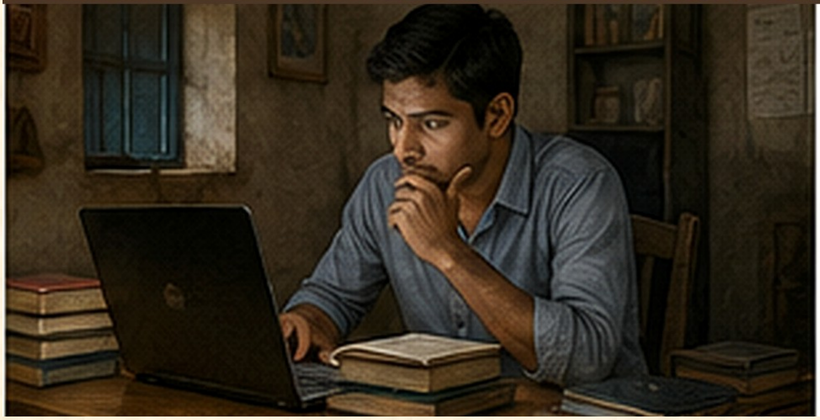

राजीवक जमानामे, गामक एकटा गरीब परिवारमे एकटा बच्चाक जन्म भेल। घरमे सामान्य आनन्द छल —– सोहर गाओल गेल, गुड़ बाँटल गेल, आ बच्चाक नाम राखल गेल उज्ज्वल झा।

मुदा गामक लोक बूढ़बाकेँ कहियो एतेक अशांत नहि देखने छल। ओ बेर–बेर ओहि गरीब घर दिस तकैत, किछु बजबाक प्रयास करैत, फेर चुप भऽ जाइत। अन्तमे ओ मृदु स्वरमे कहलनि —– ‘पैघ स्वप्न देखू, बुच्चा, मुदा जड़ि माटिमे राखू। जे स्वप्न अपन नाम बिसरि जाइ, से जागि कऽ अकेल रहि जाइ।’

अध्याय –३३

वकीलक कोटक छाया

दीपालीक जमानामे, गामक एकटा तेज–तर्रार युवक — नाम बटुकनाथ — कानूनक पढ़ाइ कऽ शहरमे वकालत शुरू केलक। गाम ओकरापर गर्व

करैत छल — जे बालक कहियो नारिकेल पातपर नाम लिखने छल, से आब अदालतमे बहस करैत छल।

मुदा शक्तिशाली मुवक्किलक संग ओकर रस्ता बदलय लागल — जीतक स्वाद, पाइक चमक, शक्तिक नशा ओकरा डेग–डेग ओहि बाटसँ हटबैत गेल। बूढ़बा उदास भऽ कहलनि — 'न्याय कोटक छायामे नुका सकै, मुदा गाममे बाजिते रहै। वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै। ओ बिसरय नहि जे साँच कोन छी।'

अध्याय – ३२

समुद्रपारक साये

दीपालीक जमानामे, वैश्विक व्यापार आ डिजिटल वित्तक जालसँ, गामक ठगीक कथा अब समुद्रपार धरि जुड़ल देखाइ पड़य लागल। जे पाइ गामक गरीब हाथसँ गेल, से दूर देश धरि पहुँचल।

एकटा रिपोर्टमे दूर कोनो शहरक शीशाक ऊँच मीनारक फोटो छल, आ ओहि मीनारक भीतर बसल कोनो अनदेखल शक्तिक चर्चा, जे हजारों मील दूरसँ हजारों लोककेँ ठगैत छल। बूढ़बा कहलनि — 'सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै, मुदा नाम लऽ नहि जा सकै। जे दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाइ। हिसाब राखू — पात मन राखै छै, जखन आँखि नहि देखि सकै।'

अध्याय –३१

सत्यव्रतक मौन

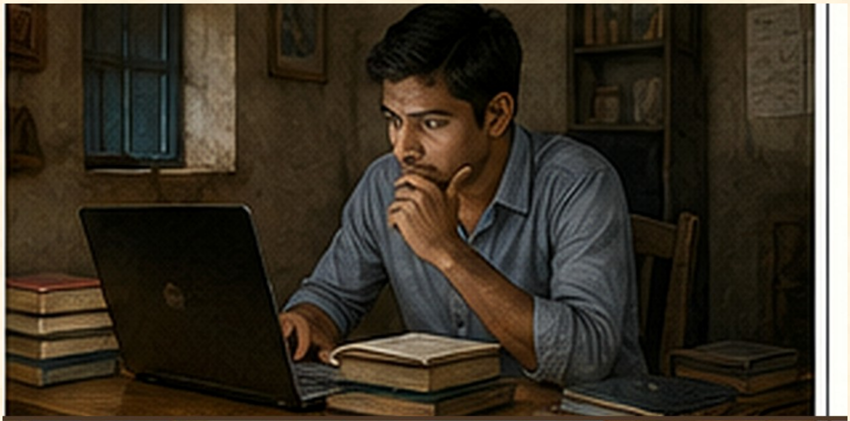

अभिनवक जमानामे, गामक एकटा शांत, ईमानदार युवक — नाम सत्यव्रत मेहता — नगरक एकटा बैंकमे नौकरी पओलक। ओ ओहि तरहक मनुष्य छल जे बेसी नहि बजैत, मुदा सभटा देखैत छल।

धीरे–धीरे ओ किछु संदेहास्पद खाता देखय लागल — पैसा आबैत, तुरंत आगू बढ़ि जाइत, बिनु स्पष्ट कारणक; लाखों अबैत, आ पल भरिमे गायब भऽ जाइत। ओ चुप रहि, सभटा देखैत, सत्य जुटबैत रहल। बूढ़बा कहलनि — 'जे बहुत काल चुप रहल, तकर एक बोल सभसँ भारी होइ छै। सत्यव्रतक मौन सेहो एकटा गवाही छल।'

अध्याय –३०

गोप कुमारक दस्तावेज

सत्यव्रतक जमानामे, गामक एकटा आर युवक — नाम गोप कुमार — यादवानन्द आ विभाक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, अभिलेखीकरण आ

अनुसंधानमे अपन जीवन लगा देलक। जे बालक कहियो नारिकेल पातपर नाम लिखने छल, से आब पुरान नक्शा, पुरान पंजी आ नव डिजिटल अभिलेख —— सभटा एक ठाम जोड़य लागल।

जे नाम यादवानन्द रातिक अन्हारमे लिखने रहथिन, जे कागच विभा सूचनाक अधिकारसँ आनने छलि —— गोप कुमार सभकेँ एक सूत्रमे बान्हलक। बूढ़बा कहलनि —— 'जे लिखल राखलक, से समय बचबै। दस्तावेज देह नहि, नाम बचबै छै।'

अध्याय –२९

चन्द्रपालक सपना

गोप कुमारक जमानामे, गामसँ जुड़ल एकटा दूरस्थ सम्बन्धी परिवारमे, मेरठमे, एकटा बच्चाक जन्म भेल —– चन्द्रपाल बत्रा। ओ परिवार बरखों पहिने गाम छोड़ि, नगर–नगर भटकल छल।

गामक लोककेँ अचरज भेल —– बूढ़बा एहन बच्चाक हेतु किएक चिन्तित छथि, जे गामसँ सैकड़ों मील दूर जन्मल? बूढ़बा कहलनि —– 'सपना ओकर आँखिमे, मुदा धोखा ओकर पएरमे भऽ सकै। जे बिनु बुझल हस्ताक्षर करै, से जालमे फँसि जाइ। कियो, कहियो, ओकरा हस्ताक्षरसँ पहिने पढ़ब सिखा दिअय।'

अध्याय –२८

राघवक कोड

अभिनवक परिवारक एकटा शाखामे, नगरमे, राघव नामक एकटा बच्चा जन्म लेलक, जकर मस्तिष्क कोड आ यंत्रक हेतु असाधारण छल। छोटहि उमरमे ओ कम्प्यूटरक भाषा सहजतासँ सिखि लेलक।

किशोर उमरमे ओ एहन काज केलक जे लोककेँ चकित कऽ देलक — कोनो जटिल यंत्र ठीक कऽ देलक, कोनो नुकाएल गलती पकड़ि लेलक। मुदा ओ प्रतिभा दुनू दिस जा सकैत छल। बूढ़बा कहलनि — 'जे भाषा यन्त्र बुझै, से गाम नहि बुझै। मुदा कोडक भीतरो एकटा नाम नुकाएल रहै छै। ओ अपन हुनरसँ नाम उघारय, नुकाबय नहि।'

अध्याय –२७

आरुणिक निर्माण

गोप कुमारक जमानामे, गामक एकटा युवा — नाम आरुणि — इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कऽ, पुल आ बान्ह–निर्माणक काजमे जुटल। ओ अपन

बचपनक बाढ़िक कथा आ इन्द्राणीक पूर्व–चेतावनी मोन राखि, गामक पुरान बान्हकेँ नव रूप देलनि — माटिक बान्हक जगह पक्का बान्ह, आ बाढ़िक पूर्वानुमानक हेतु नव यंत्र।

मुदा ओ ई सेहो जनैत छलाह जे सभसँ मजगूत बान्ह एकटा जागल, ईमानदार आँखि छी। बूढ़बा कहलनि — 'जे बनबै, से पहिने अपनाकेँ गढ़ै। आरुणि छपाकसँ पहिने अपन आँखि गढ़लक।'

अध्याय –२६

देविकाक गीत

आरुणिक जमानामे, गामक एकटा युवती —— नाम देविका —— मोहनक धुन–परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, गामक हर पुरान लोकगीत —— हुलासाक, जीवन्तीक, गंगेशक —— नव सुर आ नव वाद्ययंत्रसँ सजौलक।

ओ गामक बूढ़ स्त्री सभ लग बैसैत, हुनकासँ ओ पुरनका गीत सुनैत जकरा आब बहुत कम लोक जनैत छल —— कोनो बाढ़िक गीत, कोनो सोहर, कोनो समदाउन —— आ सभकेँ अपन कण्ठमे बचा लेलक। बूढ़बा कहलनि —— ‘गीत जकर कण्ठ, न्याय तकर स्वर। जे गीतमे नाम पुकारल, से गाम भरि गूँजल।’

अध्याय –२५

मीराक निजता

देविकाक जमानामे, गामक एकटा तेज–तर्रार युवती — नाम मीरा — नगरमे पढ़ाइ कऽ, डिजिटल निजता आ महिला–सुरक्षाक विषयपर काज करय लागलि। ओ सपनाक ‘डिजिटल राति–सभा’केँ आगू बढ़ौलक।

ओ देखलक जे नव–नव अन्याय जन्म लऽ रहल छल — कोनो स्त्रीक फोटो चोरा, कोनो स्त्रीक सूचना बेचि, कोनो स्त्रीक नामकेँ अनुमति बिनु उपयोग कऽ। मीरा हुनकर रक्षा करय ठाढ़ भेलि। बूढ़बा कहलनि — ‘जकर कथा, तकर अनुमति। नाम कोनो नमूना नहि — मीराक कथा मीराक अपन छी।’

अध्याय –२४

निशांतक बैंक

मीराक जमानामे, गामक एकटा युवक — नाम निशांत — बैंकिंगक पढ़ाइ कऽ, ग्रामीण वित्तीय समावेशनक काजमे जुटल — गामक हर परिवारकेँ

बैंक–खाता, बीमा आ ऋणक सुविधा देबय। निशांत चाहैत छल जे पुरनका अन्याय फेर नहि दोहराय।

मुदा ओ देखलक जे बैंकक कागच आ भाषा गामक अनपढ़ किसानक हेतु ओतबे अनचिन्हार छल। तँ ओ धैर्यसँ सभकेँ सिखौलक। बूढ़बा कहलनि —– 'जकर खाता साफ, तकर मन थिर। मुदा जे खातामे नाम बेचलक, से हिसाबमे हारल।'

अध्याय –२३

नन्दक जन्म

निशांतक जमानामे, आरुणिक अपन घरमे एकटा बेटाक जन्म भेल, जकर नाम राखल गेल नन्द। जन्मक राति, पीपरक साक्षी–गाछ असाधारण रूपसँ शांत आ स्थिर छल, जेना ओ स्वयं किछु देखि रहल हो।

घरमे सामान्य आनन्द छल —— सोहर गाओल गेल, नाच–गान भेल, गुड़ बाँटल गेल। मुदा जे लोक बूढ़बाकेँ चिन्हैत छल, से लक्ष्य केलक जे बूढ़बा एहि जन्मपर एकटा विशेष आशीर्वाद देलनि। बूढ़बा मृदु स्वरमे कहलनि —— 'जे जन्म लै छै, से एकटा नव नाम अनै छै। नन्दक जन्म गामकेँ नव साक्षी देलक।'

अध्याय –२२

बारह सयक निकट

नन्दक जन्मक बाद, एक साँझ गोप कुमार बूढ़बाक सम्पूर्ण कालक्रम जोड़य बैसलाह — वाचस्पति मिश्रक जमानासँ आइ धरि। ओहि कालक्रममे सैकड़ों

नाम छल —– हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, सावित्री, आ हुनकर बाद अनगिनत पीढ़ी।

एहि सभ नामक बीच, एकटा नाम हर पीढ़ीमे थिंर ठाढ़ छल —– गाम स्वयं, ओकर स्मृति, ओकर साक्षी। गोप कुमार बुझलक —– गाम बारह सय बरखक निकट पहुँचि गेल अछि। बूढ़बा कहलनि —– 'बारह सय बरख एक साँसमे नहि बीतल। जे गाम एतेक झेललक, से अन्त लग ठाढ़ अछि —– आ अन्त सेहो एकटा नव आरम्भ छी।'

अध्याय –२१

अनन्याक प्रश्न

नन्दक बचपनहिमे, गामक एकटा युवा शिक्षिका — नाम अनन्या — नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिक शाखामे पढ़ाबय आयलि। ओ ओहि

तरहक शिक्षिका छलीह जे बच्चाकेँ उत्तर रटाएब नहि, प्रश्न पुछब सिखबैत छलीह।

गामक बूढ़–पुरान पहिने चकित भेलाह, मुदा धीरे–धीरे ओ देखलनि जे अनन्याक बच्चा सभ कोनो बातकेँ आँखि मूनि नहि मानैत — ओ 'किएक?' आ 'केना जानी?' पुछैत छल। बूढ़बा प्रसन्न भेलाह — 'छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दै छै। जे पुछब सिखलक, से नाम बचेलक।'

अध्याय –२०

छपाकक पहिल हिसाब

अनन्याक शिक्षाक बाद, नन्द बड़का भऽ, इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कऽ, अपन बाबा आरुणिक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, एकटा पुल–निर्माण स्थलपर काज

करय गेल। ओतय ओ मजदूरक हाल देखल — टूटल झोपड़ी, कम मजदूरी, सुरक्षाक कमी।

आ एक दिन ओ एकटा एहन कथा सुनल जे ओकरा भीतर धरि हिला देलक — एकटा मजदूर पुलक काजमे पानिमे खसि गेल, आ रजिस्टरमे ओकर नाम केवल 'अनुपस्थित' लिखल गेल। नन्द ओहि दिनसँ हर नामक अपन हिसाब राखय लागल। बूढ़बा कहलनि — 'पहिल छपाक — पहिल नाम पानिमे। जे हिसाब राखलक, से गोहिकेँ सेहो गवाह बनेलक।'

अध्याय –१९

सत्यव्रतक निर्णय

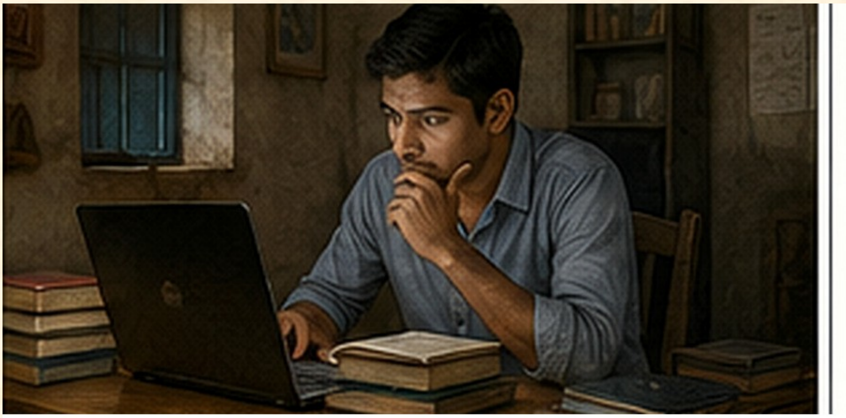

नन्दक पढ़ाइक बीच, सत्यव्रत मेहता — आब बैंकक एकटा वरिष्ठ पदपर — अपन पुरान नोटबुक फेर सँ खोललनि, जाहिमे वर्षों पहिने लिखल संदिग्ध

लेनदेनक विवरण छल। ओहि पैटर्नमे, पाइ एकटा खातासँ दोसर, दोसरसँ तेसर, आ अन्ततः कोनो दूर समुद्रपार खाता धरि पहुँचैत छल। किछु नाम बेर–बेर आबैत छल।

सत्यव्रत बहुत काल चुप रहि, सत्य जुटौने छलाह; आब ओ काज करबाक निर्णय लेलनि। बूढ़बा कहलनि —– ‘जे निर्णय देरसँ आयल, से सभसँ थिर। सत्यव्रत चुप रहल, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़ भेल।’

अध्याय –१८

अनन्या आ नन्दक भेंट

नन्द, अपन इंजीनियरिंगक पढ़ाइ पूर्ण कऽ गाम घुरल, आ नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिकीकरणक एकटा परियोजनामे अनन्याक संग काज करय लागल —— गामक विरासतकेँ डिजिटल रूपमे बचाबय।

अनन्या गामक हर पुरान कथा, हर लोकगीत, हर पंजी जनैत छलीह; नन्द ओकरा डिजिटल, स्थायी रूपमे राखब जनैत छल। दुनूक काज एक–दोसराकेँ पूर्ण करैत छल —— जेना पात आ कलम। बूढ़बा मुस्कुरा कऽ कहलनि —— 'दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा शुरू। जकर उद्देश्य एक, तकर पएर संग चलै।'

अध्याय –१७

शीशाक मीनारक जाल

नन्दक जमानामे, समाचारमे बेर–बेर हांगकांगसँ संचालित एकटा विशाल डिजिटल ठगीक जालक कथा आबय लागल, जकर संचालक लाउ किन–

हंगक नामसँ जुड़ल छल। ई जाल एहन ढंगसँ बनल छल जे केओ ओकर पूरा रूप नहि देखि सकैत छल।

एक कात कोनो युवककेँ ‘अच्छा नौकरी’क वादा, दोसर कात कोनो निवेशककेँ ‘दुगुना पैसा’क लोभ, आ बीचमे अनगिनत नाम फँसल। बूढ़बा कहलनि —– ‘शीशाक मीनार दूरसँ चमकै, भीतर जाल। जे चमकपर मुग्ध, से जालमे बान्हल। चमकसँ नहि भुलाउ —– चमकक पाछाँक नाम पुछू।’

अध्याय –१६

बटुकनाथक अंतिम मोड़

अनन्याक चेतावनीक कतेक मास बाद, समाचार आयल जे बटुकनाथ हरिहरन — आब एकटा प्रतिष्ठित मुदा संदिग्ध वकील — कतेको बड़का

ठगी–मामलाक बचाव–पक्षमे काज करय लागल छथि। ओकर नाम आब शहरक ओहि वकील सभमे गनल जाइत छल, जिनका बड़का दोषी अपन बचाव लेल खोजैत छलाह।

ओ जीतैत छल, धनी होइत छल — मुदा हर जीतक बाद ओकर भीतर किछु भारी होइत जाइत छल। बूढ़बा कहलनि — 'जे बाट गलत, तकर अन्तो मोड़ मांगै। आ अन्तमे, बटुकनाथ अपन नाम दिस घुरल।'

अध्याय –१५

चन्द्रपालक खाता

नन्दक जमानामे, समाचार आयल जे चन्द्रपाल बत्रा — ओ दूरक सम्बन्धी जकर नाम बूढ़बा बहुत बरख पहिने धेने रहथिन — सट्टाक भारी ऋणमे फँसि गेल छल। ऋणक बोझसँ हारल, ओ ठगीक जालमे खिंचा गेल।

चन्द्रपालकेँ पूर्ण रूपसँ नहि बुझल छल जे ओ की कऽ रहल अछि — ओकरा कहल गेल छल जे ई केवल 'कमीशनक काज' थिक। मुदा ओ नहि जनैत छल जे ओ एकटा पैघ जालक गाँठ बनि रहल अछि। बूढ़बा उदास भऽ कहलनि — 'जे खाता बुझल नहि, तकरो हस्ताक्षर भारी। अज्ञानता सेहो जालक एकटा गाँठ छी। हस्ताक्षरसँ पहिने बुझू।'

अध्याय –१४

पुलक निर्माण

नन्द, अपन कौशलक बलपर, गामक निकट कमला–बलानपर बनि रहल एकटा नव पुलक निर्माण–स्थलपर मुख्य इंजीनियरक सहायक नियुक्त भेल। ई पुल गामकेँ, बहुत बरख बाद, ओहि पार जोड़त।

नन्द पुल बनायब सिखने छल —– मुदा ओकर प्रश्न–पुछनिहार आँखि किछु एहन देखलक जे ओकरा चिंतित कऽ देलक —– मजदूरक सुरक्षाक कमी, बिनु हेलमेटक ऊँचाइपर काज, आ ठेकेदारक लापरवाही। बूढ़बा कहलनि —– ‘पुल दू कातकेँ जोड़ै, मुदा पानिकेँ नहि बिसरै। जे पुल बान्हल, से बाढ़िक बात आ बनौनिहारक नाम मन राखल।’

अध्याय –१३

गोप कुमारक संकलन

गोप कुमार, आब वृद्ध, अपन जीवन भरिक संकलनकेँ एक ठाम राखय बैसलाह — यादवानन्दक छाया-पंजीसँ लऽ कऽ, हरिपति कविक पोथी, गंगाधरक छापाखानाक प्रयास, आ आधुनिक डिजिटल अभिलेख धरि।

जेना-जेना ओ पन्ना जोड़ैत गेलाह, ओकरा बुझायल जे सभटा धागा एक ठाम आबि रहल छल — शंख आ रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु, बटुकनाथक मोड़ — हर नाम एक पैघ बुनाइक एकटा धागा। बूढ़बा कहलनि — 'जे नाम-नाम जोड़ि राखलक, से इतिहास बनेलक। संकलन देह नहि, स्मृति बचबै छै।'

अध्याय –१२

चन्ना गाछीक कँपकँपी

एक साँझ, बिनु कोनो स्पष्ट कारणक, चन्ना गाछीक हर गाछ —— पीपरसँ लऽ कऽ हर चन्नाक गाछ धरि —— एक संग हल्का काँपल, यद्यपि हवा पूर्ण शांत

छल। कोनो झोंका नहि छल। गामक लोक, ई अनुभव कऽ, भयभीत भऽ पीपर लग जुटल।

बूढ़–पुरान मोन पाड़लनि जे एहन कँपकँपी ओ पहिने केवल दू–चारि बेर देखने छलाह — आ हर बेर, ओकर बाद, गाममे किछु पैघ भेल छल। बूढ़बा चुप रहलाह, मुदा हुनकर पुरान बात मनमे गूँजल — 'गाछी काँपल, गाम सुनल — किछु होएबला छै। जे गाछी बाजै, तकरा गाम बुझै।'

अध्याय –११

बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

चन्ना गाछीक कँपकँपीक अगिला राति, बूढ़बा नन्दकेँ अकेले पीपर लग बजौलनि। पीपरक तर केवल एकटा दीप जरैत छल, आ ओकर मन्द इजोतमे, बूढ़बाक चेहरापर एकटा गम्भीर स्नेह छल।

नन्द चुप रहल —– ओ बूढ़बाकेँ बचपनसँ चिन्हैत छल, मुदा आइ बूढ़बाक स्वरमे जे बात छल, से केवल कथा नहि —– से एकटा विदाइ–सन, एकटा हस्तांतरण–सन छल। बूढ़बा आशीर्वाद देलनि —– 'आशीर्वाद देह नहि, नाम दै छै। नाम सभकेँ मन राखू, नन्द। साक्षी बनू।' आ बूढ़बाक ओ अन्तिम बोल अगिला पीढ़ीक बीया बनल।

अध्याय –१०

पुलपर पहिल छपाक

एक राति, पुल–निर्माणस्थलपर, आकाशमे कोनो चान नहि छल, आ नदीक धार, बरसातक बाद, अपन पूरा जोरपर छल। थाकल मजदूर सभ अन्हारमे, बिनु पूरा इजोतक, काज कऽ रहल छलाह।

अचानक, अन्हारमे, एकटा मजदूर — जकर नाम अखनहु अस्पष्ट छल — नदीमे खसि गेल। 'छपाक'क आवाज गामक निकटतम टोला धरि सुनाइ पड़ल — ओ एक्के आवाज, जे बरख–दर–बरख गाम सुनैत आयल छल। नन्द ठानि लेलक — ई नाम नहि हेराओत। बूढ़बाक बोल गूँजल — 'पुलपर पहिल छपाक — पानिमे पहिल नाम। जे ओतय डुबल, तकरो नाम पातपर उठल।'

अध्याय –९

जाँचक आरम्भ

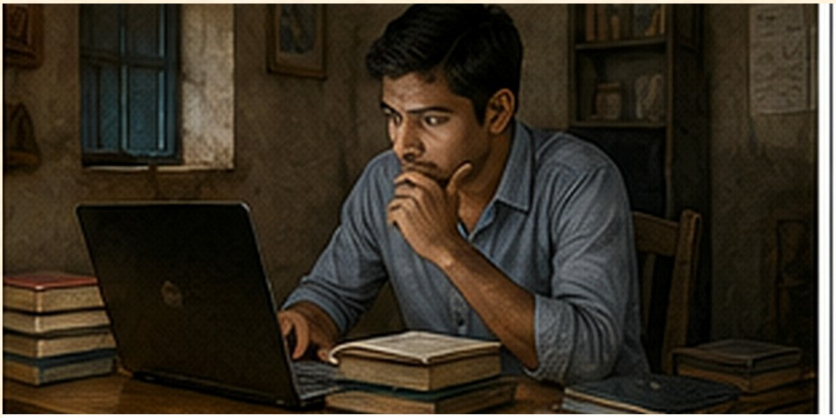

पुल–दुर्घटनाक बाद, नन्द अपन डायरीमे ओहि मजदूरक नाम खोजबाक काज शुरू केलक। ओ ठेकेदारक कागच माँगलक, हाजिरी–पंजी देखलक, आ मजदूरक संगी सभसँ पुछलक।

मुदा जते ओ खोदलक, ततेक बुझायल जे ई कोनो साधारण दुर्घटना नहि छल —– जे कम्पनी पुल बना रहल छल, ओकर कागच स्पष्ट नहि छल, मजदूरक नाम असली नहि छल, आ पाइक लेनदेन संदेहास्पद छल। बूढ़बा कहलनि —– 'जाँच पाइन खोदब जकाँ —– पहिने कादो, फेर पानि। जे खोदब शुरू केलक, से सत्य लग पहुँचत। खोदैत रहू, नन्द।'

अध्याय –८

प्रमाणक बाहर आएब

सत्यव्रत, गोप कुमारक सहायतासँ, अपन नोटबुकक सम्पूर्ण प्रमाण एकटा विश्वसनीय पत्रकार आ एकटा ईमानदार जाँच–एजेंसी धरि पहुँचौलनि। बरख–दर–बरख जमा भेल हर धागा आब बाहर आयल।

जेना–जेना प्रमाण बाहर आयल, तेना–तेना जालक रूप स्पष्ट होमय लागल —— उज्ज्वल झाक कर्जदार बनब, बटुकनाथक कानूनी सहायता, चन्द्रपालक म्यूल एकाउण्ट, आ लाउ किन–हंगक मीनार —— सभटा एक–दोसरासँ जुड़ल, एक्के जाल। बूढ़बा कहलनि —— 'जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल, से एक दिन भोर देखत। सत्य पानिक तलमे रहै, मुदा उतराइ जरूर।'

अध्याय –७

आधा-भूतक अनुभव

एक राति, थाकल आ शोकाकुल, नन्द पीपरक जड़ि लग सुति गेल। ओहि दिन ओ पुल–दुर्घटनाक मरल मजदूरक नाम खोजैत रहल छल, आ ओहि शोकक बोझ ओकर देहकेँ थकाइ देने छल।

सपनहिमे, ओ बूढ़बाकेँ पहिल बेर किछु स्पष्ट देखलक —– एकटा वृद्ध आकृति, डारिपर बैसल, धुआँ आ इजोतक बीच। ओकर चेहरा पूरा स्पष्ट नहि छल, मुदा ओकर आँखि स्नेह आ ज्ञानसँ भरल छल। बूढ़बा कहलनि —– ‘आधा सत्य आ आधा भूत —– दुनू डेराबै छै। मुदा जे पूर्ण नाम जनै, से आधा–भूतसँ नहि डरै। पूरा नाम ताकू, नन्द, आ तोहर डर चलि जायत।’

अध्याय –६

गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

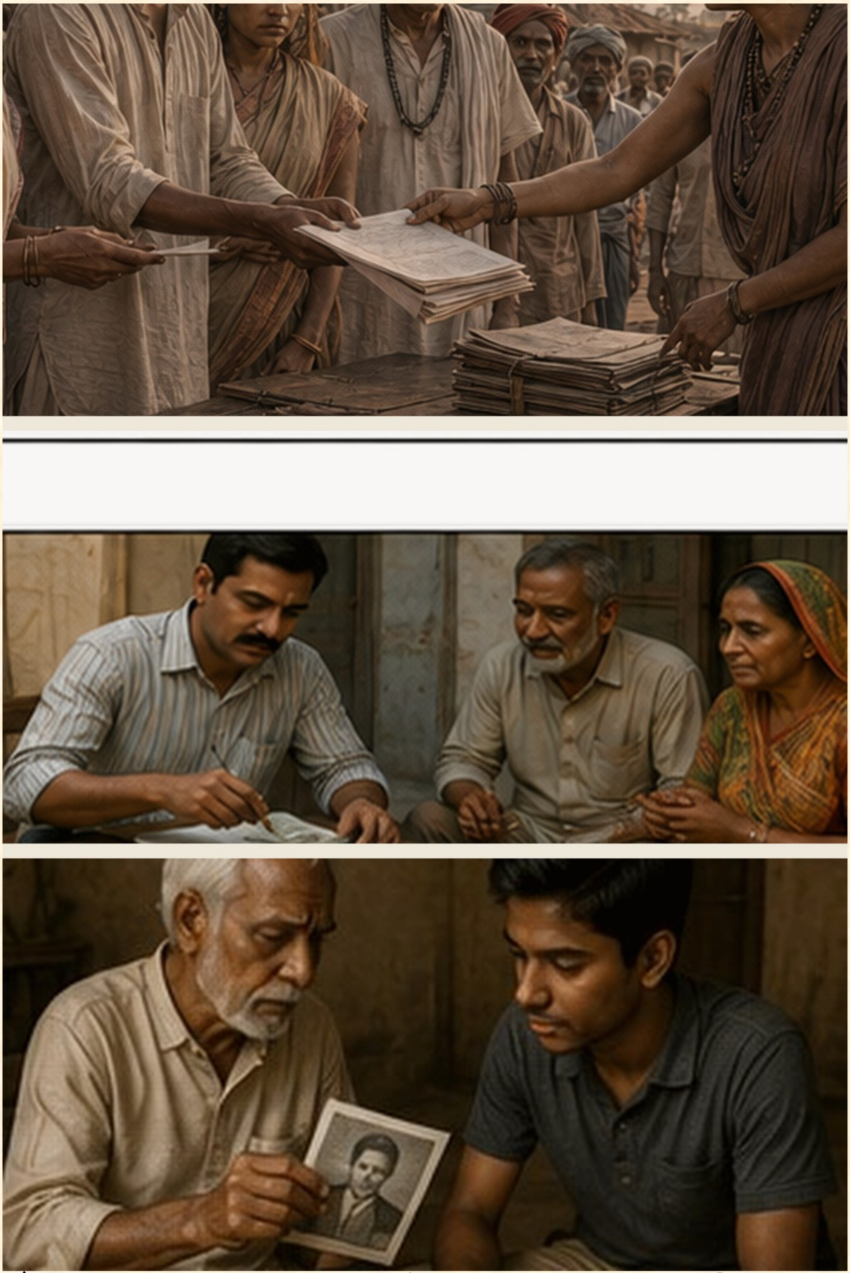

गोप कुमार, अत्यन्त वृद्ध, अपन जीवन भरिक संकलनक अन्तिम पन्ना पूर्ण केलनि — वाचस्पति मिश्रसँ लऽ कऽ आइ धरिक, बूढ़बाक सम्पूर्ण कथा।

ओकर हाथ आब काँपैत छल। ओहि संकलनमे शताब्दियोंक स्मृति समाएल छल —— शंख-रजतक भ्रमसँ लऽ कऽ, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु, यादवानन्दक छाया-पंजी, आ आइक डिजिटल अभिलेख धरि।

ओकरा पूर्ण कऽ, गोप कुमार नामक ओ पूरा भार नन्द आ अनन्याक हाथमे सौंपि देलनि —— आ हल्लुक भऽ गेलाह, जेना जीवन भरिक बोझ उतरि गेल हो। बूढ़बा कहलनि —— 'अन्तिम पन्ना जकर हाथ, से कथाक भार उठबै। गोप कुमार नाम सौंपि कऽ हल्लुक भेल।'

अध्याय –५

जालक उजागर होएब

महीनों धरि जाँचक बाद, सत्यव्रत आ नन्दक प्रमाण, अन्ततः, ठगीक जालक स्थानीय रूपकेँ उजागर केलक। बटुकनाथक स्थानीय सहभागिता आ चन्द्रपालक म्यूल–खाता, दुनू स्पष्ट भऽ गेल।

बटुकनाथपर कानूनी कार्रवाइ शुरू भेल —– ओहि प्रतिष्ठित वकीलकेँ, पहिल बेर, स्वयं अदालतक सोझाँ ठाढ़ होएब पड़ल। बूढ़बा कहलनि —– ‘जाल जखन उघरल, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल। जे जाल देखलक, से गोहिकेँ चिन्हलक।’

अध्याय –४

नामक अन्तिम सूची

नन्द, महीनों केर खोजक बाद, पुल–निर्माणस्थलपर मरल हर मजदूरक असली नाम पता लगाबय सफल भेल। ओ गाम–गाम गेल, परिवार–परिवार खोजल, ठेकेदारक कटल कागच आ मजदूरक बिसरल पता ढूँढलक।

तीस नाम — ओहि कथासँ जुड़ल जकरा आधिकारिक हिसाब बिसरि गेल छल। नन्द ओहि तीसो नामकेँ, अपन ‘छपाकक हिसाब’ डायरीमे, एक–एक कऽ दर्ज केलक — हर नामक कात, ओकर परिवार, ओकर कथा। बूढ़बा कहलनि — ‘जे नाम छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल। सूची पूरी भेने गोहिक हिसाब पूरा भेल।’

अध्याय –३

बारह सय बरखक पूर्णता

एक अमावस्याक राति, नन्द, अनन्या, आ गामक हर मनुष्य चन्ना गाछी लग जुटल — कबड्डीक हेतु, ठीक ओहिना जेना सैकड़ों बरखसँ जुटैत आयल

छल। ई खेल केवल खेल नहि छल; ई गामक नाम–स्मरणक सभसँ पुरान अनुष्ठान छल।

ई बेर, पहिल बेर, नन्दक नाम सेहो खेलमे शामिल भेल। जे नन्द एतेक दिन केवल साक्षी छल, से आब स्वयं खेलमे उतरल —– आ जखन ओकर पारीक बेर आयल, तखन गाम भरि चुप भऽ गेल। बूढ़बा कहलनि —– 'बारह सय बरखक गोल पूरा भेल —– अमावसक राति। जे आरम्भ, वैह अन्तमे ठाढ़।'

अध्याय –२

अगिला पीढ़ीक वचन

कबड्डीक बाद, ओहि अमावसक अन्हार आर पातर होइत, नन्द आ अनन्या, गामक हर युवाकेँ बजा, पीपर लग एकटा नव प्रतिज्ञा लेलनि। जे नाम अखने खेलमे पुकारल गेल छल, से अखनहु हवामे गूँजि रहल छल।

युवा सभक आँखिमे ओ इजोत छल जे बूढ़बा बरख–दर–बरख देखय चाहैत रहथिन —– ओ इजोत, जे कहैत अछि जे कथा मरत नहि, किएक तँ ओकरा उठाबय बला हाथ अखनहु अछि। युवा सभ वचन देलक —– 'हम नाम केवल पकड़ि नहि राखब —– हम ओकरा सुनब, आ आगू बढ़ाएब।' बूढ़बा कहलनि —– 'जे वचन अगिला पीढ़ी लै, से गाम बचबै। नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति छी।'

अध्याय –१

अन्तिम साक्षी

एक अन्तिम साँझ, बूढ़बा नन्दकेँ अकेले पीपर लग बजौलनि। 'नन्द,' ओ बजलाह, 'हम अहाँकेँ एकटा बात कहय चाहैत छी, जकरा हम बरख–दर–

बरख अनुभव करैत रहलहुँ — अहीं ओ छी, जकर बाट पूरा गाम जोहैत रहल। अहीं एकर नव साक्षी छी।'

नन्द, स्तब्ध, पुछलक — 'बूढ़बा, अहाँकेँ ई कोना बुझल? ' बूढ़बा मुस्कुरा कऽ कहलनि — 'किएक तँ जखन नाम डुबि रहल छल, अहाँ भागल नहि। अहाँ रुकलहुँ, आ पुछलहुँ। बस, इएह सभटा छी।'

आ बूढ़बा नन्दकेँ गामक अन्तिम, आ पहिल, फकरा देलनि — 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।' नन्द ओकरा अपन डायरीमे लिखि लेलक। आ एहि तरहेँ, बारह सय बरख पुरान गढ़ नारिकेलक कथा, नन्दक हाथमे आबि गेल — आ एकटा नव कथा शुरू भेल।

अध्याय १

चन्ना गाछीक कबड्डी

गढ़ नारिकेल गाममे एकटा पुरान गाछ छल —— चन्ना गाछी। दिनमे ओतय बच्चा सभ खेलैत छल। मुदा राति होइते, गामक लोक कहैत छल, ओतय दोसरे तरहक खेल शुरू होइत छल।

ई खेल छल कबड्डी —— मुदा खेलनिहार भूत छला।

बा कहथिन —— "भूत सभ डरेबाक लेल नहि अबैत छथि। ओ सभ नाम बचेबाक लेल अबैत छथि।"

चन्ना गाछीक भूतक राजा छला बूढ़बा भूत। ओ बारह सय बरखसँ एक्कैटा डारिपर बैसल छला। जखनो कोनो झगड़ा होइत, गामक सभ भूत हुनके बात मानैत छला।

हुलासीक हाथ नहि छल, मुदा ओ सभसँ नीक खेलैत छलि। पनिड्डुब्बी पोखरिसँ आबि कबड्डी देखैत छलि, ओकर लम्बा केश हावामे उड़ैत रहैत छल। पीपरक गाछपर ब्रह्मा बैसल छला, चारि मुँहसँ चारू दिशा तकैत।

ई कबड्डी सोझ खेल नहि छल। जे भूत दोसर दिस दौड़ैत, ओकरा एकटा नाम बजाबय पड़ैत — कोनो एहन लोकक नाम, जकरा गाम बिसरि गेल छल। जँ ओ नाम सही–सही बाजि पबैत, तँ ओ जीति जाइत। नाम बिसरि गेलापर ओ हारि जाइत।

एक राति एकटा अनोखा खेल भेल। दूर शहरमे, गंगा नदीपर, एकटा पैघ पुल बनि रहल छल। ओतय काज करैत एकटा मजदूर दुर्घटनामे खसि गेल छल। ओकर नाम अखबारमे नहि छपल — केवल पुलक फोटो छपल, नेताक भाषण छपल।

चन्ना गाछीक भूत सभकेँ ई बात बुझा गेल। बूढ़बा भूत कहला — "जे नाम कागचसँ मेटाओल गेल, से नाम हमरा सभ अपन खेलमे बचा लेब।"

ओहि रातिसँ कबड्डीक एकटा नव नियम बनल — "नाम–बचाओ कबड्डी।" जे भूत कोनो बिसरायल नामकेँ बजा कऽ सीमा छूइ लैत, ओकर नाम चन्ना गाछीक पातपर हरियर कोंपल जेकाँ उगि जाइत।

गामसँ दूर, ओही पुलपर, नन्द नामक एकटा युवा इंजीनियर काज करैत छला। ओ बहुत भला मोनक मनुष्य छला। ओ मजदूर सभक नाम अपने डायरीमे लिखि राखय लगला — "जँ सरकार नाम बिसरि जाए, तँ हम नहि बिसरब।"

एक राति नन्दकेँ स्वप्न आयल — गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी, ओतय भूत सभ कबड्डी खेलैत, आ सभ मिलिकऽ हुनकर नाम पुकारैत — "नन्द आरुणि, नन्द आरुणि!"

नन्द जागि गेला। हुनकर हाथमे एकटा फाटल गमछाक टुकड़ी छल — कोनो मजदूरक। ओ बुझि गेला जे ई घटना साधारण नहि अछि।

ओही राति गामक बा (बूढ़ी दादी) क देहरीपर एकटा उहे रंगक गमछाक टुकड़ी भेटलनि। ओ माथपर राखि कहलनि — "जेकर छी, हमरा नाम कहू।"

आ चन्ना गाछीक पातपर, भोर होइतहि, तीन अक्षर उगल — ज, ल, स। बादमे स्याही पसरि गेल, मुदा भूत सभ पढ़ि सकल — "जलसमाधि।"

ई शब्दसँ एकटा नव कथा शुरू भेल — नाम बचेबाक कथा, सत्य खोजबाक कथा। आ एहि कथाक पहिल पहरुआ छला — नन्द आरुणि आ गढ़ नारिकेलक भूत सभ।

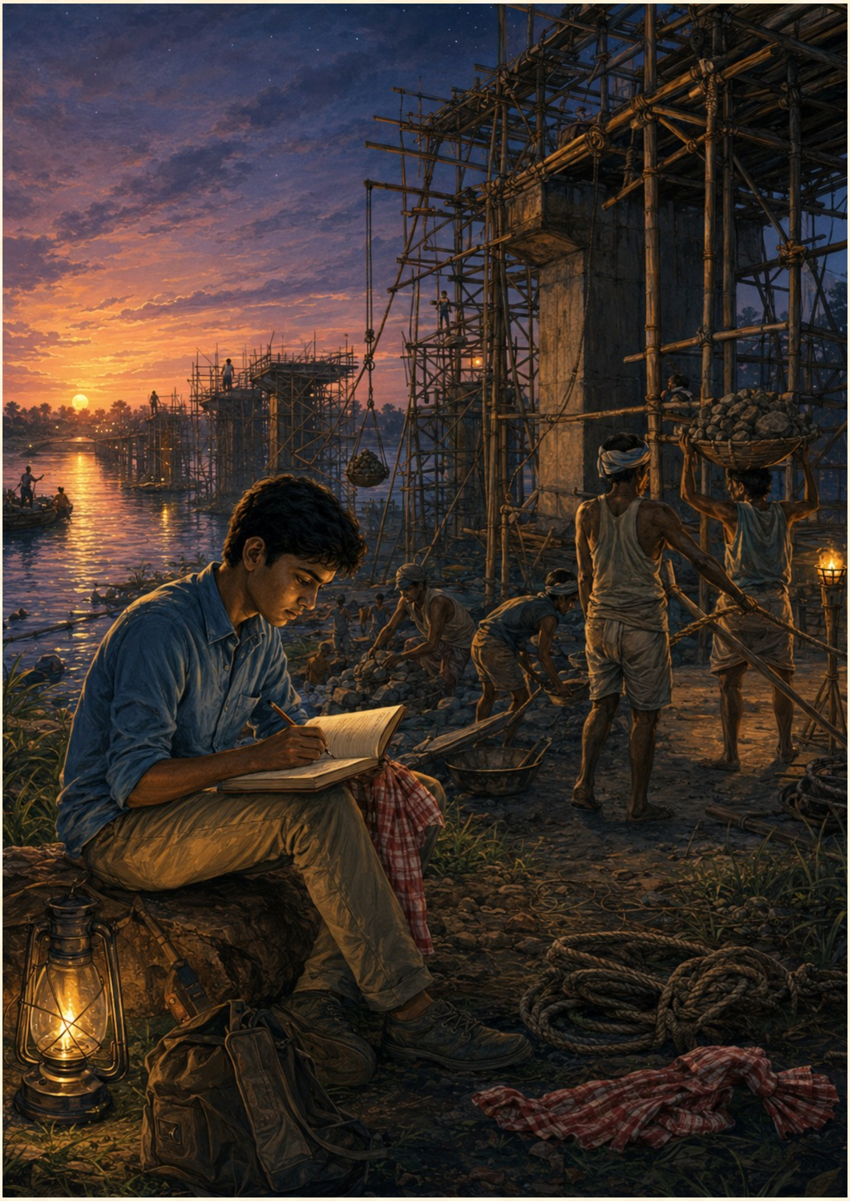

अध्याय २

दहिन कातक गाम

गढ़ नारिकेल गाममे एकटा पुरान कहबत छल — "जकर मेड़ नदी खा लेत, ओकर मुकदमा कागच खा लेत।"

बा अपन घरक एकटा पुरान पेटी खोललनि। भीतर पुरान कागच, पुरान गहना, आ एकटा सुखायल नारिकेल पात छल। ई पात लत्तड़ ठाकुर (बाक ससुर) राखने छला, जखन हुनकर बेटा कलितक जन्म भेल छल।

कलित बहुत तेज बच्चा छला। ओ छोटेमे सभटा नकल करय सिखि गेला। जखन गामक पण्डित सभ मूल–गोत्र पढ़ैत, कलित चुपचाप सुनि क सभटा मोन राखि लैत छला।

अंग्रेजी राज एतय आबि गेल छल। लत्तड़ ठाकुर देखलनि जे जे लोक कागच बुझैत अछि, ओकरे बात मानल जाइत अछि। तेँ ओ कलितकेँ पढ़बाक व्यवस्था केलनि — एकटा बंगाली शिक्षक आनल गेला।

कलित जल्दी अक्षर सिखि गेला। मुदा ओ केवल पढ़ब नहि सिखला, ओ ई सेहो बुझि गेला जे कागचसँ लोकक जमीन, नाम, अधिकार — सभटा बदलल जा सकैत अछि।

एक दिन लत्तड़ ठाकुर अपन बेटाकेँ नदी किनार लऽ गेला। रेतपर चिड़ैयाक पएरक निशान छल। ओ कहलनि — "बौआ, ई निशान काल्हि नहि रहत, मुदा ई एखन सत्य अछि। कागच कहियो-कहियो झूठो राखि सकैत अछि। जँ कोनो कागच पानिसँ भीजल भेटौक, त पहिने ओकर गन्ध सूँघब — माटिक गन्ध होय त विश्वास करब, पैसाक गन्ध होय त सम्हरब।"

समय बीतल। बहुत बरख बाद, नन्द नामक एकटा युवक (लत्तड़ ठाकुरक बहुत दूरका वंशज) पुलक कैम्पमे एकटा भीजल गमछा हाथमे लऽ काँपि रहला। हुनका ई पुरान बात मोन नहि छल, मुदा हुनकर मोनमे उहे सीख जीवित छल — "गन्ध सूँघू।"

गामसँ दूर बा एकटा पुरान पर्ची निकाललनि, जाहिपर पुरान कचहरीक भाषामे "अगली पेशी" (अगिला तारीख) लिखल छल। बा अक्षर नहि पढ़ि सकैत छलीह, मुदा ओ कागचक मन बूझि सकैत छलीह।

बा ओ पर्ची आ गमछा चन्ना गाछी लऽ गेलीह। ओतय बूढ़बा भूतसँ पुछलनि — "जँ ई नामक वस्तु अछि त नाम कहू, जँ तारीखक वस्तु अछि त हम नहि मानब।"

बूढ़बा भूत कहला — "जखन सरकार कोनो बातकेँ मानय सँ इन्कार करैत अछि, तखन ओ बात 'अज्ञात' बनि जाइत अछि। ई गमछा लत्तड़क पुरान मुकदमा नहि, ई नन्दक पहिल गवाही अछि।"

ओही राति नन्द अपन डायरीमे लिखलनि — "मृत्यु ओहि दिन नहि होइत जखन देह रुकैत अछि; मृत्यु ओहि दिन होइत अछि जखन नाम हटैत अछि।"

आ भोरे हुनकर डायरीमे एकटा नव पाँति उगल — "गढ़ नारिकेलसँ आरम्भ कर।"

नन्द बुझि गेला — ई कथा गामसँ शुरू होएत, कारण जकरा पुरखा नहि रहैत, ओकर नाम बचैत नहि अछि।

बा घरमे आबि अपन नातिन आरुणिकेँ माथपर हाथ राखि कहलनि — "कहियो जँ कागच आ मनमे भेद देखह, तँ मनक गन्ध सूँघब। कागच झूठ राखि सकैत अछि, मन बेसी देर नहि राखि सकैत।"

अध्याय ३

छपाकक हिसाब

नन्द अपन आवेदन दफ्तरमे देलनि। दफ्तरक बड़का बाबू दिवाकर लाल कागच देखि क कहलनि — "नन्द बाबू, एहि तरहक भाषा कनी कठोर भऽ गेल अछि।"

नन्द उत्तर देलनि — "सत्य कठोर होइत अछि।"

नन्द मजदूर सभक टोलामे गेला। ओतय बाँस आ तिरपालक झोंपड़ी छल। ओ बिसेसर पासवान नामक मजदूरक बारेमे पूछलनि। ओकर पत्नी धीरे बजली — "तीन दिन पहिने पायापर गेल छल। फेर पानि।"

नन्द पूछलनि — "दफ्तरमे तँ लिखल अछि कि ओ काम छोड़ि चलि गेला।"

स्त्री एकटा फाटल जूता देखबैत कहली — "जँ चलि गेल होइत तँ जूता किएक छोड़ि जइता?"

नन्द बुझि गेला जे दफ्तरक कागचमे झूठ लिखल जा रहल छल। ओ सुरक्षा–बही देखबाक माँग केलनि। पन्ना सभमे सुन्दर–सुन्दर बात लिखल छल —– "सुरक्षा–टोपी बाँटल गेल," "रस्सा जाँचल गेल" —– मुदा असलियतमे मजदूर सभक माथपर टोपी नहि छल, रस्सा पुरान छल।

एक साँझ परियोजनाक बड़का अधिकारी नन्दकेँ अपन कोठलीमे बजौलनि। ओ एकटा लिफाफा नन्द दिस बढ़ौलनि —– "किछु खर्चा–पानि लिअ, ई सभ बातमे नहि पड़ू।"

नन्द लिफाफा उठौलनि, ओकरा सूँघलनि, आ वापस राखि देलनि —– "गन्ध पैसाक अछि। हमर बाबू–बुजुर्ग कहने छला —– पैसाक गन्धवाला कागचपर हस्ताक्षर नहि करब।"

ओही राति नन्दक बिछौनापर एकटा धमकी–भरल पर्ची भेटलनि —– "नाम लिखब बन्द करू।" नन्द डेरेला नहि। ओ पर्चीकेँ अपन डायरीमे साट कऽ लिखलनि —– "धमकी प्राप्त। एकर अर्थ —– नाम सही दिशामे जा रहल अछि।"

चन्ना गाछीमे ओहि राति फेर कबड्डी शुरू भेल। भूत सभ मजदूर स्त्रीक नाम सभ बजाबय लगला —– मुनिया, सरयू, फुलकली, रजनी। ई सभ स्त्री–मजदूर छलीह जिनकर नाम कोनो सरकारी कागचमे नहि छल —– काज करैत छलीह, मुदा हिसाबमे नहि गनल जाइत छलीह।

नन्द स्त्री–मजदूरक अलग हाजिरी बनेबाक माँग केला। दफ्तरक लोक हँसला —– "ई त परिवारक सदस्य छथि, कर्मचारी नहि।" नन्द दृढ़तासँ कहला —– "जँ माथपर बोझ उठबैत छथि, त कर्मचारी छथि।"

एक राति भारी बरखा भेल। नदी फूलल, मुदा ऊपरसँ आदेश छल —– काज बन्द नहि होएत। मजदूर सभ लालटेन लऽ क ऊँच जगहपर चढ़ल छला। अचानक एकटा रस्सा टूटल। नन्द चिचिआएला —– "काम बन्द करू!" मुदा बरखाक शोरमे ककरो सुनाइ नहि पड़ल। दुइ मजदूर पानिमे खसि गेला।

नन्द पानि कात दौड़ला। भोलाराम नामक साथी हुनका पकड़ि लेलनि —– "बाबू, गोहि!" नन्द टॉर्च पानिपर देखौलनि। अन्हारमे एकटा आवाज सुनाइ पड़ल —– "सरयू!"

एकटा स्त्रीक नाम! जखन कि दफ्तरक हिसाबमे लिखल छल जे कोनो स्त्री काज पर नहि छलीह। नन्दक हृदय काँपि गेल।

भोरे दफ्तरसँ सूचना आयल — "अत्यधिक वर्षाक कारण काज बाधित। कोनो पैघ क्षति नहि।" नन्द ई झूठ सूचना पढ़ि पहिल बेर क्रोधमे ओकरा फाड़ि देलनि।

ओही राति ओ अपन डायरीक नव पन्नापर लिखला — "छपाकक हिसाब।" आ नीचाँ नाम लिखय लगला — पहिल, बिसेसर पासवान। दोसर, छोटू (असल नाम खोजबाक बाकी अछि)। तेसर, सरयू।

नन्द बुझि गेला — ई सिर्फ एकटा पुलक बात नहि छल। ई सत्यकेँ बचेबाक लड़ाइ छल, आ ई लड़ाइ अकेले नन्दक नहि छल — पूरा गामक, पूरा चन्ना गाछीक भूत सभक, आ सभ ओहि नामक छल जकरा कियो बिसरा देत, मुदा माटि आ पात कहियो नहि बिसरैत।

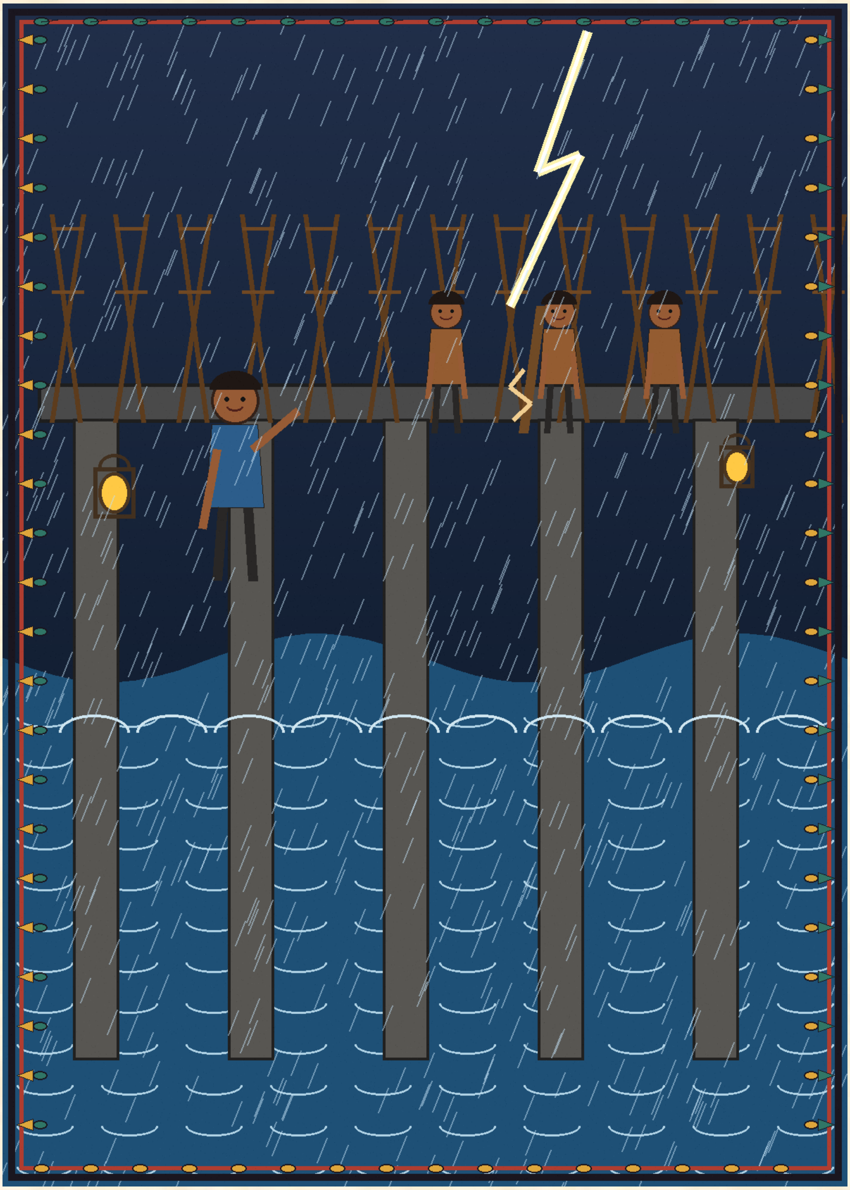

अध्याय ४

तीस नाम, तीन सय लाश

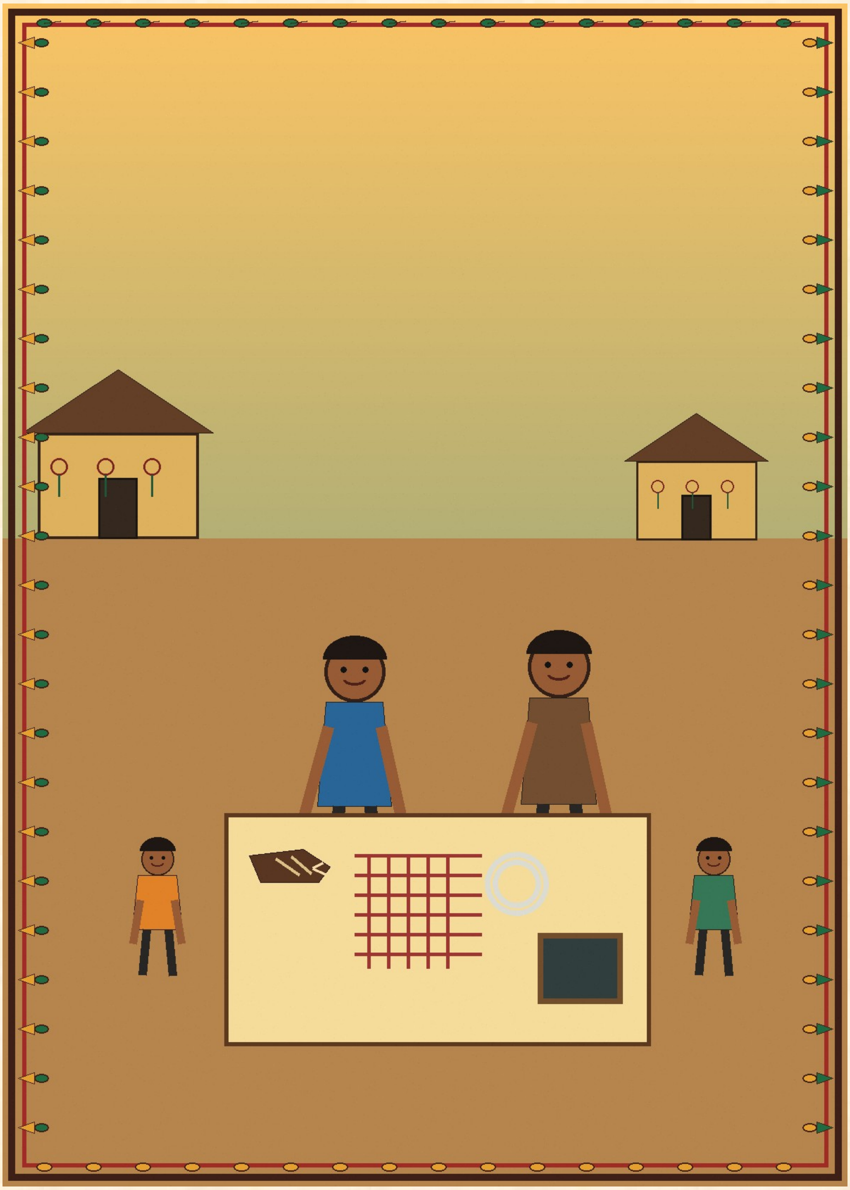

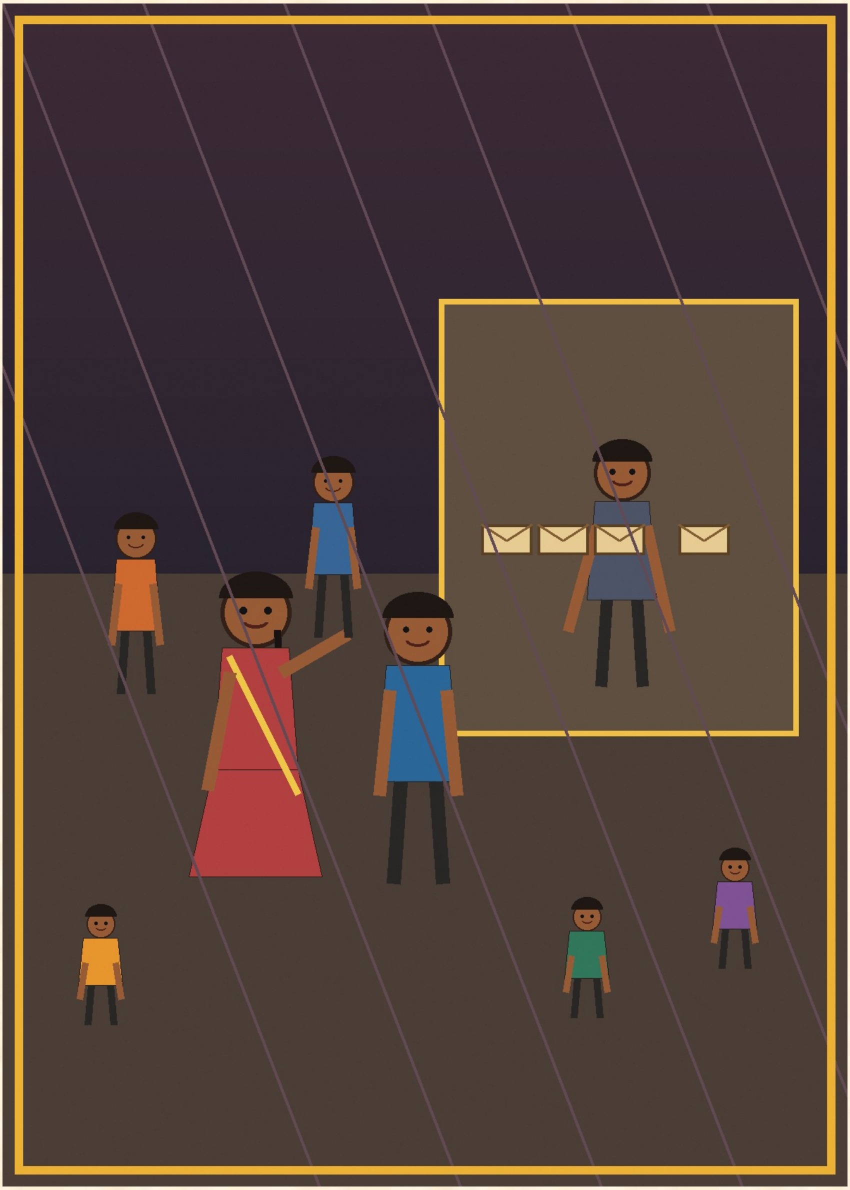

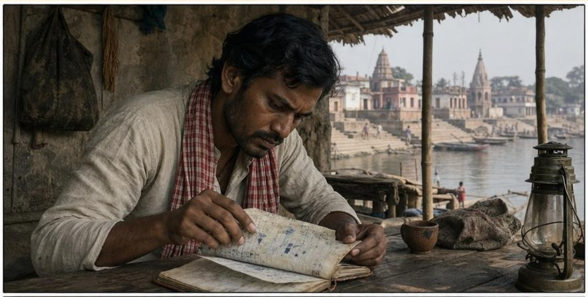

नन्द भोलारामसँ पुछलनि — "सरयू केकर छथि?"

भोलाराम धीरेसँ कहलनि — "सरयू छलीह। मुदा दफ्तरक कागचमे हुनकर नाम नहि छन्हि, कारण हुनकर पति पहिने मरि गेल छला, आ ओ पतिक नामपर काज करैत छलीह। तेँ हुनकर असल नाम कतहु नहि लिखल गेल।"

नन्द बुझि गेला — कागचमे कतेको लोकक असल नाम नहि छल। ओ मजदूर सभक वस्तु सभ जमा करय लगला — बिसेसरक जूता, छोटूक गमछाक टुकड़ी, सरयूक चाँदीक कड़ा, मुनियाक बालकक स्लेट। हरेक वस्तु एकटा साक्षी छल, भलेँ ओकर मालिकक नाम कागचमे नहि छल।

दफ्तरमे नन्द ई वस्तु सभ देखौलनि। लिपिक दिवाकर लाल पुछलनि — "ई की लऽ आयल छी?" नन्द उत्तर देलनि — "साक्षी। जेकर पएर नहि भेटल, ओकर जूता साक्षी अछि।"

मुदा सरकारी सूचीमे केवल तीस नाम छल। नन्द जनैत छला जे असलमे बेसी लोक मरल छला — कमसँकम तीन सय। ओ ई प्रश्न उठौलनि — "तीस नहि, तीन सय!"

एक दिन मुआवजाक वितरणक दिन एकटा मेला जेकाँ भीड़ छल। बिसेसरक पत्नी अपन लिफाफा लैत काल पुछलनि — "छोटू केकर मुआवजा कतय अछि? सरयू केकर?"

अधिकारी चौंकि गेला। नन्द बीचमे आबि कऽ कहला — "ई प्रश्न वाजिब अछि।"

एहि बातक बाद नन्दक बदली कऽ देल गेल। मुदा ओ हारि नहि मानला। ओ वकील देवकीनन्दन चौबे लग गेला आ अदालतमे मुकदमा दायर केलनि। वकील पुछलनि — "एतेक सय नामक प्रमाण कतय अछि?" नन्द अपन थैलासँ जूता, कड़ा, गमछा, पुरान कागचक टुकड़ी निकालि देखौलनि। ओ कहलनि — "ई सभ नामक अवशेष अछि।"

मुकदमा शुरू भेल, मुदा तारीखपर तारीख पड़ैत गेल। कहियो सरकारी रिकॉर्ड नहि आएल, कहियो न्यायाधीश छुट्टीपर, कहियो कोनो आर बहाना। नन्द बुझि गेला जे अदालतक रस्ता लम्बा अछि।

गामसँ नन्द एकटा नव उपाय सोचला। ओ गामक बच्चा सभकेँ सभटा नाम पढ़ाबय लगला — "बिसेसर, सरयू, मुनिया, धनेसरी, भोलटुन..." बच्चा सभ पहिने हँसला, फेर धीरे–धीरे ई नाम सभकेँ अपन खेलमे शामिल कऽ लेला। पूरा गाम एहि नाम सभकेँ मोन राखय लागल।

सरकारी सूची तीस पर रुकल रहल, मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभक स्मृतिमे गिनती तीन सय धरि पहुँचि गेल।

नन्द अपन डायरीक तीन प्रति बनौलनि — एक बा लग, एक वकील लग, आ एक नदीक किनार पीपरक जड़िमे माटिक भीतर गाड़ि देलनि। बा पुछलनि

— "पानि लग किएक? " नन्द कहलनि — "जिनका पानि लऽ गेल, हुनका सभक प्रति पानि लग रहबाक चाही।"

पुल बनि गेल। बड़का उद्घाटन भेल। मंत्री फीता काटला, लोक ताली बजौलक। मुदा नन्दकेँ लगल जे हर लोहाक छड़पर एकटा नाम लटकल अछि। ओ मोनमे दोहरबैत रहला — "तीस नहि, तीन सय।"

ई कथा एतहि समाप्त नहि भेल। नन्दक बनायल "छपाकक हिसाब" (सत्यक ई पूरा सूची) बहुत बरख बाद फेर लोकक हाथ लागत, आ ओहिसँ एकटा बहुत पैघ न्यायक कथा शुरू होएत।

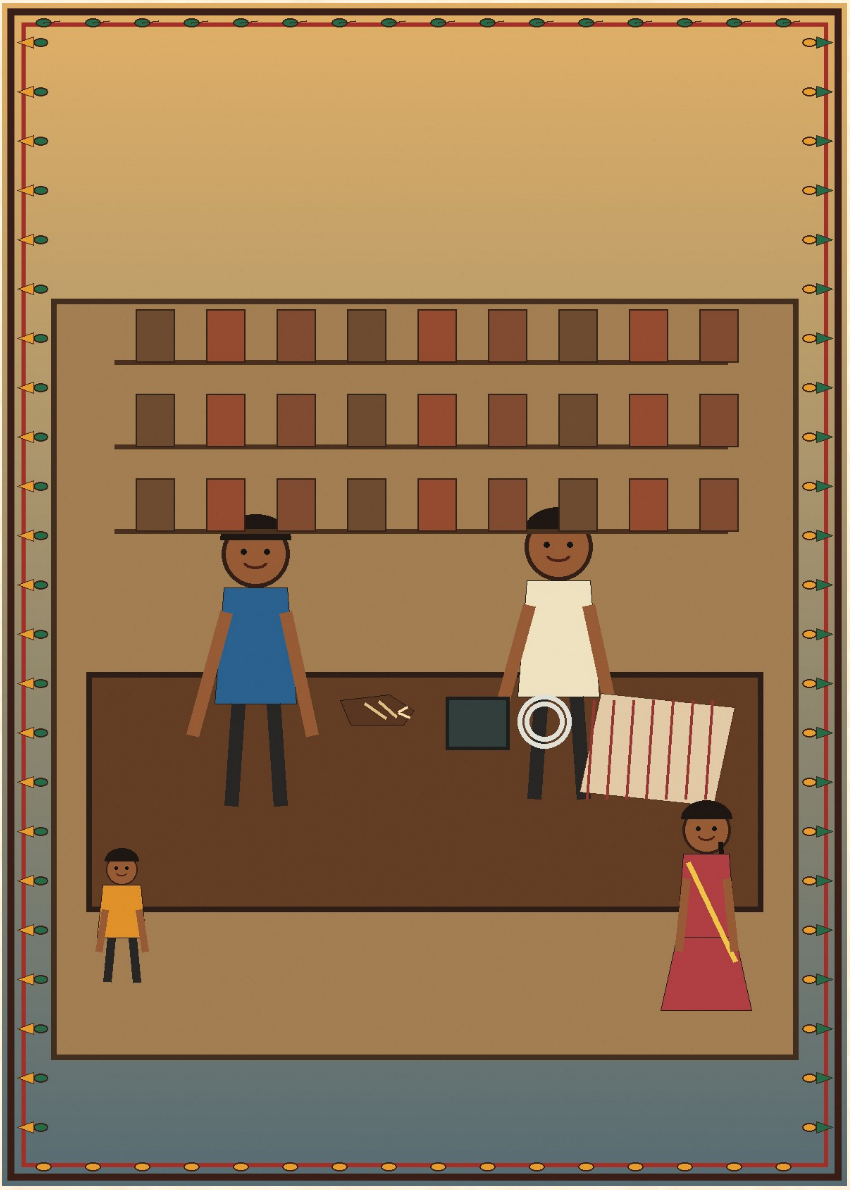

अध्याय ५

तारीखक गोहि

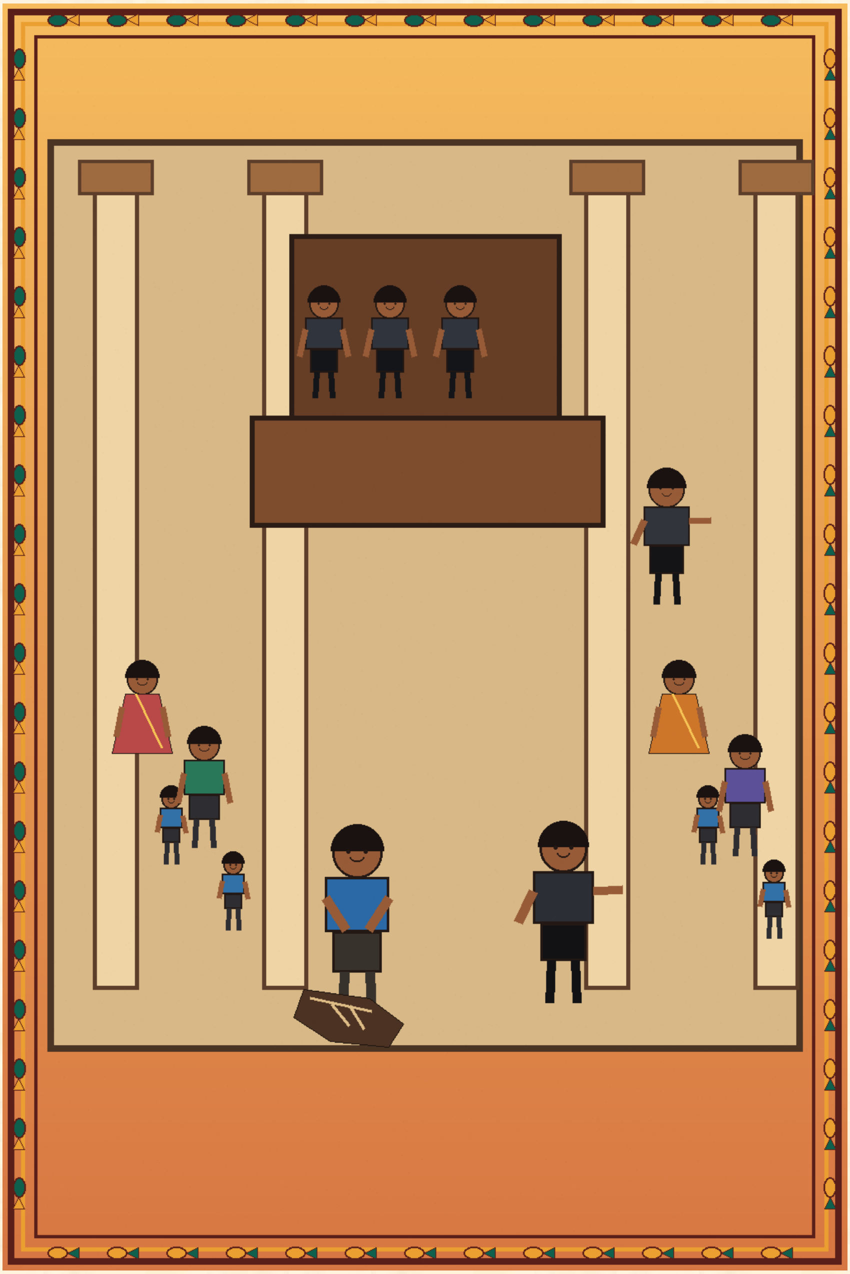

नन्द वकील देवकीनन्दन चौबेक संग जिला अदालत गेला। अदालतक बरामदा भीड़-भाड़ छल — कियो जमीनक मुकदमा लऽ क, कियो आर बात लऽ क।

पहिल सुनवाईमे सरकारक तरफसँ एकटा युवा वकील उठला — नाम छल सत्यव्रत मेहता। हुनकर हाथमे कागच छल, जाहिमे लिखल छल — "मृत्युसंख्या तीस, याचिका बढ़ा-चढ़ाकऽ कहल गेल।" मुदा जखन सत्यव्रतक नजर नन्दक थैलासँ झाँकैत बिसेसरक जूतापर पड़ल, त ओ एक क्षण रुकि गेला। ओ मात्र इतबे कहला — "महोदय, राज्यक रिकॉर्ड मंगाओल जाए।"

ई छोट सन बात छल, मुदा एकटा नीक शुरुआत छल।

बरामदामे नन्दकँ एकटा आर व्यक्ति भेटला — चन्द्रपाल बत्रा। ओ मुस्कुराइत कहलनि — "बहुत भावुक मामला अछि। चाही त हम मदति कऽ

सकैत छी।" नन्द उत्तर देलनि — "हमरा मदति नहि, नाम चाही।" बत्रा हँसि क कहलनि — "नाम त कागचपर बनैत अछि।"

तारीखपर तारीख पड़ैत गेल। कहियो रिकॉर्ड नहि आएल, कहियो न्यायाधीश बदलि गेला, कहियो कोनो आर बहाना। हर तारीखमे मुआवजाक लेल आयल परिवार सभ धीरे–धीरे कम होइत गेल — केओ भाड़ाक पाइ नहि जुटा सकल, केओ बूढ़ भऽ गेल।

फेर एक दिन एक बहुत नामी वकील बटुकनाथ हरिहरन एहि मुकदमामे विदेशी कम्पनीक तरफसँ खड़ा भेला। ओ अत्यन्त मीठ बजैत छला, मुदा हुनकर वाक्य सभमे न्यायकेँ ढीला करबाक कला छल। ओ कहलनि — "जूता, चूड़ी, ताबीज — ई सभ भावनाक वस्तु भऽ सकैत अछि, विधिक साक्ष्य नहि।"

नन्दकेँ लगल जेना केओ मृतकक पएरसँ जूता दोसर बेर उतारि रहल अछि।

मुदा न्यायाधीश ई वस्तु सभकेँ अदालतक मालखानामे रखबाक आदेश देला। ई आधी जीत छल।

एक राति नन्दक वकीलक दफ्तरमे चोरी भेल — कागच सभ इधर–उधर भऽ गेल, किछु महत्वपूर्ण फोटो गायब भऽ गेल। मुदा नन्द पहिनहिये अपन कागचक दोसर प्रति बा लग सुरक्षित रखने छला। जखन ओ ई बात वकीलकेँ बतौलनि, त वकील दंग रहि गेला — "अहाँ पहिनहिये प्रति बना लेने छलहुँ?" नन्द कहलनि — "नदी एक धार नहि राखैत। एक धार टूटल त दोसर धार बहैत अछि।"

सत्यव्रत मेहता एक साँझ चुपचाप नन्दकेँ कहलनि — "आरुणि बाबू, जे किछु अहाँ लग अछि, बहुत प्रति बनाउ। केवल अदालतपर भरोसा नहि करू।" नन्द चकित भऽ पुछलनि — "अहाँ त सरकारक वकील छी!" सत्यव्रत उत्तर देलनि — "छी, मुदा सरकारक नौकर नहि छी। राज्यक आत्मा, यदि बचल अछि, त ओ फाइलक बाहर रहैत अछि।"

बरख बीतल। अदालतक फाइल बदैलत रहल, मुदा नन्दक धैर्य नहि टूटल। एक दिन मालखानामे पानि घुसि गेल आ बिसेसरक जूता भीजि गेल। जखन

नन्द जूता उठौलनि, त ओहिसँ पानिक बून्द टपकल —— "छपाक।" ठीक ओहि आवाज जकर नन्द पुलक राति सुनने छला।

नन्द बुझि गेला —— "अदालतमे गोहि नहि देखाइत, मुदा ओ तारीख बनि रहैत अछि। जखन कागच भीजैत अछि, तखन मृतक फेर बोलैत अछि।"

चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत सभ नियम बनौलनि —— "जेकरा स्मृति अछि, ओकरा तारीख नहि खा सकैत।" गामक लोकक स्मृति, नन्दक धैर्य, आ सत्यव्रत मेहता जेकाँ ईमानदार लोकक साहस —— एहि तीनूक मेलसँ न्यायक बाट धीरे–धीरे खुजय लागल।

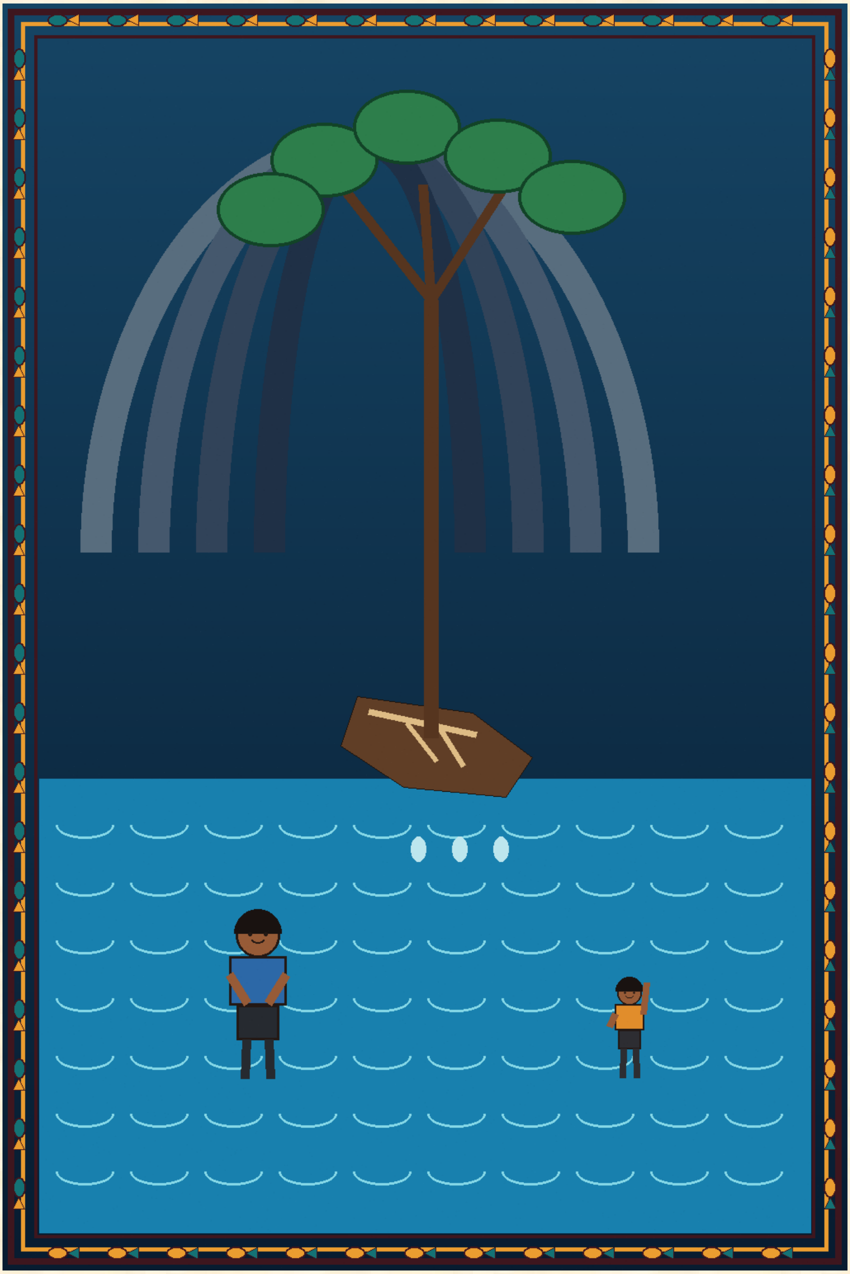

अध्याय ६

हार्वर्डक एथिक्स

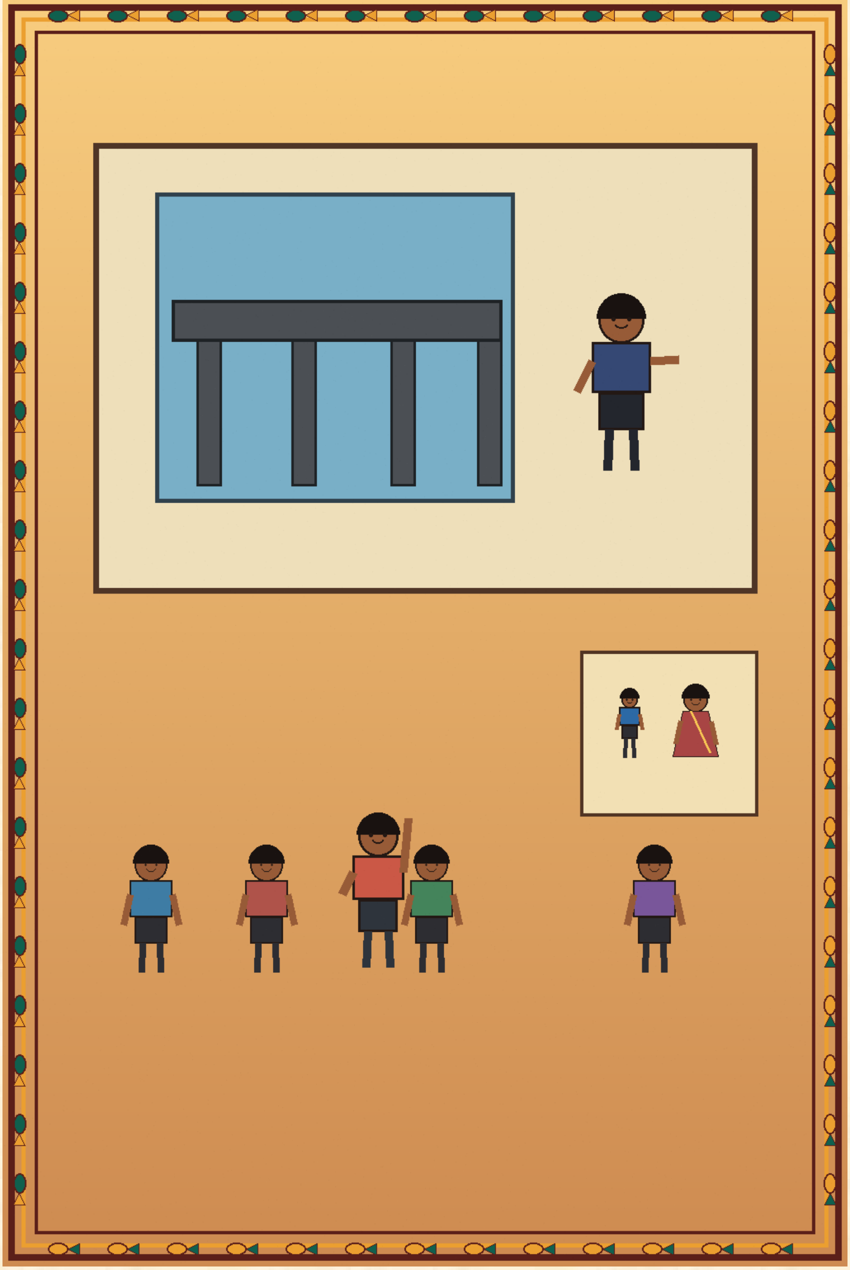

गढ़ नारिकेल गामक एकटा बेटी छलीह — ईरा आरुणि। ओ अमेरिकाक हार्वर्ड विश्वविद्यालयमे पढ़ैत छलीह। एक दिन ओतय "व्यापार आ मानवता" नामक एकटा बड़का कार्यक्रम भेल।

मंचपर एडवर्ड ब्रूम नामक एकटा विदेशी व्यापारी आयला, जे बहुत बड़का कम्पनी सभक मालिक छला। ओ बहुत सुन्दर–सुन्दर बात कहैत छला — "हम सभ स्थानसँ लोकक भलाइ करैत छी।" ओ अपन पुरान परियोजना सभक फोटो देखौलनि, जाहिमे एकटा भारतक बड़का पुलक फोटो सेहो छल।

ईरा ओ फोटो देखिते चौंकि गेलीह। ओकरा अपन बाक कथा मोन पड़ल — "तोहर परदादा नन्द आरुणि गंगाक पानिमे नहि, सरकारी कागचमे डुबल छलाह।"

ईरा हाथ उठा क पुछलीह — "उन्नीस सय अठहत्तरक भारतीय पुल-परियोजनामे कतेक मजदूर मरल छला?"

पूरा सभागार चुप भऽ गेल। ब्रूम कनी हड़बड़ेला, मुदा फेर सम्हरि क कहला — "हमरा हर परियोजनाक पूरा जानकारी मोन नहि रहैत।"

ईरा फेर पुछलीह — "जँ स्थानीय रिपोर्ट झूठ हो त?"

ककरो उत्तर नहि भेटल। कार्यक्रम समाप्त भऽ गेल, मुदा ईराक मोनमे प्रश्न रहि गेल।

राति ओ लाइब्रेरीमे बैसि क अपन बाक पुरान चिट्ठी पढ़लीह, जाहिमे नन्द आरुणिक बारेमे लिखल छल। लिखल छल — "मृतक संख्या सरकारी रजिस्टरसँ भिन्न। सरयू नामक स्त्री-मजदूरक पता नहि।"

ईरा बुझि गेलीह जे ई ओहिना पुल छल, जाहिपर हुनकर परदादा नन्द आरुणि काज करैत छला। ओ एकटा छोट सन ईमेल अपन प्रोफेसरकेँ लिखलीह — "आइक भाषणमे देखाओल पुलपर हमर परिवारक एक लोकक मृत्युक जाँच जुड़ल अछि। की एहिपर सार्वजनिक प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि?"

एतबे दूर दिल्लीमे, सत्यव्रत मेहता नामक ओहि पुरान वकील (जे बाल्यावस्थामे नन्द आरुणिक मुकदमामे सरकारक तरफसँ रहला) फेर एहि पुरान फाइलपर काज करय लगला। ओ लिखलनि — "सत्यापन आवश्यक।"

आ ओतय गढ़ नारिकेलमे, चन्ना गाछीमे भूत सभ ई सभटा बात बुझि गेल छला। बूढ़बा भूत कहला — "समुद्र पार बैसल हमर बेटी हमरा सभक कथा दोहरा रहल छथि। नाम कहियो नहि मरैत।"

आ ईहो सत्य छल जे एहि सत्यक खोजमे किछु बेईमान लोक सेहो सजग भऽ गेल छला — चन्द्रपाल बत्रा आ हरिहरन नामक वकील, जे नहि चाहैत छला जे पुरान सत्य बाहर आबय। मुदा सत्यक बीया एक बेर बाहर आबि गेला, त ओकरा रोकब कठिन होइत अछि।

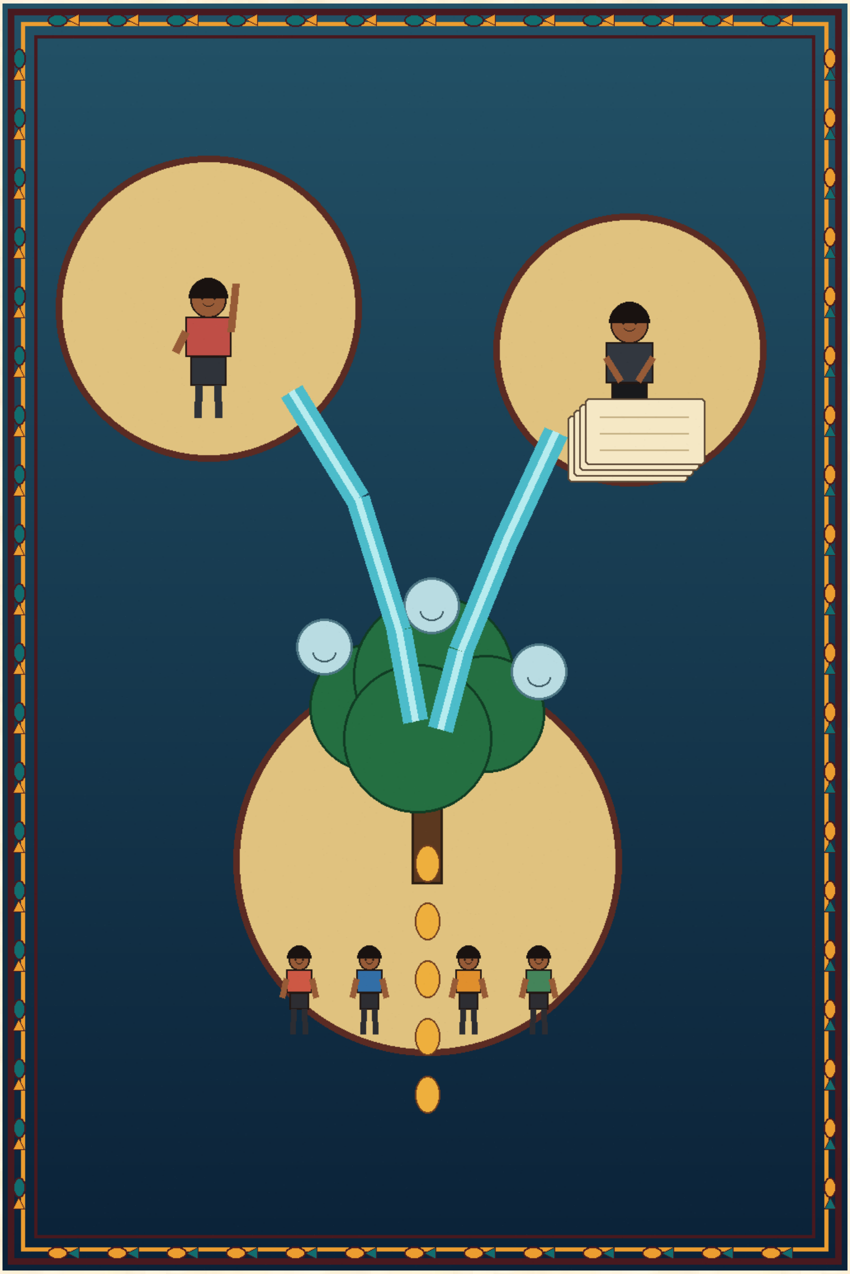

अध्याय ७

श्वासक भाव

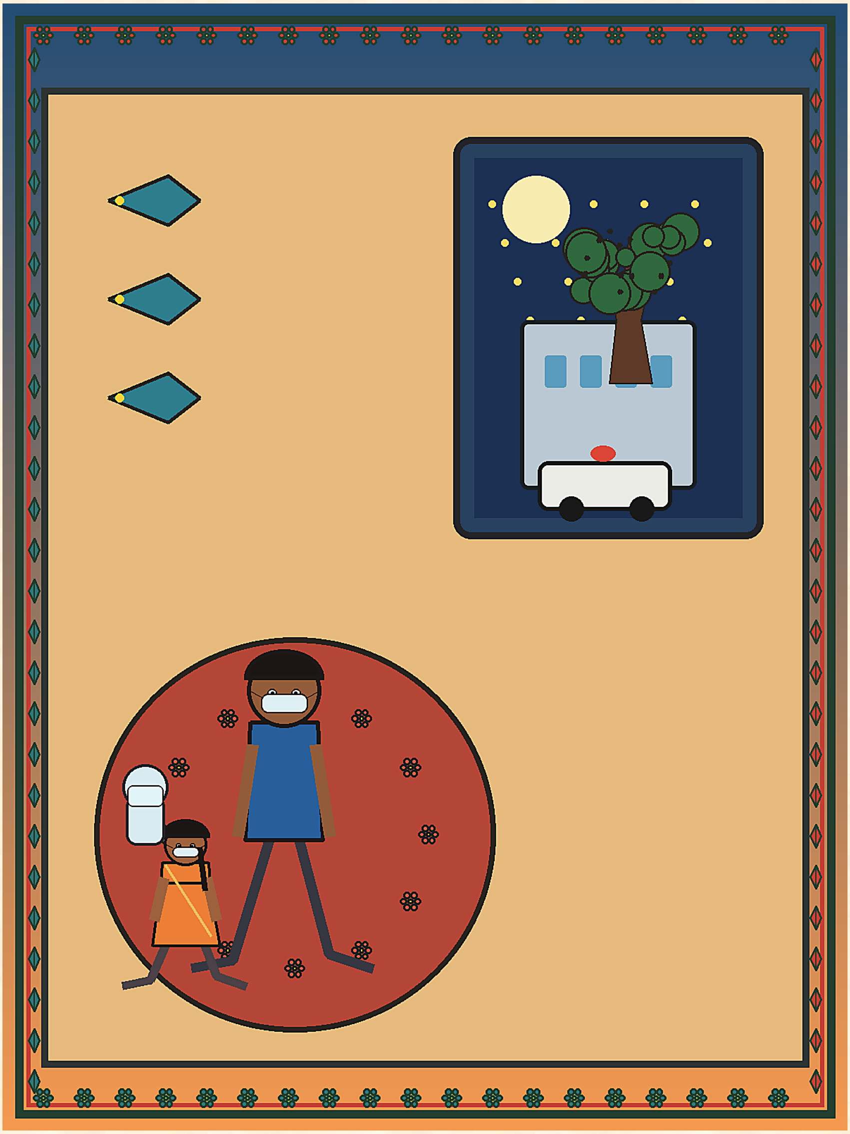

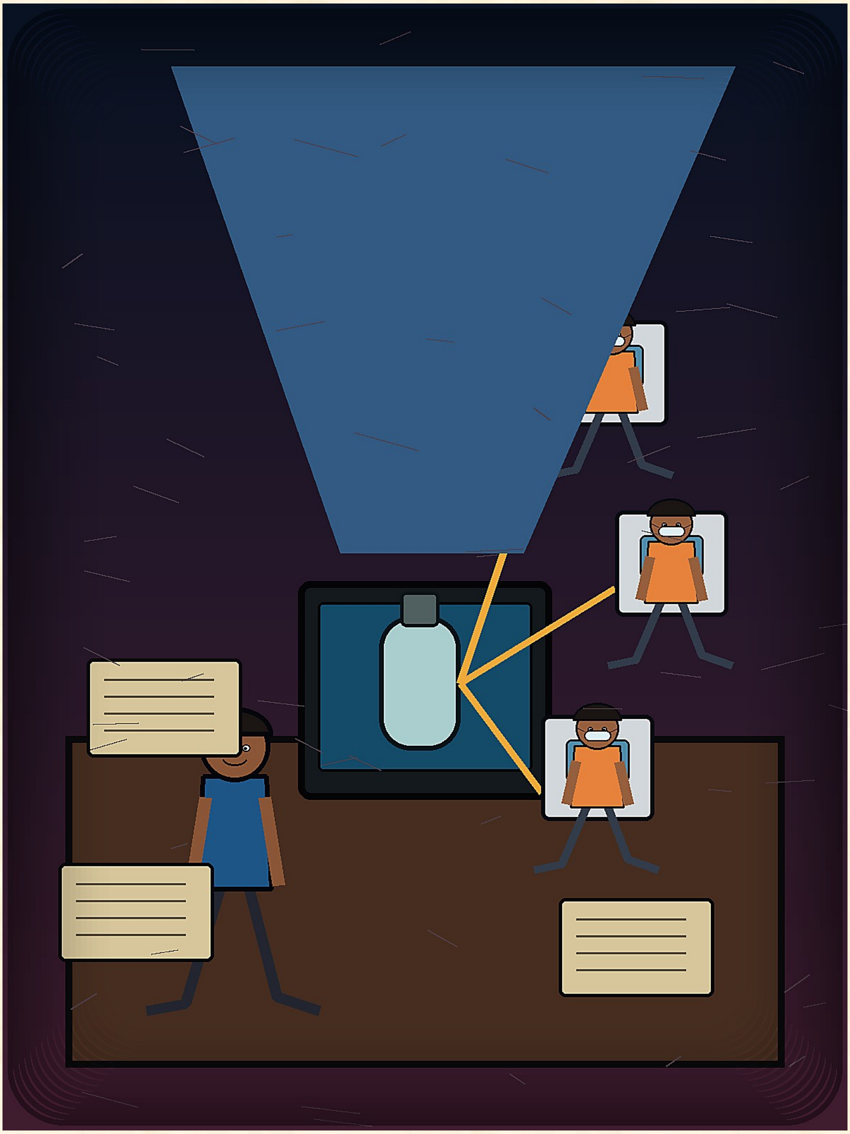

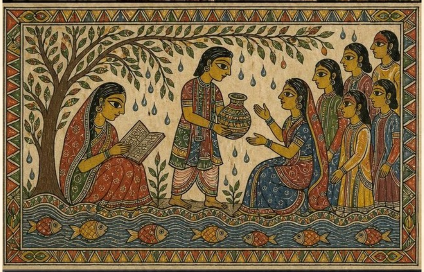

एक समय पूरा दुनियाँमे एकटा बड़का बीमारी फैलि गेल। लोक घरमे बन्द भऽ गेल। अस्पतालमे बेड कम पड़ि गेल, दवाइ कम पड़ि गेल।

दिल्लीमे आरुणि नन्दन (नन्द आरुणिक वंशज) अपन छोट बेटी अनन्यासँ बात करैत छला। अनन्या पुछलक —– "डैडी, भूत सभ मास्क पहिरैत होएत की?" आरुणि उत्तर नहि दऽ सकला। हुनका बाक पुरान बात मोन पड़ल —– "जे मरत, ओकर नाम लिख। सभ अलग–अलग लिख। बादमे सभ 'अन्य' बनि जाइत अछि।"

एहि समय एकटा नव पात्र कथामे आयल —– गोप कुमार। ओ एकटा कम्पनीमे लेखा–जाँचक काज करैत छल, जे बीमारीक समय दवाइ, ऑक्सीजन, आ जरूरी सामान बाँटैत छल।

गोप कुमार अपन काजमे बड़ ईमानदार छल। एक दिन ओ फाइल जाँचैत काल एकटा अजीब बात देखलक —– एकटा ऑक्सीजन सिलिण्डर तीन अलग जगहपर एक्के दिन देल गेल देखाओल गेल छल! ई सम्भव नहि छल। मतलब कतहु झूठ लिखल जा रहल छल।

ओ आर गहींरसँ जाँच केलक। ओकरा एकटा पुरान कोड भेटल —– "एन–आर–७७।" ओहिसँ जुड़ल एकटा पुरान कागच —– नन्द आरुणिक हस्ताक्षरवाला वैह पुरान पुल–परियोजनाक फाइल! गोप बुझि गेला जे नव बीमारीक धोखाधड़ी आ पुरान पुलक धोखाधड़ी —– दुनू एक्के लोक सभसँ जुड़ल अछि।

गोप एकटा बैसकीमे साफ–साफ पुछलक —– "जे वस्तु आपूर्ति नहि भेल, ओकर हिसाब कोना?" एहिसँ ओकरा दफ्तरमे कठिनाइ भेल, हुनकर काज छोटा देल गेल।

मुदा गोप डेराएल नहि। ओ अपन पुरान संगी रमैय्यासँ गुप्त सन्देश भेजलक —– "जँ कागच झूठ बाजय लागय, त की करब?" रमैय्या उत्तर देलक —– "कागच नहि, लोक बचाउ।"

ओही राति गोपकेँ एकटा रहस्यमय सन्देश भेटल —– "कागचकेँ तीन भागमे बाँटू। एकटा सुरक्षित ठाम, एकटा भरोसेमंद लोक लग, आ एकटा एहन ठाम जतय कियो सोचबो नहि करत।"

गोप बुझि गेला — नन्द आरुणिक जुगक सीख आइयो काज अबैत अछि। ओ फाइलक तीन प्रति बना क अलग–अलग सुरक्षित रखलक।

एतबे दूर हार्वर्डमे ईरा अपन दादी बासँ फोनपर बात केलनि। बा कहलनि — "बेटी, जे लोक बहुत चिक्कन बाजए, ओकर पाँजरमे काँटा खोज।" दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता पुरान अभिलेख फेर मंगबय लगला।

एहि तरहें, बीमारीक ओहि कठिन समयमे सेहो, सत्य आ ईमानदारीक बीया चारू कात बचल रहल — गोप कुमारक साहसमे, ईराक सवालमे, सत्यव्रतक धैर्यमे, आ गामक बा जीक पुरान सीखमे। चन्ना गाछीमे भूत सभ कहला — "जखन तक एक्को गोटे नाम मोन राखत, तखन तक सत्य मरत नहि।"

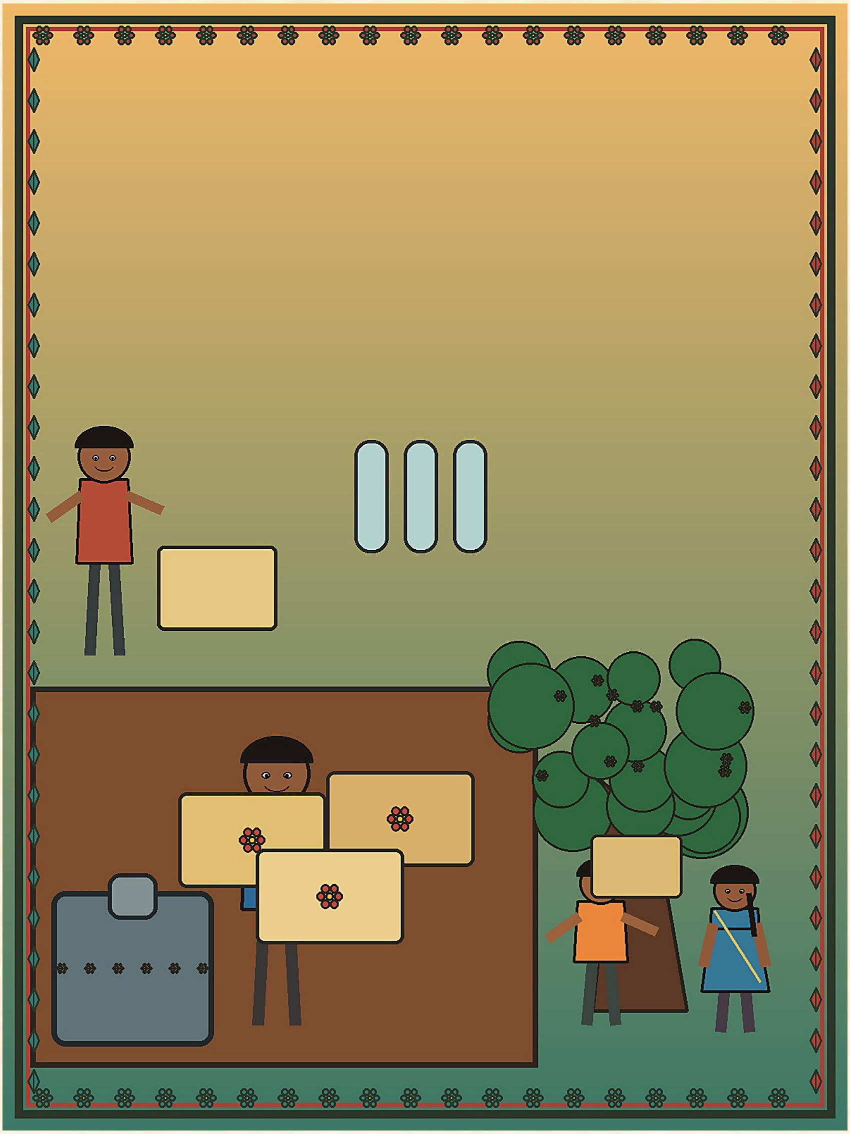

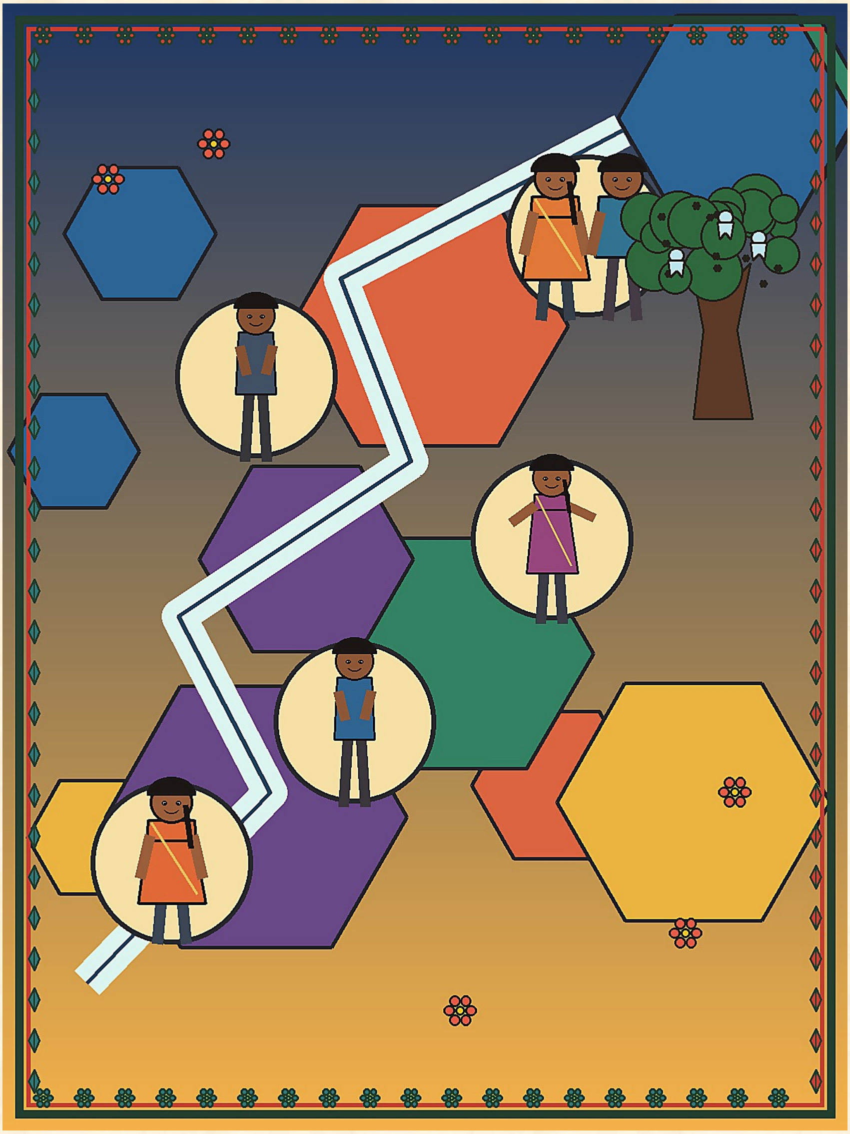

अध्याय ८

स्क्रीनक गोहि

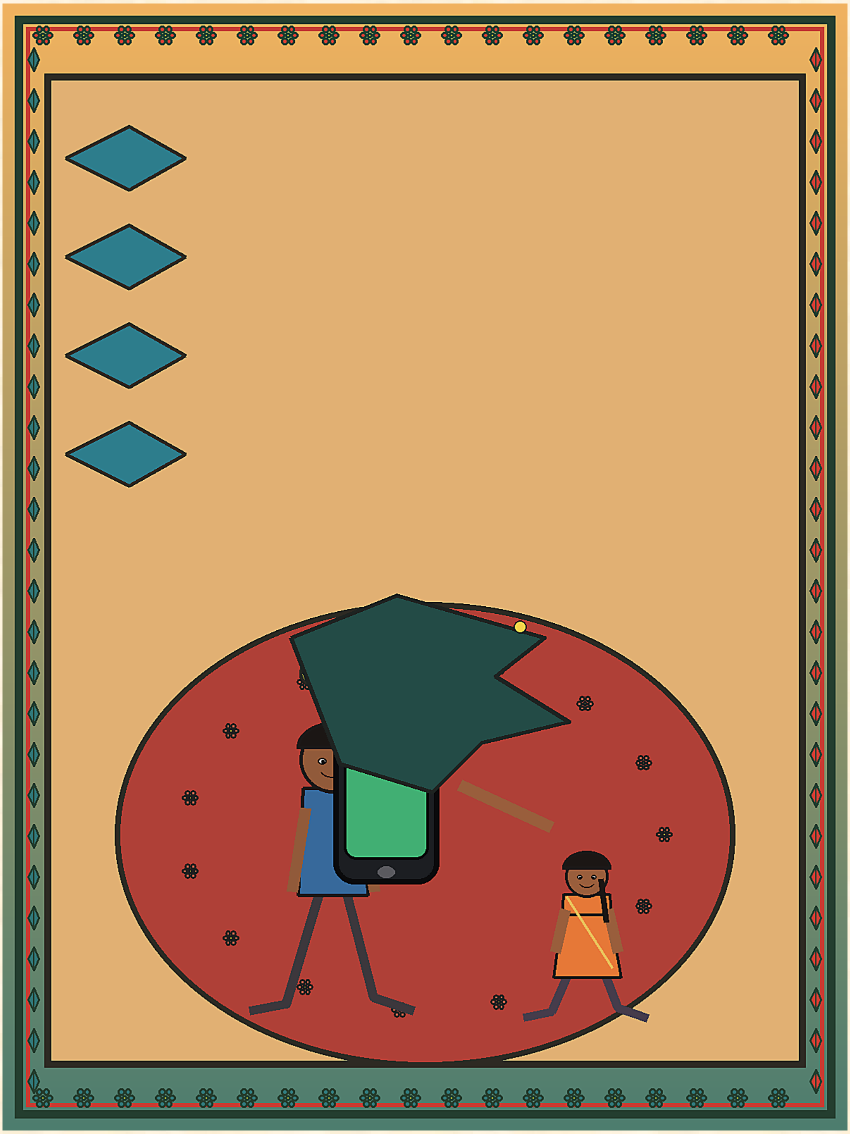

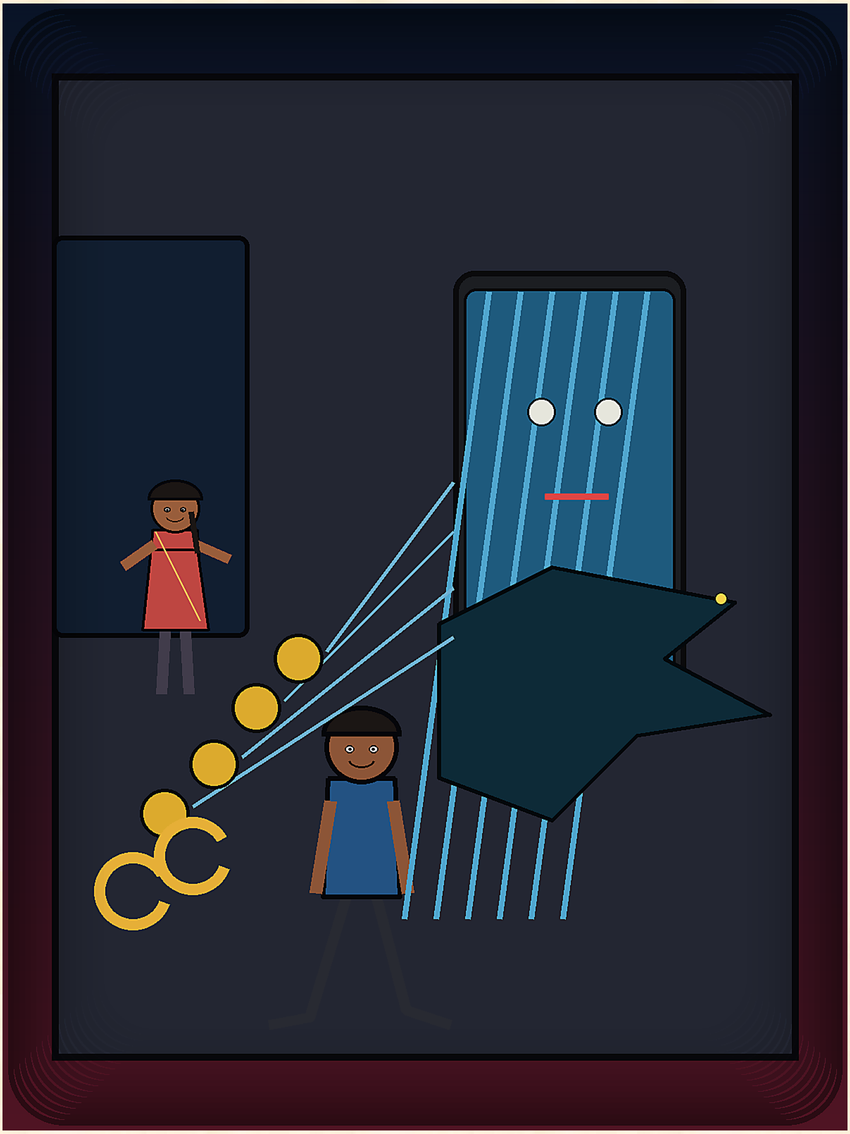

चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत एक नव तरहक छाह देखलनि — पएरविहीन, स्क्रीन जेकाँ चमकैत आ निबैत। ओ कहलनि — "ई नव तरहक मृत्यु अछि। नदीक गोहि देह खाइत छल, ई स्क्रीनक गोहि भविष्य खाइत अछि।"

गढ़ नारिकेल गामक एकटा युवक छल — उज्ज्वल झा। ओ बेरोजगार छल, आ मोबाइलपर एकटा खेलक विज्ञापन देखलक — "खेलू, जीतू, तुरन्त पाइ पाउ।" पहिल बेर ओ थोड़े पाइसँ खेललक आ जीति गेल। ओकरा बहुत खुशी भेल।

ओकर बहिन देविका साह ई देखि चिन्तित भऽ गेलीह — "ई खेल नहि लगैत अछि।" उज्ज्वल हँसि क कहलक — "तूँ हर बातमे डर देखै छे।" मुदा देविका सही छलीह — ई एकटा जाल छल।

धीरे–धीरे उज्ज्वल बेसी–बेसी पाइ लगाबय लागल। कहियो जीतल, कहियो हारल। हारि बढ़ल त एप्पवला कहलक — "अहाँक लेल विशेष ऋण–सुविधा अछि।" उज्ज्वल ऋण लेबय लागल।

एक दिन एकटा फोन आयल — "अहाँक खातामे गलत पाइ आयल अछि। ई राष्ट्रीय जाँच अछि। ककरो नहि बताउ, नहि त गिरफ्तार हएब।" उज्ज्वल बहुत डेरा गेल। ओ ई बात कियोकैँ नहि कहलक — नहिये अपन माय–बापकैँ, नहिये अपन बहिन देविकाकैँ।

ई एकटा बड़का धोखा छल, जकरा "डिजिटल अरेस्ट" कहल जाइत अछि — कियो असली पुलिस नहि छल, बस डरा क पाइ ऐंठबाक एकटा चाल छल। मुदा उज्ज्वल एतेक डेरा गेल छल जे ओ अपन सभटा बचत, आ घरक गहना धरि दऽ देलक।

देविका अपन भाइकैँ उदास आ चुप देखि चिन्तित छलीह। मुदा उज्ज्वल कियोसँ किछु नहि कहलक — कारण डर आ लाजमे लोक अक्सर सबसे बेसी चुप भऽ जाइत अछि, जखन कि हुनका सबसे बेसी सहायताक जरूरत होइत छन्हि।

एक दिन उज्ज्वल घरसँ बाहर निकलल आ फेर नहि घुरल। ओकर परिवार बहुत दुखी भेल। देविका दृढ़तासँ कहलीह — "मोर भाइ अपराधी नहि छल। ओकरा डेरा क, धोखा दऽ क बर्बाद कएल गेल।"

देविका अपन भाइक फोन गोप कुमार धरि पहुँचौलीह। गोप ओहि फोनमे सभटा प्रमाण भेटलनि — धोखेबाज सभक धमकी, नकली नोटिस, पाइ कतय–कतय गेल — सभटा।

गोप बुझि गेला जे ई घटना कोनो अकस्मात नहि छल — ई एकटा बड़का संगठित जाल छल, जे बहुत रास लोकसँ डर आ धमकी देखा क पाइ लूटैत छल। ओ ई सभटा प्रमाण सुरक्षित रखलनि आ न्यायक लेल लड़बाक निश्चय केलनि।

चन्ना गाछीमे उज्ज्वलक आत्मा भूत सभक बीच आयल, भयभीत आ उदास। हुलासी हुनका माथपर हाथ राखि कहलनि — "बच्चा, डेराउ नहि। अपन नाम बाजू।" उज्ज्वल धीरे–धीरे कहलक — "उज्ज्वल।"

ओहि क्षण भूत सभ बुझि गेला — ई युवक चोर नहि छल, ओ एकटा धोखाक शिकार छल। आ एहि कथासँ पूरा गामकेँ एकटा सीख भेटल — जँ कोनो अनजान फोन डेरा क पाइ माँगय, त कहियो अकेले नहि सहू, तुरन्त अपन घरक लोककेँ बताउ।

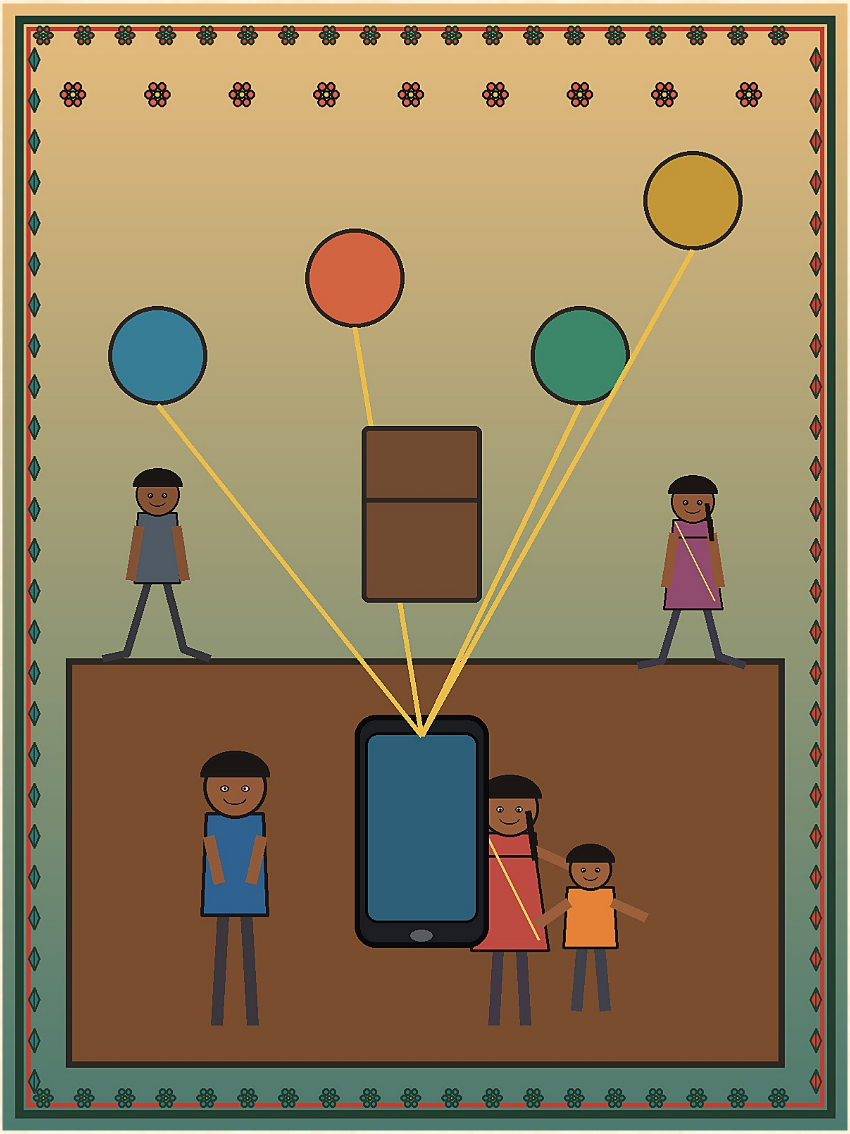

अध्याय ९

फूलमतिक नाम

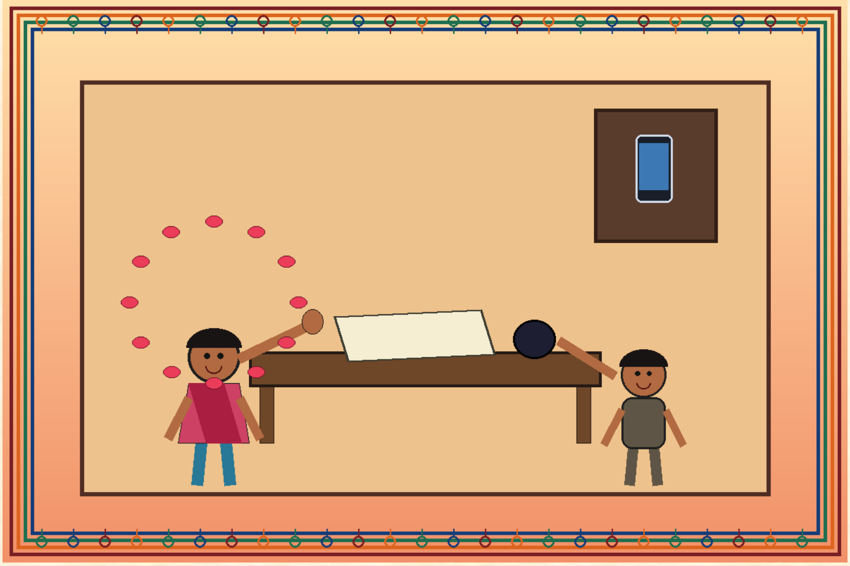

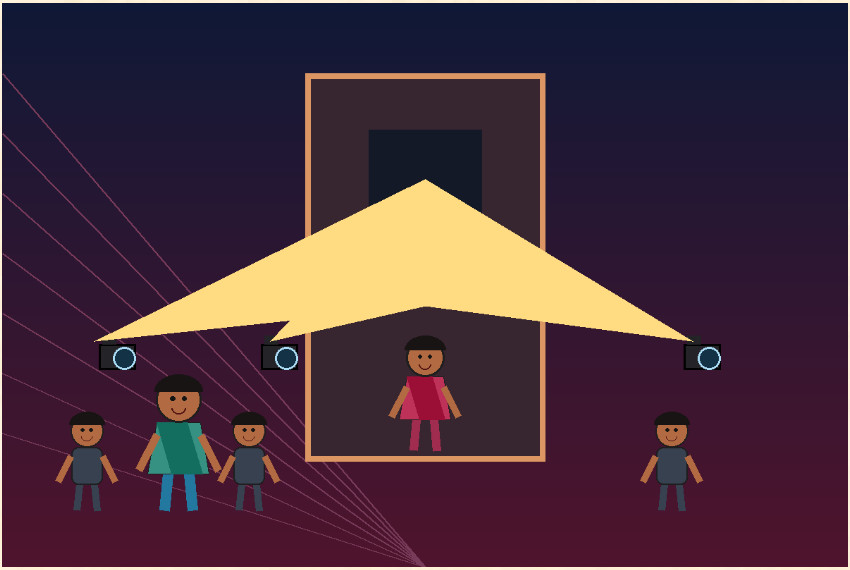

चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत सभ उदास छला। बूढ़बा भूत कहला — "एकटा नव तरहक अन्याय भऽ रहल अछि, जतय लोकक डर आ मजबूरीक बेजा फायदा उठाओल जाइत अछि।"

गढ़ नारिकेलसँ बहुत दूर, मधुबनीक एकटा गामक फूलमति नामक एकटा युवती छलीह। ओकरा शहरमे नीक नोकरीक झूठा वादा कऽ क धोखासँ एकटा दूर शहर लऽ जाओल गेल छल। ओतय ओकर फोन छीनि लेल गेल, आ ओकरा घरसँ बात करय नहि देल गेल।

ओतय ओकरा एकटा कोड नाम देल गेल — "एफ.एम." मुदा फूलमति हिम्मत नहि हारलीह। जखन ओकरासँ कागचपर अंगूठा लगाबय कहल गेल, त ओ मना कऽ देलीह। ओ दृढ़तासँ कहलीह — "हमर नाम फूलमति अछि। एफ.एम. नहि।"

एतबे दूर दिल्लीमे गोप कुमार अपन जाँचमे एहि जालक बारेमे बुझि गेला। ओ अपन संगी सौम्या रामनाथन (जे एकटा शोधकर्मी छलीह) कँ तुरन्त सचेत केलनि —– "फूलमति नामक एकटा युवती खतरामे छथि!"

सौम्या ओहि समय ओहि होटलक लगमे छलीह, जतय एकटा कार्यक्रम भऽ रहल छल। ओ तुरन्त कार्रवाई केलीह। ओ पत्रकार सभकेँ बजा क कहलीह —– "लाइव प्रसारण करू!"

जखन सभटा लोक ओहि कोठलीक दरबाजा लग पहुँचला, त भीतरसँ फूलमतिक आवाज आयल —– "हमर नाम फूलमति अछि।" दरबाजा खुजल, आ फूलमति काँपैत, मुदा बहादुरीसँ बाहर निकलीह —– अपन असली नामक संग।

लाइव विडियो हजारों लोक धरि पहुँचल। देविका साह (जे अपन भाइ उज्ज्वलक बात मोन करैत छलीह) ई विडियो देखलीह आ कहलीह —– "नाम फेर घुरि रहल अछि।"

एहि घटनाक बाद सत्यव्रत मेहता ओ विडियो देखलनि आ अपन डायरीमे लिखलनि —– "स्वेच्छा भयक भीतर सम्भव नहि होइत।"

गोप कुमार अपन जाँच–फाइलमे एकटा नव पन्ना जोड़लनि। ओ बुझि गेला जे पुलक मजदूर सभक कथा, बीमारीक धोखाधड़ी, ऑनलाइन जुआक जाल, आ फूलमतिक कथा —– सभ एक्के अपराधी जालक भिन्न–भिन्न धागा छल। ओ अपन डायरीमे लिखलनि —– "जकर नाम चोरा लेल जाइत अछि, ओ अकेला भऽ जाइत अछि। मुदा जखन एकटा नाम फेर बजैत अछि, त हिम्मत सेहो घुरि आबैत अछि।"

चन्ना गाछीमे भूत सभ ओहि राति फूलमतिक साहसक कथा सुनि खुश भेला। हुलासी कहलीह —– "जँ कियो अपन नाम, अपन सम्मानक लेल एना ठाढ़ भऽ सकैत अछि, त गोहि सभ कतेको बेर हारि जाइत अछि।"

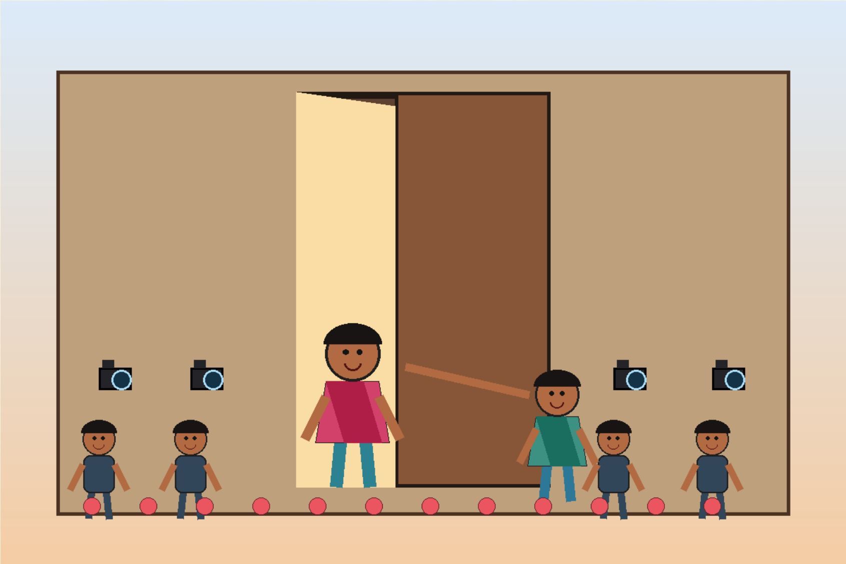

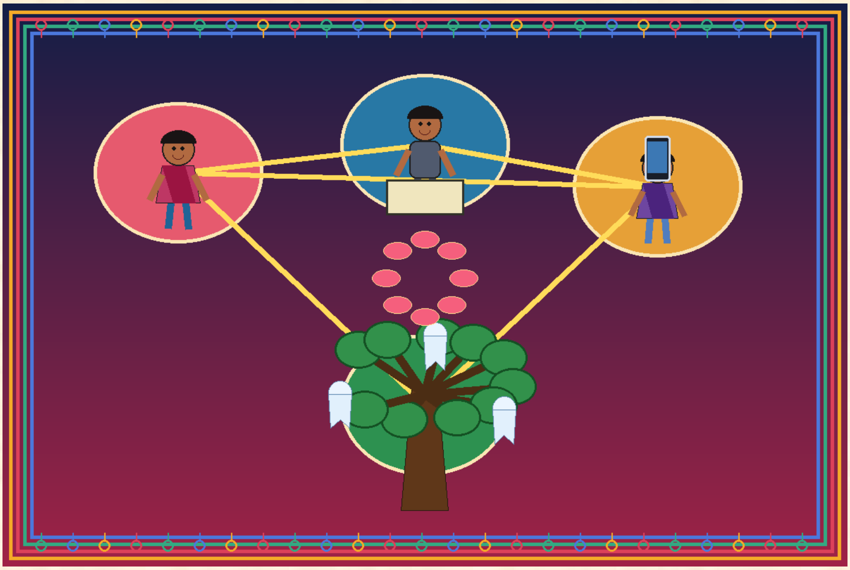

अध्याय १०

मीराक साहस

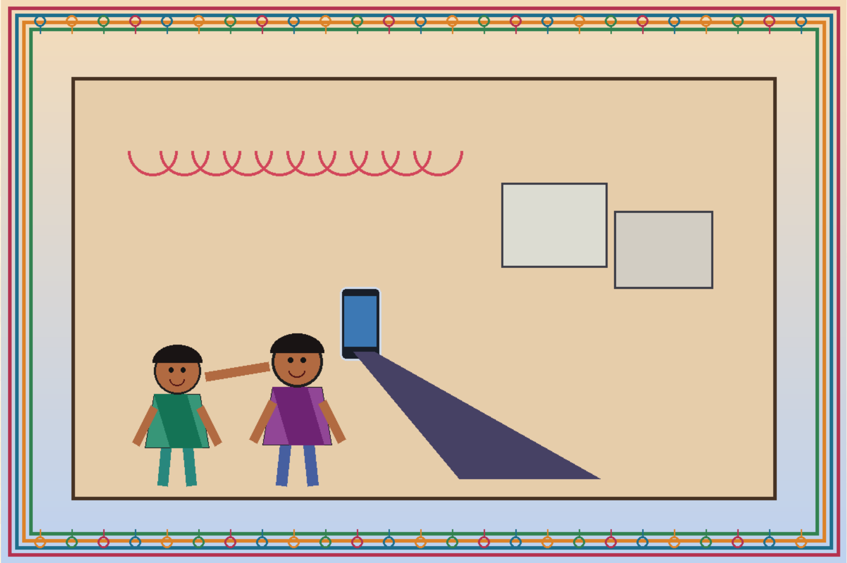

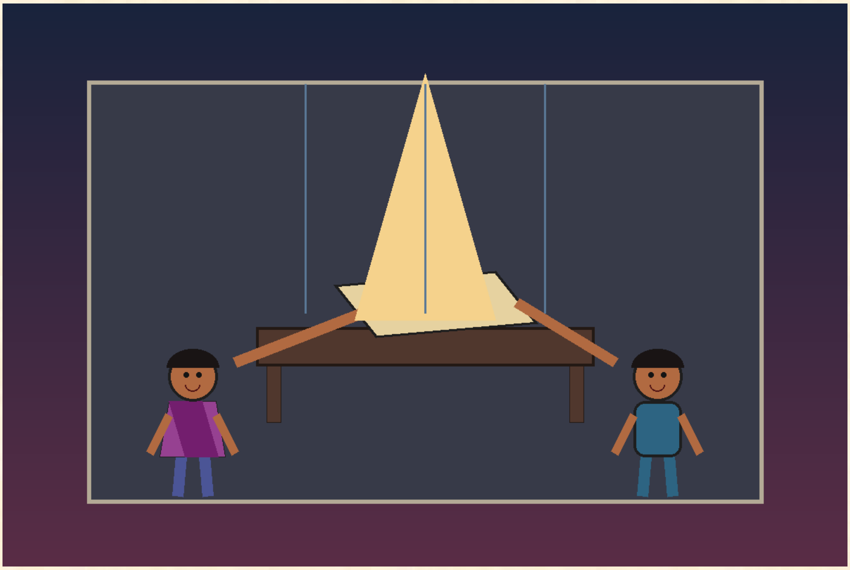

गोप कुमारक जाँचमे एकटा नव नाम जुड़ल — मृणालिनी आर्या, जिनका सभ मीरा कहैत छला। ओ एकटा कानूनक जानकार छलीह, आ गढ़ नारिकेल वंशक दूरका सदस्य छलीह।

चन्द्रपाल बत्राक गिरोह मीराक निजी बात–चीत आ फोटो चोराकऽ हुनका डेरा क धमकी देलक — "अगर अहाँ ई जाँचमे मदति करब, त हम अहाँक निजी बात सभकेँ सार्वजनिक कऽ देब।"

मीरा पहिने डेरा गेलीह। मुदा हुनकर एकटा नीक मित्र हिम्मत देलनि — "जे लोक डरा क चुप करेबाक कोशिश करैत अछि, ओ स्वयं बेसी डेरपोक होइत अछि।"

मीरा साहससँ निर्णय लेलीह जे ओ डरत नहि। ओ गोप कुमारकेँ अपन सभटा प्रमाण देलनि आ कहलनि — "हमरा डेरा क चुप करेबाक कोशिश भेल, मुदा असली मुद्दा हमर निजता नहि, ई अपराधी जाल अछि।"

गामसँ बा (हुनकर पुरान दादी) एकटा पुरान वंशावली पोथीमे मीराक नाम लिखल देखलनि, आ कहलनि — "जे परिवारक बेटी अपन नाम अपने लिखैत अछि, ओकरा कियो मेटा नहि सकैत।"

मीरा भोरे अपन बयान दर्ज करौलनि, आ ई सत्यक खोजमे अपन पूरा साहससँ जुटि गेलीह। हुनकर ई साहसे आगाँ चलि क सत्यक बहुत रास दरबाजा खोलत।

चन्ना गाछीमे भूत सभ ई बात सुनि प्रसन्न भेला। बूढ़बा भूत कहला — "जे धमकीसँ नहि डरैत, ओकरा गोहियो नहि खा सकैत।"

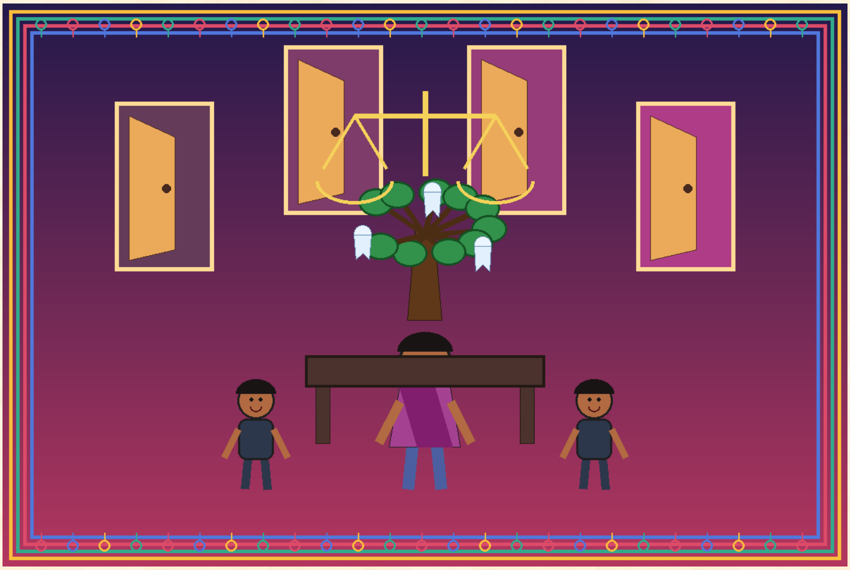

अध्याय ११

धनक कारी नदी

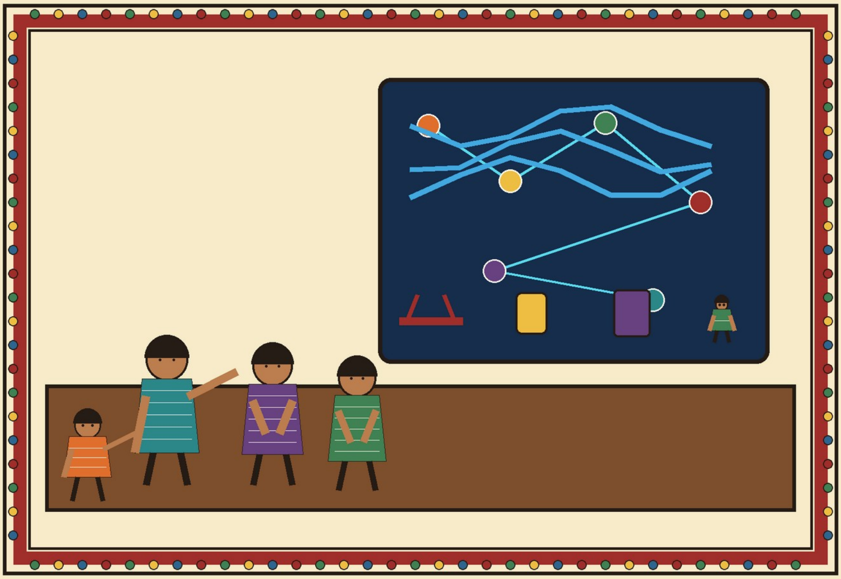

गोप कुमार, मीरा, आ हुनकर संगी सभ मिलि क एकटा पैघ जाँच शुरू केला। हुनका एकटा गुप्त सूचनादाता भेटला —— ईशान दत्त —— जे बहुत रास प्रमाण अनैत छला।

ईशान दत्त बतौलनि जे अपराधी सभ अपन खाता सभकेँ नदीक नाम दैत छल —— जेना कमला, बलान, गंगा —— ताकि कियो पकड़ि नहि सकय। ई सभटा धोखाधड़ी —— पुलक मजदूरक धोखा, बीमारीक समयक ठगी, ऑनलाइन जुआ, आ फूलमति जेहन घटना —— सभटा एक्के अपराधी जालसँ जुड़ल छल।

गोप कुमार स्क्रीनपर सभटा प्रमाण देखलनि —— पुल–परियोजना घोटाला, बीमारीक समयक नकली आपूर्ति, ऑनलाइन जुआ, आ

धोखाधड़ीक खाता। चन्द्रपाल बत्रा आ राघव सोमानी नामक दुइ लोक एहि जालक मुख्य सञ्चालक छला।

देविका साहकेँ (उज्ज्वलक बहिन) बुझि पड़ल जे हुनकर भाइक दुर्घटना कोनो अकस्मात नहि छल —— ओ एहि बड़का जालक शिकार भेला।

मीरा सभकेँ एकटा बात कहलनि जे सभकेँ प्रेरित केलक —— "डरक मालिक एक्के अछि।" मतलब —— जतेक रास लोक सभकेँ अलग–अलग तरहेँ डेरा क शोषित कएल गेल, ओ सभटा एक्के अपराधी शक्तिक काज छल।

ईशान दत्त सभकेँ एकटा योजना बतौलनि —— एहि अपराधकेँ रोकबाक चारि तरीका —— अदालतमे मुकदमा, लोकक सामने सत्य लाबब, दुनिया भरिमे आवाज उठाएब, आ सबसे महत्वपूर्ण —— लोकक हिम्मत।

सत्यव्रत मेहताकेँ एकटा रहस्यमय चिट्ठी भेटलनि, जाहिमे लिखल छल —— "तीस नाम नहि, तीन सय। ई मामूली नहि, एकटा पैघ अपराध अछि।"

गोप कुमार सभटा प्रमाणक तीन प्रति बनौलनि —— एक सत्यव्रत मेहता लग, एक विदेशमे रहनिहार ईरा आरुणि लग, आ एक गामक पुरान गाछक कोटरमे सुरक्षित रखलनि —— "जँ कतहु एक प्रति नष्ट भऽ जाए, त दोसर बचल रहत।"

चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहला —— "आब हमरा सभकेँ खाता, फाइल, स्क्रीन, अदालत, आ विदेशक सभागार सभटा पार करय पड़त।" पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ कहला —— "नाम। प्रमाण। स्मृति। साहस। एहि चारिक बलपर सत्यक जीत होएत।"

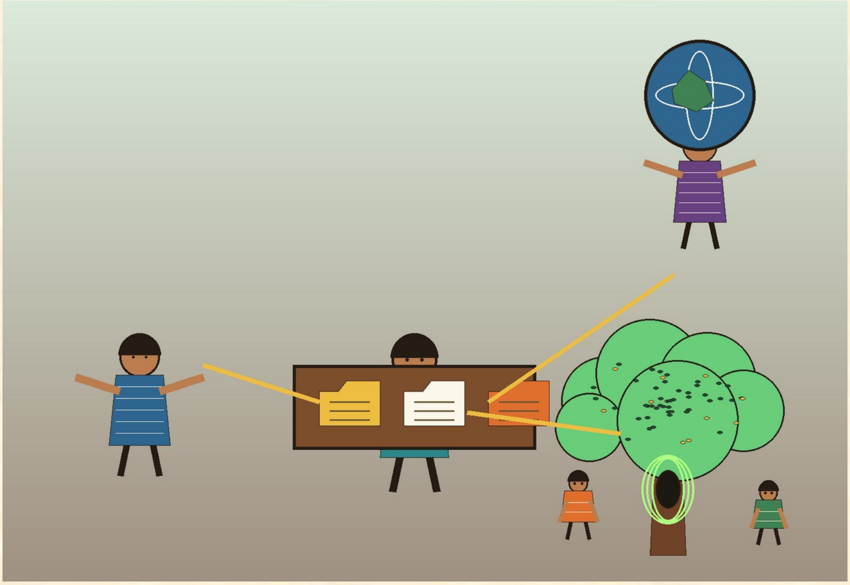

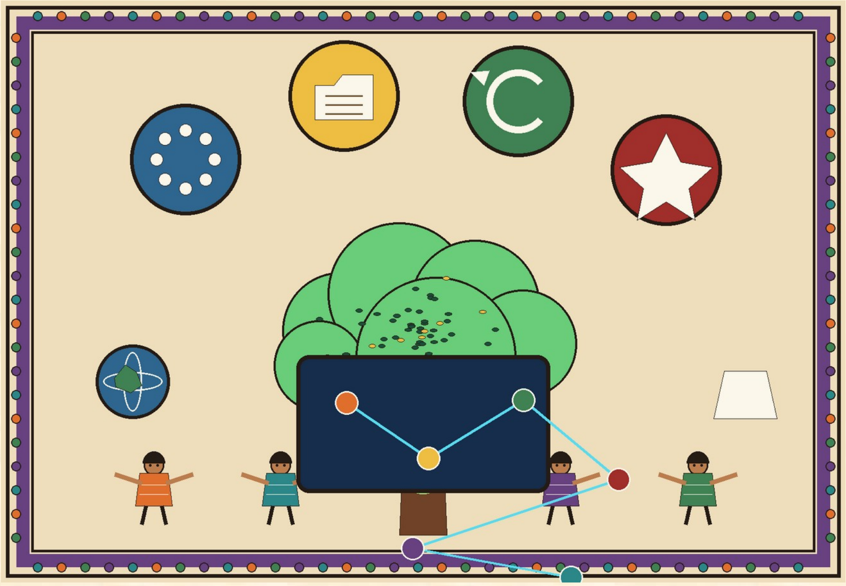

अध्याय १२

पीपरक खोखरमे राखल राज

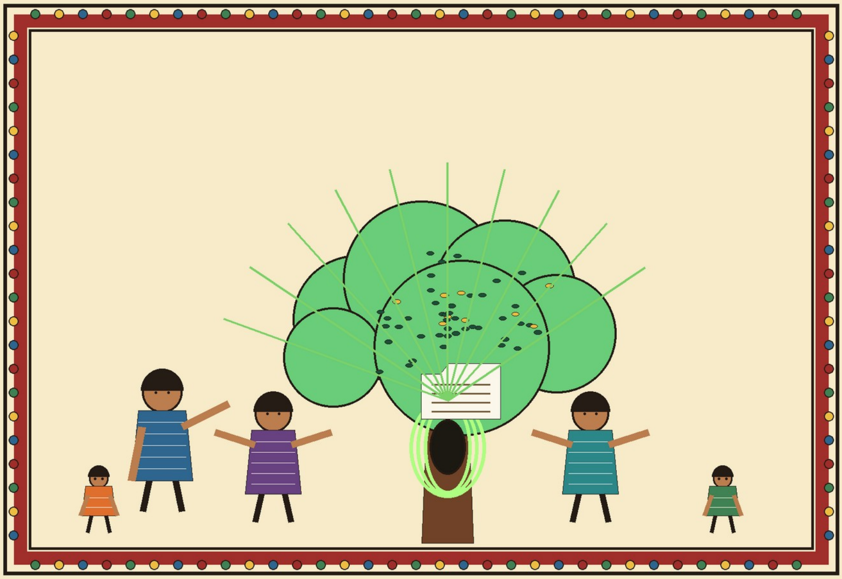

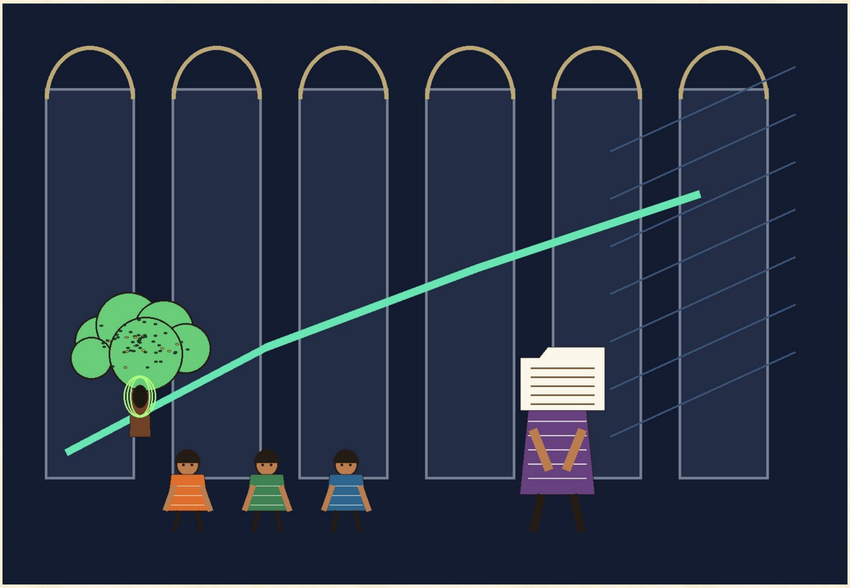

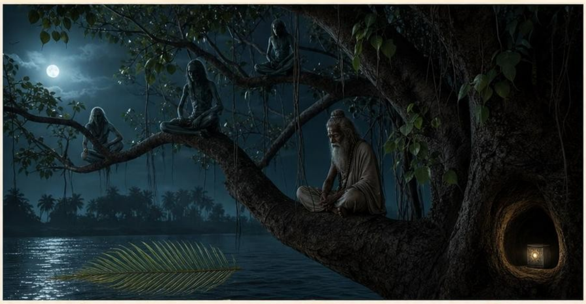

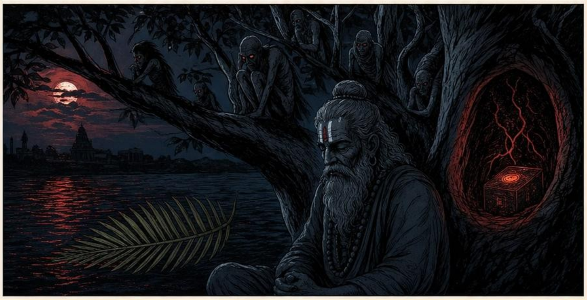

गामक पुरान पीपर गाछक खोखरमे राखल प्रमाणक तेसर प्रति हरियर उजास देनाइ शुरू केलक। गोप कुमार, सत्यव्रत मेहता, आ मीरा तीनू प्रति ठीक–ठाक जगहपर सुरक्षित रखबाक निर्णय लेला।

सत्यव्रत मेहता सरकारी कागचमे झूठ लिखल देखि दुखी भऽ गेला। ओ अपन डायरीमे लिखलनि — "जँ सरकारक कागच झूठ बाजय लागय, त न्यायकर्ताकेँ ककर संग रहबाक चाही?"

एतबे दूर विदेशमे, ईरा आरुणि (गढ़ नारिकेल वंशक, अमेरिकाप्रवासी) केँ एकटा गुप्त फाइल भेटलनि, जाहिमे गामक पुरान बात, फोटो, आ सत्यक प्रमाण छल। ईरा निर्णय लेलीह जे ओ अपन विश्वविद्यालयक कार्यक्रममे एहिपर तीखा सवाल पुछती।

ईशान दत्त सभकेँ चारिम एकटा नव दिशा — सत्यक अस्तित्व सार्वजनिक रूपेँ दर्ज करब — बतौलनि, ई सावधानीसँ करबाक छल, जाहिसँ कोनो पीड़ितक सम्मानपर आँच नहि अबय।

ओतय हरिहरन (एकटा प्रभावशाली अधिकारी) आ चन्द्रपाल बत्रा एहि सभटा बातसँ चिन्तित भऽ गेला, कारण सत्य धीरे-धीरे बाहर आबि रहल छल।

गोप कुमार स्वप्नमे देखलनि जे भूत सभ कबड्डी खेलि रहल छथि, आ गेंदक बदला सत्यक प्रमाण एक-दोसराकेँ पास कऽ रहल छथि। जागिकऽ ओ अपन हर फाइलमे पीड़ितक सम्मान आ सुरक्षाक सूची जोड़लनि।

गामक पीपर गाछक पातसभक नस मिलिकऽ एकटा नक्शा बनौलक — गाम, दिल्ली, विदेशक विश्वविद्यालय, आ शहर सभ एक रेखामे जुड़ल छल। पीपरक ब्रह्मा कहला — "दुनियाँ गामक भीतर आबि गेल।" आ गामक नदीमे पहिल बेर नारिकेलक पात डूबबाक बदला ऊपरे तैरैत रहल — मानू सत्य आब हारय बला नहि छल।

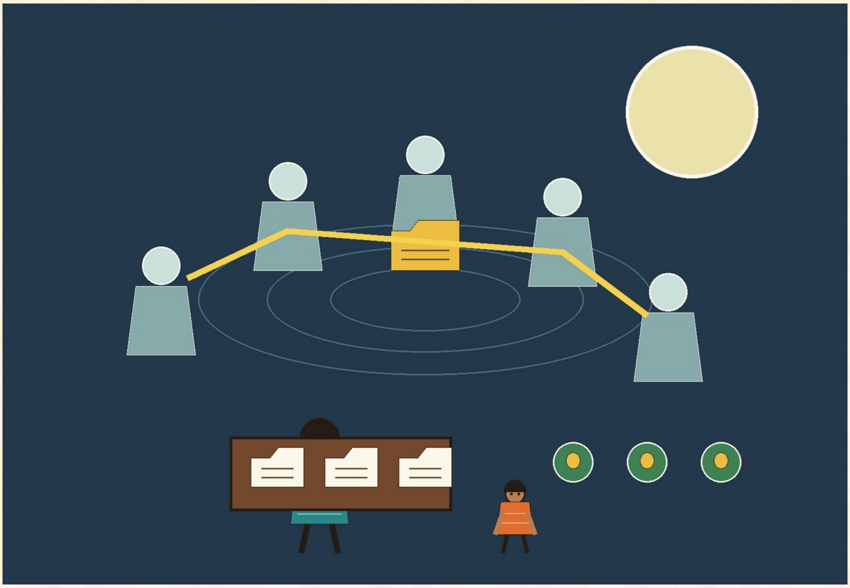

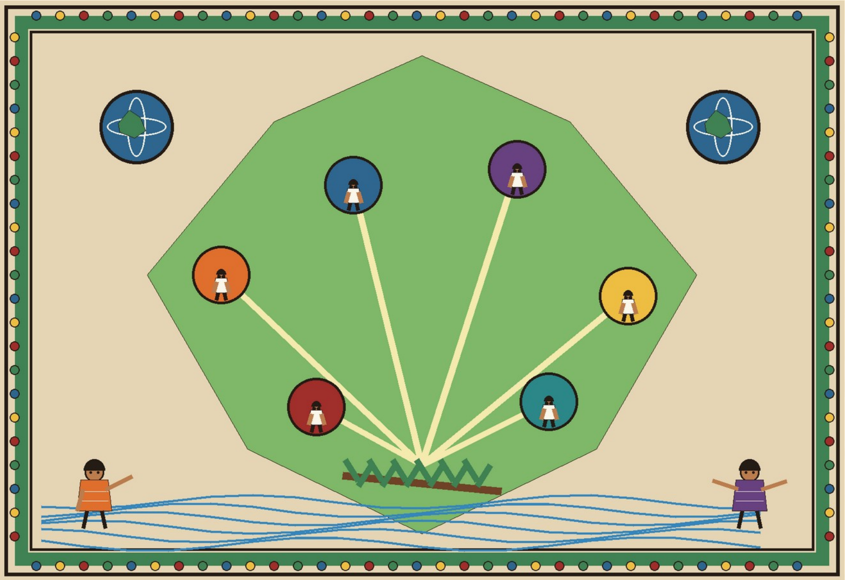

अध्याय १३

सीलबन्द आवरण

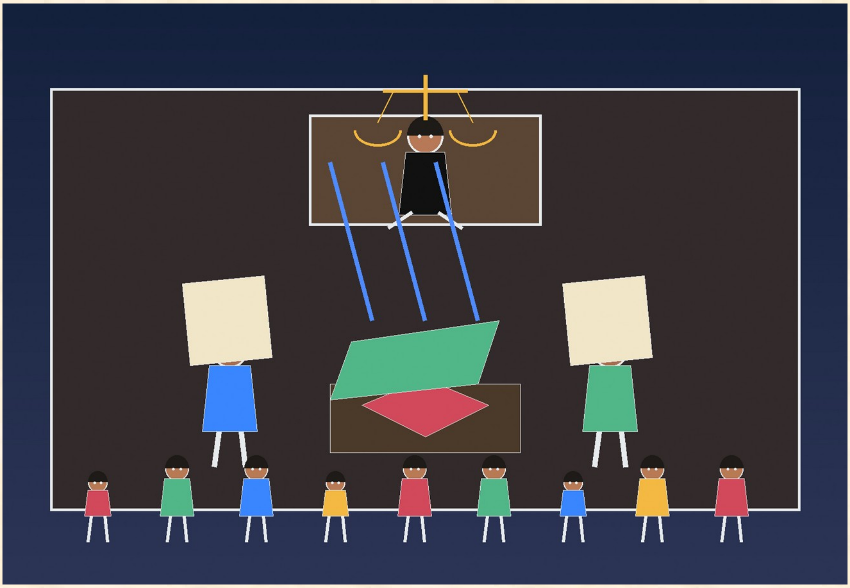

भोरे सत्यव्रत मेहता अपन पुरान टाइपराइटरपर एकटा स्पष्टीकरण–पत्र लिखलनि। ओ अदालतमे मामला रखबाक तैयारी करय लगला।

अदालतमे सुनवाई शुरू भेल। हरिहरन आ बत्रा तरह–तरहक बहाना बना क मामलाकेँ लम्बा करय चाहला। मुदा सत्यव्रत मेहता उठि क दृढ़तासँ कहला — "राज्य जँ अपूर्ण अभिलेखपर टिकल रहत, त ओ असत्यपर टिकल अछि।"

न्यायाधीश सुनि क आदेश देला जे सभटा नाम आ प्रमाण सुरक्षित रखल जाए, आ जँ कोनो निजी बात हो त ओकरा सीलबन्द राखल जाए, मुदा नाम आ प्रमाण खुजल रहत।

सत्यव्रत मेहता अदालतमे मृतक सभक नाम पढ़य लगला। पहिने सरकार–मान्य तीस नाम, फेर बाकी सभ नाम — गोप कुमार ओ शेष नाम पढ़बाक

अनुमति लऽ स्थिर स्वरमे नाम पढ़ला। पूरा अदालतमे शांति छाइ गेल। कोनो ताली नहि, केवल भारी मौन।

न्यायालय आदेश देलक —— सभटा प्रमाणक सुरक्षा हो, आ स्वतंत्र जाँच हो। ई पूरा जीत नहि छल, मुदा एकटा बड़का शुरुआत छल।

विदेशमे ईरा आरुणिकेँ खबर भेटलनि जे "नाम अदालतमे पढ़ल गेल।" ओ आँखि मूनि गढ़ नारिकेलक कबड्डीक ध्वनि सुनलनि, जेना गामक भूत सभ हुनका संग खुशी मना रहल होथि।

चन्ना गाछीमे भूत सभ ओहि राति हल्लुक भऽ गेला। बूढ़बा भूत कहला —— "ई हार नहि, पहिल दरार अछि। जखन एकटा दरार पड़ैत अछि, त पूरा देबाल धीरे-धीरे खसैत अछि।"

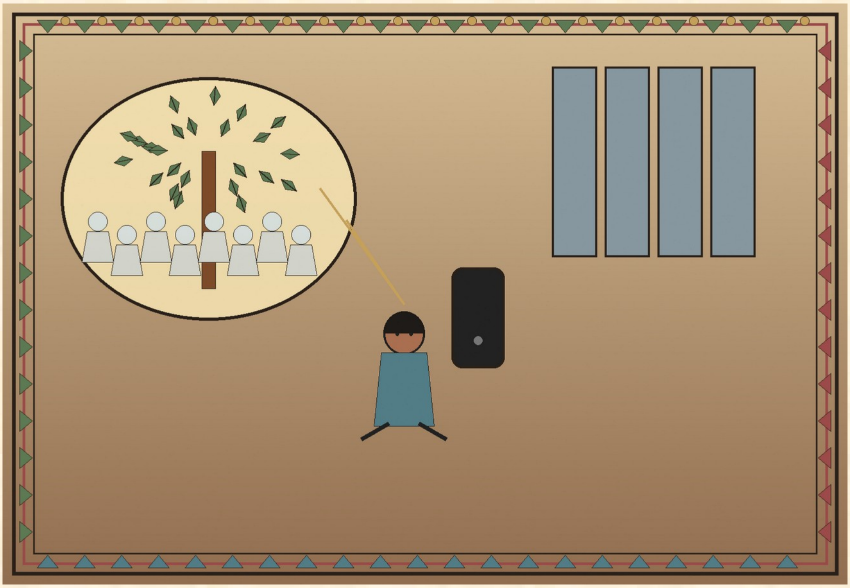

अध्याय १४

घर घुरबाक रस्ता

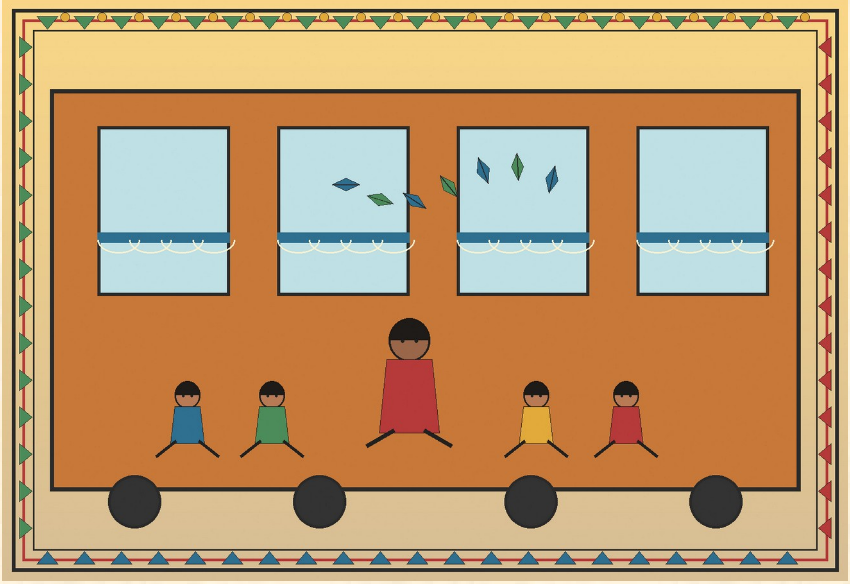

अदालतसँ बाहर निकलिते सभकेँ जूतामे गीला माटिक गन्ध लागल — जेना गंगाक कातसँ गढ़ नारिकेल धरि कोनो अदृश्य पाथ बनल हो। सभ निर्णय केला जे कुछ दिनक बाद फेर गढ़ नारिकेल घुरल जाए।

रेलयात्रामे बा (दादी) सभकेँ कमला–बलान नदीक कथा सुनौलनि — "शांत नदीक अपराधो चुपचाप चलैत अछि, मुदा सत्यक गीत कहियो नहि रुकैत।"

गामपहुँचि ईरा आरुणिकेँ बा माथपर हाथ राखि आशीष देलनि। साँझमे गामक लोक चुपचाप पीपरक छाँहमे जुटला — कोनो मंच नहि, केवल लालटेन आ आपसी विश्वास।

गोप कुमार माटि छूइ कऽ कहलनि — "जकर नाम कागचमे नहि, ओकर नाम आइ माटिपर राखब।" ईशान दत्त तीन पोटली अनलनि — मजदूर-सूची, धोखाधड़ीक सूची, आ धनक मार्ग — "ई सभ सत्यक अस्थि अछि।"

बा कहलनि — "अस्थि पानिमे देल जाइत अछि।" गोप उत्तर देलनि — "एहि बेर पानिमे नहि, गाछक जड़िमे।" सभटा प्रमाणक प्रति एकटा पीतलक डिब्बामे नारिकेल गाछक जड़ि लग गाड़ल गेल — गवाहीक बीयाक रूपमे, जे आगाँ चलि क पैघ गाछ बनत।

रातिमे चन्ना गाछीक कबड्डीमे स्पष्ट नाम सुनाइ देला — सरयू, नगीना, उज्ज्वल, हुलासी, फूलमति। भोरमे सभकेँ बुझायल — असली घर-घुराव तखन पूर्ण होएत जखन सत्यक हर पन्ना पूर्ण रूपेँ न्यायमे उपस्थित होएत। कथा एतय समाप्त नहि भेल — ई त एकटा नव आरम्भ छल।

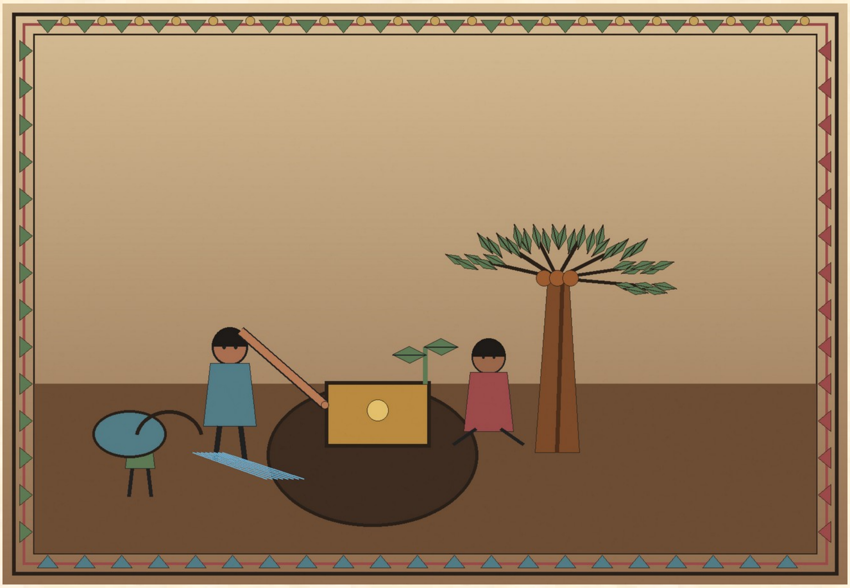

अध्याय १५

नामक जल

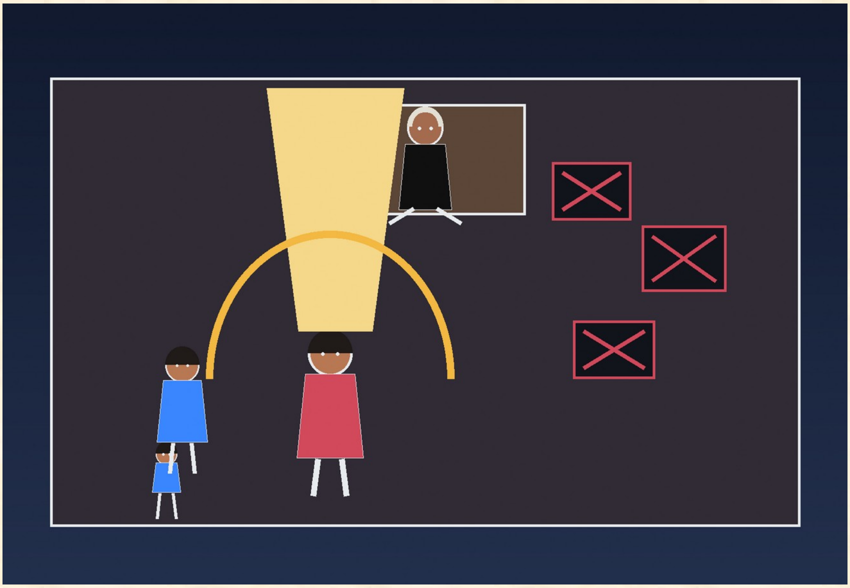

फैसलाक दिन आयल। सत्यव्रत मेहता अदालतमे एकटा पुरान कपड़ाक थैला लऽ क पहुँचला, जाहिमे सरकारी कागच नहि, गामसँ आयल एकटा सुखायल नारिकेलक पात छल — जाहिपर ओ सभटा नाम लिखल छल, जे सरकारी सूचीमे कहियो नहि छल।

अदालतक कक्षमे बहुत भीड़ छल। सत्यव्रत मेहता ठाढ़ भऽ क कहला — "महोदय, राज्यक अभिलेखमे जे नाम अनुपस्थित अछि, ओकरा अनुपस्थित रहय देब न्यायालयक अपमान होएत।"

हरिहरन विरोध केलनि, मुदा सत्यव्रत मेहता दृढ़तासँ एक-एक क नाम पढ़य लगला — बिसेसर, सरयू, नगीना, आ बहुत रास आर नाम। पूरा अदालत शान्त भऽ गेल। कोनो आवाज नहि, केवल गम्भीर मौन।

मीरा (मृणालिनी) सेहो साहससँ ठाढ़ भऽ कऽ कहलीह —– "जे किछु ब्लैकमेल आ धमकीक प्रमाण अछि, ओ खुजल रहय। गरिमा हमर जीवनमे अछि, धमकीदाताक बातमे नहि।"

न्यायाधीश ध्यानसँ सभटा सुनला आ एकटा बड़का आदेश देला —– स्वतंत्र जाँच होएत, सभटा नाम आ प्रमाण सुरक्षित रहत, आ पीड़ित सभक निजताक रक्षा होएत। ई पूर्ण जीत नहि छल, मुदा सत्यक बहुत पैघ जीत छल।

गढ़ नारिकेलमे बा एकटा नारिकेलक फल तोड़लनि। ओहिसँ एकटा भीजल पन्ना निकलल, जाहिपर बहुत रास नाम लिखल छल —– सरयू, नगीना, उज्ज्वल, मीरा, मुन्ना, आ आर बहुत सभ। आरुणि (नन्दक वंशज) पुछलक —– "अन्तिम पंक्ति खाली किएक अछि?" बा उत्तर देलनि —– "जे आगाँ मरत, ओकर नाम एतय आएत। कथा समाप्त भऽ सकैत अछि, मुदा नाम–सूची कहियो समाप्त नहि होइत। एतय जँ कोनो नामकेँ भुलेबाक कोशिश होएत, त गामक लोक ओकरा फेर उठा देत।"

चन्ना गाछीमे ओहि राति बूढ़बा भूत घोषणा केला —– "गोहि देह खाइत अछि, मुदा नाम जँ पानिपर लिखाइ जाए, त पानियो ओकरा मेटा नहि सकैत।"

गढ़ नारिकेलक छोट बच्ची अनन्या दुआरपर खेलैत–खेलैत अचानक चन्ना गाछी दिस देखलक आ धीरे–धीरे बाजल —– "कबड्डी... कबड्डी..." बा मुस्कुराइत कहलनि —– "जखन बच्चा भूतक खेल सीखि लैत अछि, तखन भूत बूढ़ नहि रहैत, ओ भविष्य बनि जाइत अछि।"

एहि तरहें ई कथा एतय पूर्ण नहि होइत —– ई त एकटा गामक, एकटा परिवारक, आ पूरा समाजक सत्यक खोजक निरन्तर यात्रा अछि, जे नामसँ नाम, पीढ़ीसँ पीढ़ी आगाँ बढ़ैत जाइत अछि।

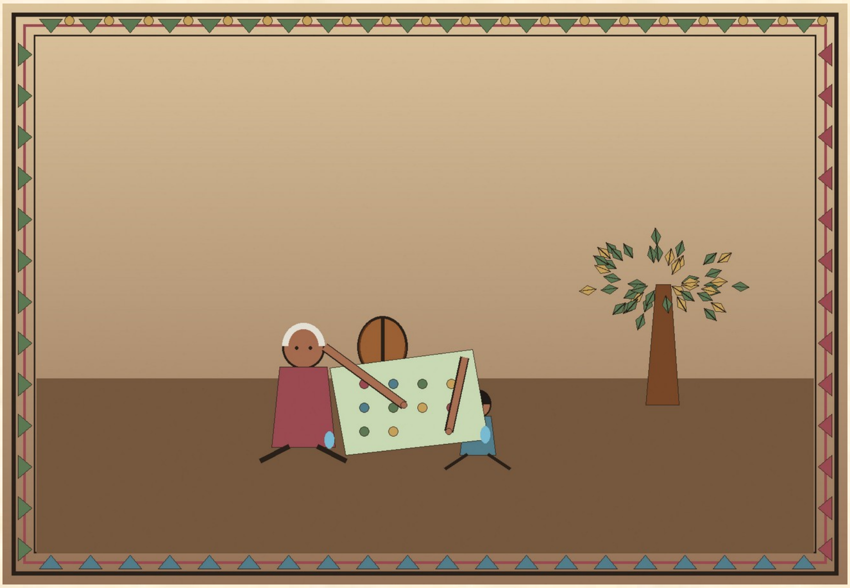

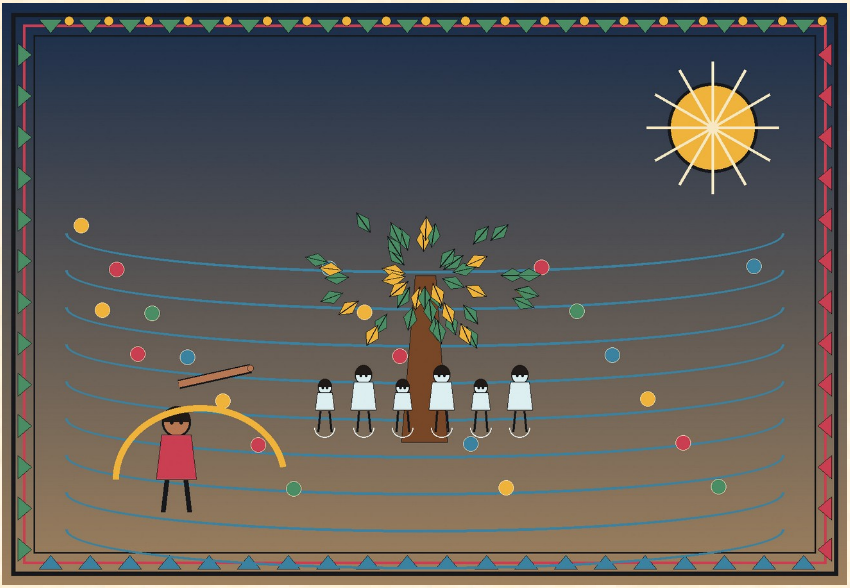

अध्याय १६

चन्ना गाछीक अदालत

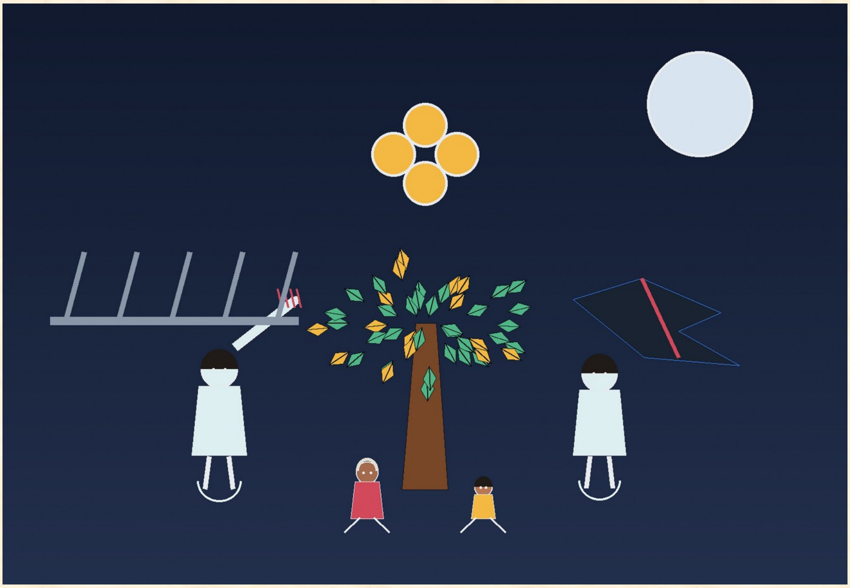

ओहि राति गढ़ नारिकेल गाममे एकटा अनोखा सन्नाटा छाइ गेल। शहरक अदालतक खबर पानिक माध्यमसँ गामतक पहुँचि गेल छल — जखन स्त्री सभ पोखरिसँ लोटा भरि घुरलीह, त लोटाक पानिमे नाम चमकि रहल छल।

बा देहरीपर बैसल छलीह। ओ धीरे कहलनि — "आब मनुष्यक अदालत नहि, गाछक अदालत लागत।"

चन्ना गाछीमे ओहि राति एकटा विशेष सभा भेल। बूढ़बा भूत, हुलासी, पनिडुब्बी, राकश — सभ जुटला। पीपरक ब्रह्मा चारू मुँहसँ पुकार लगौला — "जिनकर नाम काटल गेल, से सभ उपस्थित होउ!"

धीरे-धीरे पुलक मजदूर सभक छाह आयल — सरयू, बिसेसर, आ आर बहुत। फेर उज्ज्वल आयल — जे स्क्रीनक जालमे फँसल छल। फेर मीरा जेहन साहसी लोक आयल, जे अपन गरिमाक रक्षा केने छलीह।

सरयू पहिल गवाही देलक — "हम खसलहुँ। हमरा बचेबाक कियो नहि आयल। बादमे हमर नाम सेहो नहि आयल। मुदा आइ हम पूछैत छी — जँ हम आयबे नहि केने रही, त हमर हाथमे ई पुलक छाला कतयसँ आयल?"

उज्ज्वल कहलक — "जे मोबाइल–ऐप हमरा फँसौलक, ओकर मालिक देशमे नहि छल। जे धमकी देलक, ओ नकली छल, मुदा फँसाव असली छल।"

चन्ना गाछीक ई अदालत कोनो कागचक अदालत नहि छल। एतय कोनो जेल नहि, मुदा स्मृति छल। एतय कोनो जुर्माना नहि, मुदा जागरण छल। पीपरक ब्रह्मा कहला — "जे लोक नाम मेटेबाक कोशिश करत, ओकरे नामकेँ ताकय पड़त। जे लोक सत्य दबेबाक कोशिश करत, ओकर मोन कहियो शांत नहि होएत।"

फैसलाक बाद सभ मृतक शान्त भऽ गेला। ताली नहि बाजल, केवल एकटा भारी बोझ हटल, जे बहुत दिनसँ सभक छातीपर छल। उज्ज्वल अपन बहिन देविका दिस देखलक। देविका कहलीह — "तोहर नाम हम अपन हृदयमे राखब।"

बा सभकेँ कहलनि — "आब हारल लोककेँ काज चाही। जीत पाबि लेल गेल, मुदा आब सत्यक ई जीतकेँ लोकक जीवनमे लागू करय पड़त।"

ओहि दिनसँ गामक लोक नव उमंगसँ काज पर लागि गेल — कियो बच्चा सभकेँ ऑनलाइन धोखाधड़ीसँ बचबाक तरीका सिखबय लागल, कियो स्त्री सभकेँ हिम्मत देबय लागल जे "लाज अपराधीक होइत अछि, पीड़ितक नहि।"

एहि तरहेँ ई कथाक पहिल चक्र पूर्ण भेल — मुदा असली यात्रा अखन शुरू भेल छल।

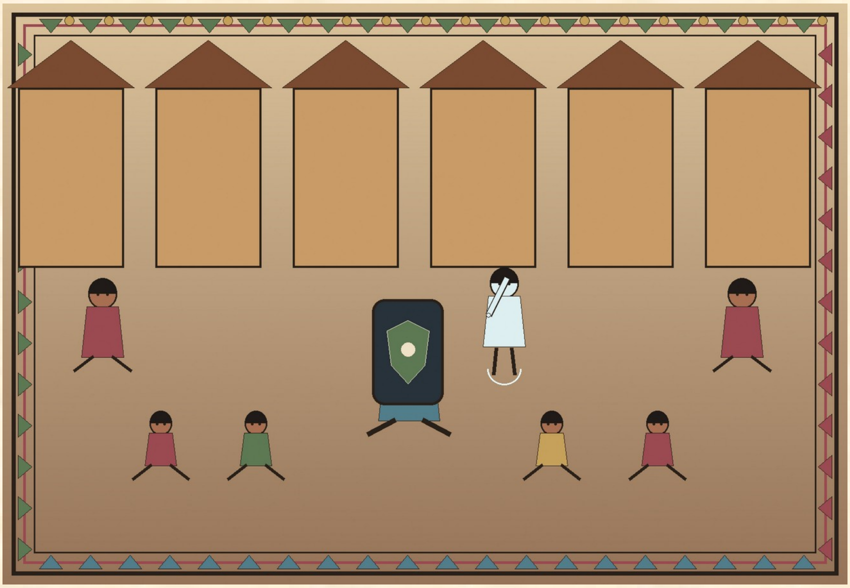

अध्याय १७

जीतक शोक

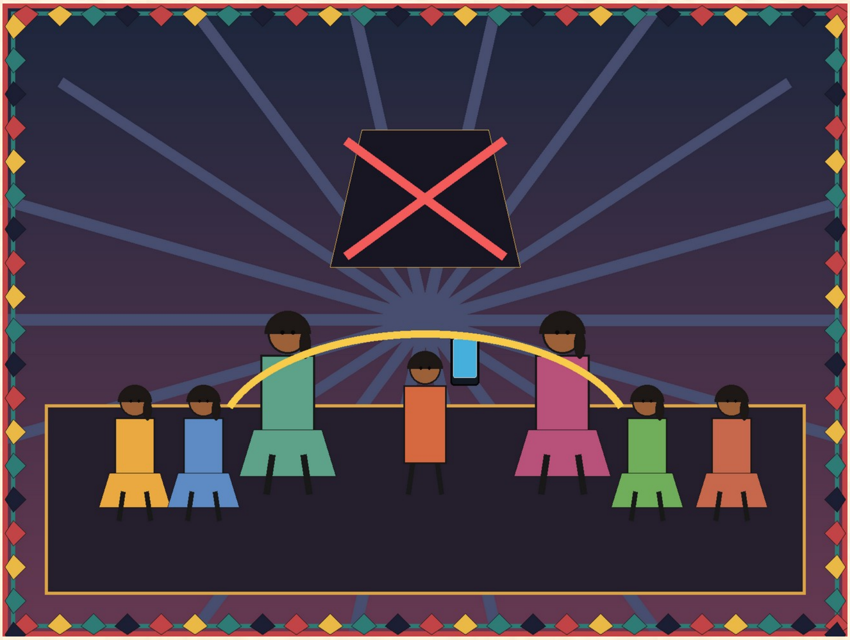

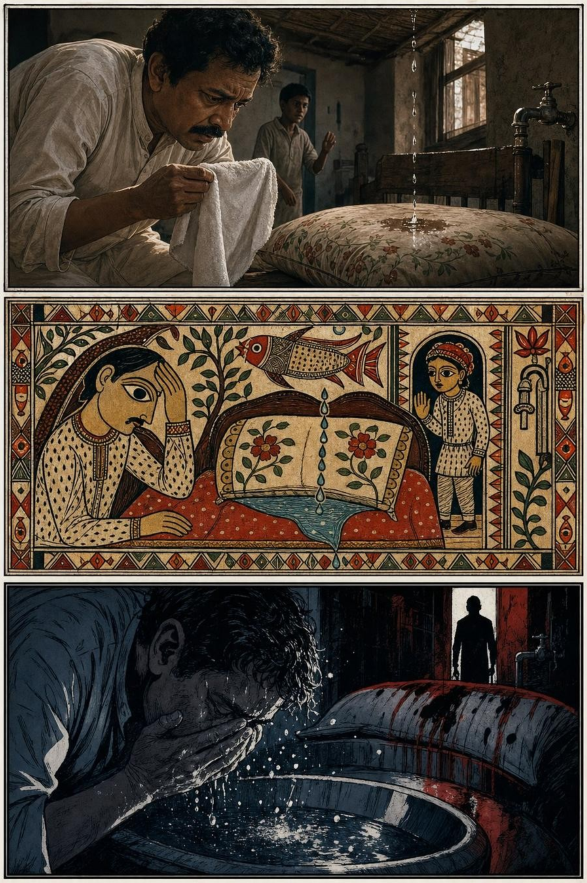

अदालतमे हरिहरन आ बत्रा जीतल कहल गेला, कारण सभटा साफ फैसला हुनकासभक विरुद्ध नहि आयल छल। मुदा ओहि जीतक बाद हुनका सभकेँ एकटा अजीब खालीपन महसूस भेल।

बटुकनाथ हरिहरनक तकियाक नीचाँ राति–राति पानि टपकैत रहल — ओ पानि जाहिमे नाम चमकैत छल — सरयू, बिसेसर, उज्ज्वल। ओ नल जँचबौला, छत जँचबौला, मुदा पानि आबिते रहल। ओकरा बुझि पड़ल जे किछु बातक मरम्मति मिस्त्रीसँ नहि होइत।

एतबे दूर गढ़ नारिकेलमे गोप कुमार, सौम्या, देविका, मीरा, आ ईरा सभ अदालतक दरबाजापर बैसि क अपील नहि केला। ओ सभ सोझे गाम चलि गेला आ अपन काजमे लागि गेला।

देविका पोखरिक घाटपर बैसि क गामक बच्चा–युवक सभकेँ बुझबय लगलीह —— "जँ कियो अहाँकेँ फोनपर धमका क डेराबय, त पहिने पानि पीबू, साँस लिअ, आ घरक लोककेँ बजाउ। अपराधी अहाँक अकेलापन चाहैत अछि।"

मीरा आ सौम्या स्त्री सभक बीच बैसि क कहलनि —— "जे कियो अहाँक फोटो वा बातसँ अहाँकेँ डेरा क धमकी देत, अपराध ओकर अछि, लाज ओकर अछि, अहाँक नहि।"

गामक बा आ आरुणि चन्ना गाछी लग एकटा पाथर गाड़ला, जाहिपर नाम लिखल जाइत छल। छोट अनन्या खड़िया लऽ क बैसलीह आ पुछलीह —— "नाम पहिने केकर लिखब? " बा उत्तर देलनि —— "जेकर नाम कागचसँ सभसँ पहिने काटल गेल छल —— सरयू।"

अनन्या धीरे–धीरे "सरयू" लिखलीह। ई छोट सन दृश्य बटुकनाथ हरिहरन धरि फोटोक रूपमे पहुँचल। ओ ई फोटो बहुत देर धरि देखैत रहला। अदालतमे विपक्षकेँ हराओल जा सकैत अछि, मुदा बच्चाक हाथमे लिखल जा रहल नामकेँ के रोकत?

चन्द्रपाल बत्रा अपन जालकेँ फेर मजबूत करय चाहलक, मुदा ओकरा खबर भेटल —— "गाम–गाम लोक अपने आपस अलर्ट कऽ रहल अछि। बूढ़ी दादी सभ अपन नाति–पोताकेँ कहि रहल छथि —— अजनबी फोनपर विश्वास नहि करू।"

चन्द्रपाल पहिल बेर बुझलक जे ओकर असली शत्रु पुलिस नहि, जन–जागरण अछि।

बटुकनाथकेँ धीरे–धीरे बुझायल जे जीतक बादो किछु टूटि गेल अछि। ओ अदालतक सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ क अपन मनमे कहला —— "घुरू, फेर लड़ू।" मुदा कियो उत्तर नहि देलक। केवल दूर, चन्ना गाछी दिससँ बच्चाक आवाज आयल —— "सरयू... उज्ज्वल... नाम काटब नहि..."

बटुकनाथ कान झाँपलनि, मुदा आवाज हृदयक भीतरसँ उठैत रहल। बूढ़बा भूत गाछीसँ फुसफुसैला —— "ई जीतक शोक अछि। एहिसँ पैघ सजा कोनो अदालत नहि दऽ सकैत।"

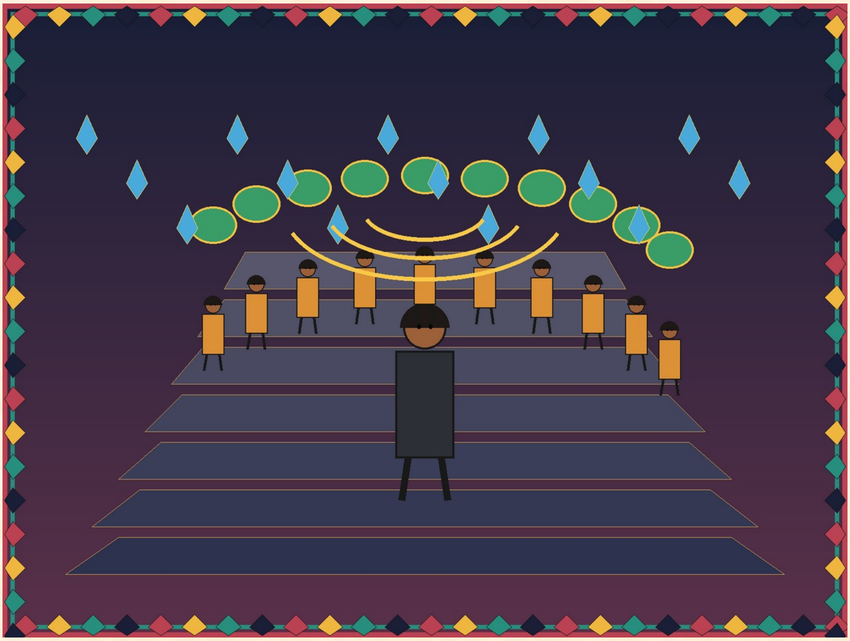

अध्याय १८

खाली अदालत

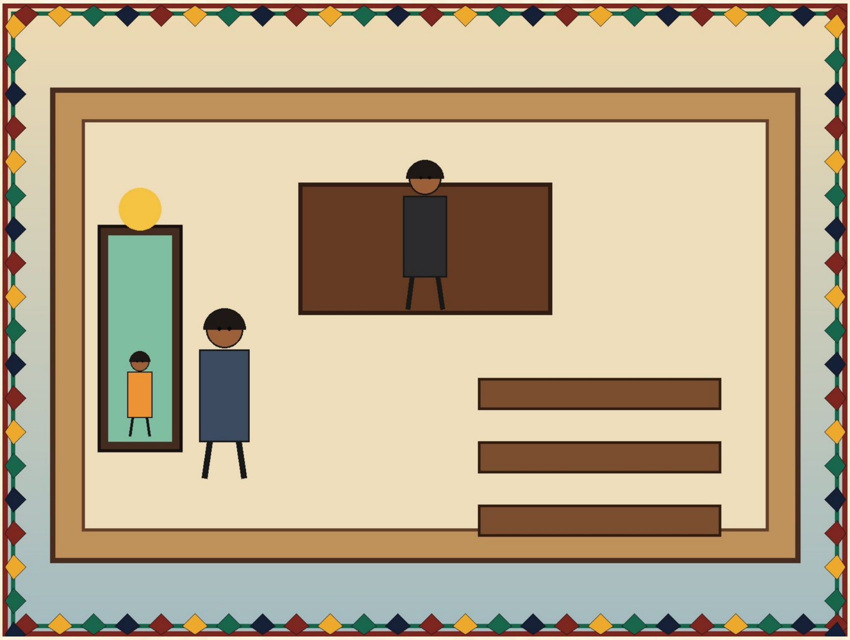

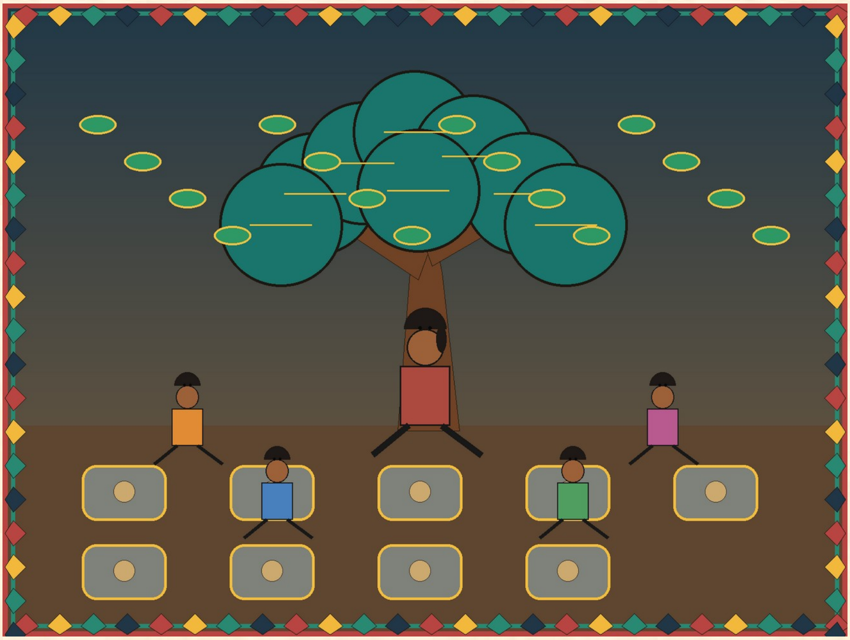

अगिला तारीखपर अदालत खुलल, मुदा एकटा अजीब बात भेल — याचिकाकर्ता सभ नहि आयला। बटुकनाथ हरिहरन क्रोधित भऽ क कहला — "ई न्यायालयक अवमानना अछि!"

सत्यव्रत मेहता शान्तिसँ ठाढ़ भऽ कऽ कहला — "महोदय, अनुपस्थितिक अर्थ सदिखन उपेक्षा नहि होइत। कखनो-कखनो लोक अदालतसँ बाहर ओ काज करैत अछि, जे अदालत नहि कऽ सकल।"

बटुकनाथ बीचमे बजला — "ई काव्य-पाठक स्थान नहि, न्यायालय अछि।" सत्यव्रत उत्तर देला — "काव्य ओहि दिन शुरू होइत अछि, जखन कानून नाम पढ़ब छोड़ि दैत अछि।"

न्यायाधीश किछु देर सोचि क अगिला तारीख दऽ देला।

बाहर आबि क बटुकनाथ बत्राकेँ पुछलनि — "ओ लोक कतय अछि?" बत्रा उत्तर देलनि — "गामे गेल छथि। खेती करय।" बटुकनाथ ई सुनि क घबरा गेला। ओकरा नहि बुझायल जे "खेती" क माने की छल, मुदा ओ बुझि गेला जे जखन लोक फेर अपन जड़िमे घुरि जाइत अछि, त ओकरा हराएब बहुत कठिन होइत अछि।

गढ़ नारिकेलमे चन्ना गाछी तर एकटा पाठशाला जेकाँ लगि रहल छल। हर पाथरपर एक नाम लिखल छल। बच्चा सभ नाम पढ़ैत छला, आ जे नहि बुझैत छला, से पुछैत छला। अनन्या पहिल पाथर पढ़लीह — "सरयू। ओ के छलीह?" बा उत्तर देलनि — "एकटा मजदूर, जकर नाम कागचसँ काटल गेल छल।"

देविका गामक युवक सभकेँ बुझबय लगलीह — "जँ कियो फोनपर कहय जे अहाँ 'डिजिटल कैद' मे छी, त डेराउ नहि। पहिल नियम — अकेला नहि डेराउ। दोसर — पाइ नहि पठाउ। तेसर — घरक लोककेँ बजाउ।"

मीरा आ सौम्या स्त्री सभकेँ हिम्मत देलनि — "लाज अपराधीक होइत अछि, पीड़ितक नहि।"

चन्द्रपाल बत्रा हांगकांगक अपन सम्पर्कसँ खबर पौला — "जँ गामक लड़की फोन काटय सिखा रहल अछि, त हमर धंधाक हानि होएत।" ओ चिन्तित भऽ गेला।

चन्ना गाछीमे भोरे-भोर एकटा नव खेल शुरू भेल। बच्चा सभ कबड्डी खेलैत छला, मुदा नियम बदलि गेल — जे पकड़ाइ जाइत, ओकर नाम काटल नहि जाइत, बल्कि सभ मिलि क ओकर नाम दोहरबैत। एहि तरहें खेल धीरे-धीरे स्मृतिक अभ्यास बनि गेल।

सत्यव्रत मेहता राति अपन डायरीमे लिखलनि — "आइ बुझलहुँ जे न्यायालयक सभसँ पैघ चुनौती मुकदमा नहि, समाजक जागरूकता अछि। जखन लोक अपना नाम पढ़ब, अपना बचाव करब सिखि लैत अछि, तखन अन्याय अपनहि कमजोर पड़ि जाइत अछि।"

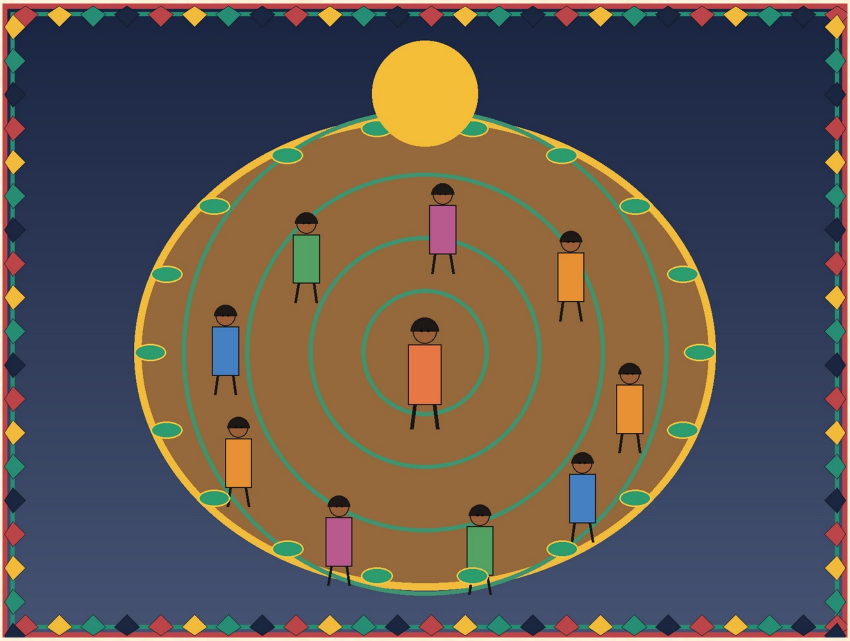

अध्याय १९

नामक अभिलेख

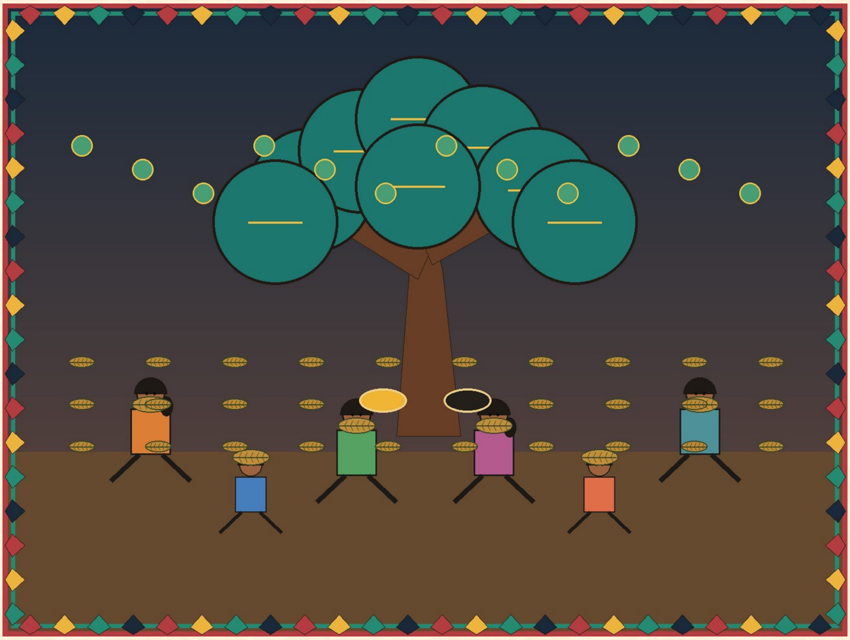

शहरक खाली अदालतक बात राति भरिमे गढ़ नारिकेल धरि पहुँचि गेल। भोरे आरुणि उठला। ओ राति भरि सुतल नहि छला।

बा दुआरपर बैसल छलीह। ओ पुछलनि — "कतेक नाम मोन रहल?" आरुणि उत्तर देला — "सभ नहि, मुदा शुरू करब त बाकी नाम अपने आबि जाएत।"

बा अपन पुरान संदूक खोललनि। ओहिमे नन्द आरुणिक ओ पुरान अधूरा आवेदन छल, जाहिमे लिखल छल — "मजदूरक असली संख्या सरकारी अभिलेखसँ मेल नहि खाइत अछि।"

बा कहलनि — "अभिलेख ई कागच नहि। अभिलेख ओ होइत अछि, जकरा लोक अपन हृदयमे राखैत अछि, मुदा हृदय फाटि जाइत अछि, तेँ ओकरा बाहर लिखबाक चाही।"

ओहि दिनसँ चन्ना गाछी लग एकटा नव काज शुरू भेल —– नामक अभिलेख। कोनो घोषणा नहि, कोनो कमिटी नहि। बस जकरा नाम चाही, से खुदे चलि आयल।

पहिने सरयू देवीक नातिन आयल —– "ई हमर नानी छथि। कागचमे नहि छथि, मुदा हमर घरमे छथि। हम चाहैत छी ओ चन्ना गाछीमे सेहो रहथि।" ओकर नाम नारिकेलक सूखल पातपर हरद आ काजरसँ बनल स्याहीसँ लिखल गेल —– "सरयू देवी।"

फेर कन्हैया पासवानक पोता आयल, फेर बहुत रास आर नाम —– मंसूर अली, फुलो मंडल, गनेशी सदा, आ बहुत सभ। बा एकटा नियम बनौलनि —– "सरकारी नाम नहि, घरमे जे नामसँ पुकारल गेल, वैह नाम लिखू। कागच झूठ बाजि सकैत अछि, मुदा घरक पुकार नहि।"

गोप कुमार अपन सैकड़ों छोट कागच निकाललनि, जाहिपर बहुत रास नाम आ प्रमाण छल —– "ई सभ सेहो नाम अछि —– केवल मजदूर नहि, बीमारीक समयक धोखाधड़ीक शिकार, स्क्रीनक जालमे फँसल युवक, आ आर बहुत सभ।"

मीरा एकटा महत्वपूर्ण नियम जोड़लनि —– "जकरा अपन कथा तुरन्त नहि कहबाक हो, ओकरा लेल मौनक स्थान सेहो रहत। कारण किछु सत्य तुरन्त नहि बाजि सकैत, ओकरा सुरक्षित समय चाही।"

राति होइत–होइत चन्ना गाछीक माटिपर बहुत रास नाम लिखल पातसभक चादर बिछि गेल। एक–एक कऽ सभटा नामक आत्मा बाजय लगल —– "हम उपस्थित।" धीरे–धीरे पूरा गाछी एहि आवाजसँ भरि गेल।

शहरमे सत्यव्रत मेहताकेँ सेहो एकटा नारिकेलक पात भेटलनि, जकरापर सभटा नाम लिखल छल। ओ पढ़ि क बुझि गेला —– "अगिला सुनवाई अदालतमे नहि, देशक स्मृतिमे होएत। नामकेँ कियो हराए नहि सकैत।"

बा गढ़ नारिकेलमे कहलनि —– "आइसँ नामक पाठशाला खुजि गेल।"

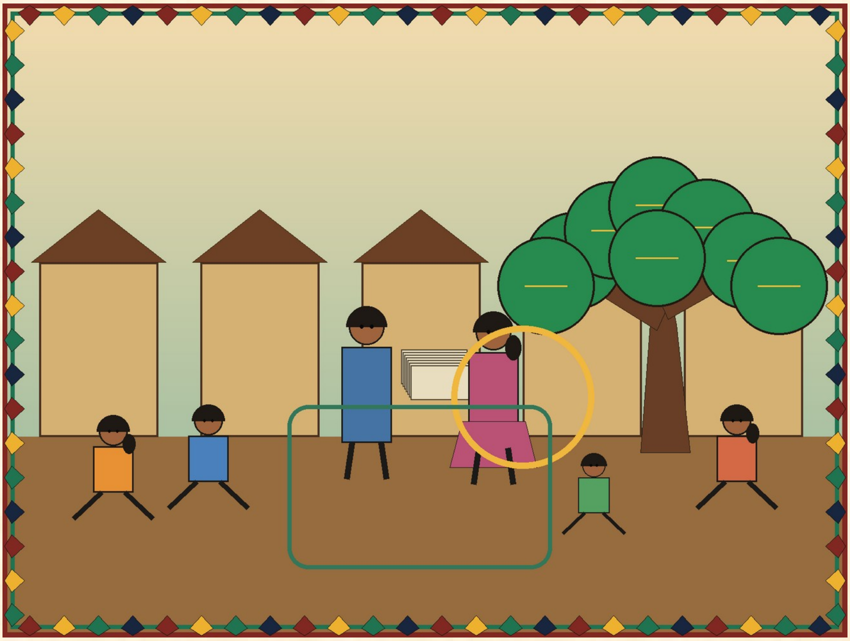

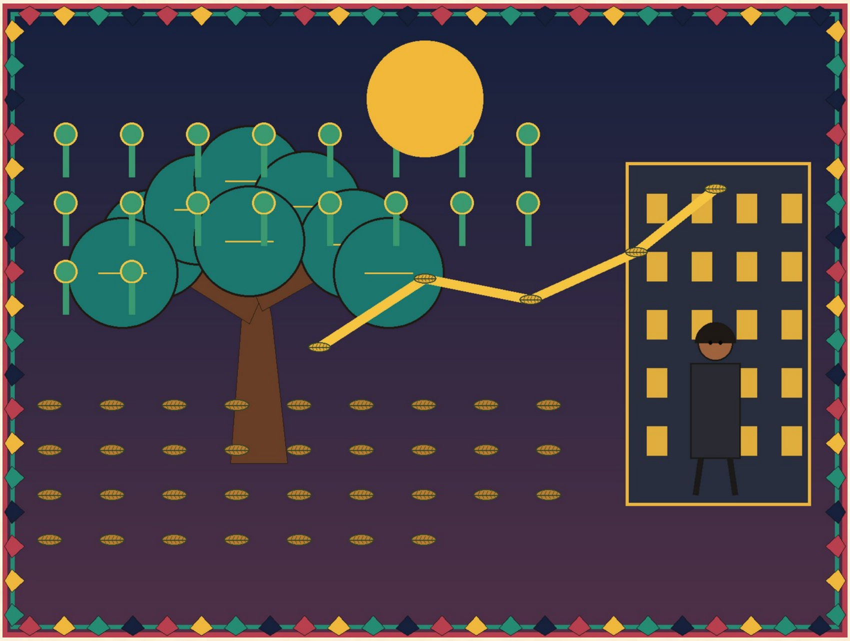

अध्याय २०

स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

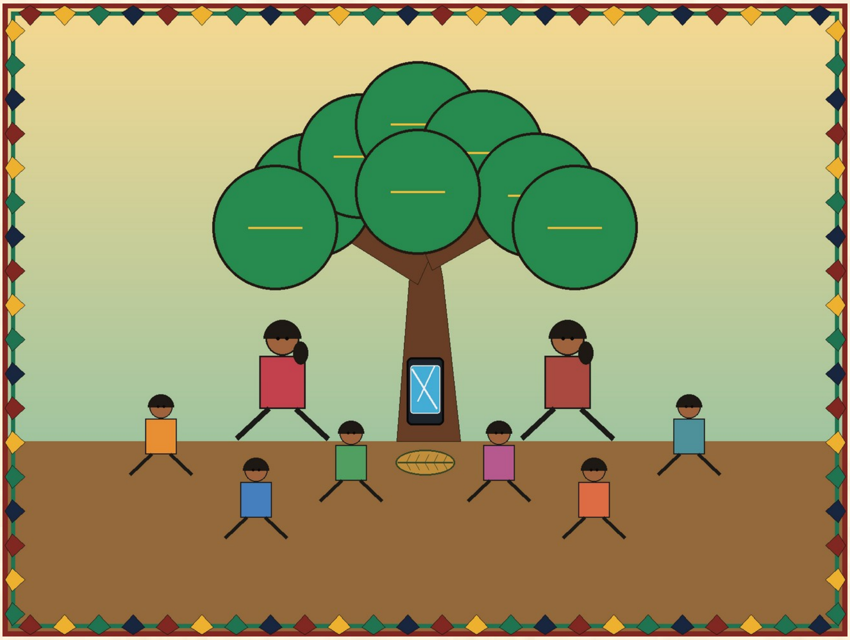

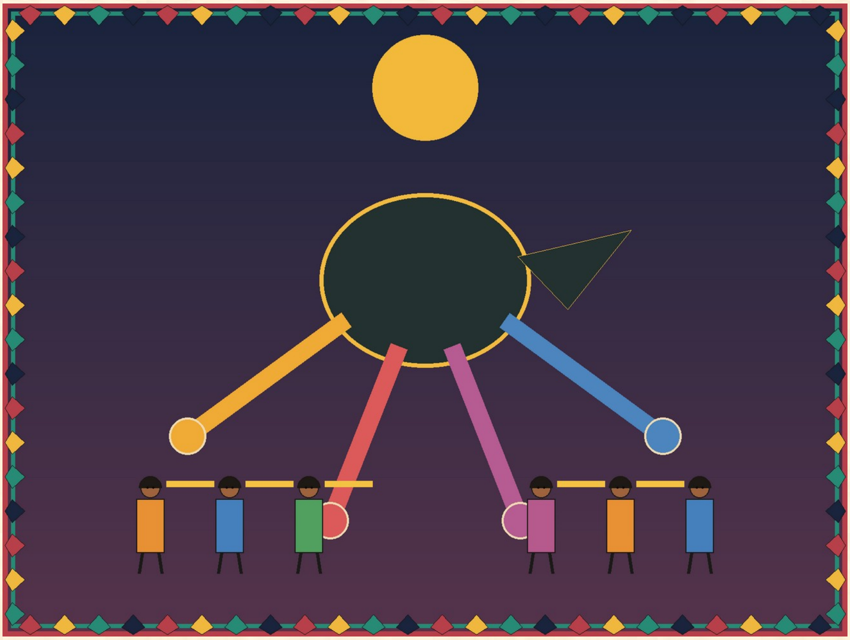

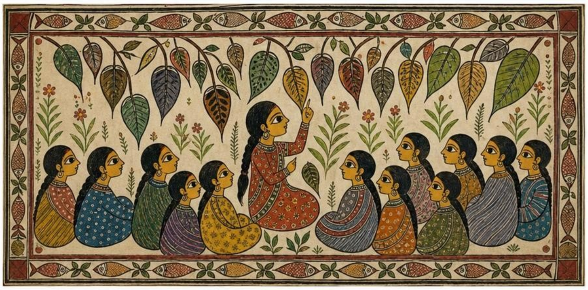

चन्ना गाछी लग एकटा नव पाठशाला खुजल — कोनो बेंच नहि, कोनो घंटी नहि, बस बच्चा सभ गोल बैसैत छला। बीचमे उज्ज्वलक टूटल मोबाइलक काँच, आ नारिकेलक पात राखल छल।

देविका सभकेँ अपन भाइ उज्ज्वलक कथा सुनौलनि — केना पहिने ओ थोड़े पाइ जीतल, फेर बेसी हारल, फेर धमकी भेटल, फेर "डिजिटल अरेस्ट" क डरसँ ओ अकेला भऽ गेल।

देविका कहलनि — "जकरा सचमे कानून पकड़ैत अछि, ओ घरमे अकेला डेराबैत नहि। जँ कोनो डर अहाँकेँ अपन घरक लोकसँ दूर करय चाहय, त बुझू ओ डर झूठक चाल अछि।"

निशांत झा (जे विदेशमे एहि तरहक तकनीककेँ बुझैत छला) सभकेँ बतौलनि —— "स्क्रीनक गोहिक चारि पएर होइत छैक —— लालच, भय, लाज, आ अकेलापन। जँ ई चारू एक संग देखाय, त तुरन्त भागू।"

एकटा बच्चा पुछलक —— "भागि कतय जाउ?" बा उत्तर देलनि —— "अपन लोक लग। ठगीक पहिल दवाइ अछि —— अकेला नहि रहू।"

एहि तरहेँ पाठशालाक पहिल नियम बनल —— "अकेला नहि रहू।"

निशांत अपन गलती सेहो स्वीकार केलनि —— "हम विदेशमे एहन कम्पनीमे काज करैत रही, जे लोकक डर आ लालचकेँ हिसाब लगबैत छल। हम बुझल–अनबुझल दोसराकेँ नुकसान पहुँचौलहुँ। मुदा आब हम सुधरब चाहैत छी।"

मीरा एकटा आर नियम जोड़लनि —— "लाज अपराधीक होइत अछि, पीड़ितक नहि।"

धीरे–धीरे ई पाठशाला पूरा गामसँ बाहर पसरि गेल। शहरमे, बजारमे, ट्रेनमे, बच्चा सभ ई नियम कहय लगला —— "अकेला नहि रहू। लाज अपराधीक हो। जल्दी पाइ गोहिक जीह होइत अछि।"

चन्द्रपाल बत्रा एहि नव जागरूकतासँ बहुत परेशान भऽ गेला, कारण हुनकर धोखाधड़ीक जाल धीरे–धीरे कमजोर पड़य लागल छल। ओ अदालतमे पाठशालाक विरुद्ध शिकायत करय चाहला, मुदा पाठशालाक कोनो नाम नहि, कोनो पता नहि —— केवल चन्ना गाछी आ किछु बच्चा। ककरा नोटिस देल जाए?

सत्यव्रत मेहता एहि पाठशालाक बारेमे लिखलनि —— "लोक–शिक्षाकेँ अपराध नहि मानल जा सकैत, जँ ओ भय आ लालचसँ सावधान करैत हो।"

चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत सभ सेहो एहि नव पाठशालाक नियम सिखय लगला। बूढ़बा भूत खुश भऽ क कहला —— "देखलहुँ? जीवित लोक स्वयं सिखि रहल अछि। आब हमरा सभकेँ कम काज रहत।"

गामक लोकक बीच एकटा नव अभिवादन शुरू भेल —— जखनो कियो परेशान देखाइत, दोसर पुछैत —— "अकेला त नहि छी?" ई प्रश्न धीरे–धीरे एकटा जादूई मंत्र बनि गेल, जे कतेको लोककेँ धोखाधड़ीसँ बचौलक।

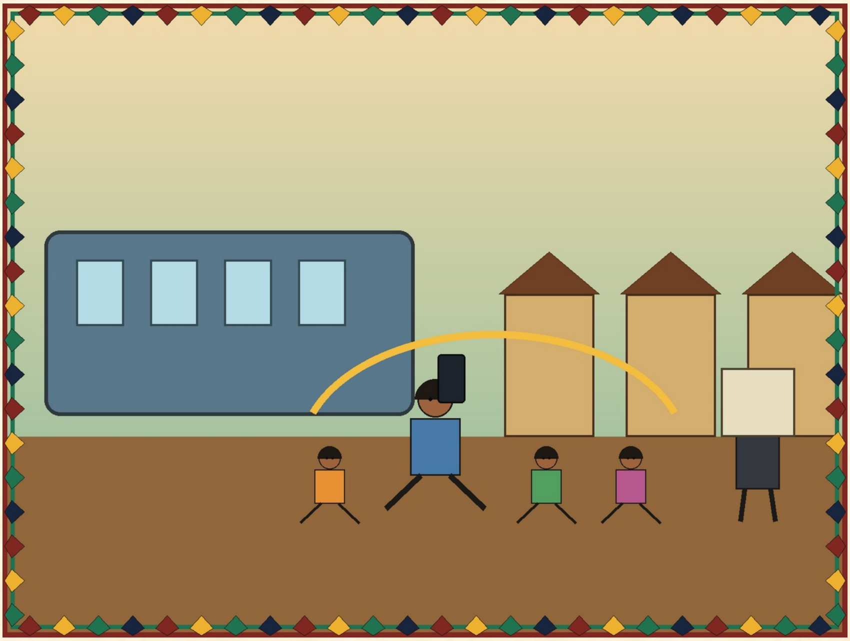

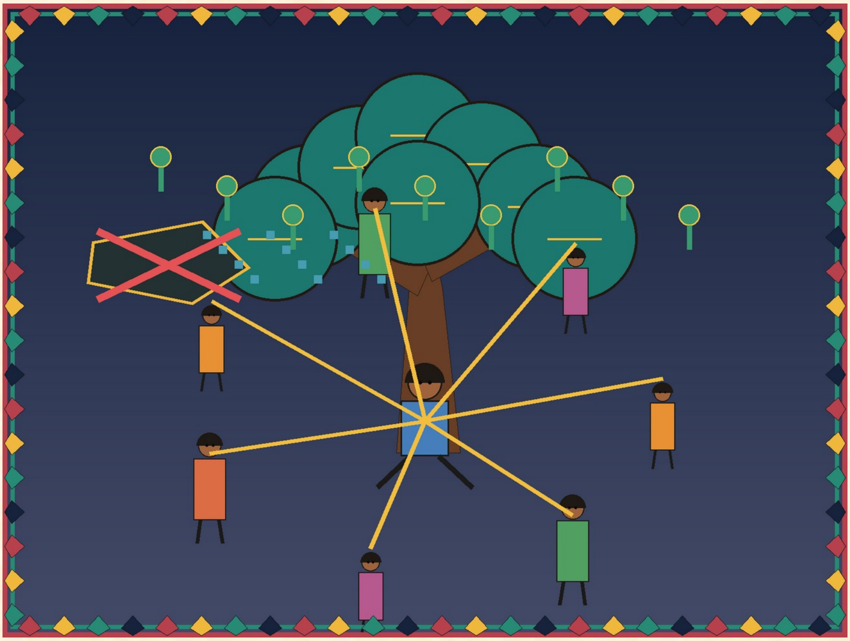

अध्याय २१

निजताक शपथ

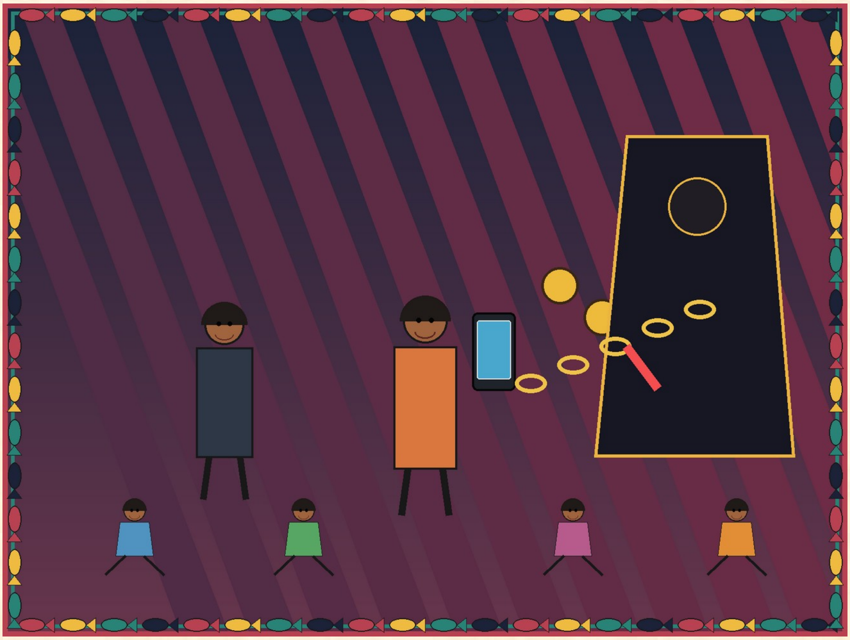

नाम अभिलेख बनलाक बाद गामक लोक सोचला जे आब सभटा शांत भऽ जाएत। मुदा देविका साहकेँ राति निन्न नहि आबैत छल — ओकरा लगैत छल जे भाइक मृत्युक बाद समाज ओकरे दोष दैत छल, अपराधीकेँ नहि।

देविका नामक अभिलेख लग एकटा नव वाक्य लिखलनि — "हमरा सभकेँ मृतकक गलती नहि, ओकरा फँसौनिहार जाल चिन्हबाक अछि।"

सौम्या रामनाथन दिल्लीसँ फेर गढ़ नारिकेल आयलीह। मीरा (मृणालिनी) सेहो, जिनका पहिने डर छल जे गामक लोक हुनका बारेमे सुनने होएत, अन्ततः साहससँ गाम आयलीह।

चन्ना गाछी लग एकटा नव सभा भेल — कोनो घोषणा नहि, बस धीरे–धीरे लोक जुटैत गेल। सौम्या माटिपर एकटा गोल घेरा खिंचि क "निजता" शब्द लिखलनि। ओ कहलीह — "ई शब्द नव अछि, मुदा भाव पुरान अछि। हर

व्यक्तिक अपन जीवन, अपन विचार, अपन भावना पर पहिल अधिकार होइत अछि।"

मीरा कहलीह — "ठग हमरा सभकेँ पाइसँ नहि, लाजसँ पकड़ैत अछि। मुदा आइ हम शपथ लैत छी — लाज अपराधीक होएत, पीड़ितक नहि।"

ई सुनि क पूरा गाछी हिलि गेल। बूढ़बा भूत बारह सय बरखमे पहिल बेर खुलि क हँसला।

मुन्ना पासवान, जकर बैंक खाता धोखाधड़ीमे प्रयोग भेल छल, आगू आबि अपन कथा कहलक — "हमरा कहल गेल जे बस खाता दे, पाँच हजार भेटत। फेर पुलिस आयल आ सभ हमरे दोषी बुझला। मुदा असल अपराधीक नाम कियो नहि जनैत।"

मीरा कहलीह — "जकरा नामसँ पकड़ल गेल, ओकरा नामसँ बचाओल सेहो जाएत।"

एकटा छोट बच्ची पुछलक — "जँ कियो डेराबय, त की करब?" देविका उत्तर देलनि — "पहिने अपनाकेँ दोष नहि देब। दोसर, तुरन्त भरोसेमंद लोककेँ कहब। तेसर, पाइ नहि पठाएब। चारिम, प्रमाण नहि मेटाएब।"

उज्ज्वलक माए ओहि दिन पहिल बेर सभामे बजलीह — "हमर बेटा जखन गेला, हम सोचलहुँ जे ओ हमरा सभकेँ लजा देलक। आब बुझैत छी जे हम ओकरा अकेला छोड़ि देने रही। जँ ई पाठशाला ओहि समय रहितय, त शायद ओ कहि दैत — माए, हम फँसि गेल छी।"

एहि तरहेँ चन्ना गाछी लग एकटा नव रीति शुरू भेल — जे कियो डेराइत, ओ अकेला नहि रहैत, गाछी लग आबि क कहैत — "हम दोषी नहि।" ई तीन शब्द धीरे-धीरे पूरा गामक मंत्र बनि गेल, जे बहुत लोककेँ हिम्मत आ सुरक्षा देलक।

अध्याय २२

हार्वर्डक दोसर भाषण

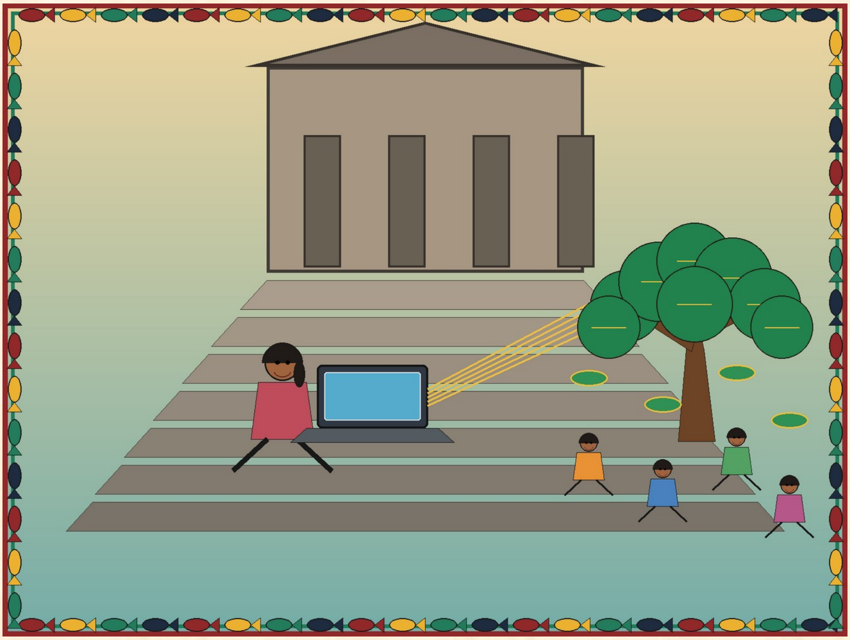

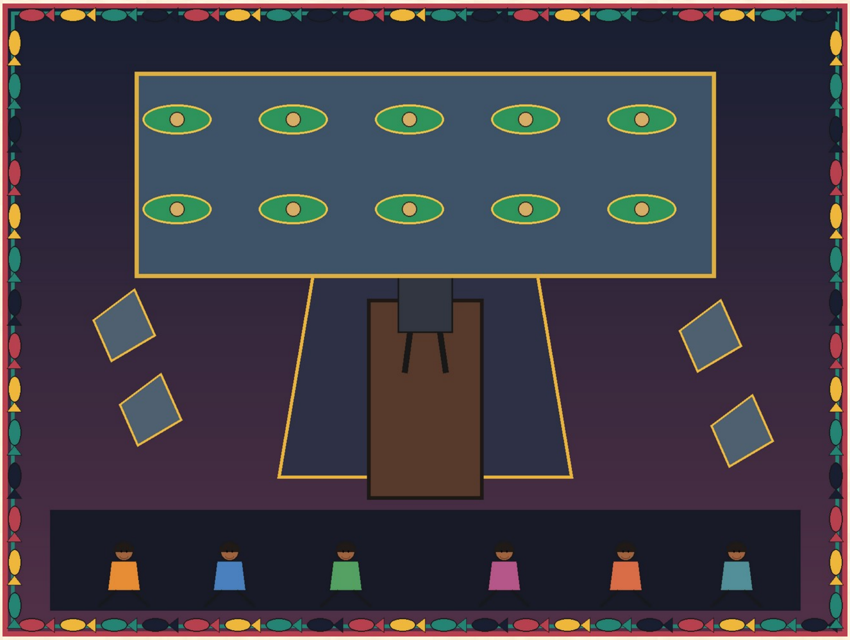

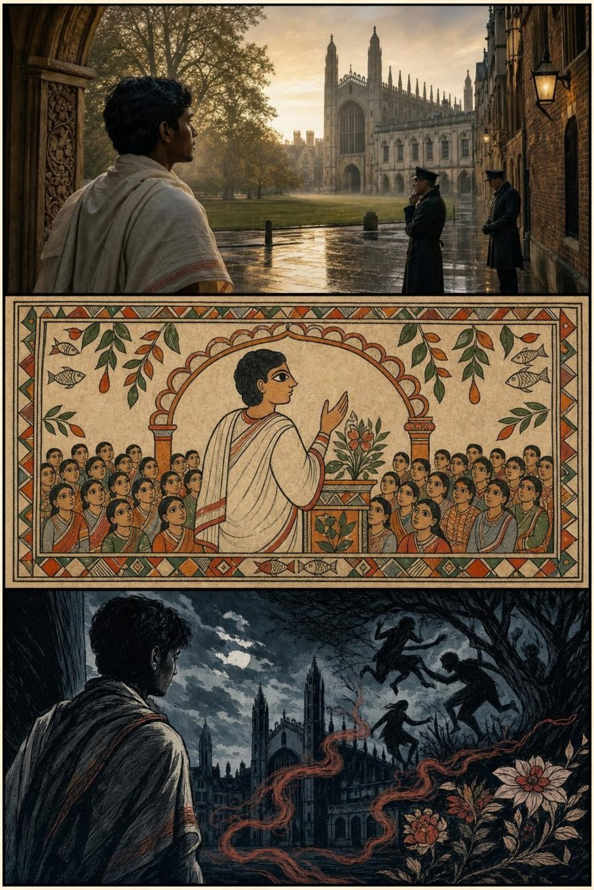

एडवर्ड ब्रूम फेर एकटा बड़का भाषण देबाक तैयारी केला — "वैश्विक उद्यम आ मानव गरिमा" विषयपर। ईरा आरुणि सेहो निमंत्रित छलीह, मुदा एहि बेर ओ प्रश्न पुछबाक बदला एकटा अलग योजना बनौलीह।

ओ सभागारक बाहर पुरान सीढ़ीपर बैसि क अपन छोट कम्प्यूटर खोललीह आ गढ़ नारिकेलसँ सीधा प्रसारण जोड़लीह।

गढ़ नारिकेलमे साँझ उतरि रहल छल। चन्ना गाछी लग बच्चा सभ नामक अभिलेख पढ़य लगला — "सरयू देवी।" सभ बजला — "उपस्थित!" "उज्ज्वल झा।" "उपस्थित!" ई आवाज गामसँ उठि क ईराक यन्त्रमे, आ ओतयसँ सीधे सभागारक स्क्रीनतक पहुँचि गेल।

भीतर ब्रूमक भाषण चलि रहल छल, जखने अचानक स्क्रीनपर तकनीकी गड़बड़ी भेल आ पुलक फोटोक बदला गामक बच्चा सभक द्वारा लिखल एकटा

नाम देखार भेल। ब्रूम चकित भऽ गेला। स्क्रीन ठीक भेल, मुदा फेर दोसर नाम, तेसर नाम — जेना नाम सभ स्वयं फूटि रहल होय।

ब्रूमक माथपर पसीना आबि गेल। एलिना ग्रेव्स (कार्यक्रमक आयोजिका) चुपचाप उठि क बाहर निकलि गेलीह। ओ ईरा लग बैसि क पुछलीह — "हम की करी?" ईरा उत्तर देलीह — "मंच छोड़ि दिअ। जखन कियो मंचपर सिर्फ शब्द बाजय आबय, त मंच खाली छोड़ि देनाइ शब्दसँ बेसी असरदार होइत अछि।"

ई घटना पूरा दुनियाँमे प्रसारित भेल। हांगकांगमे लाउ किन–हंग, दिल्लीमे बत्रा, आ शहरमे बटुकनाथ हरिहरन — सभ ई देखला। मुदा नाम पढ़नाइ अपराध नहि छल, तेँ कियो एहिपर कोनो कारवाई नहि कऽ सकल।

सत्यव्रत मेहता ई देखि क कहलनि — "राज्य देर कऽ सकैत अछि, मुदा समाज प्रतीक्षा कखनो–कखनो छोड़ि दैत अछि।"

गढ़ नारिकेलमे नव कहावत चलि गेल — "मंचपर जे बाजैत अछि, ओकरा सुनू; पातपर जे लिखल अछि, ओकरा मानू।" अनन्या नीचाँ जोड़लीह — "प्रश्न पुछबाक एक तरीका चुपचाप नाम पढ़ब सेहो अछि।"

एडवर्ड ब्रूम अगिला सप्ताह अपन कम्पनीक नाम बदलि देला — "नव आरम्भ, नव प्रतिबद्धता।" मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ हँसि क कहला — "नाम बदललासँ गोहिक दाँत नहि बदलैत।" कथा एतय समाप्त नहि भेल — ई त एकटा नव मोड़ छल, आगाँ बहुत काज बाकी छल।

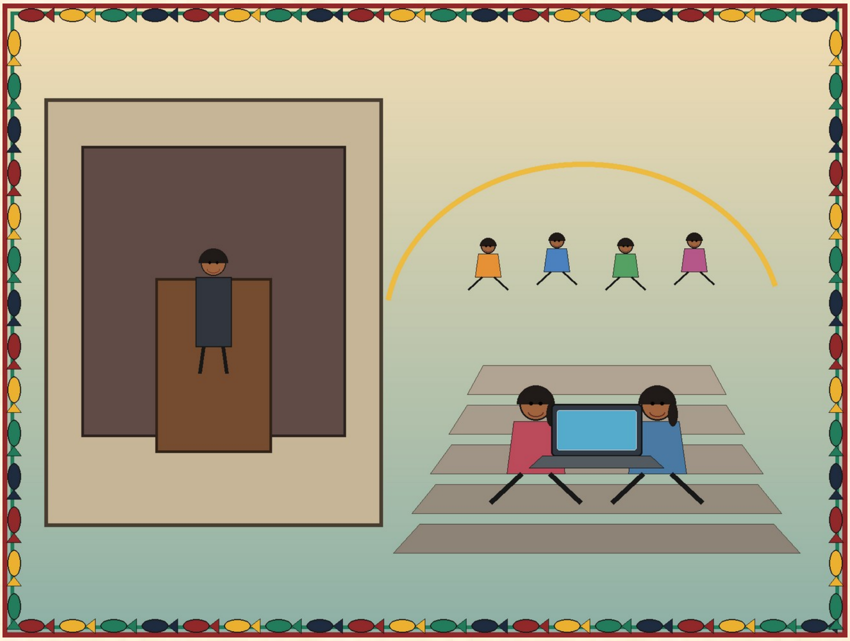

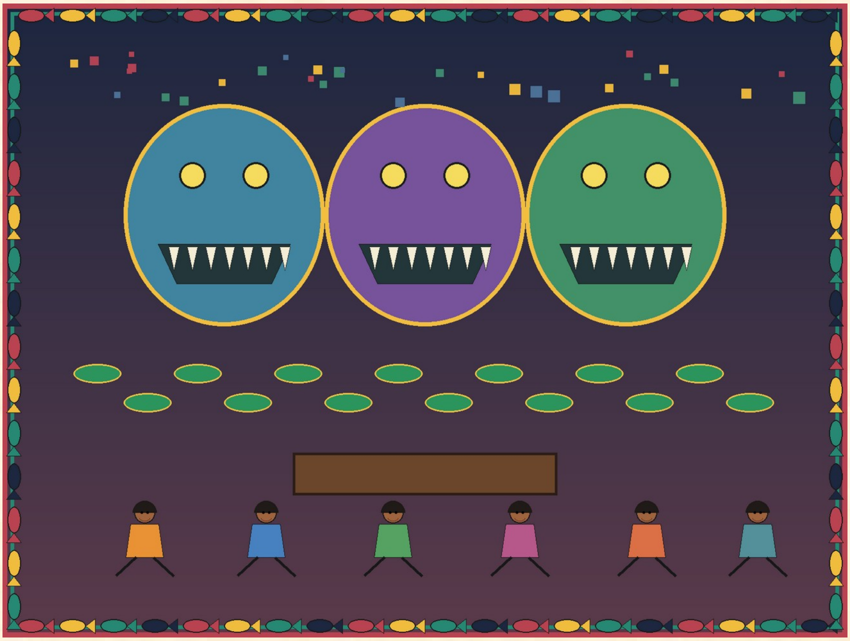

अध्याय २३

बटुकनाथक खोज

बटुकनाथ हरिहरनकेँ कानूनी जीतक कागच भेटल, मुदा ओकरा खुशी नहि भेटलैक। ओ सोचैत छला जे जीतलाक बाद हारल लोक सभ हुनका लग समझौता करय आओत। मुदा कियो नहि आयल।

ई खाली दुआर बटुकनाथकेँ सभसँ बेसी डेरा देलक। ओ चन्द्रपाल बत्राकेँ संदेश पठौला — "ओ लोक कतय अछि?" उत्तर आयल — "गाम गेल छथि, बच्चा पढ़ा रहल छथि, नाम लिखि रहल छथि।"

बटुकनाथ निर्णय लेला जे ओ स्वयं गढ़ नारिकेल जेता। ओ सोचैत छला जे गाममे पहुँचिते कियो हुनकर पएर लागत। मुदा गामक सीमापर हुनका दुइ बच्चा भेटला, जे माटिपर मोबाइलक गोहिक चित्र बना रहला छला।

बटुकनाथ पुछलनि — "ई की बनबैत छी?" एकटा बच्चा उत्तर देलक — "स्क्रीनक गोहि — जे पहिने जीत दैत अछि, फेर घर खा जाइत अछि।"

चन्ना गाछी लग पहुँचि ओ देखलनि — कोनो मंच नहि, कोनो नारा नहि। बस बच्चा सभ नारिकेल पात सुखबैत छला, जाहिपर नाम लिखल छल। बटुकनाथकेँ देखि क कियो नहि डेरेला, कियो विरोध नहि केलक। ई हुनका सभसँ बेसी असहज कएलक।

एकटा बालिका पुछलक — "अहाँक नाम लिखल अछि?" बटुकनाथ चौंकि गेला। बालिका कहलक — "एतय जे नाम बचाबय योग्य अछि, से लिखल जाइत अछि। जे नाम अपने बचा लैत अछि, ओकरा लिखबाक जरूरत नहि।"

देविका साह, मीरा, आ आरुणि सभ सामान्य ढंगसँ अपन काजमे लागल रहला। बटुकनाथ समझौताक प्रस्ताव देलनि, मुदा कियो रुचि नहि देखौलक। गोप कुमार धीरेसँ कहलनि — "समाधान अहाँक शब्द अछि। हमरा सभक शब्द अछि — स्मरण।"

बटुकनाथ एकटा खाली कागच निकाललनि, समझौताक प्रस्ताव। अनन्या ओ कागच लऽ क एकटा छोट कागचक नाव बनौलनि आ पोखरिमे छोड़ि देलनि। नाव थोड़े दूर जा क डूबि गेल। अनन्या कहलनि — "जे कागचमे नाम नहि होइत, पानि ओकरा नहि राखैत।"

ओहि क्षण बटुकनाथ बुझि गेला — ओ गाममे हारल लोक खोजय आयल छला, मुदा एतय हारल लोक नहि, मुक्त लोक छल। जे लोक अपन जीवनमे व्यस्त होइत अछि, ओकरा प्रतिद्वंद्वीक जरूरत नहि होइत।

राति गाड़ीमे बैसि क शहर घुरैत काल बटुकनाथ अपन जीतक कागच देखलनि। हुनका बुझायल जे ई जीत खाली अछि। ओ अपन जीतक आदेश अलमारीमे बन्द कऽ देलनि, मुदा ओतयसँ राति–राति पातक हल्लुक खरखराहट सुनाइ दैत रहल — जेना गढ़ नारिकेल हुनका कहियो नहि बिसरत, चाहे ओ कतबो दूर किएक नहि हो।

अध्याय २४

उपन्यास फेर शुरू

भोरे चन्ना गाछी लग सभटा नाम–पात ओससँ चमकैत छला। अनन्या सभसँ पहिने पहुँचलीह आ जमीन साफ करय लगलीह — जतय राति भूत सभ कबड्डी खेलैत छला।

अनन्या कहलीह — "आब खेल शुरू।"

देविका पुछलनि — "ककर खेल? " अनन्या उत्तर देलनि — "जकर नाम बचल, ओकर। जकर नाम मेटाओल गेल, ओकरो।"

पहिल बच्चा रेखा पार केलक आ साँस रोकि "उज्ज्वल झा" बजलक। देविका आगू आबि क कहलनि — "उज्ज्वल हारल नहि। ओ हमरा सभकेँ स्क्रीनक गोहि चिन्हा गेल।"

दोसर बच्ची सरयूक नाम बजली, आ अपन हथेली माटिपर राखि देली। देविका कहलनि — "ई हस्ताक्षर छी। जे निरक्षर कहल गेल, ओकर हस्ताक्षर पृथ्वी करैत अछि।"

एतबे दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरन अपन जीतक कागच फेर देखलनि — कागच अखनो भीजल–सन छल, अजीब लागल। ओ चन्द्रपाल बत्राकेँ पुछलनि — "गाममे की भऽ रहल अछि?" उत्तर आयल — "कक्षा। नाम। बच्चा। कोनो आन्दोलन नहि।" बटुकनाथ बुझि नहि पौला जे एहन "काज" पर कोन कानूनक धारा लगाबय।

गढ़ नारिकेलमे पाठशाला विस्तार पावय लागल — चन्ना गाछीक एक कात नामक अभिलेख, दोसर कात स्क्रीनक गोहि चिन्हबाक कक्षा, तेसर कात निजताक शपथ, चारिम कात गान। हर बच्चा जे पढ़य आबय, ओ पहिने अपन नाम कहय, फेर कोनो एकटा बचाओल नाम — एहि तरहेँ हर दिन एक जीवित बच्चा एक मृतककेँ उपस्थिति दैत छल।

साँझमे बड़का लोक सभ सेहो एहि खेलमे शामिल भेला। देविका बजलीह — "उज्ज्वल नहि बिकत।" मीरा बजलीह — "निजता नहि बिकत।" गोप कुमार बजला — "डेटा जखन नाम बनैत अछि, तखन डर घटैत अछि।"

रातिमे एकटा नारिकेल गाछसँ फल खसल। भीतरसँ एकटा छोट पात निकलल, जाहिपर लिखल छल — "जतय नाम पढ़ल जाए, ओतय कथा समाप्त नहि होइत।"

आरुणि ई पढ़ि क कहलनि — "तँ हम समाप्ति नहि लिखब। जे बच्चा सभ खेलत, ओ सभ लिखत।"

गामक एक स्त्री ओ खाली फलक खोल उठा क घर लऽ गेलीह आ ओहिमे तुलसीक बीया राखि देलीह — जेना गढ़ नारिकेलमे सत्यक अगिला रूप हरियर होएबाक तैयारी शुरू भऽ गेल हो।

आरुणि अपन कापी बन्द करैत छला, तखने अनन्या पुछलीह — "बाबू, ई कथा आब समाप्त?" आरुणि मुस्कुराइत कहलनि — "समाप्ति किताबक होइत अछि, गामक नहि।" ओ अपन कापी अनन्याकेँ देलनि — "अहाँ लिखू।"

अनन्या पहिल पंक्ति लिखलीह — "चन्ना गाछीमे आइ फेर कबड्डी भेल।" फेर जोड़लनि — "एहि बेर जे पकड़ा गेल, से झूठ छल।"

आ एहि तरहेँ गढ़ नारिकेलक कथा — नाम बचेबाक, सत्य खोजबाक, आ सभकेँ संग रहबाक कथा — आगू बढ़ैत गेल, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, बच्चा–दर–बच्चा।

अध्याय २५

मोन टांगल

बटुकनाथ हरिहरन राति अपन अलमारी खोलल, जाहिमे जीतक कागच राखल छल। कागचक किनारपर हुनका महीन रेत जमल देखार भेल, जे अक्षर बनि गेल —— "मोन टांगल।"

बटुकनाथ पहिने हँसला, मुदा भीतरे–भीतर बेचैन भऽ गेला। ओ चन्द्रपाल बत्राकेँ राति फोन केला —— "नाम–पाठ रोकबाक कोनो कानूनी उपाय अछि?"
बत्रा उत्तर देलनि —— "नाम पढ़ब अपराध नहि अछि।"

चन्द्रपाल बत्रा अपन कोठलीमे बैसल छला। हुनकर डिग्रीक फ्रेमपर हुनका पुरान बात मोन पड़ल —– पहिल बेर जकरा ओ धोखासँ अपराधमे फँसौने छला। ई स्मृति ओकरा असहज कऽ देलक।

राघव सोमानी अपन फोनपर एकटा अजीब आवाज सुनला, जेना ओकरे आवाज ओकरा कहि रहल हो —– "कागच नहि, आवाज नहि, केवल प्रतिशत" —– मुदा एहि बेर ओहिमे एकटा दुःखक स्वर छल।

हांगकांगमे लाउ किन–हंग अपन स्क्रीनपर गढ़ नारिकेलक नक्शा देखैत छला, मुदा ओ बिन्दु बार–बार अजीब ढंगसँ अटकि जाइत छल —– जेना ओ स्थान कोनो साधारण बाजार–क्षेत्र नहि रहल हो।

एडवर्ड ब्रूम अपन भाषणक मसौदा पढ़ैत काल, हुनका अंग्रेजी शब्दक नीचाँ देवनागरीमे नाम देखार होय लगला —– उज्ज्वल, सरयू, नन्द। ओ पढ़ि नहि सकैत छला, मुदा ओ नामक भार महसूस कऽ सकैत छला।

दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता राति गढ़ नारिकेलक नामक अभिलेख पढ़ैत छला। ओ लिखलनि —– "राज्य नागरिकक स्मृतिपर मालिक नहि होइत।"

गढ़ नारिकेलमे ओहि राति चन्ना गाछी शान्त छल, मुदा जागल छल। बूढ़बा भूत कहला —– "आब ओ सभ आबता।" हुलासी पुछलीह —– "किएक?" बूढ़बा उत्तर देला —– "मोन टांगल अछि। पहिने मोन आबैत अछि, देह बादमे।"

एहि तरहेँ, दूर–दूर बैसल बटुकनाथ, बत्रा, राघव, लाउ किन–हंग, आ ब्रूम —– सभक मोन धीरे–धीरे गढ़ नारिकेल दिस खिंचाइत गेल। हुनकर देह अखनो शहर, विदेश, दफ्तरमे छल, मुदा हुनकर विवेक —– हुनकर भीतरक अच्छाइ —– गामक सत्यसँ जुड़ल जा रहल छल।

अनन्या भोरे उठि क आरुणिक कापी देखलीह। पछिला पन्नापर हुनकर लिखल पंक्तिक नीचाँ अपने–आप एकटा नव पंक्ति उभरि रहल छल —– "झूठक मोन गाछीमे आबि चुकल अछि।"

अनन्या बाबूकेँ जगबैत कहलीह —– "उठू। कथा फेर आगू बढ़ि रहल अछि।"

अध्याय २६

बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

भोरे बटुकनाथ हरिहरन अपन सारा बैसकी रद्द कऽ देलनि आ निर्णय लेलनि — "गढ़ नारिकेल।" ओ हेलिकॉप्टरक बदला ट्रेनमे जेबाक निर्णय लेलनि, जे ओकर लेल एकदम अनोखा बात छल।

ट्रेनमे एकटा रहस्यमय बूढ़ बटुकनाथक सामने आबि बैसला। साधारण धोती, हाथमे बाँसक लाठी। बूढ़ पुछलनि — "अहाँ कानून पढ़ने छी?" बटुकनाथ गर्वसँ कहलनि — "हँ, बहुत पढ़ने छी।" बूढ़ धीरेसँ मुस्कुराइत पुछलनि — "नाम पढ़ने छी?"

बटुकनाथ चिढ़ि गेला —— "नाम पढ़ब कोन विशेष बात?" बूढ़ उत्तर देलनि —— "कानून नामकेँ केवल कागचमे राखैत अछि —— जन्म, पिता, पता। मुदा नामक भीतर जे भावना अछि, ओ पढ़ब विद्या अछि।"

ट्रेन एकटा पुलपर चढ़ल। नीचाँ नदी छल। बूढ़ कहलनि —— "नीचाँ देखू, कतेक नाम बहि गेल।" बटुकनाथ नीचाँ देखबासँ बचैत रहला।

राति गाढ़ भेल। बूढ़ पुछलनि —— "अहाँक अदालतमे सेहो एहन नहि भेल जे जे सही छल, से नहि देखाओल गेल, आ जे झूठ छल, ओकरा दाखिल कएल गेल?" बटुकनाथ कठोर होइत पुछलनि —— "अहाँ के छी?" बूढ़ उत्तर देलनि —— "हम ओ छी, जे नामक प्रतीक्षा करैत अछि।"

अधरातिमे ट्रेन एकटा अनजान ठामपर रुकल। बूढ़ उठि क कहलनि —— "चलू, अहाँक पहिल सुनवाई एतय अछि।" बटुकनाथ कहलनि —— "हम उतरब नहि।" बूढ़ कहलनि —— "देह नहि उतरू, मोन उतरि गेल।"

भोर होइत–होइत ट्रेन जंक्शन पहुँचल। बटुकनाथ छोट रेल आ फेर पएदल चलि क गढ़ नारिकेलक कच्चा बाटपर आबि गेला। रस्तामे एकटा नारिकेलक पात ओकर जूतापर खसल। ओ पात उठौला, त हुनका हथेलीमे अक्षर उभरल जेकाँ लागल —— "अहाँ कानून पढ़लहुँ, आब नाम पढ़ू।"

चन्ना गाछी दूरसँ देखार भेल। बच्चा सभक आवाज सुनाइ पड़ल —— कबड्डी नहि, नाम–पाठ। बटुकनाथक चाल धीमा भऽ गेल।

बूढ़बा भूत (जे कतेको बरख पुरान छला) हुनकर सोझाँ आबि ठाढ़ भेला —— "बटुकनाथ हरिहरन, अहाँ पहुँचलहुँ।" बटुकनाथ अन्तिम बेर प्रयास केला —— "हम बातचीत लेल आयल छी।" बूढ़ कहलनि —— "नहि, अहाँ पढ़बाक लेल आयल छी।"

गाछीमे प्रवेशसँ पहिने बूढ़ कहलनि —— "एतय जूता नहि, अहंकार उतारल जाइत अछि।" बटुकनाथ अपन जूता उतारला। माटिक ठंढक ओकर पएरसँ माथ धरि चढ़ि गेल।

ओ भीतर पैसला। बच्चा सभ ओकरा देखलक, मुदा डेरेला नहि। अनन्या हुनका लग आबि पुछलीह —— "अहाँ नाम पढ़ब?"

एहि प्रश्नक संग बटुकनाथक असली यात्रा शुरू भेल — यात्रा जे शहरसँ गामतक नहि, अहंकारसँ सच्चाइतक धरिक छल।

अध्याय २७

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल नहि जेबाक निर्णय लेलनि। ओ अपन ऊँच अपार्टमेंटक काँचक देबाल लग ठाढ़ भऽ क सोचला — जे लोक सभकेँ स्क्रीनपर देखैत अछि, ओकरा जमीनपर जेबाक की जरूरत?

हुनकर कमरा तीन स्क्रीनसँ भरल छल — ऑनलाइन जुआ, धोखाधड़ीक खाता, आ गुप्त संदेश। मुदा ओहि दिन एकटा अजीब बात भेल — जखने ओ "नामक अभिलेख" शब्द लिखला, स्क्रीनपर एकटा नारिकेल पातक छाया देखार भेल।

ओ अपन कमाइक सूची देखला। एकटा नामपर हुनकर नजर अटकि गेल — उज्ज्वल झा। ओ ओ नाम मेटेबाक कोशिश केला, मुदा तुरन्त दोसर नाम उभरि गेल — मुन्ना पासवान। फेर तेसर, चारिम — जतेक ओ मेटबैत, ततेक नाम उभरैत।

बत्रा घबराइत अपन तकनीकी टीमकेँ बजौला — "सर्वरमे कोनो गड़बड़ी अछि, ठीक करू।" एकटा युवक स्क्रीन देखि क कहलक — "सर, ई गड़बड़ी नहि लगैत। नाम बार–बार आबि रहल अछि।"

राति गहींर भेल। बत्रा अपन सभटा स्क्रीन बन्द केला, मुदा अन्हारमे सेहो पातक हल्लुक हरियर रेखा देखार भेली। स्क्रीनपर एकटा बच्चाक अकृति देखार भेल, जे लिखलक — "पहिल जीत केना देलहुँ?"

बत्राकेँ अपन जीवनक पहिल गलत काज मोन पड़ल — जखन ओ एकटा युवककेँ धोखासँ जुआमे फँसौने छला। ओ कहला — "हम हत्या नहि केलहुँ!" स्क्रीनपर उत्तर आयल — "तखन कोन अपराध स्वीकार करब?"

बत्रा अपन पुरान कानूनक डिग्रीक फ्रेम उठौला। ओहिमे लिखल छल — "नाम पढ़बाक शिक्षा अधूरी।" ओ फ्रेम उलटलनि, पाछाँ लिखल भेटलनि — "जे कानून पढ़ि मनुष्य नहि पढ़लक, से स्क्रीनक दास भेल।"

बत्रा निर्णय लेला जे ओ गढ़ नारिकेल कहियो नहि जेता — देहसँ। मुदा हुनकर फोनपर अपने–आप एकटा नक्शा खुजल, जाहिमे हुनकर घरसँ गढ़ नारिकेल धरिक रस्ता देखार भेल, आ लिखल छल — "मोन पहिने पहुँचि चुकल अछि।"

एहि तरहेँ चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल गेने बिना गढ़ नारिकेलमे प्रवेश कऽ गेला — हुनकर देह शहरमे रहल, मुदा हुनकर विवेक धीरे–धीरे सत्यक दिशामे खिंचाइत गेल।

अध्याय २८

राघव सिग्नलक चुप्पी

राघव सोमानी सदिखन संदेश मेटबैत रहैत छला, कारण ओकरा विश्वास छल जे जे बात मेटा जाइत अछि, से भेलि नहि। मुदा ओहि राति हुनकर फोनपर एकटा नारिकेलक पात देखार भेल, आ प्रिन्टर अपने–आप चलि क "उज्ज्वल झा," "मुन्ना पासवान" सन बहुत रास नाम छापय लागल।

राघव प्रिन्टरक तार खिंचि देलनि, मुदा फेरो प्रिन्ट होइत रहल। ओ मशीनकेँ लात मारला, मशीन चुप भेल, मुदा पन्ना जमीनपर पड़ल रहल।

राघव सोचैत छला —– "बत्रा घबराइल छला, ताहि सँ हमरो असर।" मुदा हुनका मोन पड़ल —– बचपनमे हुनकर पिता एकटा छोट दुकान चलबैत

छला। पिता कहैत छला — "नाम लिखू, बेटा, खाता चूक जाए त नाम पूछल जा सकैत अछि।" राघव तखन हँसैत छला, मुदा आइ ओ बात मोन पड़ि गेल।

राघव अपन पुरान कागच–नोटबुक खोलला, जाहिमे ओ अपन गुप्त रस्ता (निकास–सूत्र) लिखने छला — दोसर नाम, दोसर पासपोर्ट। मुदा हर पन्नाक किनारपर हरियर रेखा उभरि रहल छल, नारिकेलक पातक नस जेकाँ।

भोरे राघव निर्णय लेला जे ओ नव अपराधमे लोक भर्ती करब रोकि देता। ओ अपन साथीकेँ संदेश पठौला — "म्यूल भर्ती रोकू।" ई हुनकर जीवनक पहिल असामान्य आदेश छल।

ओ अपन पुरान छात्रावासमे गेला, जतय हुनकर पहिल धोखाधड़ीक शिकार युवक रहैत छल। एकटा चाहबला वृद्ध कहलनि — "एतय अरुणेश कुमार नामक एकटा लड़का रहैत छल। ओकर बापे दुकान बेचि देलक, केस चलल, लड़का पागल सन भऽ गेल।"

राघवक हाथ काँपि गेल। जे नाम ओ अपने बिसरि गेल छला, से गामक चाहबला मोन राखने छल। ई स्मृति हुनकर सभटा डिजिटल मेटावासँ बेसी मजबूत छल।

ओ घर आबि क अपन लैपटॉपमे एकटा नव फाइल बनौलनि — "पहिल खाता" — आ ओहि विद्यार्थीक नाम खोजि क लिखलनि। एहि बेर स्क्रीन शान्त रहल, कोनो पात नहि आयल। राघव बुझि गेला — नाम लिखलासँ शान्ति आबि सकैत अछि।

ओहि राति राघव सिग्नल सोमानी पहिल बेर बिना फोन लग राखने सुतला। ओ बुझि गेला — चुप्पी तोड़बासँ पहिने सुनब जरूरी अछि। ई स्वीकार नहि, प्रायश्चित्त नहि, मुदा एकटा शुरुआत छल।

अध्याय २९

लाउ किन-हंगक सपना

हांगकांगक एकटा काँचक बड़का घरमे लाउ किन-हंग रहैत छला — एकटा बहुत धनी, मुदा बहुत ठंढा मनक व्यक्ति। ओ राघव सिग्नलकेँ अन्तिम संदेश पठौने छला — "खाता बन्द।"

ओहि राति ओ सूतला त एकटा अजीब सपना देखला। सपनामे हुनकर काँचक घरमे पानि भरय लागल। पानि नमकीन नहि छल, बल्कि ओहिमे दवाई, सीमेंट, आ मोबाइलक गन्ध छल।

पानिपर एकटा मोबाइल फोन तैरैत आयल। स्क्रीनपर एकटा युवकक चेहरा उभरल — "हम उज्ज्वल झा। हमर हार कोन देशक लाभमे लिखल गेल?" फेर एकटा स्त्रीक चेहरा — "हम सरयू। पुलपर हमर देहक बीमा कतय गेल?"

बहुत रास मोबाइल फोन पानिमे तैरैत आबय लागल, हरेकपर अलग-अलग प्रश्न। लाउ किन-हंग डेराइ गेला।

तखने पानिमे एकटा गोहि देखार भेल, जकर दाँतमे एकटा फोन फँसल छल। फोनपर चन्द्रपाल बत्राक चेहरा छल, जे धीरे-धीरे गोहि चिबाबय लागल।

सपना बदलल। लाउ किन-हंग अपनाकेँ हार्वर्डक एकटा सभागारमे देखला, जतय एडवर्ड ब्रूम भाषण दऽ रहला छला। तखने सभागारक छतसँ पानि टपकय लागल आ ईरा आरुणि बाहर लॉनमे बच्चा सभकेँ नाम पढ़ा रहल छलीह।

एकटा बूढ़बा भूत डारिपर बैसल कहला — "अहाँक खाता बहुत साफ अछि। खाली एक कॉलम नहि अछि।"

लाउ किन-हंग पुछला — "कोन कॉलम?" उत्तर आयल — "निन्न।"

ओ चौंकि क जागि गेला। भोरे हुनका खबर भेटल — "गढ़ नारिकेल" नामक एकटा छोट गाम, जतय बहुत रास लोक नाम खोजि रहल अछि, आ किछु बच्चा एकटा पाठशाला शुरू केलक अछि।

लाउ किन-हंग अपन टेबलपर एकटा अजीब चीज देखला — एकटा हरियर नारिकेलक पात, जे राति नहि छल। ओ पात उठौला, त हुनका ओहिमे धड़कन महसूस भेल। पात जेना कहि रहल छल — "आब अहाँक मोन टाँगल अछि।"

लाउ किन-हंग हाथ हटा लेला, मुदा धड़कन हुनकर हथेलीमे रहि गेल। ओहि दिनसँ ओ जखनो कोनो खाता बन्द करय चाहैत छला, त पहिने ई देखैत छला जे कतहु ओहि खातामे कोनो बच्चाक भलाइ त नहि जुड़ल अछि।

एहि तरहेँ, दूर बैसल एहि सभटा अपराधी लोकक मोन धीरे-धीरे गढ़ नारिकेल दिस खिंचाइत गेल — सत्यक शक्ति एतेक पैघ छल जे ओ समुद्र पार क, काँचक घरतक पहुँचि गेल।

अध्याय ३०

धूर्त सभक भीतरक अदालत

ओहि राति चारू ठाम — बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सोमानी, आ लाउ किन-हंग — सभक भीतर एकटा अदालत जागि उठल। ई कोनो साधारण अदालत नहि छल, ई हुनकर अपन विवेकक अदालत छल।

बटुकनाथक सामने एकटा बच्चा प्रकट भेल, हाथमे पीपरक पात लेने। बच्चा कहलक — "नाम पढ़ू।" बटुकनाथ इनकार केला, मुदा भीतरे-भीतर हुनका "नाम-नाम" क आवाज सुनाइ देलक।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीनपर एकटा फाटल पासबुक बाजल — "भूखक सहमति आ कानूनक सहमति एक नहि होइत।" बत्रा तर्क देला — "व्यापार

भावुकतासँ नहि चलैत।" पासबुक उत्तर देलक — "व्यापार तखन धरि व्यापार अछि, जखन धरि कीननिहार जनैत अछि जे ओ की कीनैत अछि। अहाँ लोकक भविष्य कीनि क खेल कहि बेचि देलहुँ।"

राघव सिन्नलक टेबलपर पात झरय लागल, हरेकपर एकटा अधूरा धमकीक वाक्य। ओ आगि लगबय चाहला, मुदा पात जरल नहि — कारण ओ स्मृतिक पात छल, स्मृति आगिसँ नहि जड़त।

समुद्रपार लाउ किन-हंगक सामने एकटा प्रश्न आयल — "मृत्युमे अहाँक हिस्सा कतेक?" ओ पहिल बेर चुप भऽ गेला, कारण ओ सोचैत छला जे ओ केवल पैसा एक ठामसँ दोसर ठाम पठबैत छला, अपराध नहि करैत छला। मुदा भीतरक अदालतमे हाथ नहि, हिस्सा देखल जाइत अछि।

एडवर्ड ब्रूमकेँ सेहो सोझाँ एकटा प्रश्न आयल — "जखन अहाँक भाषणमे गरिमा छल, अहाँक खातामे कतेक अनुपस्थित लोक छल?" ओ उत्तर देला — "हमरा प्रत्यक्ष जानकारी नहि छल।" प्रश्न फेर आयल — "लाभ प्रत्यक्ष छल?" ओ चुप भऽ गेला।

एहि सभ भीतरक अदालतमे एकटा कुर्सी खाली छल — जे लोक हुनका सभ हराओल कहैत छला, हुनके लेल। प्रश्न आयल — "जकरा अहाँ हरौलहुँ, ओ कतय अछि?"

बटुकनाथ कहला — "चन्ना गाछीमे।" चन्द्रपाल कहला — "पाठशालामे।" राघव कहला — "पात सभमे।" लाउ किन-हंग कहला — "भारतक छोट-छोट मोबाइलमे।"

प्रश्न फेर आयल — "तखन अहाँ सभ एतय किएक?"

कोनो उत्तर नहि भेटल। भोरे सभकेँ बुझायल जे ओ सभ जकरा हराओल कहैत छला, ओ लोक अखनो जिबैत अछि, बच्चा सभकेँ पढ़बैत अछि, नाम बचबैत अछि। दंड नहि भेटल, मुदा एहिसँ बेसी कठोर बात भेटल — प्रतीक्षा, आ अपन आत्मासँ पहिल बेर सोझाँ भेनाइ।

अध्याय ३१

हारल लोक सभक काज

चन्ना गाछीक अदालतक बाद, जिनका "हारल" कहल गेल छला, ओ सभ भोरे उठि क कोनो नारा नहि लगौला। ओ सभ खेतमे बीया छिटनिहार किसान जेकाँ अपन काजमे लागि गेला।

अनन्या माटिपर एकटा नव खेलक मैदान बनबैत कहलीह —— "एहि बेर कबड्डीमे जे पकड़ाएत, ओकरा बाहर नहि कएल जाएत। ओकरा एकटा नव काज देल जाएत।"

देविका साह अपन भाइ उज्ज्वलक टूटल मोबाइल गामक पुरान चौपालक देबालपर राखि क लिखलीह —— "स्क्रीनक गोहि पहिने जीत देखबैत अछि, फेर घर खाइत अछि।" ई पहिल पाठ बनल।

निशांत झा गामक बच्चा सभकेँ बैंकक जटिल भाषा सरल शब्दमे बुझबय लगला। मुन्ना पासवान, जकर बैंक खाता धोखाधड़ीमे प्रयोग भेल छल, चुपचाप बैसल छला। देविका हुनका पास बैसाइ क कहलीह —— "जे फँसल अछि, से दोषी होएबासँ पहिने साक्षी होइत अछि।"

सौम्या रामनाथन जटिल सरकारी कागचक भाषाकेँ सरल गामक बोलीमे बदलय लगलीह —— "अघोषित मृत्यु" क मतलब —— "लोक मरल, मुदा कागच कहलक, नहि मरल।"

मीरा चौपालक बीच ठाढ़ भऽ क कहलीह —— "ककरो प्रेम ककरो विरुद्ध साक्ष्य नहि बनत। ककरो डर ककरो कमाइ नहि बनत।" गामक स्त्री–पुरुष सभ एक स्वरमे शपथ लेला —— "हम ककरो निजताकेँ तमाशा नहि बनायब। हम जँ ककरो टूटैत देखब, ओकरा अकेला नहि छोड़ब।"

विदेशमे ईरा आरुणि एकटा नव सभा शुरू केलीह —— "पात–पाठ।" ओतय ओ विभिन्न देशक विद्यार्थीक सोझाँ गढ़ नारिकेलक कथा सुनबैत छलीह, आ कहैत छलीह —— "नैतिकता पर भाषण दैत सभागारसँ पहिने ओ मजदूरक नाम पढ़ू, जकरा अहाँक कम्पनीक पुल खा गेल।"

गोप कुमार गामक युवक सभकेँ डेटा नहि, कथा बुझबय लगला —— "एहि नामक कातमे ओकर घर लिखू, बच्चाक नाम लिखू, आ ओ सपना जे मजदूर अपन बच्चा लेल देखने छल।" जतय सपना नहि भेटैत छल, ओतय ओ खाली स्थान छोड़बय कहला —— "खाली स्थान सेहो साक्ष्य होइत अछि।"

एतबे दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरन आ चन्द्रपाल बत्रा बुझि गेला जे जे लोक सभ लड़ाइ छोड़ि काजमे लागि गेल अछि, ओकरा हराएब असंभव भऽ गेल अछि।

चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहला —— "जे लड़ाइ छोड़ि काजमे लागि जाइत अछि, ओकरा हराएब कठिन नहि, असम्भव होइत अछि।"

गढ़ नारिकेलमे एकटा नव रिवाज बनि गेल —– जखनो कियो ककरो घर जाइत, ओ पहिने पुछैत —– "तोहर घरमे के बचल अछि, आ के–के लिखल जेबाक बाकी अछि? " एहि तरहेँ अलग–अलग घाव मिलि क एकटा पैघ परिवार बनि गेल।

अध्याय ३२

तेसर कबड्डी

ओहि राति चन्ना गाछीमे बिनु बयारक पात हिलय लगला। एकटा अनोखा कबड्डी शुरू भेल — तीन दलक बीच। एक दल मृतक सभक, दोसर दल गामक बच्चा सभक, आ तेसर दल — बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ किन–हंग, आ ब्रूमक विवेकक।

सरयू घेरामे घुसि क अपन नाम बजैत गेली — "सरयू... सरयू..." बटुकनाथक विवेक ओकरा रोकय चाहलक, मुदा मुँहसँ केवल "प्रक्रिया... प्रक्रिया..." निकलल, आ सरयू आसानीसँ पार भऽ गेली।

अनन्या घेरामे गेलीह आ चन्द्रपालक विवेकसँ पुछलीह —— "तोहर असली मालिक के?" चन्द्रपाल घबरा गेला —— "हम स्वयं मालिक।" अनन्या फेर पुछलीह —— "तखन हांगकांगसँ आदेश किएक अबैत छल?" ई प्रश्न सुनि चन्द्रपालक विवेकमे दरार पड़ि गेल।

मुन्ना पासवान सेहो घेरामे आबि क कहलनि —— "हमरा नाम म्यूल नहि, हम मुन्ना छी।" ई सुनि चन्द्रपालक विवेक पहिल बेर अपन शब्दसँ घायल भेल।

मीरा राघव सिग्नलक विवेकक सामने ठाढ़ भऽ क कहलीह —— "जे फोटोसँ डरबैत अछि, ओ छाह चोरैत अछि।" राघवक विवेक चुप भऽ गेल।

समुद्रपार लाउ किन–हंगक विवेक घेराक किनारपर ठाढ़ रहल, भीतर आबय नहि चाहल। मुदा नन्द आरुणि पुछलनि —— "तोहर हिसाबमे पाया कतेक? हड्डी कतेक?" प्रतिशतक भाषा हड्डी नहि गनैत —— लाउक विवेक छोट भऽ गेल।

ब्रूमक विवेक "गरिमा... गरिमा..." कहैत आयल। ईरा मैथिलीमे पुछलीह —— "जकर नाम अहाँ उच्चारण नहि कऽ सकैत छी, ओकर गरिमापर भाषण कोना दैत छी?" ब्रूमक मुँहसँ "वैश्विक उत्तरदायित्व" क बदला "लाभ" शब्द निकलि गेल।

खेलक नियम अनुसार, जे बाहर जाए चाहय, ओ जा सकैत छल, मुदा एकटा शब्द छोड़ि क। बटुकनाथ "प्रक्रिया" छोड़ि गेला, चन्द्रपाल "खाता", राघव "सन्देश", लाउ "हिस्सा", आ ब्रूम "गरिमा।"

मुदा जखन ओ सभ बाहर गेला, त पाओला जे छोड़ल शब्द सभक अर्थ बदलि गेल छल —— "प्रक्रिया" आब नाम पढ़बाक क्रम बनि गेल, "खाता" आब मनुष्यक जीवनी बनि गेल, "गरिमा" आब नामक उच्चारण बनि गेल।

भोरे कोनो जीत–दिवस नहि मनाओल गेल। बच्चा सभ फेर पाठशाला गेला। चन्ना गाछीमे एकटा पात झरल, जाहिपर लिखल छल —— "फेर आरम्भ होउ।" कथा एतय समाप्त नहि भेल, ई त एकटा नव आरम्भक संकेत छल।

अध्याय ३३

मोनक परीक्षा

चन्ना गाछीक कबड्डी आगू बढ़ल। अनन्या घोषणा केलीह — "जे कियो खेलत, ओकरा एकटा नाम बजबय पड़त। जे नाम नहि बजबैत, ओकर साँस नहि गनल जाएत।"

बटुकनाथक विवेक "अधिकार–क्षेत्र" कहय चाहलक, मुदा मुँहसँ निकलल — "सरयू देवी!" ओ चकित रहि गेला। फेर "माननीय" कहय चाहलनि, मुदा निकलल — "लखन पासवान।" जतेक ओ अपन पुरान भाषा बजबय चाहला, ततेक बिसरल नाम निकलैत गेल।

चन्द्रपाल बत्राक विवेक "भावुकता" कहय चाहलक, मुदा मुँहसँ निकलल —— "पहिल जीत मुफ्त नहि छल।" बच्चा सभ हँसला नहि, कारण ओ सभ ई बात पहिनहिये बुझि गेल छला।

ब्रूमक विवेक "मानव गरिमा" कहलक। बूढ़बा भूत हँसि क पुछलनि —— "गरिमा? कोन भाषामे? जे मजदूरक देह पायामे गेल, ओकर भाषामे कहू।" ब्रूमक विवेक उत्तर नहि दऽ सकल, कारण ओकरा मजदूरक भाषा नहि अबैत छल। चन्ना गाछी ओकर "गरिमा" शब्दकेँ खुद अनुवाद कऽ देलक —— "दाम" बनल, फेर "दाम" टूटि "नाम" बनल।

बच्चा सभ एक स्वरमे कहला —— "नाम पहिने। दाम बादमे।"

लाउ किन–हंगक विवेक धीरे–धीरे भारत आ ओकर गाम–गामक कथाकेँ समझय लागल। ओकर मुँहसँ अन्ततः निकलल —— "उज्ज्वल।" ई नाम बजिते स्क्रीनक अन्हार कनी उज्जर भऽ गेल।

बूढ़बा भूत सभकेँ नव नियम बतौलनि —— "जे नाम पढ़ि लेत, से कनी मनुष्य भऽ जाएत। जे नहि पढ़ि सकत, से अपन पद, पैसा, सम्मान सभ राखितो भीतरसँ खाली रहत।"

बटुकनाथ पुछलनि —— "जँ हम नाम पढ़ि लेब, तखन?" बूढ़बा भूत कहलनि —— "तखन अहाँक जीत दुख देत, मुदा दुखमे कनी शांति रहत। जे जीत बिना दुखक होइत अछि, से सड़ि जाइत अछि।"

धूर्त पाँचू व्यक्ति ई सुनि काँपि गेला। ओ सभ सुरक्षा चाहैत छला, मुदा सुरक्षा ओही लोककेँ भेटैत अछि जे भीतरसँ किछु स्वीकार करैत अछि।

भोरक पहिल उजासमे चन्ना गाछीपर एकटा पात चमकल, जाहिपर लिखल छल —— "चारिम साँस समाप्त। अगिला साँस आरम्भ।" आ एहि तरहेँ ई कथा फेर आगू बढ़ल।

अध्याय ३४

सुनैत नदी

भोरे पाँचू धूर्त — बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ किन-हंग, आ ब्रूम — अपन-अपन शहरमे अजीब घटना अनुभव केला। बटुकनाथक पानिमे "सरयू देवी" नाम चमकल। चन्द्रपालक तिजोरीसँ बच्चाक रोदन सुनाइ देलक।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभक पाठशालामे नव पाठ छल — "अधूरा नाम नहि बाजब।" देविका सिखौलीह — "जखन कियो ठग अहाँकेँ डराओत, ओ अहाँक पूरा नाम नहि कहत, बल्कि 'ग्राहक' वा 'उपभोक्ता' कहत। अहाँ पहिने अपन पूरा नाम कहब, फेर ओकर नाम पुछब। जे अपन नाम नहि कहि सकए, ओकर बात नहि मानब।"

ओहि राति चन्ना गाछीमे पाँचू धूर्तक विवेक फेर मैदानमे आयल। एहि बेर बीचमे एकटा माटिक कटोरा राखल छल। अनन्या कहलीह — "जे नाम बजाउ, ओहिमे एकटा बून्द पानि खसत। जँ नाम सच्चा भावसँ बजाओल जाए, त पानि रहत। जँ केवल बचबाक लेल बजाओल जाए, त पानि धुआँ बनि उड़ि जाएत।"

बटुकनाथ "सरयू..." बजला, पानि खसल, मुदा ओ रुकि गेला कारण हुनका सरयूक बारेमे किछु नहि बुझल छल। पानि धुआँ बनय लागल। देविका दूरसँ कहलीह — "अधूरा नाम नहि!" बटुकनाथ धीरे–धीरे बजला — "सरयू देवी, जे पुलक पायापर माथपर टोकड़ी लेने चढ़लीह आ सूचीमे अनुपस्थित लिखल गेलीह।" पानि धुआँ नहि बनल।

चन्द्रपाल "उज्ज्वल झा" बजला, मुदा तुरन्त धुआँ भऽ गेल — कारण हुनका उज्ज्वलक भय नहि, केवल रकम मोन छल।

राघव कहला — "मुन्ना पासवान, जकर खाता खोलि हम ओकरा अपराधी बनौलहुँ, मुदा अपराध ओकर नहि छल।" पानि रहि गेल। राघवक चुप्पीमे पहिल दरार पड़ल।

लाउ किन–हंग बहुत कोशिशक बाद "उज्ज्वल" बजला, मुदा पानि धुआँ बनल, कारण ओ उज्ज्वलकेँ मनुष्य नहि, केवल एकटा घटना बुझैत छला।

ब्रूम "लेबर" आ "वर्कर" जेहन अंग्रेजी शब्द बजला, दुनू बेर पानि सूखल। अन्तमे ओ "सरयू देवी" बजला, पानि रहि गेल।

बूढ़बा भूत कहलनि — "पाँचम साँस पूर्ण नहि, आरम्भ भेल अछि। जे एक नाम कहि देलक, से मुक्त नहि। आब ओकरा नामक घर धरि जाए पड़त।"

भोरे पाँचू लोक जागला — बटुकनाथ टिकट कटौला — गढ़ नारिकेल जेबाक। एहि तरहेँ कथा फेर आगू बढ़ल, आब हर धूर्तकेँ अपन–अपन बजायल नामक घर धरि जेबाक अछि — सत्यक असली अनुभव करबाक अछि।

अध्याय ३५

नामक देहरी

बूढ़बा भूत कहलनि — "नाम कहब पहिल साँस छल, नामक घर धरि जाएब दोसर।" अनन्या माटिमे पाँच छोट घर बनौलीह — सरयू देवीक, मुन्ना पासवानक, उज्ज्वलक, आ आर।

बटुकनाथ हरिहरन गढ़ नारिकेलक रस्तापर निकलला। हुनकर ट्रेनक टिकटपर लिखल गंतव्य अपने-आप बदलि क "सरयू देवीक देहरी" भऽ गेल। रस्तामे ओ बूढ़बा भूतकेँ फेर भेटला, जे कहलनि — "जे नाम अहाँ छोड़ने छी, ओ अहाँक आगू चलि रहल अछि।"

चन्द्रपाल बत्रा अपन फोन तोड़य चाहला, मुदा हर बेर स्क्रीनपर उज्ज्वलक घरक तस्वीर आबि जाइत छल — आधा झुकल छप्पर, बिछौनाक तकियापर दाँतक निशान (जकरा उज्ज्वल रोदन रोकबाक लेल काटैत छल)। चन्द्रपाल पहिल बेर एहन घर देखला, आ ओकरा असहज लागल।

राघव सिग्नल देवनागरी अक्षर सीखय लगला। ओ "म" लिखय चाहला, त कागचपर "मुन्ना" (म्यूल नहि) बनि गेल। राघव पहिल बेर मुन्नाकेँ एकटा असली व्यक्तिक रूपमे सोचला।

बटुकनाथ सरयू देवीक घर पहुँचला। घर टूटल छल, मुदा देहरी बचल छल। एकटा वृद्धा भीतरसँ निकलि क पुछलनि — "ककरा चाही?" बटुकनाथ धीरेसँ कहला — "हम हुनका अधूरा पढ़ने रही।" वृद्धा एक मुट्ठी धूलि उठा क हुनकर हाथपर राखि देलनि — "पूरा पढ़बाक हो त ई धूलि आँखिमे लगाउ।"

बटुकनाथ धूलि आँखिमे लगौला। एक क्षणमे हुनका सरयू देवीक अन्तिम दिनक झलक देखार भेल। ओ माटिपर बैसि गेला।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ नव नियम बनौला — "नाम केवल बजलासँ नहि, नामक घर, ओकर भय, आ ओकर सपना — तीनू जनबाक चाही, तखने नाम पूर्ण मानल जाएत।"

राति फेर पाँचू धूर्तक विवेक चन्ना गाछीमे आयल। एहि बेर मैदानमे पाँच देहरी राखल छल। बटुकनाथ सरयू देवीक देहरीपर पएर राखला — देहरी डोलल नहि। चन्द्रपाल उज्ज्वलक देहरीपर पएर राखय चाहला, मुदा देहरी पाछू हटि गेल — कारण ओ केवल स्क्रीनपर देखने छला, असलीमे नहि गेल छला।

राघव मुन्नाक देहरीपर पएर राखि क कहला — "पासवान टोली, नदीक दक्खिन, पुरान पीपर लग।" देहरी स्थिर भऽ गेल।

लाउ किन–हंग लाखो देहरी देखला, मुदा एक्को पर पएर राखि नहि सकला — कारण ओ बाजारक मालिक छला, देहरीक अतिथि नहि।

देविका सभकेँ अन्तिम नियम कहलीह — "आब जे नाम कहत, ओकर घर पूछब। जे घर कहत, ओकर भय पूछब। जे भय कहत, ओकर सपना पूछब। तखनहि न्याय साँस लेत।"

अध्याय ३६

घर, भय, सपना

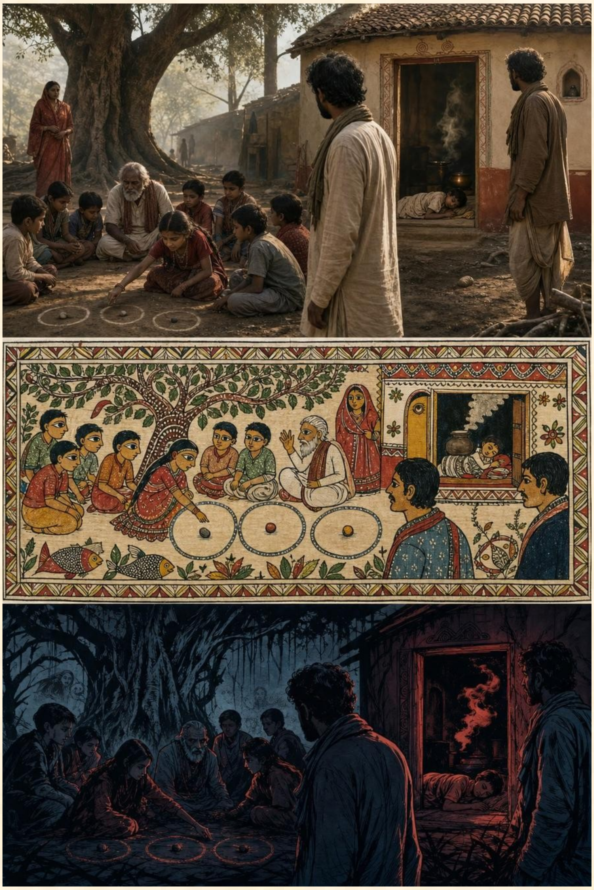

चन्ना गाछीक खेल आगू बढ़ल। अनन्या माटिपर तीन गोल बनौलीह — घर, भय, सपना। बूढ़बा भूत कहलनि — "एहि तीन बातसँ पैघ कोनो अदालत नहि।"

बटुकनाथ सरयू देवीक देहरीक भीतर देखला — धुँआ, अधपकल भात, आ एकटा बच्चा जे राति भरि मायक प्रतीक्षा करैत सूति गेल छल। ओ आँखि फेरय चाहला, मुदा चन्ना गाछीमे आँखि फेरब सेहो गवाही मानल जाइत छल।

चन्द्रपाल बत्रा उज्ज्वलक घरमे उज्ज्वलक अधूरा पत्र देखला —— "दीदी, हम गलत छलौं, मुदा अपराधी नहि छलौं।" ओ पत्र मेटबय चाहला, मुदा देविकाक आवाज आयल —— "पत्र नहि मेटब, एहि बेर उत्तर लिखब।"

राघव मुन्नाक घर पहुँचला। मुन्नाक पिता पुछलनि —— "अहाँ किएक लिखलहुँ जे हमर बेटा सरगना अछि?" मुन्नाक माय एकटा पुरान गमछा देखा क कहलीह —— "ई गमछा ओ बैंक जाइत काल लऽ गेल छल, कहने छल जे नोकरी भेटत। अहाँक नोकरी एहन होइत अछि?"

लाउ किन–हंग अपन नक्शापर देखला जे हर बिन्दु एकटा घर छल, जतय कियो प्रतीक्षा करैत छल। ओ पहिल बेर बुझला जे जकरा ओ आँकड़ा बुझैत छला, ओ सभ असली घरक लोक छला।

एडवर्ड ब्रूम मैथिलीमे "माफ करू" लिखबाक प्रयास केला। प्रोफेसर एलिना कहलनि —— "गलत उच्चारण अपराध नहि, नाम नहि लेब अपराध अछि।"

अनन्या बच्चा सभकेँ कहलीह —— "आब भय पूछू।" सरयू देवीक भय छल —— मरलाक बाद बच्चा भूखल रहि जाएत। उज्ज्वलक भय छल —— ओकर गलतीसँ बहिनक माथ झुकत। मुन्नाक भय छल —— ओ बिना बुझने अपराधी कहल जाएत।

देविका कहलीह —— "भयक सम्मान करब। डरायल लोककेँ कायर नहि कहब। ठगल लोककेँ मूर्ख नहि कहब।"

अन्तमे सपनाक बारी आयल। सरयू देवीक सपना छल —— ओकर बच्चा पढ़ि सकय। उज्ज्वलक सपना —— देविका कोनो फोनसँ नहि डेराउ। मुन्नाक सपना —— ओकर पिता बैंकक दरबाजापर माथ झुकाए बिना जाए।

बच्चा सभ हर सपना सुनि क अपन कंकड़पर एक अक्षर लिखला —— घरक अक्षर, भयक अक्षर, सपनाक अक्षर। तीनू जोड़ला पर नाम पूर्ण भेल।

बूढ़बा भूत कहलनि —— "जतबा नहि कहि सकलहुँ, ततबा सीखि क आउ।" ई फैसला नहि छल, ई एकटा गृहकार्य छल —— सत्यक असली समझ पएबाक यात्रा।

अध्याय ३७

तीन कंकड़

बच्चा सभक जेबीमे तीन कंकड़ (घर, भय, सपना) दिन भरि खनखनाइत रहल। एहि नियमसँ धूर्त सभ सेहो बचि नहि सकला।

बटुकनाथ हरिहरन अपन कोठलीमे उठला त तकियाक नीचाँ तीन कंकड़ भेटलनि। एकटा कंकड़पर लिखल छल — "आरम्भ।" ओ बुझला जे हर बड़का गलतीक पाछू एकटा छोट शुरुआत होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा अपन पुरान छात्रावासक दिन मोन पाड़ला — जखन ओ एकटा किसानसँ दू हजार रुपैया लऽ क फाइल जमा करब बिसरि गेला, आ

किसानक जमीन चलि गेल। ओ बुझला जे बड़का गलती सेहो छोट झूठसँ शुरू होइत अछि।

राघव सिग्नल सोमानीक असली नाम राघवेश छल —— स्कूलमे ओ गणितमे बहुत तेज छला। मुदा धीरे–धीरे अंकसँ प्रेम खाता बनल, खाता म्यूल बनल। हुनकर असली भय छल —— हुनकर बेटा कहियो पुछता "अहाँ की काज करैत छलहुँ? " आ हुनका उत्तर नहि भेटत।

लाउ किन–हंग अपन गरीब बचपनक घर मोन पाड़ला, जतय हुनकर माय राति भरि सिलाइ करैत छलीह। ओतय ओ पहिल बेर सोचने छला —— "गरीबीसँ बदला लेब।" मुदा बादमे बदला गरीबीसँ नहि, गरीब लोकसँ लेबय लगला।

एडवर्ड ब्रूम अपन कम्पनीक पुरान गोदाममे गेला, जतय एकटा पुरान पट्टिकापर भारतीय नदीक नाम गलत लिखल छल। ओ ओ नाम सही उच्चारण करय चाहला, मुदा जीह अटकि गेल। प्रोफेसर एलिना कहलनि —— "जिह्वा अटकैत अछि, कारण इतिहास गला पकड़ैत अछि।"

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ एकटा नव पाठ पढ़ला —— "जकरा हराबी, ओकर घर सेहो बुझू। नहि त जीत फेर नव अपराध बनि जाएत।"

बूढ़बा भूत मुस्कुराइत कहलनि —— "ई बच्चा सभ खतरनाक अछि। ई सभ शत्रुक चेहरा नहि, ओकर जड़ि देखैत अछि।"

ई कोनो क्षमा नहि, कोनो दंड नहि छल —— मुदा एकटा शुरुआत छल। जखन कियो अपन गलतीक जड़ि बुझि लैत अछि, तखन सुधारक रस्ता खुजि जाइत अछि। एहि तरहेँ पाँचू धूर्तक भीतर सत्यक हवा धीरे–धीरे पैसय लागल।

अध्याय ३८

नामक उच्चारण

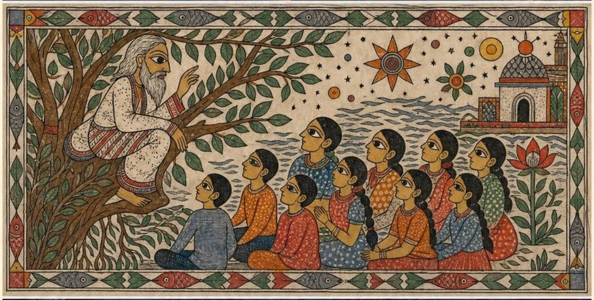

बूढ़बा भूत कहलनि — "जखन नाम लिखि देल जाइत अछि, तखन ओकर उच्चारण सीखबाक काल देब पड़ैत अछि।" नाम केवल लिखलासँ पूरा नहि होइत, ओकरा सही–सही बजएबो पड़ैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरन अपन चाहमे "भोला नट" नामक अक्षर तैरैत देखला। पहिल बेर हुनका बुझायल जे नामक भीतर पिताक आवाज, बचपनक रस्ता, आ मरलाक बाद बच्चाक रुदन सेहो रहैत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा "उज्ज्वल" नाम गलत उच्चारण केला, त परदा कारी भऽ गेल आ फेर स्वयं सुधरि क "उज्ज्वल" बनल — जेना कोनो पाठशाला हुनकर आँगुर पकड़ि क वर्णमाला पढ़ा रहल होय।

राघव सिग्नल "मुन्ना पासवान" नाम धीरे–धीरे जोड़ि क पढ़ला। नाम जुड़िते हुनका छातीमे दर्द भेल, मुदा ई एकटा नव समझ छल — नाम जँ ठीकसँ बजाओल जाए, त ओ वापसीक शुरुआत बनि जाइत अछि।

गढ़ नारिकेलमे "नाम–पाठ"क पहिल सभा भेल। बच्चा सभ नियम बनौला — "नाम गलत नहि पढ़ब। जे नाम नहि जनैत, ओ पुछत। जे नाम लुकायल गेल, ओ खोजत।"

नियम बनल — हर नामक तीन बात पढ़ल जाएत — ओकर घर, ओकर मृत्यु (या भय), आ ओकर अपमान। एहि नियमक नाम पड़ल — "तीन पातक विधान।"

धूर्त सभक भीतर ई नियम पहुँचल। बटुकनाथ लिखला — "भोला नट, घर अज्ञात।" फेर सुधार क लिखला — "घर खोजबाक बाकी।" ई छोट परिवर्तन छल, मुदा बूढ़बा भूत कहलनि — "एना शुरू होइत अछि नामक उत्तरदायित्व।"

चन्द्रपाल बत्रा अन्ततः लिखला — "उज्ज्वलक हार हमर जालक कारण भेल।" ई पहिल बेर हुनकर स्वीकारोक्ति छल।

राघव लिखला — "मुन्नाक नाम चोराओल गेल।" एहि तीन शब्दक बाद हुनकर कमराक बरखो बंद खिड़की खुजि गेल।

हुलासी (जे इनारमे मरलाक बाद आत्महत्या कहि क अपमानित भेल छलीह) पहिल बेर सभामे बजलीह — "हमरो नाम पढ़ू। हम खसि गेल रहीं, मुदा हमरा आत्महत्या कहि दाहक अधिकार छीनल गेल।"

बूढ़बा भूतक आँखि नोरायल — "आब धूर्त सभक दंड शुरू। हुनका सभकेँ हर राति एक नाम, ओकर घर, मृत्यु, आ अपमानक संग पढ़बाक अछि। जे दोसराक नाम नकारैत अछि, ओ धीरे–धीरे अपन नामक अधिकार गमबैत अछि।"

अध्याय ३९

बीजक शान्ति

नाम–पाठक बाद गढ़ नारिकेलमे एकटा अजीब शान्ति उतरल —— बाहरसँ स्थिर, मुदा भीतरसँ फूटबाक तैयारी करैत बीज जेहन शान्ति।

देविका साह उज्ज्वलक फाटल फोन उठा क पहिल पाठ लिखलीह —— "भय गुप्त राखल गेल त व्यापार बनैत अछि।" ओ बच्चा सभकेँ कहलीह —— "जखन धरि भय भीतर बन्द, तखन धरि ठगक। जखन बाहर बाजल, तखन समाजक।"

चन्द्रपाल बत्रा अपन दफ्तरमे बैसल छला। हुनकर तेसर फोन अपने–आप खुजल, जाहिपर लिखल छल —— "भय बाहर बाजल।"

राघव सिग्नलक कोठलीमे सिम–कार्ड सभ फूटि क छोट बीज बनि गेल, हरेकसँ एकटा पात निकलल, जाहिपर अधूरा नाम आ प्रश्न छल।

लाउ किन–हंग अपन नक्शापर देखला जे गढ़ नारिकेलक बिन्दु शेयर–बाजारक ग्राफ जेकाँ नहि, हृदय जेकाँ धड़कि रहल छल।

सौम्या रामनाथन सरकारी कागचक कठोर भाषाकेँ सरल गामक भाषामे बदलय लगलीह — "वित्तीय अनियमितता" क माने — "जकर पाइ छल, ओहिसँ बच्चाक डर कीनल गेल।"

गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ एकटा नव खेल सिखला — "सही नाम पकड़ू" — जाहिमे एकटा बच्चा अपराधीक भूमिका करैत, दोसर पीड़ितक, तेसर गवाहक। जखन नाम सही उच्चरित होइत, त पीड़ित फेरसँ दौड़ि पाबैत।

हुलासी कहलीह — "हमरो नाम कतेको बरख गलत कहल गेल। जखन अहाँ सभ हुलासी कहैत छी, त हमरा अपन बचपन मोन पड़ैत अछि।" बच्चा सभ पहिल बेर बुझला जे भूत सेहो बचपन राखैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरन गढ़ नारिकेलक बाहरी सरायमे ठहरला। ओ पूरा दिन नाम–पाठ देखला, मुदा भीतर जा नहि सकला। हुनका अपन बचपनक एकटा दृश्य मोन पड़ल — हुनकर पिता कहैत छला — "नाम खराब नहि लिखिहऽ, गरीबक नामे ओकर जमीन अछि।"

बैंकक एकटा बाबूकेँ मुन्ना पासवानक कथा सुनाओल गेल। ओ अपन रजिस्टर खोलि क तीन खाता म्यूल अकाउंट चिन्हला — बिना धूमधामक, केवल एकटा लाल पेंसिलक निशानसँ।

ओहि राति चन्ना गाछीमे एकटा प्रतीकात्मक भोज लागल — मृतक, जीवित, बच्चा सभ मिलि क एक मुट्ठी चाउर, एक चुटकी नून, अर्पित केला। बूढ़बा भूत कहलनि — "जकरा भोजनमे स्थान भेटल, ओकरा इतिहासमे स्थान भेटत।"

भोरे चन्ना गाछीक पातपर जमल ओसक हर बून्दमे एकटा शब्द छल — "आब।" ई समयक आदेश छल — आब नाम पढ़ू, आब भय बाजू, आब सत्यक रस्तापर चलू।

अध्याय ४०

ओसक अक्षर

भोरक ओसमे लिखल "आब" शब्द गढ़ नारिकेलमे पसरल। बच्चा सभ ओसक बून्द पढ़लक, त हुनकर हथेली भीजि गेल, आ ओहि भीजल हथेलीसँ नव समझ खुजल — केवल नाम पढ़ब पर्याप्त नहि, नामक बाद जीवन पढ़बाक अछि।

अनन्या बच्चा सभकेँ कहलीह — "आइसँ नामक संग एकटा वस्तु लिखू।" कोनो घरसँ पुरान चिट्ठी आयल, कोनो अस्पतालक पर्ची, कोनो बैंकक पासबुक। देविका उज्ज्वलक फोनक फाटल शीशा अनलीह। मीरा एकटा कागच अनलीह — "हमर प्रेम अपराध नहि।"

बच्चा सभ हर वस्तुक बारेमे पुछैत — "ई टिफिन ककर?" उत्तर मिलैत — "भोला नटक।" फेर पुछैत — "ओ की खाइत छला?" कोनो बूढ़ी कहैत — "भातमे नून, नूनमे पियाजक गन्ध।" ई सुनि क मृतकक भूख आधी घटि जाइत छल।

बटुकनाथ हरिहरन अपन पिताक पुरान नाम–पर्ची जेबीमे राखि गढ़ नारिकेल आयला। हुनका मोन पड़ल — हुनकर पिता गरीब लोकक नाम सुधारि–सुधारि लिखैत छला।

चन्द्रपाल बत्राक कम्प्यूटरमे प्रेस–वक्तव्यक शीर्षक अपने–आप बदलि क "हमरा सेहो पढ़ू" भऽ गेल।

राघव सिंह्नलक कोठलीमे सिम–कार्डक बीजसँ अंकुर निकलल, जाहिपर आधा नाम लिखल छल — मुन्ना पासवान। राघव पहिल बेर मुन्नाक चेहरा कल्पना करय लगला।

गामक हाटमे एकटा अनजान लोक आयल, जे "नामक अभिलेख कतय अछि" पुछैत छल। बच्चा सभ ओकरा पाठशालामे बैसा क अपन पूरा नाम लिखय कहला। ओ केवल "माधव" लिखि सकल, पूरा नाम नहि। बूढ़बा भूत कहलनि — "जे अपन पूरा नाम नहि लिखि सकैत, से दोसराक नाम मेटबय आयल अछि।"

सरयू महतोक बेटी कमली पहिल बेर सभामे आयलीह आ अपन मायक टूटल पायल माटिपर राखलीह — "बाबूजी जखन पुलपर गेला, त मायक पायल मरम्मतक लेल लऽ गेल छला। पायल टूटल रहि गेल, बाबूजी नहि घुरला।"

एडवर्ड ब्रूम अपन भाषणक बीच एकटा टिफिनक चित्र स्क्रीनपर देखला, आ हुनका जीवनमे पहिल बेर श्रमक असली स्वाद (नून) महसूस भेल।

बूढ़बा भूत कहलनि — "जकर वस्तु पढ़ि लेल, ओकर रास्ता पढ़ू।" कथा आब नामसँ जीवन, आ जीवनसँ रास्ता धरि आगू बढ़ल — रास्ता ई जानबाक जे के–के मृतककेँ छोड़लक, के बेचलक, आ के चुप रहल।

अध्याय ४१

नामक नाव

बारहम दिन गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ हर मृतकक "रस्ता" बनाबय लगला — चाउर, हल्दी, नून, आ पानिसँ माटिपर नक्शा। भोला नटक रस्ता बनल — घरसँ खेत, खेतसँ शहरक ठेका–कैंप, ठेकासँ पुल।

सौम्या पुरान फाइलमे "अनधिकृत" शब्द काटि क लिखलीह — "घरसँ चलल, कामपर पहुँचल, नाम काटल गेल।"

बटुकनाथ हरिहरन सरायमे बैसल ई सुनैत छला। ओ जीवन भरि अदालतमे कहैत आयल छला — "कारणक श्रृंखला सिद्ध नहि।" मुदा एतय ई

शृंखला चाउर आ नूनसँ बनि रहल छल। हुनका बुझायल जे जकरा ओ कानूनमे "लिंक" कहैत छला, से लोकभाषामे "रास्ता" छल।

देविका उज्ज्वलक रस्ता बनौलीह —— घर, स्कूल, मोबाइल दुकान, पहिल जीत, कर्जा, डर, आ अन्तमे —— सूखल पात। ई रस्ता गंगा जेहन गहींर छल, यद्यपि एहिमे कोनो नदी नहि छल।

निशांत झा मुन्ना पासवानसँ पुछलनि —— "तोहर डर कोन कटोरीमे?" मुन्ना कहलनि —— "डर हमर नहि छल। हमरा देल गेल छल।" बच्चा सभ लिखला —— "डर सेहो हस्तान्तरित सम्पत्ति बनि सकैत अछि।"

एकटा बुजुर्ग स्त्री, जकर बेटा पुलपर मरल छला, चन्ना गाछी आबि क कहलीह —— "हमरा रास्ता नहि मोन अछि। हम बस प्रतीक्षा केलहुँ।" बच्चा सभ जे थोड़े मालूम छल, ओतबे चाउरसँ लिखला —— "भादवक सोम।" बूढ़बा भूत कहलनि —— "रस्ता सदिखन पूरा नहि भेटैत। जे अंश भेटत, ओहिकेँ सत्यसँ भरू।"

सत्यव्रत मेहता अपन कक्षमे लिखलनि —— "अधूरा रस्ता सेहो रस्ता होइत अछि।"

राति चन्ना गाछीमे बच्चा सभ हर रस्ताक अन्तमे एकटा प्रश्न लिखला —— "कोन मोड़पर बचाओल जा सकैत छल?" भोला नटक रस्तामे —— सुरक्षा-बेल्ट। उज्ज्वलक रस्तामे —— पहिल धमकीपर सामूहिक उत्तर।

चन्द्रपाल बत्रा, राघव, लाउ किन-हंग सभकेँ अपन-अपन मोड़ देखार भेल —— ओ क्षण जखन ओ सभ रोकि सकैत छला, मुदा रोकला नहि।

बूढ़बा भूत कहलनि —— "जँ ओ मोड़ पर नहि रोकल गेल, ओकर भार के उठाओत? धूर्त उठाबय त प्रायश्चित्त। समाज उठाबय त पुनर्निर्माण। जँ कियो नहि उठाबय, त गोहि फेर उठाएत।"

भोरे ओसक बून्दमे दू शब्द चमकल —— "भार उठू।" कथा अगिला साँस लेल ठाढ़ भेल —— भार उठेबाक साँस।

अध्याय ४२

भारक वृत्त

बूढ़बा भूत कहलनि — "दंड ऊपरसँ देल जाइत अछि, भार भीतरसँ उठि क कन्हापर बैसैत अछि।"

अनन्या माटिपर दू वृत्त बनौलीह — "जिनका पर अपराध भेल" आ "जिनका द्वारा अपराध भेल।" एकटा बच्चा तेसर वृत्त पुछलक। अनन्या एकटा पातर रेखा खिंचि क कहलीह — "जिनका सभ देखलनि आ चुप रहला।"

पहिने भोला नटक टिफिन उठाओल गेल। मुन्ना पासवान ओकरा उठौला, त हुनकर हाथ काँपि गेल। देविका हुनकर हाथ पकड़ि क कहलीह — "ई

तोहर अपराध नहि, मुदा ई तोहर समाजक भार अछि। उठाउ, ताकि अगिला भोला भूखल नहि मरय।"

बटुकनाथ हरिहरन अपन जीतक फाइल उठाबय चाहला, मुदा फाइल असामान्य भारी लागल। हुनका बुझायल — फाइलमे कागच नहि, समय भरल छल, आ समय सभसँ भारी होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीनपर हर म्यूल खाता एकटा ईंट बनि उभरल। ओ ईंट हटाबय चाहला, मुदा ईंट स्क्रीनसँ नीचाँ टेबलपर खसि पड़ल — असली भार बनि गेल।

राघव सिन्नल अपन तकियाक नीचाँ पाथरक पात पौला, हरेकपर एकटा अधूरा वाक्य — "कॉल नहि काटल गेल," "दादीक बचत गेल।"

लाउ किन-हंगक कलमसँ स्याहीक बदला नूनक पानि बहय लागल।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ एकटा नया पाठ शुरू केला — ओ कियोकेँ अपराधी वा निर्दोष नहि कहैत छला, बस पुछैत छला — "एहि भारमे तोहर हिस्सा कतेक?"

गोप कुमार अपन हिस्सा लिखला — "हम कतेक बरख फाइलकेँ काज बुझैत रहलहुँ, जीवन नहि।" देविका लिखलीह — "उज्ज्वल पहिल बेर डर देखौलक, तखन हम ओकरा जिद्दी मानलहुँ।"

सत्यव्रत मेहता लिखलनि — "जे भार समाजपर छोड़ल गेल, ओकरा समाज, राज्य आ अपराधी बीच बाँटबाक नव न्याय-विचार चाही।"

तेसर दिन साँझमे बच्चा सभ हर भारक वस्तु लग एकटा पात गाड़ला, जाहिपर लिखल छल — "ई भार के उठाओत?" उत्तर नाम नहि, काज छल — "खुआएब," "बचाएब," "सुनब," "संग देब।"

बूढ़बा भूत कहलनि — "स्मारक ओ नहि जे देखल जाए। स्मारक ओ जे काज करए।" टिफिन अन्न-सूची बनल, हेलमेट सुरक्षा-संकल्प बनल, पासबुक सामुदायिक सावधानी बनल — हर वस्तु काजमे लागि गेल।

राति चन्ना गाछीमे हुलासी कहलीह — "जे भार उठय नहि आबत, ओकरा भार ताकय जाएत।" कथा अगिला साँस लेल ठाढ़ भेल — दुआरक साँस।

अध्याय ४३

चलैत भार

तेरहम साँसक बाद भार बाँटल गेल, मुदा भार समाप्त नहि भेल —— ओ आब चलय लागल, गाम–गाम, घर–घर।

बटुकनाथ हरिहरन अपन बैसकीक डिग्रीक शीशापर धुन्ध देखला। पोंछला त हुनका "भोला नट, सरयू, मुन्ना, उज्ज्वल" नाम झलकल। तखने भीतरक कोठलीसँ हुनकर बूढ़ी माय, जे बरखोंसँ ककरो नाम स्पष्ट नहि बजैत छलीह, अचानक कहलनि —— "बटुक, कतेक नाम खएलें? "

हरिहरन जड़ि गेला। "बटुक" नाम केवल ओहि लोक बजैत छला जे हुनका बाल्यकालमे देखने छला। ओ पहिल बेर बुझला — भीतरक दुनियाँमे प्रवेश मायक जिह्वासँ सेहो होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्राक बेटा भोरे नाश्तापर सपनाक बात कहलनि — "काल्हि राति एकटा लड़का हमरा नाम पुछैत छल — तोहर पिताक कमाइमे हमर फाँसीक गन्ध अछि।" चन्द्रपाल स्तब्ध रहि गेला — सपनापर कोन मुकदमा चलत?

राघव सिंघलक घरमे हुनकर पत्नी थारीक भात देखलीह — दाना सभ मिलि क अक्षर बना रहल छल — "खाता बन्द।" राघव थारी फेकि देला।

लाउ किन–हंग हांगकांग अपन सचिवकेँ "गढ़ नारिकेल" खोजय कहला। ओकर हाथ, जे करोड़क हस्ताक्षर करैत छल, ई नाम लिखैत काँपि गेल।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ अपन काजमे लागल रहला — देविका डिजिटल ठगीक पाठशाला चलौलीह, निशांत बच्चा सभकेँ पैसाक हिसाब बुझौला, मीरा स्त्री सभकेँ हिम्मत देलनि — "हमर प्रेम हमर विरुद्ध साक्ष्य नहि।"

सौम्या दस्तावेज सभकेँ बहुत रास भारतीय भाषामे अनुवाद कऽ रहल छलीह — "सत्य जखन केवल विशेषज्ञक भाषामे रहैत अछि, तखन ओ आधा बन्दी रहैत अछि।"

चन्ना गाछीमे भूत सभ आब दुपहरियोमे देखार होय लागला। बूढ़बा भूत कहलनि — "मनुक्खक बच्चा हमसभसँ बेसी चतुर, ओ सभ जीबैत–जीबैत स्मृति बनाबैत अछि।"

बा अनन्याकेँ कहलीह — "डर आब ओकरा सभक घर गेल।" अनन्या पुछलीह — "तखन हमसभ जीति गेलौं?" बा मुस्की देलीह — "नहि। जीत शब्दसँ सावधान रहू। ई प्रायः धूर्तक प्रिय शब्द होइत अछि। हम सभ काजमे लागल छी।"

अनन्या पातपर लिखलीह — "काज" — आ ओहिक नीचाँ छोट अक्षरमे — "साँस।"

भोरे चन्ना गाछीमे हवा चलल, आ आवाज आयल — "आगाँ।" कथा एतय समाप्त नहि भऽ रहल छल, ई घर–घर प्रवेश कऽ रहल छल।

अध्याय ४४

पोतीक कापी

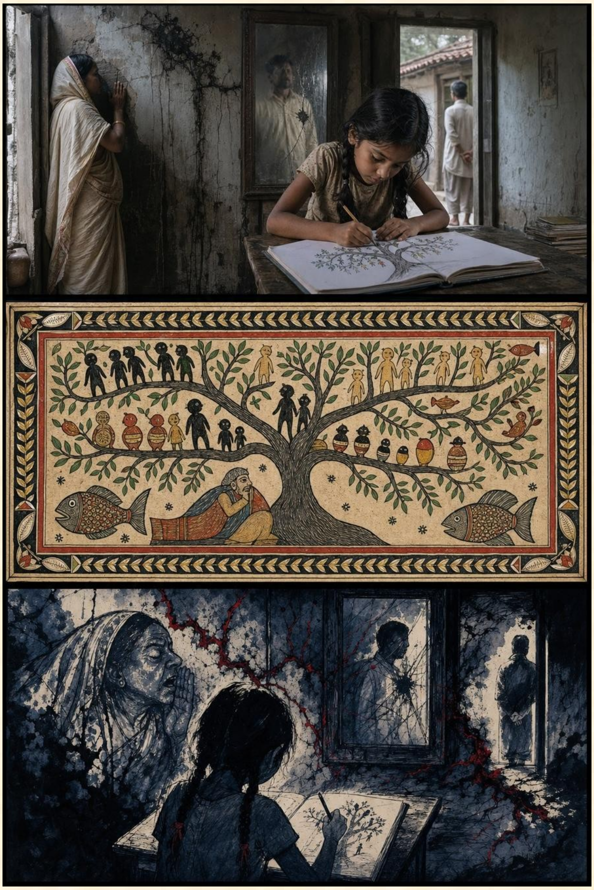

चौदहम साँसक बाद डर आब धूर्त सभक घरमे बच्चा सभक कापी धरि पहुँचि गेल। बटुकनाथ हरिहरनक सात बरखक पोती एक दिन एकटा गाछक चित्र बनौलीह — डारिपर कारी-उज्जर लोक, आ नीचाँ एकटा बूढ़ लोक बाहर ठाढ़।

पोती दौड़ि क कहलीह — "ई देखू, चन्ना गाछी!" फेर पुछलीह — "दादाजी ओतय बाहर किएक ठाढ़ छथि? खेलमे किएक नहि पैसैत छथि?"

हरिहरन हुनकर प्रश्नसँ स्तब्ध रहि गेला। पोती फेर पुछलीह —— "जे जीतैत अछि से खेलमे बाहर किएक रहैत अछि?" हरिहरनक कंठ सूखि गेल। कानूनक सम्पूर्ण भाषा एहि सात बरखक प्रश्नक सोझाँ छोट पड़ि गेल।

चन्द्रपाल बत्राक घरक बाहर एक दिन कतेको युवक आयल, जे हुनकर बेटाकेँ कहलक —— "हम सभ ओहि खेलमे हारल छलौं जाहिमे पहिल दिन जीत भेल छल। आब हम सभ दोसर बच्चा सभकेँ बुझबय जाइत छी।" चन्द्रपालक बेटा हुनका जाय देलनि, आ पिताकेँ कहलनि —— "हुनका सभक जीवन लुटल गेल। हम सोचि रहल छी जे हमर घरक भीतर कतेक मोबाइल बन्द पड़ल अछि।"

राघव सिन्नलक किशोरी बेटी पुछलीह —— "बाबा, अहाँ सभ फोनमे एतेक गुप्त गप किएक करैत छी? गुप्त बात सदिखन गलत होइत अछि?" राघव उत्तर दैत रुका गेला।

लाउ किन–हंगक पुत्र विद्यालयसँ पुछलनि —— "जँ कोनो दिन लोक देशक बदला अपन नामसँ हिसाब माँगत, तखन?" लाउ पहिल बेर अपन पुत्रक आँखिसँ बाँचि नहि सकला।

गढ़ नारिकेलमे बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ कहलनि —— "धूर्तक घरमे जखन बच्चा प्रश्न पूछए, तखन बुझू —— नाम ओकर दुआर पहुँचल।"

देविका साह अपन पाठशालामे बच्चा सभकेँ सिखौलीह —— "जँ कियो कहय जल्दी पाइ, पुछू केना। जँ कियो कहय गुप्त राखू, पुछू किएक।" निशांत जोड़लनि —— "प्रश्न सभसँ पहिने ठगक ब्याज काटैत अछि।"

गोप कुमारक नव फाइल खुजल, जाहिमे लिखल छल —— "धूर्त सभ बाहरी दुनियाँसँ भीतरी दुनियाँमे दंडसँ नहि, प्रश्नसँ प्रवेश करैत अछि। ओकर सन्तान पहिल दूत होइत अछि।"

राति चन्ना गाछीमे अनन्या माटिपर एकटा शब्द लिखलीह —— "ककर?" ओहि एक शब्दसँ पूरा धरती काँपि गेल —— ककर पाइ? ककर मृत्यु? ककर आदेश? ककर चुप्पी?

बा कहलीह —— "आब कथा हुनका सभक घर धरि पहुँचि गेल। आब ओ सभ चाहितो त बाहर नहि रहि सकता।"

अध्याय ४५

भीतरक हवा

पन्द्रहम साँसमे बच्चा सभ "ककर" पुछलक, आ सोलहम साँसमे धूर्त सभक घरक भीतरसँ पुरान बासी हवा बहरायल — बरखों धरि बन्द राखल गेल जीतक कागच, घूसक गन्ध, आ डरक ताला।

बटुकनाथ हरिहरनक पोती फेर एकटा नव चित्र अनलीह — चन्ना गाछीमे तीन नव आकृति — कागच खएनिहार बूढ़, मोबाइल चिबएनिहार लोक, आ मुँह बिनु व्यापारी। पोती पुछलीह — "दादाजी, ई सभ के छथि?" हरिहरन उत्तर नहि दऽ सकला। पोती कहलीह — "किएक तँ अहाँ सभ कथा नहि

कहैत छी। जखन घरमे कथा नहि कहल जाइत अछि, त चित्र अपने बनि जाइत अछि।"

चन्द्रपाल बत्राक बेटा पिताक गाड़ीक चाबी टेबलपर राखि कहलक — "ई गाड़ी हमरा नहि चाही। जे मोबाइल सभ बन्द भऽ गेल, जे युवक सभ फाँसी लगौलक, हुनकर नामक जगह हमर नाम किएक?"

राघव सिंग्लक बेटी एकटा कापी लऽ आयलीह — "चुप्पीक नोंद" — आ कहलीह — "जकर उत्तर अहाँ नहि देब, से हम एहि कापीमे लिखब।"

लाउ किन–हंगक पुत्र विद्यालयमे एकटा निबंध लिखला — "लाभक वंश आ नामक ऋण" — जाहिमे लिखल छल — "हमर वंश जँ लाभक वंश अछि, त हम ओकर उत्तराधिकारी नहि बनय चाहैत छी।" सभागारमे ताली नहि बाजल, केवल गहींर मौन छाइ गेल।

एडवर्ड ब्रूमक नातिन (जे इतिहास पढ़ैत छलीह) पुछलनि — "जखन अहाँ गरिमापर भाषण दैत छी, त अहाँक पुरान परियोजनामे मरल लोकक नाम कतय राखल जाइत अछि?"

गढ़ नारिकेलमे बा अनन्याकेँ कहलीह — "बच्चाक दल प्रश्नक दल होइत अछि। ओ ककरो विरुद्ध नहि, झूठक विरुद्ध जन्मैत अछि।"

देविका साह नव पाठ जोड़लीह — "घरक प्रश्न" — "ठग बाहरसँ नहि, बहुत बेर घरक चुप्पीसँ शुरू होइत अछि। जँ अहाँक घरमे अकस्मात बहुत पाइ, बहुत भय, बहुत गुप्तता आबय, त पहिने प्रेमसँ पुछू।"

मीरा कहलीह — "भय सेहो वंशानुगत होइत अछि, चुप्पी सेहो। आब नव वंश बनत — अनुमति, प्रश्न, आ अपन देहपर अपन अधिकारक वंश।"

राति चन्ना गाछीमे अनन्या माटिपर लिखलीह — "की लेब? की छोड़ब?" बच्चा सभ एक स्वरमे कहला — "जे नाम मेटाओल गेल, से हम लेब। जे लाभ नाम मेटा क बनल, से हम छोड़ब।"

एहि वाक्यसँ चन्ना गाछीक पातक रंग बदलि गेल। बा कहलीह — "आब कथा केवल मरल लोकक नहि रहल। आब कथा ओहि बच्चा सभक सेहो अछि जे अपवित्र जीतक दूध पीबासँ इन्कार करत।"

अध्याय ४६

उत्तराधिकारक अन्हार

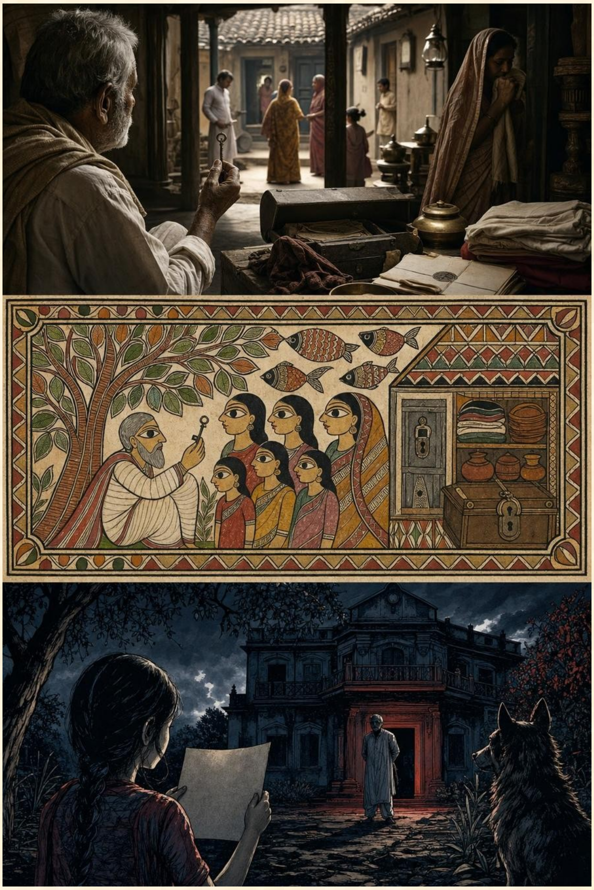

सत्रहम साँसमे धन अपन उत्तराधिकारी खोजय लागल, आ उत्तराधिकारी सभ धनक मुँहसँ नहि, ओकर पाछूक अन्हारसँ देखय लागला।

बटुकनाथ हरिहरनक पोती फेर आबि पुछलीह — "बाबा, अहाँ हमर नामपर की छोड़ब? " हरिहरन कहला — "सभ किछु — घर, जमीन, खाता, नाम।" पोती एकटा कागचपर तीन गोला बनौलीह — घर, खाता, नाम — आ घरक कातमे छोट–छोट पएर बनौलीह। पुछलापर कहलीह — "जँ घर ककरो मरल पएरपर बनल हो, त ओ राति चलैत होएत।"

हरिहरन ओहि राति अपन वसीयतनामा खोलला। "चल सम्पत्ति" क जगह हुनका "चल मृतक" लिखल देखार भेल। ओ आँखि मलला, अक्षर फेर सामान्य भऽ गेल, मुदा हुनका बुझायल जे किछु गहींर बात हुनका सोझाँ आबि रहल छल।

चन्द्रपाल बत्राक बेटा पुछलनि — "जतेक लाभ हमर नामपर अछि, ओकर स्रोत लिखि दिअ। जँ नहि लिखि सकैत छी, त ई नामसँ हटाउ।" चन्द्रपाल कहला — "बेटा, दुनियाँ एना नहि चलैत।" बेटा उत्तर देलनि — "तखन हमरा ओ दुनियाँ नहि चाही।"

राघव सिन्नलक पत्नी हर बेर भातमे एकटा दाना अलग राखैत छलीह। पुछलापर कहलीह — "जेकरा घरक भात अहाँक पाइसँ छिनायल, तकरा लेल।"

लाउ किन-हंगक नातिन शीशापर एकटा गाछ बनौलीह, जाहिपर फल जेकाँ मोबाइल लटकल छल, हरेकमे एकटा आवाज — "हमर मृत्युक कोन कानूनमे लिखल?"

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ एकटा नव खेल बनौला — जे कियो कोनो वस्तु आनय, ओकरा पुछल जाइत — "ई ककर श्रम? ई ककर हानि?" जँ उत्तर नहि भेटय, वस्तु खेलसँ बाहर।

अनन्या कहलीह — "उत्तराधिकार वस्तु नहि। उत्तराधिकार ओ कथा थीक जे वस्तु संग घरमे पैसैत अछि।"

बूढ़बा भूत मैदानमे आबि कहलनि — "जे धन नाम मेटा क बनल, तकरासँ भने वंचित रहू। वंचित रहबो कखनो-कखनो मुक्ति होइत अछि।"

अनन्या साँझमे लिखलीह — "सत्रहम साँस: उत्तराधिकारीक इन्कार।" फेर काटि क लिखलीह — "चयन।" ओ बुझौलीह — "ओ सभ केवल 'नहि' नहि कहि रहल अछि, ओ सभ चुनि रहल अछि जे कोन कथा अपना संग राखब।"

राति चन्ना गाछीमे एकटा खाली कागच माटिमे धँसि गेल, आ ओतयसँ एकटा नारिकेलक अंकुर फुटल — असम्भव बात, मुदा गढ़ नारिकेलमे असम्भव सेहो नियम पढ़ि क उगैत अछि।

बा कहलीह —– "आब धनक वंश टूटल नहि, ओकरासँ मुक्त होएबाक वंश शुरू भेल।"

अध्याय ४७

गज-ग्राह आख्यान

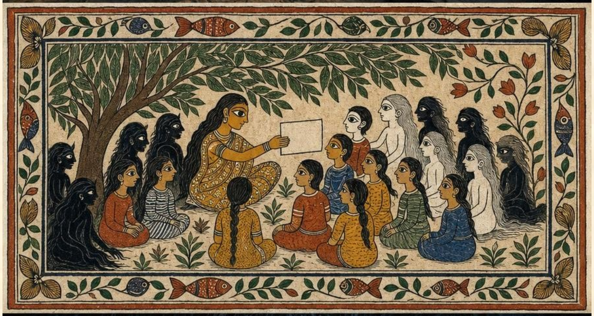

अठारहम साँसमे बा गामक बच्चा सभकेँ पुरान कथा सुनौलीह — "एक गज (हाथी) पोखरिमे पानि पीबय गेल। पानिमे एकटा ग्राह (मगर) छल, जे ओकर पएर पकड़ि लेलक। गज खिंचैत रहल धरती दिस, ग्राह खिंचैत रहल पानि दिस।"

बटुकनाथ हरिहरनक पोती पुछलीह — "गज बचल?" बा कहलीह — "कथामे बचल, मुदा बुझबाक अछि गज के छल, ग्राह के छल, आ पानि के छल।"

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ ई कथा खेल बना क खेलय लगला — एकटा गज बनैत, एकटा ग्राह। गज कँ ग्राहक पकड़िसँ छूटबाक लेल केवल बलसँ नहि, सही नाम बजा क आगू बढ़बाक होइत छल।

अनन्या गज बनलीह, बटुकनाथक पोती ग्राह। अनन्या "सरयू," "उज्ज्वल," "नन्द आरुणि" नाम बजलीह, त पकड़ि ढीला भेल। बटुकनाथक पोती पएर छोड़ि देलीह — "हमरा ग्राह नहि बनबाक अछि।"

फेर पोती स्वयं गज बनलीह, चन्द्रपाल बत्राक बेटा ग्राह। पोती "प्रक्रिया," "कानून" बजलीह, त पकड़ि आओर कसि गेल। अनन्या फुसफुसा क कहलीह — "नाम!" पोती अपन दादाजीक कहल बात मोन पाड़ि क सत्य बजलीह — पकड़ि ढीला भेल।

चन्द्रपालक बेटा (आर्यन) गज बनला, मेइ–लता (लाउ किन–हंगक परिवारक लड़की, जे अपन कुलक भारसँ भागि क गढ़ नारिकेल आबि गेल छलीह) ग्राह। आर्यन "प्रतिशत," "कमीशन" बजला, पकड़ि आओर कसि गेल। देविका कहलीह — "पहिने अपन नाम कहू।" आर्यन कहला — "आर्यन।" फेर देविका कहलीह — "आब ओ नाम कहू जकर पिताक खेलमे लोक गेल।" बहुत हिम्मत जुटा क आर्यन कहला — "उज्ज्वल झा।" पकड़ि ढीला भेल।

बूढ़बा भूत कहलनि — "उद्धार ओहि दिन होइत अछि जखन ग्राह सेहो अपन पकड़िक इतिहास बुझैत अछि।"

पनिडुब्बी कहलीह — "ग्राह सेहो भूखक कैदी होइत अछि, मुदा भूखकेँ धर्म बना देब अपराध अछि।"

दूर शहरमे सत्यव्रत मेहता अपन कक्षमे एकटा स्वीकार–पत्र लिखला — "जे कागचपर राज्य चुप रहल, ओ कागचपर हमर हस्ताक्षर अपराधक भारमे सहभागी अछि।" ओ हस्ताक्षर तुरन्त नहि केला, मुदा ई पत्र जेबीमे राखि लेला।

बा कहलीह — "सत्यव्रत मेहता अन्तमे तलवार लऽ क नहि आएता। ओ अपन कान लऽ क आएता — सुनबाक लेल।"

अध्याय ४८

पुकार

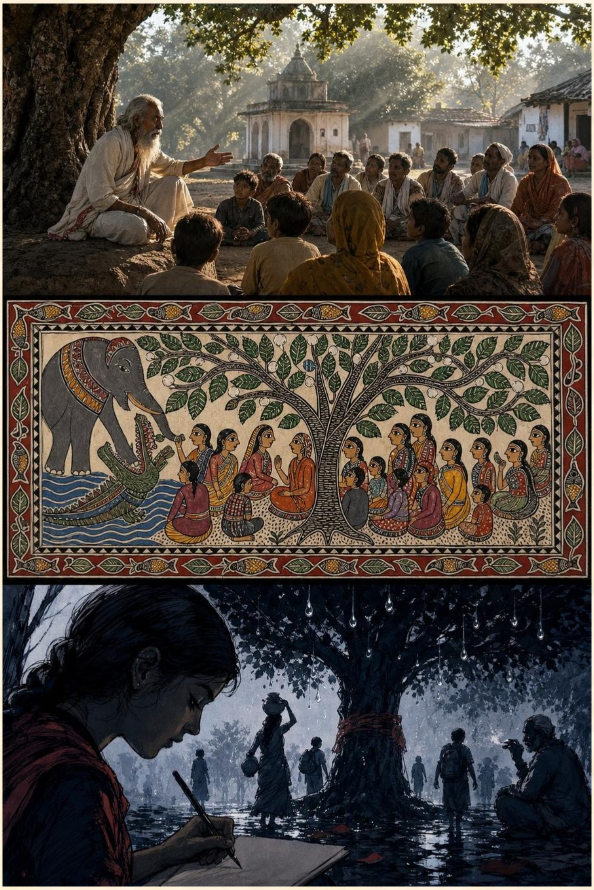

उन्नैसम साँसमे बूढ़बा भूत कहलनि — "आइ कबड्डी नहि, आइ पुकार।" अनन्या एकटा खाली कटोरा चन्ना गाछी बीच राखलीह — "खाली कटोरा आवाजक घर होइत अछि।"

पहिल पुकार सरयूक आयल — "हमर नाम केओ गलत लिखलक, मुदा गलत नामसँ मृत्यु छोट नहि होइत।" बच्चा सभ हुनकर नाम पहिल बेर लिखय लगला, हाथ काँपैत।

दोसर पुकार उज्ज्वल झाक आयल —— "हम हारल पाइ नहि छी, हम घरक भोर छी।" देविका कहलीह —— "हमर भाइकेँ ई सभ खेल खा गेल, मुदा हम ओकर नाम खेलमे नहि, पाठशालामे लिखब।"

मुन्ना पासवान काँपैत आबि अपन कथा कहला —— "हम कमीशनक लेल खाता खोललहुँ, सोचलहुँ दू हजार भेटत। जकरा करोड़ गेल, ओकर नाम नहि, हमर नाम —— तेँ हम अपराधी बुझायल गेलहुँ।" बा हुनकर माथपर हाथ राखि कहलीह —— "अन्हारमे फँसल लोक जँ दोसराकेँ अन्हार बुझाबय लागय, त ओ बोझ पाठ बनि जाइत अछि।" मुन्ना ओहि दिनसँ पाठशालाक पहिल स्वयंसेवक बनला।

दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता अपन पुस्तकालयमे बैसल छला। हुनका सपनामे एकटा बच्ची पुछलीह —— "अहाँक कान कतय अछि?" ओ अपन कान छूला। बच्ची कहलीह —— "ई आवाज सुनय लेल अछि। नाम सुनय लेल कान भीतर होइत अछि।"

सत्यव्रत भोरे उठि एकटा छोट झोरामे कपड़ा आ नोटबुक लऽ क पैदल निकलि पड़ला —— गढ़ नारिकेल दिस।

साँझमे ओ चन्ना गाछी पहुँचला। कोनो ताली नहि बाजल, कोनो मंच नहि छल। ओ अपन दुनू कान छूइ क कहला —— "हम बहुत देरसँ आयल छी। हम सुनब।"

खाली कटोरामे पहिल बेर पानि अपने भरय लागल —— नीचाँसँ उगि क। बा कहलीह —— "देखलहुँ? सत्यव्रत देवता नहि, ओ केवल कटोरा खाली मानि लेलनि। एहिसँ पानि उगल।"

पहिल आवाज आयल —— "सरयू।" सत्यव्रत लिखला, फेर पुछला —— "पूरा नाम?" पातसँ उत्तर आयल —— "नाम पूरा तखन होएत जखन ओकर घरक नाम, ओकर श्रम, ओकर बच्चाक प्रतीक्षा सेहो लिखब।"

राति गहींर होइत गेल। जखन सत्यव्रतक हाथ थाकल, अनन्या पेन पकड़लीह, फेर देविका, फेर मुन्ना —— सभ बारी–बारी लिखला।

अन्तमे बा पुछलीह —— "आब अहाँ सुनलहुँ। आब अहाँक पुकार?" सत्यव्रत कहला —— "जतेक बेर हमर मौन झूठक सहारा बनल, ओ सभ मौनक नाम

सेहो एहि अभिलेखमे लिखू।" बच्चा सभ लिखला — "मौन — सत्यव्रत मेहता।" हुनकर आँखिसँ नोर खसल।

बूढ़बा भूत कहलनि — "जे पुकारैत अछि, ओकरा देवता नहि चाही; ओकरा एहन कान चाही जे अपना मौनक अपराधो सुनि सकय।"

अध्याय ४९

मौनक अभिलेख

बीसम साँसमे बूढ़बा भूत कहलनि —— "नाम लिखल गेल, मुदा मौनक नाम बाकी अछि।" सत्यव्रत मेहता पुछला —— "मौनक नाम होइत अछि? " बा उत्तर देलीह —— "होइत अछि। सभसँ भारी नाम।"

बा समझौलनि —— "जे मरल, ओकर नाम लिखल गेल। जे मारलक, ओकर नाम कखनो भेटत, कखनो नहि। मुदा जे देखलक आ चुप रहल, ओकर नाम लिखल बिनु इतिहास अधूरा रहत।"

पहिल मौन सरयूक नाम लग लिखायल —— "ओहि अधिकारीक मौन जे स्त्री–मजदूरक नाम पूछब जरूरी नहि बुझलक।"

देविका साह अपन नाम स्वयं लिखलीह — "बहिनक मौन" — उज्ज्वलक स्क्रीनक लाल उजासकेँ खेल बुझि क अनठा देबाक लेल।

मुन्ना पासवान बुझला जे बैंकक बाबू शंका करैत छला, मुदा चुप रहला। अनन्या लिखलीह — "शंका देखलाक बादक मौन।"

बटुकनाथ हरिहरनक कागचपर छोट–छोट शब्द उगि आयल — "जखन अहाँ जानैत छलहुँ, तखन चुप किएक छलहुँ?" हुनकर पोती पुछलीह — "बाबा, अहाँ मौनक अभिलेखमे अपन नाम लिखब?" हरिहरन उत्तर नहि दऽ सकला।

गामक बैंकक बाबू, अस्पतालक कम्पाउंडर, आ वकीलक मुंशी सेहो अपन–अपन मौन स्वीकार केला — "अन्य टिप्पणी खाली छोड़बाक मौन," "ऊपर कहि क चेहरा बचेलहुँ," "दरबाजाक मौन।"

राति चन्ना गाछीमे चौदहटा लालटेन जरल। बा कहलीह — "देखलहुँ? जे देहक खोरनाठीसँ बनल अछि, ओहो उजास धरि सकैत अछि।"

तखने खाली कटोरा अपने बाजल — "मौन लिखल गेल। आब जे नाम लिखल गेल, ओकरा पढ़ब।" बूढ़बा भूत कहलनि — "जे सभ चुप रहल छल, ओ सभ आब पढ़त।"

बा हरिहरनकेँ कहलीह — "पढ़ू।" हरिहरन काँपैत पढ़ला — "सरयू, जकर नाम कागचमे अधूरा रहल; ओ अधिकारीक मौन जे नाम पूछल नहि।" चन्द्रपाल बत्राक बेटा आगू आबि उज्ज्वलक नाम पढ़ला।

बूढ़बा भूत अन्तिम पंक्ति कहलनि — "जे सुनि क काजमे लागत, ओकर मौन धीरे–धीरे पात बनि झरत। जे सुनि क फेर चुप रहत, ओकर मौन ग्राह बनि पएर पकड़त।"

सत्यव्रत मेहता बुझला जे हुनकर काज उद्धारक नहि, बल्कि एहि अभिलेखक पहरेदार बनबाक अछि — जखन सत्ता कहत "मामला समाप्त," ओ कहता — "नाम अपूर्ण अछि।"

अध्याय ५०

देहक बादक नाम

राति चन्ना गाछी बीच अचानक एकटा पोखरि बनि गेल, जाहिमे पानिक बदला अक्षर तैरैत छल — सरयू देवी, बुधन मियाँ, जगेसर पासवान, उज्ज्वल झा, आ बहुत रास आर नाम, जे कोनो सरकारी कागचमे कहियो नहि लिखल गेल छल।

अनन्या सत्यव्रत मेहतासँ पुछलीह — "अहाँक नाम सेहो लिखायब?" सत्यव्रत चौंकला — "हमर नाम? हम त मरल नहि छी।" अनन्या हँसि क कहलीह — "एतय केवल मरल लोकक नाम नहि लिखाइत अछि। जे कतेको बेर चुप रहल, ओकर नाम सेहो लिखाइत अछि।"

सत्यव्रत अपन हाथ पानिमे डुबौला आ धीरेसँ बजला —— "सत्यव्रत मेहता। मौन।" नाम पानिमे उतरि गेल।

तखने चन्ना गाछीक पछुआरी दिससँ एकटा विशाल छाह आयल —— कहियो गज (हाथी), कहियो मनुष्य जेहन। ओकर सोझाँ पानि फाटल आ भीतरसँ एकटा ग्राह उठल —— मुदा ई नदीक ग्राह नहि छल, ई लोभ, भय, आ पदक भीतरी ग्राह छल।

चन्ना गाछीमे भूत सभ नाम बजाबय लगला —— "सरयू देवी! बुधन मियाँ! उज्ज्वल झा!" हर नाम गजक देहपर पड़ैत आ एक-एकटा बेड़ी टूटैत। अन्ततः गज मुक्त भऽ गेल।

सत्यव्रत बुझि गेला —— "गोहि सभक बीच जलसमाधि" केवल ओ क्षण नहि जखन गोहि देह चिबा जाइत अछि। ई ओ क्षण सेहो अछि जखन देहक अन्तिम अभिमान टूटि जाइत अछि।

बटुकनाथ हरिहरनक छाह गाछीमे आबि चिचिआयल —— "ई सभ मान्य नहि! अधिकार-क्षेत्र कतय अछि?" बूढ़बा भूत उत्तर देलनि —— "जतय नाम मिटाओल जाइत अछि, ओतय चन्ना गाछीक अधिकार शुरू होइत अछि।"

सत्यव्रत अनन्याक लग जा क पुछला —— "हमर नाम कतय लिखल?" अनन्या पातपर आंगुर राखि देखौलीह —— "सत्यव्रत मेहता —— जे अबेरसँ सुनल, मुदा सुनल।" सत्यव्रतक आँखि भरि आयल। ई हुनकर जीवनक पहिल एहन सम्मान छल, जाहिमे पदक बदला एकटा साधारण काज लिखल छल —— "सुनल।"

ओहि रातिक बाद गढ़ नारिकेलमे बहुत लोक शुभ सपना देखला —— मजदूरक परिवार सभ देखला जे हुनकर मृतक पानिसँ शान्तिसँ बाहर आबि रहल छला। मुदा धूर्त सभक सपनामे हुनकर अपन झूठक बोझ हुनका सतबैत रहल।

भोरे सत्यव्रत मेहता बाहर निकलला। चालक पुछला —— "सर, दिल्ली घुरब?" सत्यव्रत कहला —— "दिल्ली बादमे। पहिने गंगा-पुल —— जतय देह खसल छल, ओतय नाम लगाएब बाकी अछि।"

गढ़ नारिकेलक नारिकेल गाछक पात भोरे बिनु बयारक हिलल — जेना कहि रहल हो — देह गेल, भय गेल; मुदा नाम आब जड़ि खोजि रहल अछि। आ जखन नाम जड़ि खोजय लागैत अछि, तखन कथा फेर एक बेर बदलि जाइत अछि।

अध्याय ५१

साक्षीक भार

सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछी बीच बैसला। ओहि राति कबड्डी बन्द छल, कारण साक्षीक बादक ई मौन फैसला स्वयं अपन देह खोजैत छल।

तखने पानिसँ गोहि सभ आबय लगला। सत्यव्रतक देह काँपि गेल। मुदा बूढ़बा भूत कहलनि — "डेराउ नहि। सभ दाँत हत्यार नहि होइत। किछु दाँत बन्धन काटबाक लेल सेहो बनैत अछि।"

सभसँ बूढ़ गोहि आगू आबि कहलक (पनिडुब्बीक अनुवादसँ) — "हम देह खाइत छी। ई हमर धर्म अछि, दोष सेहो। मुदा जे देह पानिमे बन्हल रहि जाइत, ओकरा मुक्त करबाक काज हमर अछि।"

बूढ़बा भूत समझौलनि — "गोहि सभक बीच जलसमाधि — ई भय अछि, मुदा भय मात्र नहि। ई देहक हार आ नामक मुक्ति दुनू अछि। जे देह चिबायल, से समाप्त नहि भेल; ओकर बन्धन टूटल। मुदा ई मुक्ति अपराधक क्षमा नहि।"

सत्यव्रत अपन पदक कागच माटिपर पसारि देला। हवा चलल, त अक्षर बदलय लागल — "निस्तारित" सँ "निशान" बनल, "समय व्यतीत" सँ "समय बितल, नाम नहि" बनल। सत्यव्रत बुझला — कानूनक भाषा कतेको बेर मृतककेँ दोसर बेर मारि दैत छल।

ओ कहला — "हम अबेरसँ आयल छी।" पीपरक ब्रह्मा कहलनि — "देरी सेहो अपराध अछि, मुदा देरीक स्वीकार एकटा दुआर अछि।"

अनन्या पुछलीह — "साक्षी की करैत अछि?" सत्यव्रत उत्तर देला — "साक्षी अपन आँखि बेचैत नहि।" ओ अपन पदनामक पट्टी माटिपर राखि देला — "पहिने अपन नाम छोट कर। पद हटा क।"

सत्यव्रत पहिल साक्षी–पत्र लिखय बैसला — "हम, सत्यव्रत मेहता, वर्तमान पश्चात्तापसँ, ई स्वीकार करैत छी जे जखन नाम पुकारल जा रहल छल, हम बहुत काल धरि केवल प्रक्रिया सुनैत रहलहुँ।"

एहि सच्चा स्वीकारपर कोनो ताली नहि बाजल, केवल शान्ति अयलि। गोहि सभ पानि दिस घुरि गेला — देहक पहरेदारीक काज पूरा भऽ गेल छल, आब नामक पहरेदारी मनुष्यक हाथमे छल।

सत्यव्रत अपन पदनामक पट्टीक पाछूक सादा भागपर एकटा पंक्ति लिखला — "जे सुनि लेल गेल अछि, से आब असगर नहि अछि।"

भोरे जतय पदनाम राखल गेल छल, ओतय एकटा छोट नारिकेलक अंकुर फुटि आयल। गढ़ नारिकेलमे जे पद माटिमे गड़ैत अछि, कखनो–कखनो ओ नामक गाछ बनि जाइत अछि।

अध्याय ५२

अगिला आवाज

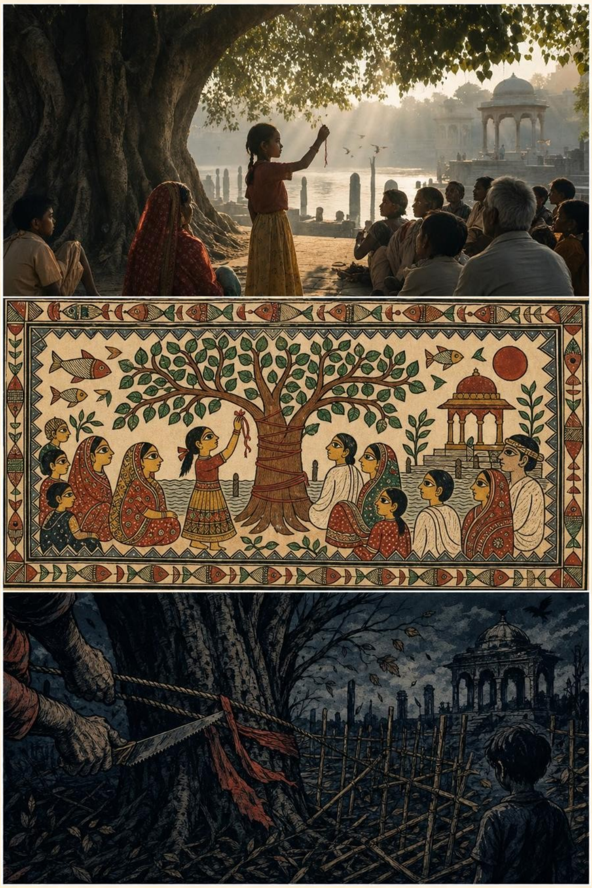

चन्ना गाछीक सुनवाईक बाद कथा समाप्त नहि भेल — एकटा दीर्घ, उज्ज्ञर साँस लेल गेल। मुदा संसार ठाढ़े नहि रहैत अछि। सरकारी कागचमे चन्ना गाछी "अतिक्रमण" कहल गेल, आ ओकरा काटबाक आदेश आबि गेल।

पहिने–पहिने लोक चुपचाप देखैत रहल। जखन पहिल डारि खसल, त भीतरक अन्हारमे बहुत रास रंगीन चीज देखार भेली — पुरान माटिक दीप, नाम लिखल छोट पाथर, बच्चाक काँचक गोली — जे लुकायल छल, से नष्ट नहि भेल, बल्कि प्रकाशमे आबि गेल।

सत्यव्रत मेहता एहि बेर एकटा साधारण सफेद कुरतामे आयला, कोनो पद वा गाड़ी बिनु। एकटा बालिका पुछलीह —— "गाछी कटल जा रहल अछि, त कथा सेहो कटल जाएत?" सत्यव्रत धीरेसँ कहला —— "गाछी कटैत अछि, जड़ि सुनैत रहैत अछि। कथा ओतय जीबैत अछि जतय सुननिहार बचल रहय।"

धीरे-धीरे गाछीक छत्र टूटि गेल, आकाश देखार भेल। मुदा आबाजाही घटलक नहि, बढ़ल। चाहबला ठेला लगौला, स्त्री सभ दीप राखय लगलीह, शिक्षक बच्चा सभकेँ लऽ क आबय लगला —— "ई ठाम केवल गाछ नहि, लोकस्मृतिक जीबैत पृष्ठ अछि।"

मजदूर सभमे सँ किछु रातिमे चुपचाप जड़िपर पानि ढारि दैत छला —— "हमरा हाथसँ कटैत अछि, मुदा एतय किछु अछि जे कटलापर सेहो देखैत अछि।"

अन्तिम डारि काटलापर जड़िसँ सड़नक गन्ध नहि, भीजल माटि आ नव बच्चाक जेहन कोमल गन्ध उठल। बच्चा सभक हाथमे नाम-लिखल पाथर सभ एक संग गरम भऽ गेल —— जेना गाछी कहि रहल हो —— "हम एतय छी, मुदा नव रूपमे।"

बालिका पुछलीह —— "एतय फेर गाछी उगाओल जाए?" दोसर बच्चा कहलक —— "नव गाछी, मुदा पुरान नाम।" सत्यव्रत एकटा पुरान रजिस्टर बच्चा सभकेँ देला, जाहिपर लिखल छल —— "जकर नाम सुनल गेल, ओकर अस्तित्वक पहिल गवाही।" बालिका ओहिमे लिखलीह —— "आइसँ पहरा हमरा सभक।"

राति दीप जरल, नाम-पाठ चलल। भोरे कटल ठूँठपर एकटा सूक्ष्म हरियर बिन्दु फूटल देखार भेल। बच्चा सभ ई देखि कहला —— "गाछी सुनि रहल अछि।"

एहि तरहेँ जलसमाधि भयक अन्तिम शब्द नहि रहल; ई मुक्तिक दुआर बनि गेल। आ जतय लोक अन्त बुझि रहल छल, ओतयसँ कथा फेर एक बेर आरम्भ भेल।

अध्याय ५३

कटानक बादक बिहान

भोरे अधकट चन्ना गाछीपर सूर्यक पहिल किरण पड़ल। बूढ़बा भूत कहलनि — "देखू, गाछी कटैत अछि त ओ अपन उमेर खोलि दैत अछि। मनुष्य कटैत अछि त ओकर नाम खोलबाक चाही।"

बच्चा सभ निर्णय लेला — "आइसँ पहरा दिनमे सेहो।" कबड्डी बन्द नहि भेल, बस समय बदलल — रातिमे भूत सभ खेलैत छला, दिनमे बच्चा सभ नामक पहरा दैत छला।

देविका साह भोरहि आबि उज्ज्वलक नाम–पाथरपर हाथ फेरलीह। ओ पहिल बेर बिनु कानने हुनकर पूरा नाम लिखलीह — "उज्ज्वल कुमार झा।"

मीरा एकटा नीला कुर्तीमे आयलीह। बच्चा सभ हुनका लेल एकटा पाथर राखल छल —— "निजता।" मीरा कहलीह —— "नामक पहरा जतेक जरूरी, मौनक अधिकार सेहो ततेक जरूरी। जे चुप रहय चाहय, ओकर चुप्पीकेँ सेहो पहरा दियौ।"

ईरा विदेशसँ बससँ आबि पहुँचलीह। एकटा बच्ची पुछलीह —— "अहाँ दोसर देशसँ एली? ओतय नाम कटैत अछि?" ईरा उत्तर देलीह —— "ओतय नाम चमकदार अक्षरमे बदलि देल जाइत अछि। कटनाइ ओतय अलग ढंगक होइत अछि।"

दुपहरमे लोक सभ मिलि क छोट–छोट काज केला —— पानिक घड़ा राखल गेल, छाया लेल कपड़ाक छतरी बनल, अधूरा नामक लेल खाली स्थान छोड़ल गेल —— "कदाचित् परिवार आबि नाम पूरा करए।"

साँझ धरि गामक आवाजाही बढ़ल —— जे कहैत छल "गाछी कटि गेल त कथा समाप्त," ओ आब कहय लागल —— "कथा पातसँ उतरि लोकक जीहपर आबि गेल अछि।"

मुदा ओहि साँझ दू अनजान लोक गामक बाहरी बाटपर घुमैत देखार भेला, जे मोबाइलपर धीमे बजैत छला —— "ठाम खुलि गेल अछि। भीड़ नियमित अछि। परियोजना सम्भव अछि।" पनिडुब्बी ई सुनि चिन्तित भेलीह —— जतय स्मृति लोकक हाथमे जागैत अछि, ओतय बजार सेहो सूँघि क आबैत अछि।

साँझमे कटायल ठूँठक हरियर बिन्दुपर पहिल तारा अटकल। तखने गामक चौकीदार एकटा पीयर कागच लऽ क दौड़ैत आयल —— नगरपालिकाक मोहर लागल नोटिस। बच्चा सभ खेल रोकि देला।

नामक पहराक पहिल असली परीक्षा भोरमे नहि, आब शुरू होय जा रहल छल।

अध्याय ५४

ठूँठक चारू कात

बच्चा सभ अधकट ठूँठक चारू कात गोल घेरा बना क बैसला। जड़िक भीतरसँ बहुत रास पुरान चीज देखार भेली —— नुकीला पाथरपर अधलिखल नाम, काँचक गोली, राख। अनन्या बच्चा सभकेँ रोकलीह —— "जे किछु ठूँठक भीतरसँ भेटत, तकरा उठाएब नहि, पहिने सुनब।"

बा लाठी टेकैत आबि जड़ि छूलीह आ कहलीह —— "गाछी कटि गेल त की? हमरा गाममे कतेको माथ कटि गेल, कुल नहि कटल। जड़ि बाँचल रहए त छाँह फेर जन्म लैत अछि।"

पहिल नाम एकटा मजदूरक बूढ़ बेटा पढ़ला, बाल्यकालक जेहन काँपैत। जखन नाम बजल, त हवाक एकटा झोंका आयल। बच्चा सभ लिखला — "नाम सुनल गेल, ठूँठ उत्तर देलक।"

उज्ज्वलक माय हुनकर नाम पढ़लीह। देविका हुनका कहलीह — "आस्ते पढ़ू, नामकेँ जल्दी नहि चाही।" ओ नाम पढ़लापर एकटा चिरई तीन बेर चिहुँकल। अनन्या लिखलीह — "स्क्रीनमे डूबल नाम सेहो माटि सुनैत अछि।"

मीरा एकटा नियम बनौलीह — "जे नाम पढ़ल गेल, तकरा पाथरपर लिखि ठूँठक चारूकात राखब। मुदा कोनो नामक संग ओकर दुखक तमाशा नहि बनत।"

एकटा पाथरपर लिखल छल — "जेकर नाम नहि भेटल।" ओकरा सभसँ पहिने राखल गेल। बा ई देखि कानि पड़लीह।

साँझमे एकटा पोस्टमास्टर साइकिलपर आयल, आ आरुणिकेँ एकटा मोट पीयर लिफाफा देलक — नगरपालिकाक मोहर लागल। आरुणि खोलय चाहला, मुदा अनन्या रोकलीह — "नाम–पाठ चलि रहल अछि। पीयर कागच प्रतीक्षा करत।"

अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहलीह — "काल्हि पीयर कागच पढ़ल जाएत। मुदा पहिने ओहिपर लिखल शब्दक नाम पूछल जाएत।" बच्चा सभ बुझि गेला — सरकारी भाषा सेहो बेनाम नहि रहि सकैत, जखन ओ स्मृतिपर दावा करत, त ओकरो नाम, लोभ, आ उद्देश्य पूछल जाएत।

पहिल दिन एना समाप्त भेल, मुदा घेराक बीच पीयर लिफाफा राति भरि करवट बदलैत रहल — अगिला सुनवाईक प्रतीक्षामे।

अध्याय ५५

नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

भोरे अनन्या पीयर लिफाफा उठौलीह। कहलीह — "अहाँ पढ़ब, मुदा पहिने हम सभ सुनब जे एहि कागचक नाम की अछि।" सत्यव्रत मेहता ई सुनि क बुझला जे ई बालिका कानूनक पहिल पाठ नीक ढंगें बुझि गेल छथि — जे कागच लोकपर शासन करैत अछि, ओकरो नाम पूछल जा सकैत अछि।

आरुणि पढ़लनि — "उक्त स्थलपर अवैधानिक रूपेँ स्थापित पाथर, चिह्न, दीपक सभ हटाओल जाए।" बा कहलीह — "नाम पाथर भेल, तकरा ओ अवैधानिक कहैत अछि। जे नाम मेटा देलक, से वैधानिक?"

गोप कुमार तेसर पन्ना पढ़लनि, जाहिमे नाम, प्रमाण, स्वामित्व–सूचना मंगल गेल छल। ओ फुसफुसैला —– "जिनकर देह पानिमे गेल, तकर प्रमाण? नाम ठगीमे गुम भेल, तकर स्वामित्व?"

तखने एकटा नव लोक आयल —– सफेद पैंट, हाथमे चमकैत फाइल —– जे कहलक, "बटुकनाथ बाबू पठौने छथि। एहि स्थलकेँ 'चन्ना गाछी लोक–स्मृति केन्द्र' बनाएब —– फाटक, टिकट–घर, दान–पेटी सभ बनत।"

अनन्या पुछलीह —– "एहि चित्रमे 'जेकर नाम नहि भेटल' पाथर कतय अछि?" दूत चौंकि गेल। दोसर बच्चा पुछलक —– "भूतक कबड्डी कतय खेलत?" बालिका कहलीह —– "तखन ई केन्द्र नहि, पिंजड़ा अछि।"

सत्यव्रत मेहता उठि क दूतकेँ कहलनि —– "स्मृतिकेँ ट्रस्ट बनएबासँ पहिने स्मृतिसँ अनुमति लेब आवश्यक अछि —– लोकक उपस्थितिमे।" भीड़मे "उपस्थित" शब्द बजय लागल —– पहिने एक, फेर दस, फेर बीस लोक।

गामक लोक सभ पीयर सूचना–पत्रक खाली किनारपर अपन उत्तर लिखला —– "खाली भू–खण्ड नहि —– नामक ठाम।" "भीड़ नहि —– परिवार।" जे नहि लिखि सकल, ओ अपन अंगूठाक निशान देलक।

दूत जाइत काल धमकी देलक —– "सात दिनमे हटाउ, नहि त बल प्रयोग होएत।" बूढ़बा भूत कहलनि —– "जे बल प्रयोगक बात कहैत अछि, ओकर भीतर बल कम आ भय बेसी होइत अछि।"

राति गामक लोक मिलि क अपन स्वयंक नक्शा बनौला —– सरकारी नक्शामे केवल एकटा खाली चौकोर छल, मुदा लोकक नक्शामे ओतय स्मृतिक केन्द्र, नाम, आ कथा सभ छल। कटल ठूँठक चारूकात अनन्या एकटा लाल वृत्त खिंचलीह —– "एतयसँ स्मृति पसरत।"

सात दिनक धमकीक सोझाँ, गढ़ नारिकेल अपन पहिल स्मृतिक नक्शा बनाबय बैसल।

अध्याय ५६

स्मृतिक पहिल नक्शा

अनन्या भोरे कहलीह — "जे कागच हमरा ठामकेँ खाली कहैत अछि, ओकरा पहिने भरल ठाम देखाएब।" गामक लोक मिलि क अपन स्मृतिक नक्शा बनाबय लगला।

आरुणि नक्शाक बीचमे कमला–बलान नदीक रेखा खिंचला — मुदा सोझ नहि, कतेको बेर मुड़ैत। पुछलापर कहला — "ई नदी फाइलक नदी नहि, देहक नदी अछि। जकर भीतर नाम डूबल, ओकर रेखा सोझ केना होएत?"

बा एकटा पुरान पगडंडी खिंचलीह — "हमर माय एहि बाटसँ पोखरि जाइत छलीह।" बच्चा सभ ओकरा "मायक बाट" लिखला।

सौम्या स्त्री सभसँ पुछलीह —— कोन–कोन घरक पुरुष पुलक काजमे गुम भेला? विधवा, बहिन, बेटी सभ आगू आबि क अपन कथा सुनौलीह। नक्शापर मजदूरक बस्ती बनल —— हरेक घरक जगहपर एकटा हथेली।

दुपहरमे नगरपालिकाक दू कर्मचारी मापक फीता लऽ क आबि पुछला —— "क्षेत्र चिन्हित करब जरूरी अछि।" अनन्या नक्शा देखा क पुछलीह —— "अहाँक खूँटा ककर ऊपर गड़त —— नाम पर, कि पगडंडीपर? " कर्मचारी सभ चुप भऽ गेला।

मीरा नक्शाक एक किनारपर एकटा घेरा बनौलीह, जाहिमे कोनो नाम नहि लिखल गेल —— "अकथितक अधिकार" —— जे स्त्री सभ अपन कथा सार्वजनिक नहि करय चाहैत छलीह, हुनका सभक लेल।

ईरा कहलीह —— "एहिमे आकाश नहि अछि।" एकटा बच्चा नक्शाक चारूकात आकाश खिंचलक, जाहिमे छोट–छोट ग्रह बनल छल। अनन्या कहलीह —— "जँ कियो नाम चोरि क पृथ्वी छोड़य चाहय, त आकाशो पहरामे रहत।"

साँझमे नक्शा टाँगल गेल। तखने एकटा चमकैत गाड़ीसँ एकटा लोक उतरल, जे नम्रतासँ कहलक —— "बटुकनाथ हरिहरन जी कहैत छथि —— एहि लोक–स्मृतिकेँ सुरक्षित राखबाक लेल विधिवत 'लोक–स्मृति न्यास' बनब जरूरी अछि।"

ठूँठक चारूकात सन्नाटा पसरि गेल। बच्चा सभ पहिल बेर बुझला जे स्मृतिपर अगिला आक्रमण कुल्हाड़िसँ नहि, संरक्षणक मीठ भाषासँ आबि रहल अछि। अनन्या कहलीह —— "काल्हि एहि प्रस्तावक नाम पूछल जाएत।"

अध्याय ५७

गंगेशक प्रश्न

भोरे एकटा सफेद गाड़ी आयल। बटुकनाथ हरिहरन हाथमे एकटा लाल फाइल लऽ क उतरला — "गढ़ नारिकेल लोक-स्मृति न्यास" बनएबाक प्रस्ताव लऽ क।

अनन्या ठूँठपर राखल एकटा पाथर उठा क पुछलीह — "न्यास बनाएब त ठीक, मुदा न्याय जानैत छी?" बटुकनाथ हँसि क कहला — "बेटी, न्याय बिनु न्यास कतय?" अनन्या फेर पुछलीह — "तखन पहिने न्याय कहू।"

ईरा एकटा पुरान पोथी लऽ क आयलीह — मिथिलाक महान न्याय-दार्शनिक गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि। ओ कहलीह — "गंगेश

उपाध्याय नव्य न्यायक जनक छला — एहन विद्वान जे तर्क आ प्रमाणक शास्त्र रचला। हुनकर सीख छल — कोनो बात सत्य मानबासँ पहिने ओकर प्रमाण देखू।"

ईरा समझौलीह — "गंगेशक असली सीख ई छल — कोनो व्यक्तिकेँ ओकर कुल, जाति, वा परिस्थितिक आधारपर नहि, बल्कि ओकर सत्य आ न्यायक आधारपर परखल जाय।"

मीरा जोड़लीह — "जँ कियो कुलक सम्मानक नामपर कोनो सत्यकेँ दबा दैत अछि, त ओ सम्मान नहि, अन्याय होइत अछि।"

अनन्या बटुकनाथसँ पुछलीह — "गंगेश कहला — प्रमाण बिनु प्रमेय नहि। तखन जाति वा भेदभावक प्रमाण की? ककरो मनुष्यता नकारबाक प्रमाण की? "

बटुकनाथ अपन स्थिति सम्हारय चाहला — "ठीक अछि, न्यासक नियममे कोनो भेदभाव नहि रहत। सभक नाम लिखल जाएत।" मीरा तुरन्त पुछलीह — "सभक सम्मान सेहो? केवल नाम लिखलासँ भेदभाव नहि टूटैत।" देविका जोड़लीह — "आ नामक मालिक कियो न्यास नहि बनत। नाम परिवारक, लोकक अछि। संस्था सेवा करय, स्वामित्व नहि।"

आरुणि लाल फाइलक पहिल पन्नापर लिखल "न्यासक अधिकार क्षेत्र" काटि क लिखलनि — "सेवाक दायित्व।" बटुकनाथक चेहरा कसि गेल — कारण अधिकारसँ ओ जीबैत छला, दायित्वसँ ओ डरैत छला।

बच्चा सभ नक्शापर एकटा नव वृत्त बनौला, जाहिपर लिखल गेल — "न्याय बिनु न्यास नहि।"

साँझमे सत्यव्रत मेहता आबि कहला — "'न्यास' शब्द 'न्याय' सँ छोट देखाइत अछि, मुदा जँ न्याय बिनु हो, त गोहि बनि जाइत अछि।"

राति गामक लोक देखलक जे किछु युवक मोबाइलमे एकटा नव सूचना देखैत छला — "गढ़ नारिकेल डिजिटल श्रद्धांजलि मंच: अपन प्रियजनक नाम चढ़ाउ।" कागचक न्यासक बाद आब स्क्रीनक न्यास आबि रहल छल। गंगेशक प्रश्न — प्रमाण आ न्यायक प्रश्न — एतय समाप्त नहि भेल छल।

अध्याय ५८

चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

भोरे चन्द्रपाल बत्राक "डिजिटल श्रद्धांजलि मंच" गामक मोबाइल सभमे चमकय लागल —— "अपन प्रियजनक नाम अमर करू।"

देविका ओ मंच खोललीह, त देखलीह जे नाम जोड़बाक लेल बहुत रास निजी जानकारी माँगल जा रहल छल —— पूरा पता, बैंक-विवरण, फोटो, मुआवजाक स्थिति, आ अन्तमे —— "स्मृति-प्रकाशन, शोध, दान आ साझेदारी हेतु जानकारी उपयोग करबाक स्वीकृति।" देविका मोबाइल बन्द कऽ कहलीह —— "श्रद्धांजलि नहि, जाल।"

ईरा बच्चा सभकेँ कहलीह –– "काल्हि प्रमाणक बात भेल छल। आब एहि ऐपपर ओ कसौटी लगाउ। भीतर की अछि?" अनन्या कहलीह –– "गोहि पानिक ऊपर शान्त रहैत अछि, भीतर दाँत रखैत अछि।"

मीरा शर्त पढ़ि क कहलीह –– "एतय लिखल अछि जे कथा, फोटो, परिवारक विवरण सभ प्रचार आ दानमे प्रयोग भऽ सकत। अर्थात् दुख देब, त ओ ओकरा विज्ञापन बनाओत।"

गोप कुमार समझौलनि –– "जे दुःखक बहानासँ अनावश्यक सूचना माँगय, ओकरा विश्वास नहि देब।"

सत्यव्रत मेहता आबि कहला –– "भूखल मनुष्यसँ भोजनक बदला हस्ताक्षर लेल जाए, त ओ स्वीकृति अछि कि बाध्यता? शोकाकुल परिवारसँ स्मृतिक बदला सूचना लेल जाए, त ओ श्रद्धांजलि अछि कि सौदा?"

गामक बच्चा सभ "नाम–पाठशाला" शुरू केला –– पहिल पाठ: नाम कहब आ नाम देब दूटा अलग बात अछि। दोसर पाठ: दुःखक फोटो दुःखक सम्पत्ति नहि बनय। मीरा एकटा नव शपथ लिखौलीह –– "हम मृतकक नाम कहब, मुदा आँसू बेचब नहि।"

साँझमे एकटा बूढ़ी माय अपन बेटाक नाम एप्पपर चढ़ाबय आयलीह, मुदा देविकाक समझेलापर ओ रुकि गेलीह –– "हमर बेटा पानिमे गेल, हम ओकर नाम पानिसँ निकाललहुँ। आब फेर ओकरा स्क्रीनमे किएक डुबाबू?" ओ ठूँठक पाथरपर बेटाक नाम लिखि चुपचाप घुरि गेलीह।

राति गोपकेँ एकटा गुप्त संदेश भेटल –– "श्रद्धांजलि मंच असगर नहि। राघव देख रहल अछि।" अनन्या बुझि गेलीह जे चन्द्रपाल आ राघव सिग्नल दुनू मिलि क एहि नव जालमे लागल छला।

राति भरि बच्चा सभ पहरा दैत रहला। चन्ना गाछी कटि गेल छल, मुदा अखनो चारि–चारि गोहि घात लगौने छल –– सरकार, न्यास, स्क्रीन, आ सिग्नल।

अध्याय ५९

राघव सिग्नलक नव कोड

अनन्या भोरे कहलीह — "कोड पढ़बासँ पहिने कोडकेँ प्रमाण बनाउ।" बच्चा सभ गंगेशक तरीका अपनाबय लगला — मोबाइलक काँच प्रत्यक्ष अछि, दानक बहानासँ चोरी अनुमान अछि, "श्रद्धांजलि" जेहन मीठ शब्द शब्द अछि, आ गोहि जेहन पानिपर शान्त मुदा भीतर दाँतवला उपमान अछि।

गोप कुमार समझौलनि — "राघव सदिखन वस्तुकेँ दोसर नाम दैत छल। पाइ = दान, कमीशन = सेवा, चोरी = प्रक्रिया, धमकी = सलाह।" मीरा तुरन्त रोकलीह — "निजता अपराधक ढाल नहि, ई पीड़ितक अधिकार अछि।"

बटुकनाथ हरिहरन फेर आबि कहला —– "डिजिटल प्रमाण अदालतमे सहज मान्य नहि होइत।" अनन्या उत्तर देलीह —– "एतय पहिने न्याय मान्य होएत।"

तखने चन्द्रपालक ऐपमे काज करय बला एकटा युवक भवेश काँपैत आबि स्वीकार केलक —– "हमरा पता नहि छल जे ई सभ गलत अछि। कोन कोडपर की काज होइत, से राघव भेजैत छल।"

राघव स्वयं ओतय नहि छला, मुदा हुनकर अनुपस्थिति उपस्थितिसँ बेसी भारी छल। दुपहरमे राघवक एकटा संदेश पीयर सूचना-पत्रपर उभरल —– "दानक कोड बदलल। मौनक स्रोत देखू।" सभक नजर सत्यव्रत मेहता दिस गेल, मुदा सत्यव्रत चुप्पे बैसल रहला —– ई बेर चुप्पी अपराध नहि, सुनबाक आसन छल।

सत्यव्रत कहला —– "राघव मौनक स्रोत खोजि रहल अछि, कारण ओकर कोड शब्दपर चलैत अछि। जे ठाम शब्दसँ पहिने सुननाइ अछि, ओतय कोड टूटि जाइत अछि।"

तखने उज्ज्वलक माय अपन बेटाक नाम पढ़लापर चुप भऽ गेलीह। लम्बा मौन। तखने दूर सँ एकटा बच्चा "कबड्डी-कबड्डी" कहैत दौड़ल आ ठूँठ छूइ क घुरि गेल। अनन्या लिखलीह —– "नामक उत्तर: खेल।"

राति एकटा तेसर संदेश माटिपर नील लकीर जेकाँ उभरल —– "स्रोत हटाउ।" अनन्या बुझि गेलीह —– स्रोत कोनो एक व्यक्ति नहि, बल्कि सुनबाक विधि अछि। ओ लिखलीह —– "मौनक स्रोत: सामूहिक कान।"

एहि शब्दक संग नील लकीर फटि गेल। बूढ़बा भूत कहलनि —– "कोड पढ़ल गेल। आब मौन सुनल जाएत।" राघवक कोड टूटल छल, मुदा एकर पाछूक भय अखनो पूरा तरहेँ खुलबाक बाकी छल।

एकटा वृद्ध चर्मकार आगू आबि कहलनि —– "गंगेश जँ न्याय छथि, त हमहूँ न्यायमे छी। हमर नाम पाछू नहि लिखू।" बच्चा सभ हुनकर नाम पाथरक ठीक मध्य-दिशामे लिखला।

अध्याय ६०

सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

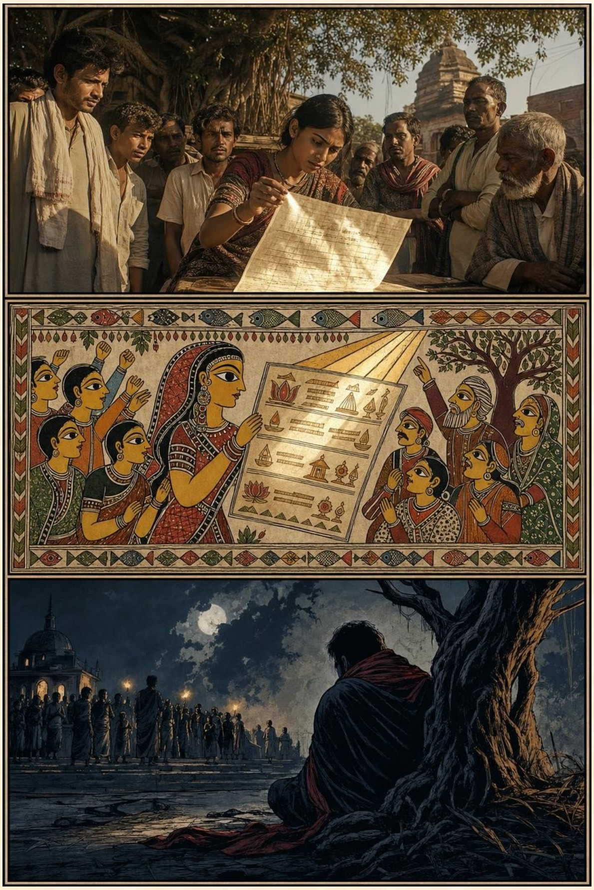

राघवक नव कागचमे "श्रद्धा," "कोष," "सहयोग" जेहन पवित्र शब्द छल। देविका ओकरा धूपमे राखि क देखलीह —— "श्रद्धा" क नीचाँ "हिस्सा" चमकल, "सहयोग" क नीचाँ "कमीशन।"

अनन्या सत्यव्रत मेहता लग जा क पुछलीह —— "अहाँ चुप किएक छी? " ई प्रश्नमे सत्यव्रतक पहिल मौन आ दोसर मौन दुनू आमने–सामने आबि गेल। पहिल मौन अपराध छल —— जखन ओ बाजि सकैत छला, मुदा नहि बजला। दोसर मौन एखन छल —— जखन ओ बाजि सकैत छला, मुदा लोकक स्वरकेँ अपन आवाजसँ ढँकय नहि चाहैत छला।

सत्यव्रत कहला —– "पहिल मौनमे हम लोकक आवाज रोकने रही। एखन जँ हम तुरन्त बाजब, त फेर ओहि आवाजकेँ छोट करब। हम केवल सुनब।"

ठूँठ लग सभा भेल। देविका बजलीह —– "स्क्रीनपर स्मारक बनएबला लोक हमसभक रोदनक नाप लेत। ई ठगी पुरान अछि, बस शब्द पवित्र भऽ गेल अछि।"

मीरा कहलीह —– "स्मृति जँ बिनु अनुमतिक चित्र बनि जाए, त ओ फेर देहक अपमान अछि।"

सौम्या हरेक कागचक शब्द पढ़लीह आ पुछलीह —– "'खाली' माने कोन? 'दान'क हिसाब ककरा लग?"

बा कहलीह —– "गंगेश न्याय लिखलनि, मुदा समाज हुनकर जीवनपर न्याय नहि केलक। सम्मानक नामपर स्मृति–हत्या कएल गेल। आब जँ चन्ना गाछीक नाम सभकेँ सेहो मूर्ति बना देल जाए, त ओहो हत्या होएत।"

सत्यव्रत कहला —– "जे स्मारक बनाबय चाहैत अछि, से पहिने मृतकक घर जाए। जे दान देबय चाहैत अछि, से पहिने हिसाबक पुरान पानि खोलए।"

बच्चा सभ मिलि क एकटा पन्ना बनौला —– "नामक समक्ष प्रस्तावक शपथ।" सत्यव्रत हस्ताक्षर करय चाहला, मुदा अनन्या रोकलीह —– "पहिने बच्चा सभ।" हर बच्चा अपन–अपन चिन्ह राखला —– कियो माछ, कियो पात। तखन सत्यव्रत अन्तिम पंक्तिमे लिखला —– "सुनल।" बस एतबे।

साँझमे चन्द्रपालक प्रचारक फोन लऽ क आयल —– "एहि कार्यक्रमकेँ सीधा प्रसारित कऽ देब?" देविका फोनक स्क्रीनपर कपड़ा ढाकि क कहलीह —– "आइ नहि। जतय नाम पहिल बेर श्वास लैत अछि, ओतय कैमरा बादमे आबत।"

निर्णय भेल जे अगिला दिन "पहिल नाम–उत्सव" होएत —– बिनु बाजा, बिनु मंच, बस हर घर एकटा नाम, एकटा चिन्ह, आ एकटा प्रश्न लेत।

अध्याय ६१

पहिल नाम-उत्सव

नाम-उत्सवक भोर आयल — बिनु नगाड़ा, बिनु पताका। अनन्या कहलीह — "जे नाम फेर सुनल जाए, से रोदन मात्र नहि रहैत। ओ उपस्थित होइत अछि। उपस्थित होएब उत्सव अछि।"

एकटा बालक कहलक — "न्याय क्रमसँ नहि, सुनबासँ शुरू होइत अछि। जिनकर नाम नहि भेटल, ओ सभ पहिने।" पहिल पाथर पढ़ल गेल — "जिनकर नाम नहि भेटल।" बच्चा सभ एक स्वरमे उत्तर देला — "उपस्थित।"

दोसर पाथरपर अधूरा नाम छल — "सर..." मीरा कहलीह — "अधूरा नामकेँ पूरा बना देब, त ओकर असल अधूरापन मेटि जाएत। अधूरा पढ़ू, अधूरा सुनू।"

बा कहलीह — "गंगेश तत्त्व पुछलनि, समाज कुल पुछलक। तेँ नाम–पाठमे तत्त्व पहिने, कुल बादमे।"

देविका उज्ज्वलक नाम पढ़लीह, माय उत्तर देलीह — "उपस्थित।" फेर देविका जोड़लीह — "ओकर मौन सेहो उपस्थित।"

मीरा शुरूमे अपन नाम पढ़य नहि चाहैत छलीह — "हम जीवित छी।" मुदा स्त्री सभक आग्रहपर ओ ठाढ़ भऽ अपन नाम पढ़लीह — "हमर निजता उपस्थित।" स्त्री सभ एक स्वरमे उत्तर देला — "उपस्थित।"

नाम–उत्सवमे कबड्डी सेहो छल, मुदा नियम बदलल — प्रत्येक दस नामक बाद बच्चा सभ साँस रोकि दौड़ैत। जे साँस टूटि जाए, ओकरा हार नहि मानल जाइत, ओ बस अगिला नामक पहरापर बैसि जाइत।

दुपहरमे बटुकनाथ हरिहरनक लोक फेर आबि न्यासक निमंत्रण–पत्र पढ़य लागल, मुदा बच्चा सभ रोकि देलक — "आइ जे पढ़ल जाएत, ओकर उत्तर उपस्थित देबय पड़त। अहाँक न्यासक नाम पढ़ब?" सहायकक कण्ठ सूखि गेल।

आरुणि कहलनि — "आइ मृतक सभक दिन अछि। न्यास, समिति — सभ काल्हि सुनल जाएत। आइ कोनो जीवित चालाकीक मंच नहि बनत।"

एकटा बूढ़ मजदूरक विधवा नाम पढ़ैत काल बेहोश भेलीह। सत्यव्रत मेहता दौड़ि क हुनका सम्हारलनि। ओहि क्षण लोक बुझलक — जे सहारा देबाक क्षणमे उठि पड़ैत अछि, से मनुष्य।

साँझमे अन्तिम नाम पढ़ल गेल। बालक पुछलक — "उत्सव समाप्त?" बा कहलीह — "नामक उत्सव समाप्त नहि होइत, बस आजुक साँस पूरा होइत अछि।"

राति सत्यव्रत ठूँठ लग बैसल रहला। जड़िक एक पातर चीड़मे किछु हरियर झलकल — मुदा एकर प्रमाण अगिला भोरक प्रतीक्षामे राखल गेल।

अध्याय ६२

ठूँठमे हरियर बिंदु

भोरे अनन्या असगर ठूँठ लग आयलीह। ओतय कटल देहक कगारपर एकटा अतिसूक्ष्म हरियर बिन्दु देखार भेल। ओ पहिने ओकरा छूलीह नहि, कान झुका क सुनलीह — बहुत दूरक कबड्डीक साँस जेकाँ ध्वनि आयल — "कबड्डी... कबड्डी..."

बच्चा सभ जुटि गेला। एकटा बच्चा कहलक — "ई हमर बाबूक उत्तर छी।" बा आबि कहलीह — "कटल देहमे जखन रस रहि जाए, तखन कोंपल लागैत अछि। आ कटायल स्मृतिमे जखन नाम रहि जाए, तखन लोक फेर उगैत अछि।"

चन्द्रपाल बत्राक ऐपमे ओहि कोंपलक फोटो चढ़ि गेल, नीचाँ दानक बटन। देविका कहलीह — "हरियर बिन्दु यदि नामक उत्तर अछि, त ओकरा बजारक चित्र नहि बनय देब।"

मीरा कहलीह — "जकरा सभ पीड़ा भेल, ओकर देह, ओकर कोंपलपर सेहो ओकर अधिकार अछि। बिनु अनुमति स्मृति देखाएब सेहो चोरी छी।"

राति बूढ़बा भूत हरियर बिन्दु लग ठाढ़ भऽ कहलनि — "गाछी काटल गेल, मुदा खेल समाप्त नहि। एखनसँ कबड्डी कोंपल बचएबाक खेल अछि।"

अगिला दिनसँ कबड्डीक नियम बदलल — जे भीतर जाए, ओ एकटा नाम बजाबए। जे बाहर आबए, ओ कहए — "उपस्थित।"

एकटा विद्यार्थी पुछलक — "जँ गंगेश न्यायक जन्मदाता छला, त हुनकर जीवनक अन्याय समाज किएक नहि देखलक?" बा उत्तर देलीह — "समाज ग्रन्थक माथपर फूल चढ़बैत अछि, मुदा ग्रन्थ लिखनिहारक जीवनसँ डरैत अछि।"

एक सप्ताहमे एकटा चमकैत गाड़ी आयल, जाहिसँ अधिकारी आ एकटा परामर्शदाता उतरला। अनन्या पुछलीह — "अहाँ नाम–पाठ सुनलहुँ?" परामर्शदाता कहलक — "पहिने निरीक्षण, फेर सहभागिता।"

अधिकारी कहला — "एहि ठामक विकास सम्भव अछि। सड़क, दर्शक–दीर्घा, टिकट–व्यवस्था..." आरुणि पुछलनि — "जे ठाम गवाहीक अछि, ओकर टिकट लागत?"

साँझमे रजिस्टरमे लिखल गेल — "हरियर बिन्दु — बाहरी निरीक्षणक समय पात काँपल।" ई एकटा नव युगक पहिल चेतावनी छल। राति एकटा कागच उड़ि आयल — "गढ़ नारिकेल विरासत–गलियारा: आरम्भिक संकल्पना" — आ हरियर बिन्दु राति भरि ओहि कागचक छायामे काँपैत रहल।

अध्याय ६३

गढ़ नारिकेल विरासत–परियोजना

हरियर बिन्दु फुटलाक तेसर दिन सरकारी गाड़ी सभ आबय लागल। जे ठाम काल्हि धरि "खाली भू–खण्ड" छल, से आब "गढ़ नारिकेल विरासत–परियोजना" कहल जाय लागल।

एकटा सलाहकार उतरि क कहलक — "एहि ठाममे अपार सम्भावना अछि।" अनन्या हुनकासँ पुछलीह — "अहाँ एहि पाथरमे लिखल नाम पढ़लहुँ?" सलाहकार हँसि क कहलक — "हम सभ पढ़ब, बेटी। पहिने योजना बनय दिअ।" अनन्या उत्तर देलीह — "जकरा पढ़ल नहि, ओकर योजना कोना?"

सांस्कृतिक पदाधिकारी रंगीन नक्शा देखौलक —— "चन्ना स्मृति–द्वार," "भूत–कबड्डी रंगमंच," "जलसमाधि दृश्य–दीर्घा।" ओ बतौलक जे ध्वनि–प्रकाश कार्यक्रम, टिकट–व्यवस्था सभ होएत।

देविका चौंकि पुछलीह —— "जे माय अपन बेटाक नाम पढ़ैत काल काँपैत अछि, ओकर काँपल स्वर के कलाकार दोहराओत?"

मीरा कहलीह —— "दुखक अधिकार दुख झेलने लोकक अछि, परामर्शदाताक नहि।"

बा रंगीन नक्शापर झुकि क पुछलीह —— "एहि नक्शामे ओ ठाम कतय अछि जतय सरयूक नाम पहिल बेर पढ़ल गेल? यदि ई सभ नहि, त ई नक्शा नहि, कपड़ा छपबाक छाप अछि।"

तखने हरियर बिन्दु दू पातक आकार लेबय लागल। सलाहकार उत्साहित भऽ फोटो खींचय चाहलक। अनन्या रोकि क कहलीह —— "ई प्रतीक नहि, बच्चा अछि। फोटो खींचबासँ पहिने एकर माएसँ अनुमति लिअ।"

आरुणि सत्यव्रत मेहतासँ कहला —— "हमरा गाछी बचाबय अछि, मुदा जँ गाछी नहियो बचत, त ओकरा बेचय बला हाथसँ नाम बचाबय अछि।"

साँझमे अधिकारी सभ चलि गेला, मुदा एकटा रंगीन नक्शाक प्रति छोड़ि गेला। बच्चा सभ फेर नाम–पाठ शुरू केला, आब हर नामक बाद एकटा नव प्रश्न सेहो जोड़ल गेल —— "ई नामक मालिक के?" उत्तर मिलल —— "नाम अपन अछि, मुदा पहरा सामूहिक।"

राति एकटा नगरपालिकाक लोक चुपचाप आबि ठूँठ लग एकटा नव सूचना–पत्र चिपका देलक —— "गढ़ नारिकेल विरासत–परियोजना: निविदा आमंत्रण।" भोरे अनन्या ई देखि रजिस्टरमे लिखलीह —— "आइ स्मृतिपर निविदा लगाओल गेल।" हरियर पात काँपल नहि, जेना कहि रहल हो —— "आब लड़ाइ शुरू भेल।"

अध्याय ६४

स्मृति पर निविदा

तीन दिनमे तहसील, नगरपालिका, बस-अड्डा सभ ठाम एकहि उज्ज़र कागच चिपकि गेल —— "स्मृति-संरक्षण आ सौन्दर्यीकरण हेतु निविदा आमंत्रित।" ठूँठकेँ "स्थल खण्ड-क" कहल गेल, बच्चा सभक नामक पहरा केँ "सामुदायिक सहभागिता घटक।"

ईरा प्रति लऽ क आयलीह। एकटा बच्चा पुछलक —— "नामपर बोली लागत? " सभ चुप।

मीरा एकटा पंक्ति पढ़लीह —— "स्थलपर उपलब्ध मौखिक सामग्रीक संकलन" — आ कहलीह — "ई संकलन नहि, घुसपैठ अछि। जे स्त्री अपन

मृतकक नाम फुसफुसा क पढ़ैत अछि, ओकर फुसफुसाहट ककर अधिकारसँ रिकॉर्ड होएत?"

बच्चा सभ गंगेशक तरीका फेर अपनौला —— "प्रमाण? हेतु? प्रयोजन?" "जन–भावनाक संरक्षण" पढ़ि क पुछला —— "प्रमाण?" कियोसँ उत्तर नहि भेटल। "पर्यटन–उन्मुख विकास" क "हेतु?" आरुणि कहलनि —— "लाभ।" बच्चा सभ एक स्वरमे कहला —— "लाभ प्रमाण नहि होइत।"

निविदामे "ध्वनि–संयोजन" क खण्डमे मृतकक अन्तिम फोन–घण्टी सेहो रखबाक प्रस्ताव छल। उज्ज्वलक माय ई पढ़ि क कहलीह —— "हमर बेटाक अन्तिम घण्टी कोनो प्रदर्शनक आवाज नहि बनत।"

सौम्या लागत–पत्र देखि क कहलीह —— "श्रमिक परिवारक पुनर्वासिक पंक्ति खाली अछि, मुदा 'ब्राण्ड चिन्हारि'क मद सभसँ बेसी अछि। ई स्मृति नहि, बजारक नक्शा अछि।"

बटुकनाथ हरिहरन फेर आबि न्यासक प्रस्ताव देलनि। अनन्या पुछलीह —— "न्यासमे नामक परिवार रहत? गंगेशक प्रश्न?" बटुकनाथ अटकि गेला। बच्चा सभ एक स्वरमे कहला —— "प्रमाण, हेतु, प्रयोजन।"

आरुणि पुछलनि —— "जँ हम सभ अहाँक न्यासमे आबि जाएब, त हमर बात रहत कि हमर नाम?" हरिहरन कहला —— "कानून भावनासँ ऊपर होइत अछि।" बा कहलीह —— "कानून भावनासँ ऊपर नहि, न्यायसँ नीचाँ होइत अछि। कानून जँ न्याय छोड़ि देत, तखने गोहि बनत।"

साँझमे बच्चा सभ नव कबड्डी खेलला —— "प्रमाण–प्रमाण" कहैत। जे पकड़ा जाए, ओकरा निविदाक एक पंक्तिक हेतु बताबय पड़ैत।

राति गोप कुमार पीयर नोटिसक भीतर एकटा धुँधल हस्ताक्षर देखलनि, जे पुरान पुल–परियोजनाक विदेशी सलाहकारक हस्ताक्षरसँ मिलैत छल —— एडवर्ड ब्रूम! अनन्या लिखलीह —— "स्मृतिपर निविदा आयल। बोली लगाबय बला एखन नाम नुकौने अछि।"

अध्याय ६५

ब्रूमक पुनरागमन

निविदाक कागच जखन खुलल, त एकटा पुरान गन्ध उठल — पुरान पुलक ठेकाक गन्ध। कम्पनीक नाम "नव–आरोग्य आधार प्रा. लि." छल, मुदा गोप कुमार बुझि गेला — "नाम नव अछि, मालिक पुरान।"

एडवर्ड ब्रूमक पत्र आयल, जाहिमे ओ गढ़ नारिकेलक पीड़ाकेँ "सामूहिक उपचारक अवसर" कहैत छल। पत्रमे "जलसमाधि" क बदला "जल–स्मृति खण्ड," मृत मजदूरक बदला "श्रम–कथा दीर्घा" लिखल छल।

ईरा कहलीह — "देखू, जे देह डुबौलक, से आब डूबल देहक टिकट काटत।" देविका पत्रमे लिखल "वैयक्तिक स्मृति अभिलेख" पढ़ि क बुझि गेलीह — चन्द्रपालक स्मारक–ऐपक छाह एतयो अछि।

अनन्या पुछलीह — "ओ सभ नाम माँगत? नाम लऽ क की करत?" बटुकनाथ हरिहरन कहला — "नाम अभिलेखमे रहत, सुरक्षित रहत तँ जगत जानत।" अनन्या पुछलीह — "जगत जानत कि कम्पनी राखत?"

पत्रक संग एकटा चित्र सेहो छल — काँचक भवन, ठूँठपर पारदर्शी गुम्बद, बनावटी गोहि जकर आँखि रातिमे लाल चमकत। भूत–कबड्डी कैँ "रात्रि प्रकाश प्रदर्शन" बना देल गेल छल। बच्चा सभ ई देखि चुप भऽ गेला।

सत्यव्रत मेहता कहला — "जे लोकक नाम एहि प्रस्तावमे उपयोग होएत, हुनकर घर–घर जा क पुछू। अनुमति बिनु कोनो स्मृति सार्वजनिक नहि।"

मीरा कहलीह — "स्मृति–केन्द्र यदि बनए, त पीड़ितक घरक अनुमति ओकर पहिल ईंट होएत। अनुमति नहि, त किछु नहि।"

गोप कुमार बतौलनि — विदेशी कम्पनीक पाछू वैह पुरान औषधि–व्यापार, पुरान पुल–सुरक्षा परामर्शदाता, आ डिजिटल स्मृति–ऐपक निवेशक सभ जुड़ल छल।

सरयूक वंशक एकटा वृद्धा उठि क कहलीह — "हमरा पति पानिमे गेला। आब बुझैत छी हुनकर नाम बचल नहि, से मरण छल। यदि ई लोक हुनकर नाम काँचक घरमे राखत, टिकट बेचत, त से दोसर बेर मरण होएत।"

एकटा छोट बालक हरियर बिन्दुपर पानि ढारि रहल छल। बटुकनाथ रोकय चाहला — "ई आधिकारिक अवशेष बनत।" बालक कहलक — "अहाँ आधिकारिक बनाउ। हम जीवित रखब।"

राति गोपकैँ एकटा संदेश भेटल — हार्वर्डक प्रोफेसर एलिना ग्रेव्सक शोध–दल आबि रहल छल। अनन्या कहलीह — "जतय स्मृतिपर ठेका लागत, ओतय शोधो लागत। काल्हि हुनका सभसँ पहिल प्रश्न पूछब — अहाँ सुनय आयल छी कि लिखय?"

अध्याय ६६

हार्वर्डक शोध-दल

तेसर दिन एकटा चमकैत गाड़ी आयल — हार्वर्ड विश्वविद्यालयक शोध-दल। एकटा युवक शोधार्थी पुछलक — "अहाँ हमरा सभकेँ जाति-संरचना, अनुष्ठानक इतिहास पर मार्गदर्शन देब?" ईरा कहलीह — "पहिने नाम। मार्गदर्शन बादमे।"

अनन्या हुनका सिखौलीह — "जखन नाम सुनल जाइत अछि, तखन तुरन्त लिखल नहि जाइत, पहिने उपस्थित कहू।" शोधार्थी काँपैत आवाजमे "उपस्थित" कहला।

बा हार्वर्डक विदुषीसँ पुछलीह — "गंगेशक ग्रन्थ पढ़लहुँ, गंगेशक जीवनक कठिनाई पढ़लहुँ?" विदुषी चुप भऽ गेलीह।

एकटा शोधार्थी पुछलक — "एहि कथाक लिखित स्रोत?" अनन्या उत्तर देलीह — "स्रोत एतय साँस लैत अछि। कतेको सच लिखल गेलाक बादो मारल जाइत अछि, कतेको सच नहि लिखल गेलाक बादो जीवित रहैत अछि।"

मीरा हुनका सभकेँ कहलीह — "जाति केवल संकल्पना नहि, ई देहक दरबज्ञापर रोक, कुआँक किनारपर अपमान अछि। जँ अहाँ ई लिखब, त लोकक चेहरा बचा क लिखू। जँ चेहरा लूटब, त शोध नहि, दोसर हिंसा होएत।"

गोप कुमार शोध–दलकेँ गामक स्मृति–नक्शा देखौलनि आ पएरे–पएरे चला क लऽ गेला। ईरा कहलीह — "अकादमिक दूरी जँ माटिसँ बाँचि जाए, त ओ न्याय नहि देत।"

एकटा विधवाक घर लग एकटा शोधकर्ता कैमरा उठौलक। मीरा हुनकर आगू ठाढ़ भऽ कहलीह — "रोकू। ई चेहरा अहाँक सामग्री नहि। पहिने पुछू — ओ चाहैत छथि कि नहि?"

विधवा कहलीह — "हमर मुँह नहि लिखू। हमर पतिक नाम लिखू। कागच ओकरा अनुपस्थित कहलक। अहाँ लिखू — ओ उपस्थित छथि।" शोध–दलक स्वर एहि बेर कम हिचकिचायल।

साँझमे हार्वर्डक युवकक बही खाली रहि गेल छल। ओ कहला — "हम सोचने रही एतय सामग्री भेटत, मुदा एतय त प्रश्न भेटि रहल अछि।" बा कहलीह — "प्रश्न नहि भेटल त न्याय कोना भेटत?"

मीरा हुनका सभकेँ अगिला दिनक नियम सुनौलीह — "काल्हि जँ अहाँ सभ छवि लेबय चाहैत छी, त पहिने दृष्टिक अधिकारपर बात होएत।"

अध्याय ६७

मीरा आ दृष्टिक अधिकार

दोसर दिन हार्वर्डक शोध–दल फेर आयल, एहि बेर कैमरा–यंत्र लऽ क। ईरा हुनका सभकेँ ठूँठक बाहरी घेरामे रोकि देलीह।

मीरा आगू आबि कहलीह —— "एतय जे किछु देखब, से देखबाक वस्तु नहि। पहिने सुनू। आ जँ देखबे करब, त पुछू —— किएक देखब? देखलाक बाद ओ दृष्टि केकर अधिकारमे रहत? "

एकटा शोधार्थी कहलक —— "हम चेहरा धुँधला कऽ देब।" मीरा रोकलीह —— "धुँधल करब अधिकार नहि। अहाँक दृष्टि हमरा सहमतिसँ कम पड़त कि नहि, ई मूल प्रश्न अछि।"

बा कहलीह —– "गंगेशकेँ शास्त्र मानल गेल, मुदा हुनकर जीवनक कठिनाई दबाओल गेल। जखन दृष्टि जाति पहिरि लेत, तखन न्यायो जातिवादी भऽ जाइत अछि।"

मीरा एकटा वृद्ध चर्मकार जगदीश रामकेँ पाथर लग लऽ जा क कहलीह —– "बीस मिनट किछु नहि लिखू। जँ बीस मिनट बाद अहाँक भीतर किछु हिलए, तखन पुछू जे ई पाथर अपने देखाबय चाहैत अछि कि नहि।"

जगदीश राम बहुत सोचला, फेर काँपैत हाथसँ लिखलनि —– "हमर दृष्टि सेहो प्रमाण अछि।"

मीरा एकटा सरल विधान बनौलीह, जकरा बच्चा सभ "दृष्टि-पहरा" कहला —– कोनो चेहरा बिनु अनुमति नहि, कोनो रोदन दृश्य नहि जँ कननिहार स्वयं नहि चाहए, जे देखल गेल, तकर प्रति घुरि उत्तरदायित्व रहत।

एकटा युवा शोधार्थी चोरीसँ फोटो लेबय चाहलक, मुदा हुनकर कैमरा अन्हार भऽ गेल —– स्क्रीनपर लिखल आयल —– "अहाँ देखलहुँ, मुदा देखल गेलहुँ कि? "

साँझमे मार्था (एकटा शोधार्थी) मीरासँ अनुमति लेली —– केवल हुनकर कलाईपर बान्हल लाल डोरीक चित्र लेबाक —– "मुदा ओकर कथा हमर शब्दमे लिखब, अहाँक शब्दमे नहि।" मीरा सहमत भेलीह।

राति दल जाइत काल ठूँठ लग एकटा नव कागच भेटल —– चन्द्रपालक स्मारक-ऐपक विज्ञापन —– "श्रद्धांजलि चित्र-संग्रह शीघ्र खुलि रहल अछि।" मीरा कहलीह —– "आइ हम शोध-दलक दृष्टि रोकलहुँ। काल्हि स्मारक-ऐप लोकक घरमे पैसत।" अनन्या लिखलीह —– "नामक चोरीक पहिल दरबाजा।"

अध्याय ६८

देविका बनाम श्रद्धांजलि–अनुप्रयोग

चन्द्रपाल बत्राक "श्रद्धांजलि–ऐप" पुनः सक्रिय भऽ गेल — "एक स्पर्शमे श्रद्धा।" देविका ई पढ़ि क काँपि गेलीह। ऐपमे नाम, फोटो, बैंक–विवरण सभ माँगल जाइत छल।

देविका पहिने "जेकर नाम नहि भेटल" पाथरक नाम ऐपमे लिखय चाहलीह, मुदा स्क्रीन बार–बार "पूर्ण नाम भरू" कहैत रहल। ओ बुझि गेलीह — ई ऐप केवल ओ नाम स्वीकार करत जे बजारक खाँचामे फिट होइक। अधूरा नाम, बेनाम मजदूर सभ एहिमे स्थान नहि पौता।

एकटा बच्चा पुछलक —— "जँ नाम अधूरा भेटल त लोक अधूरा भऽ गेल?" दोसर बच्चा (गंगेशक प्रश्न मोन राखैत) कहलक —— "प्रमाणक नामपर जे अनुपस्थितकेँ हटाए, से न्याय नहि, छल अछि।"

देविका चन्द्रपालक नव दफ्तर गेलीह, जतय देबालपर चन्ना गाछीक सुन्दर (मुदा झूठा) चित्र लागल छल। चन्द्रपाल कहलक —— "अहाँ बहुत भावुक छी। हम त केवल सुविधा देलहुँ।" देविका पुछलीह —— "जकर नाम नहि भेटल, तकरा तोहर ऐप किएक नहि मानलक?"

दफ्तरक पाछू एकटा कोठलीमे देविका देखलीह जे युवक सभ नाम टाइप कऽ रहल छल, आ उज्ज्वलक नामक कातमे लिखल छल —— "भावनात्मक पहुँच उच्च।" देविकाक देह जाड़ भऽ गेल। ओ बाहर आबि कहलीह —— "उज्ज्वलक नाम हटाउ।"

अगिला दिन लोकबैठकीमे देविका सभटा कथा कहलीह। बच्चा सभ नव नियम लिखला —— "ककरो नाम स्क्रीनपर चढ़ेबासँ पहिने ओकर लोकक अनुमति। अधूरा नाम पूरा नामसँ छोट नहि।"

मीरा जोड़लीह —— "जँ कोनो ऐप ककरो दुखकेँ ओकर अनुमति बिनु छूइत अछि, त से चन्ना गाछीमे प्रवेश नहि पाओत।"

राति कतेको मोबाइलपर एकटा नोटिफिकेशन आयल —— "गढ़ नारिकेल स्मृति-संग्रहमे अहाँक प्रियजनक नाम जोड़ल गेल अछि।" उज्ज्वलक मायक मोबाइलपर सेहो एहन नोटिफिकेशन आयल। ओ शान्तिसँ कहलीह —— "हमरा बेटाकेँ फेर स्क्रीनमे नहि डुबाउ।"

भोरे बच्चा सभ देखला जे तीनटा नामक पाथरक अक्षर धुँधला भऽ गेल छल —— जेना रातिमे केओ कुरेदि गेल हो। बूढ़बा भूत कहलनि —— "जे स्क्रीनमे नाम चोरबैत अछि, से पाथरपर हाथ राखय अबेर नहि करत।" अनन्या लिखलीह —— "आइसँ नामक चोरी शुरू भेल।"

अध्याय ६९

नामक चोरी

रजिस्टरमे "सरयू मण्डल" क नाम गायब भऽ गेल छल — केवल स्याहीक धब्बा रहि गेल। बच्चा सभ ओकर पाथर देखलक — पाथर छल, डोरी छल, मुदा नाम उखड़ि गेल छल।

बा कहलीह — "चोर ओ नहि जे पाथर चोराबय, चोर ओ जे लोककेँ विश्वास दिलाबय जे पाथरपर किछु लिखले नहि छल।"

देविका डिजिटल सूची जाँचि पौलीह जे सरयू मण्डल, मुन्ना पासवानक बाबू सभक नाम "अप्रमाणित" लिखल गेल छल।

अनन्या पुछलीह — "प्रमाण की? जे लिखल अछि, से? जे स्मृतिमे अछि, से? कि जे सत्ता मानि लेत?"

मीरा सरयूक बहिन राखी लग गेलीह, जे कहलीह — "नाम मेटल? मुदा ई हाथ देखू। बाबू प्रत्येक बाढ़िमे नाव खेने छल। जे कथा ओ सुनबैत छल, से की मेटल?"

बटुकनाथ हरिहरन फेर अपन न्यासक कागच लऽ क आयला। अनन्या पुछलीह — "जकर नाम मेटल, ओकरा अहाँ पहिने पढ़ब?" बटुकनाथ कहला — "प्रमाण हो त पढ़ब।" अनन्या पुछलीह — "जँ प्रमाण अहाँक कागचमे नहि, मुदा हमर बूढ़क कण्ठमे हो?"

देविका पुछलीह — "आ नामपर स्वामित्व केकर?" बटुकनाथ उत्तर देला — "सार्वजनिक हितमे।" मीरा कहलीह — "सार्वजनिक हित कतेको बेर गरीबक आँसूपर चढ़ल कागचक परदा रहल अछि, ई अहाँ नीकसँ जानैत छी।"

साँझमे मेटल नाम सभक सूची बनल — कुल सात नाम। बच्चा सभ निर्णय केला जे सात दिन धरि हर नामक कथा फेरसँ सुनल जाएत — ओकर परिवार, ओकर घर, ओकर काज, सभ किछु।

पहिल दिन सरयू मण्डलक नाम पढ़बाक बारी आयल। पाथर उठौलापर नीचाँ भीजल माटिमे एकटा छोट पोखरि जेहन आकृति देखार भेल। राति ओहिमे हल्लुक पानि चमकल। बूढ़बा भूत कहलनि — "नाम जखन मेटाओल जाए, पानि ओकरा राखि लैत अछि।"

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह — "मेटल नाम पानिमे उतरि गेल अछि; काल्हि पोखरि सुनल जाएत।"

अध्याय ७०

पनिडुब्बीक गवाही

भोरे बच्चा सभ रजिस्टरमे देखलक जे किछु नाम धुँधला भऽ गेल छल। गोप कुमार कहलनि — "जखन नामपर षड्यंत्र होइत अछि, तखन प्रमाण पानि खोजैत अछि।"

सभ मिलि क गामक पछिला पोखरि लग गेला, जतय पनिडुब्बी रहैत छलीह। मीरा पहिने नियम पढ़लीह — "ककरो चेहरा बलजोरी नहि देखाओल जाएत।"

अनन्या पहिल धुँधलायल नाम पढ़लीह। जिह्वा अटकल। तखने पानिक तलसँ एकटा बुलबुला उठल, आ ओहिमे नाम चमकल। सत्यव्रत मेहता कहला

— "जँ समाजक लिखल अक्षर झूठ भेल, त प्रकृतिक प्रतिबिम्ब सेहो प्रमाण बनि सकैत अछि।"

पोखरिक बीचमे एकटा गोल अन्हार बनल, आ ओहिसँ पनिडुब्बीक स्वर उठल — "जे नाम पानिमे डूबल, ओकर प्रतिबिम्ब चोराएल नहि जा सकैत।"

अनन्या पुछलीह — "जे नाम कखनो लिखले नहि गेल?" पानि उत्तर देलक — "जे नाम लिखल नहि गेल, ओकर भार सभ लिखल नामसँ बेसी होइत अछि। पहिल पाथर ओकरे राखू।"

देविका पुछलीह — "जे स्क्रीनमे मरल, ओकर नाम पानिमे केना आएत?" पनिडुब्बी उत्तर देलीह — "स्क्रीन सेहो पानिक नकल अछि — चमकैत सतह, भीतर अन्हार।"

गोपक मोबाइलमे चन्द्रपालक झूठा ऐपक स्क्रीन अपने खुजि गेल। ओ मोबाइल पानि दिस झुकौलनि, आ स्क्रीनक झूठ पानिक सतहपर पड़िते टूटि गेल। पनिडुब्बी कहलीह — "जे नामसँ कमाइत अछि, ओकर हिसाब पानि नहि राखैत, ओकरा कीचड़ राखैत अछि।"

राति पनिडुब्बीक अन्तिम स्वर आयल — "नामकेँ केवल बचाउ नहि, ओकर खेल सेहो बचाउ। जे नाम कबड्डी खेलत, ओ साँस बनि रहत।" बूढ़बा भूत जोड़लनि — "कबड्डी बन्द भेल त नामक पहरा बूढ़ भऽ जायत।"

अगिला भोर देबालपर एकटा नव पोस्टर देखार भेल — "चन्ना गाछी भूत–कबड्डी महोत्सव: अद्भुत लोक–अनुभव, टिकट सहित।" अनन्या ई पढ़ि चुप भऽ गेलीह। स्मृति बचल छल, मुदा आब बाजार ओकरा अभिनय बनाबय चाहैत छल।

अध्याय ७१

नकली भूतक जुलूस

दोसर दिन एकटा गाड़ी आयल — "चन्ना गाछी रात्रि–अनुभव: भूत–कबड्डी जुलूस।" कलाकार सभ धुँआ, ढोल, नील रोशनी लऽ क आयला।

मीरा आयोजककेँ पुछलीह — "जुलूसमे जे मृतकक नाम लेब, तकर परिवारसँ अनुमति लेने छी?" आयोजक कहलक — "नाम नहि लेब, केवल वातावरण बनाओब।" मीरा उत्तर देलीह — "जे लोक डूबल, ठगल गेल, हुनकर नामक वातावरण बनाएब — ई चोरबाक नव ढब अछि।"

नकली कबड्डी शुरू भेल। एकटा कलाकार "कबड्डी–कबड्डी" कहय चाहलक, मुदा साँस बीचमे टूटि गेल। बच्चा सभ लिखय लगला — "साँस टूटल, नाम नहि, माटि उत्तर नहि देलक।"

तखने एकटा कलाकारक पएर ठूँठक जड़िक एक गरम रेखापर पड़ल। ओकर मुँहसँ अचानक अपन असली बाबूक नाम निकलि गेल — जे दूर जिलाक खदानमे मरल मजदूर छला। ओ कानि उठल। बच्चा सभ पाथर मँगा क ओहि नामक पहिल अक्षर लिखि देला।

फेर दोसर कलाकार, तेसर कलाकार — सभ अपन–अपन असली दुखक कथा कहय लगला। मंचपर अभिनय धीरे–धीरे असली गवाहीमे बदलि गेल।

एकटा बालक भूतक मुखौटा पहिरने "हाऽऽऽ" कहय चाहलक, मुदा ओकर मुँहसँ अचानक निकलल — "उपस्थित।" ओ स्वयं डेराइ गेल आ मुखौटा उतारि देलक।

देविका आयोजककेँ कहलीह — "आब एहि कार्यक्रमक पैसा जकरा सभसँ लेल गेल, ओ घुरा दियौ।" मीरा जोड़लीह — "मृतकक भय बेचबाक कर कोन खातामे जमा होइत अछि?" आयोजक बिनु बहस पर्चीबला डिब्बा खोलि पाइ घुरा देलक।

राति कलाकार सभ ठूँठक चारूकात बैसल रहला। अनन्या कहलीह — "झूठक काज कएलहुँ, मुदा नाम साँच कहलहुँ। आब अहाँ सभ अभिनय नहि, पहरा सीखू।"

मध्यरातिक बाद ठूँठक भीतरसँ एकटा हल्लुक हँसी उठल। बा कहलीह — "जखन स्मृति बिकय लागैत अछि आ फेरो बचि जाइत अछि, तखन गाछी हँसैत अछि।" बच्चा सभ नव पन्नाक शीर्षक लिखला — "चन्ना गाछीक हँसी।"

अध्याय ७२

चन्ना गाछीक हँसी

भोर होइत–होइत ठूँठक हँसी पूरा राति गूँजैत रहल। अनन्या एकटा नामक पाथर छूइ क कहलीह —— "गाछी हँसल नहि, गाछी उत्तर देलक।" बा जोड़लीह —— "कतेको बेर उत्तर रोदनमे नहि, हँसीमे अबैत अछि। जँ पीड़ा बिकय लागय, त स्मृति उपहास करैत अछि।"

अनन्या पुछलीह —— "हँसीक प्रमाण कोन?" चारिम बच्ची (जे सदिखन कम बजैत छलीह) कहलीह —— "दुःख जखन बिकय सँ इनकार करय, ओहि क्षण जे आवाज उठय, से न्यायक प्रमाण।"

चन्द्रपाल बत्राक दल ई हँसी रिकॉर्ड करय चाहलक, मुदा रिकॉर्डमे केवल खालीपन आयल। जे कियो ओ खालीपन सुनलक, ओकरा अपन अपराधक नाम सुनार भेल।

एडवर्ड ब्रूम अपन हार्वर्ड भाषणक तालीमे सेहो ओहि हँसीक भ्रम सुनला। ओकर कॉफीक स्वाद अचानक माटि जेहन भऽ गेल।

मीरा ठूँठ लग एकटा सूचना लिखलीह — "हँसीक कोनो स्वामी नहि। मृतकक पीड़ा, जीवितक गवाही केओ बेचि नहि सकैत। ई हँसी मनोरंजन नहि, अस्वीकार अछि।"

एकटा पत्रकार बच्चा सभसँ पुछलक — "एहि ठामक मुख्य कथा की अछि? " एकटा बालक उत्तर देलक — "मुख्य कथा नहि, अनेक नाम अछि। अहाँ मुख्य बनौने छी तें बाकी सभ काटि देल जाइत अछि।"

बटुकनाथ हरिहरन अपन न्यासक प्रारूपमे "हँसीक संरक्षण" लिखय चाहला, मुदा हुनकर भीतरसँ प्रश्न आयल — "न्याय जानैत छी? "

साँझमे बच्चा सभ एकटा नव पाथर राखला — "ई ओ सभक पाथर अछि जे बेचायलासँ बचि गेल।"

राति फेर कबड्डी शुरू भेल — दौड़ कम, साँस बेसी। एकटा पुरान भूत खेलाड़ी बच्चा सभकेँ कहलक — "कबड्डीमे साँस रोकल जाइत अछि, मुदा स्मृतिमे साँस बाँटल जाइत अछि। जे नाम लऽ क घुरत, से खेलकेँ बचा लेत।"

ठूँठक हरियर बिन्दु ओहि राति कने पसरल — जेना कोंपल आकाश दिस नहि, लोकक कान दिस बढ़ि रहल होय।

अध्याय ७३

बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

चन्ना गाछीक हँसी राति भरि बटुकनाथ हरिहरनक कानमे बजैत रहल। ओ अपन न्यासक मसौदा लिखय बैसला, मुदा कागचपर स्याही फूटि क पात बनि गेल, आ हरेक पातपर एकहि प्रश्न — "न्यास बनाओब, न्याय जानब?"

आधी राति ओ सुतला त सपनामे अपनाकेँ एकटा बड़का सभागारमे देखला। बीचमे गंगेश उपाध्याय ठाढ़ छला। बटुकनाथक कानमे पुरान कथा उतरय लागल — गंगेशक जीवनक कठिनाई, हुनकर न्यायक शास्त्र। बटुकनाथ कहय चाहला — "समाजक मर्यादा सेहो किछु होइत अछि।" गंगेश

उत्तर देला —— "मर्यादा जँ सत्यक गला दबाबय, त ओ मर्यादा नहि, भयक जनेऊ अछि।"

स्वप्नमे न्याय शुरू भेल। बटुकनाथपर आरोप छल —— "न्यायकेँ पेशा बना क न्यायसँ विमुख करब।" ओ बचाव करय चाहला, मुदा हुनकर हर शब्द सूखल पात बनि झड़ि गेल।

गंगेश पुछलनि —— "प्रमाण चाहैत छी?" तखने चन्ना गाछीक ठूँठ, पनिडुब्बी, नाम–पहरा बच्चा सभक आवाज उठल —— "हम उपस्थित छी।" बटुकनाथक माथ झुकि गेल।

सपनामे एकटा बालिका आबि पुछलीह —— "हरिहरन जी, अहाँ न्यास बनाबय चाहैत छी। एहिमे जिनका नाम नहि भेटल, हुनका पहिल पन्ना देब?" बटुकनाथ चुप रहला। हुनकर चुप्पी आब बचाव नहि, दोषक प्रमाण बनि गेल।

छतपर कबड्डीक रेखा चमकल। बूढ़बा भूत कहलनि —— "अहाँ जीवन भरि दोसराकेँ आउट करैत रहलहुँ। आइ साँस रोकि एक बेर न्यायक पाला पार करू।" बटुकनाथ "कबड्डी" कहय चाहला, मुदा साँस अटकि गेल, ओ खसि पड़ला।

गंगेश कहलनि —— "न्यायमे उठबाक काज स्वयं करय पड़ैत अछि। मुदा पहिल शर्त —— अपन घमंडक सिंहासनसँ उतरू।" बटुकनाथ देखला जे हुनकर सभटा उपाधि झड़ि रहल अछि, अन्तमे केवल "बटुक" बचल —— एकटा डरायल बालक। ओ कानय लागला।

रोदनक बीच हुनकर निन्न टूटल। भोरक उजासमे ओ देखला जे हुनकर मसौदाक शीर्षक बदलि गेल छल —— "अध्यक्ष" क जगह "प्रथम सेवक नहि, अन्तिम श्रोता" लिखल छल।

बटुकनाथ ओहि दिन गढ़ नारिकेल नहि गेला। ओ अपन पुरान फाइल खोलला, आ ओहिमे चन्द्रपाल बत्राक एकटा पुरान नोट भेटलनि —— "स्मारक–अनुप्रयोग सुरक्षित।" ओ बुझि गेला —— भीतरक ई दरबार आब हुनका छोड़ि अगिला दोषीक मोनमे उतरि रहल अछि।

अध्याय ७४

चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

चन्ना गाछीक हँसी हवामे पसरि क चन्द्रपाल बत्राक मोबाइल धरि पहुँचि गेल। ओ अपन ऐपक आँकड़ा देखय चाहला, मुदा हर पंक्ति नाम बनि जाइत छल — "उज्ज्वल झा," "मुन्ना पासवान।"

राति चन्द्रपाल दर्पणमे अपन चेहरा देखला, त हुनका ओहिमे अनेक चेहरा देखार भेल — उज्ज्वलक, मजदूरक, विधवाक आँखि। ओ चिचिआ पड़ला।

भोरे ओ बिना निर्णय, थकानमे टूटल अवस्थामे गढ़ नारिकेल चलि पड़ला। ठूँठ लग बच्चा सभ नाम–पहरा करैत छल। कियो शोर नहि केलक, बस

देखलक, सुनलक, प्रतीक्षा केलक — ई शान्ति हुनका सभसँ बेसी भयावह लागल।

अनन्या पुछलीह — "नाम पढ़ब?" चन्द्रपाल कहला — "हम... हम किछु कहय आयल छी।" अनन्या पुछलीह — "जन्मक नाम कि व्यापारक नाम?"

चन्द्रपालकेँ अपन असली बचपनक नाम मोन पड़ल — "चन्दू।" बच्चा सभ लिखला — "चन्दू उर्फ चन्द्रपाल बत्रा — पहिल बेर जन्मक नाम कहल।"

मीरा कहलीह — "रोदन प्रमाण नहि। नामक संग सत्य कहू।" चन्द्रपाल धीरे-धीरे कहला — "हम लोककेँ लोक नहि मानलहुँ। स्क्रीनक पाछू भीड़ बुझलहुँ। मृतकक नामसँ दानक बाट खोललहुँ। हम ककरो घृणा नहि केलहुँ — कदाचित एहि कारणेँ सभसँ पैघ अपराध भेल। घृणा करैत त चेहरा देखितहुँ। हम चेहरा देखबाक मेहनत नहि केलहुँ।"

देविका पुछलीह — "उज्ज्वलक नामसँ जे कमायल गेल?" चन्द्रपाल जेबसँ एकटा कागच निकाला — "एहिमे हिसाब अछि।" देविका कहलीह — "हिसाब नामक बराबर नहि होइत, मुदा हिसाब बिनु अगिला लड़ाइ अधूरा रहत।"

चन्द्रपाल बुझला जे स्वीकारक पहिल दिन न्यायक अन्त नहि, आरम्भ अछि।

साँझमे चन्द्रपाल राघव सिग्नलकेँ संदेश पठाबय चाहला — "रुकू। बात बदलि गेल अछि।" मुदा फोनपर लिखल आयल — "संपर्क नहि... जतय नाम सुनल जाए, ओतय कोड नहि पहुँचैत।"

चन्द्रपाल बुझि गेला — ओकर स्वीकार केवल ओकरा धरि सीमित नहि रहत। अगिला बारी राघवक छल — मुदा राघवक संसारमे नेटवर्क नहि, केवल स्मृति चलत।

अध्याय ७४

चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

चन्ना गाछीक हँसी हवामे पसरि क चन्द्रपाल बत्राक मोबाइल धरि पहुँचि गेल। ओ जीवन भरि लोककेँ केवल अंक बुझने छल — "भीड़ अछि" कहि क अपराधक चेहरा धुँधला कऽ दैत छल।

राति ओ अपन फोन खोलला त हर पंक्तिमे नाम देखार भेल — "उज्ज्वल झा," "मुन्ना पासवान," "सरयू।" ओ फोन बन्द केला, मुदा नाम अखनो देखार होइत रहल — काँचक टेबलपर, बोतलपर, खिड़कीपर।

बाथरूममे ऐनामे हुनका अपन चेहरामे बहुत रास आँखि देखार भेली — उज्ज्वलक, मजदूरक, विधवाक। ओ डेरा क चिचिआइ गेला।

भोरे ओ अपने-अपने गढ़ नारिकेल पहुँचि गेला। बच्चा सभ नाम-पहरा करैत रहला, कियो हल्ला नहि केलक — केवल शान्तिसँ देखैत रहला। ई शान्ति चन्द्रपालकेँ सभसँ बेसी डरावन लागल।

अनन्या हुनकासँ पुछलीह — "नाम पढ़ब?" चन्द्रपाल कहला — "हम... हम किछु कहय आयल छी।" अनन्या पुछलीह — "जन्मक नाम कि व्यापारक नाम?" चन्द्रपाल धीरे कहला — "चन्दू।" बच्चा सभ लिखला — "चन्दू उर्फ चन्द्रपाल बत्रा — पहिल बेर जन्मक नाम कहल।"

मीरा कहलीह — "रोदन प्रमाण नहि। नामक संग सत्य कहू।" चन्द्रपाल कहला — "हम लोककेँ लोक नहि मानलहुँ। स्क्रीनक पाछू भीड़ बुझलहुँ। डरकेँ उत्पाद बनौलहुँ। हम ककरो व्यक्तिगत रूपेँ घृणा नहि केलहुँ — कदाचित एहि कारणे सभसँ पैघ अपराध भेल। घृणा करैत त चेहरा देखितहुँ। हम चेहरा देखबाक मेहनत नहि केलहुँ।"

देविका पुछलीह — "उज्ज्वलक नामसँ जे कमायल गेल?" चन्द्रपाल एकटा कागच निकाला — "एहिमे हिसाब अछि।" देविका कहलीह — "हिसाब नामक बराबर नहि होइत, मुदा हिसाब बिनु अगिला लड़ाइ अधूरा रहत।"

साँझमे चन्द्रपाल राघव सिन्नलकेँ संदेश पठाबय चाहला — "रुकू। नाम उठि गेल अछि।" मुदा स्क्रीनपर लिखल आयल — "संपर्क नहि। जतय नाम सुनल जाए, ओतय कोड नहि पहुँचैत।"

चन्द्रपाल बुझि गेला — हुनकर स्वीकार केवल हुनका धरि सीमित नहि रहत। अगिला बारी राघवक छल।

अध्याय ७५

राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

राघव सोमानीक फोनक स्क्रीनपर नेटवर्कक सभटा चिह्न पूर्ण देखार होइत छल, मुदा कोनो संदेश ककरो लग नहि पहुँचैत छल — "भेजल गेल" लिखल आबैत, मुदा "पहुँचल" कहियो नहि।

ओ चन्द्रपाल, बटुकनाथ, ब्रूम, आ लाउ किन-हंग सभकेँ चेतावनी पठाबय चाहला, मुदा हर संदेश अटकि जाइत छल।

राति ओकर फोनक कारी स्क्रीनमे ओकरा अपन चेहराक बदला कटल ठूँठक जड़ि देखार भेल। फेर स्क्रीनपर एक-एक क नाम उगय लागल — उज्ज्वल, सरयू, मुन्ना। राघव डेराइ गेला। फोनसँ एकटा आवाज सुनार भेल —

"संदेश भेजबासँ पहिने प्राप्तकर्ता चुनैत छलहुँ। आब नाम सभ स्वयं प्राप्तकर्ता चुनत।"

ओ अपन पुरान कागचक नोटबुक खोलला। ओहिमे "प्रतिशत" शब्द बदलि क "प्रतिश्रुत" (वचन) बनि गेल —– जे धनक हिस्सा छल, से वचनक बोझ बनि गेल।

एतबे दूर चन्ना गाछीमे बच्चा सभ रातिक पहरामे "कबड्डी" क बदला धीरे–धीरे "उपस्थित–उपस्थित" कहय लगला। राघवक फोनपर एकटा संदेश आयल —– प्रेषक: अज्ञात, विषय: उपस्थित, भीतर केवल खाली स्थान।

राघव उत्तर लिखय चाहला —– "चिन्हारि बताउ।" फोन उत्तर देलक —– "चिन्हारि अहाँक चाही।" ओ बुझि गेला जे भाषा हुनकर विरुद्ध गवाही देबय लागल छल।

राघव सभटा फोनक बैटरी निकालि क खिड़की खोलला। बाहर हुनका पूरा शहरक टावर सभ कटल गाछक डारि जेहन देखार भेल —– सभटा तार जड़ि खोजि रहल छल।

भोरे हुनकर सभटा फोन एक संग चमकल —– मुदा उत्तरक बदला एकटा नक्शा देखार भेल, जाहिमे गढ़ नारिकेल, ठूँठ, शहरक कमरा सभ एकहि रेखासँ जुड़ल छल —– "स्मृतिक नेटवर्क।" ओहि नक्शामे एकटा नव बिन्दु चमकल —– "लाउ किन–हंग।"

राघव खिड़की लग जा क, बिनु फोन, पहिल बेर पूरा नाम कहला —– "लाउ किन–हंग।" शब्द मुँहसँ निकलिते हुनकर कमरा हल्लुक भऽ गेल, मुदा देह भारी। नाम बोलब मुक्ति नहि छल —– मुक्ति दिस पहिल भयावह पग छल।

गढ़ नारिकेलमे अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहलीह —– "आइ एकटा दूर नाम हिलल अछि। आब नेटवर्क नहि, बाट खुलत।"

अध्याय ७६

लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

समुद्रपार अपन काँचक भवनमे लाउ किन-हंग गढ़ नारिकेलक चित्र देखैत बैसल छला। राति सपनामे ओ एकटा नदी देखला, जाहिमे गोहि सभ कागच-करार चिबा रहल छल। एकटा गोहि पुछलक — "तोहर नाम कोन जलमे लिखल अछि?" लाउ काँपैत जागि गेला।

भोरे ओ भारत-यात्राक निर्णय लेला। हुनकर फोल्डरमे "गंगेश" शब्द लिखल छल — "स्थानीय दार्शनिक प्रतीक; जाति-विवाद; स्मृति-राजनीतिमे उपयोग।"

विमानमे हुनका फेर "कबड्डी–कबड्डी" क आवाज सुनार भेल। कातमे बैसल एकटा वृद्ध भारतीय यात्री एकटा अखबार देखौलनि — "गढ़ नारिकेलमे नाम–उत्सव" शीर्षक। लाउ पुछला — "ई स्थान? " वृद्ध कहला — "ओतय मृतक सभक नाम जीबैत अछि।"

लाउ कहय चाहला — "नाम त सर्वरपर सेहो जीबि सकैत अछि।" वृद्ध कहला — "सर्वर बन्द भऽ जाए त? कागच सेहो जरि जाइत अछि, मुदा जँ बच्चा सभ सुनि लेलक, तखन नामक दोसर जीवन शुरू होइत अछि।"

निन्नमे लाउ फेर एकटा स्वप्न देखला — चन्ना गाछीक ठूँठक भीतर घुमैत, एकटा आकृति (गंगेशक प्रश्न) पुछलक — "लाभक प्रमाण की? " लाउ कहला — "संख्या।" आकृति पुछलक — "जकरा नाम नहि, ओकर हानि केना गनब? "

विमान भारतमे उतरल। इमिग्रेशन–कक्षमे काँचमे लाउ अपन प्रतिबिम्बमे एकटा गोहि देखलनि, जे पुछैत जेहन लागल — "तौं देह नहि — नाम लऽ क आयल छेँ कि बेनाम लाभ? "

बाहर मीडिया प्रतीक्षा करि रहल छल, मुदा लाउ अपन दुभाषियाकेँ कहला — "सीधा गढ़ नारिकेल।" दुभाषिया चौंकला — "आइ? " लाउ उत्तर देला — "जतेक देर करब, गोहि आँखि नहि झपकाओत।"

अध्याय ७७

हवाई अड्डापर गोहि

लाउ किन–हंगक विमान भोरे उतरल। इमिग्रेशन–कक्षमे जखन ओ कैमरा दिस तकला, त परदापर हुनकर चेहराक बदला किछु क्षण लेल एकटा गोहिक आँखि उभरि आयल। अधिकारी कहला —— "कृपया फेर देखू।" एहि बेर चेहरा मिलि गेल, द्वार खुजि गेल, मुदा लाउकेँ लागल जे गोहिक आँखि हुनकर संग–संग चलि रहल छल।

अतिथि–कक्षमे समाचारमे गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी, नाम–उत्सवक दृश्य देखार भेल। लाउ पुछला —— "ई बच्चा सभकेँ हटाओल नहि गेल? " सहायक

कहला —– "हटाओल जा सकैत अछि, मुदा हटाओलाक बाद ओ सभ आर बेसी जगहमे पसरि जाएत।"

लाउ काँचक गिलासमे पानि भरला, मुदा गिलासक पेनीमे हुनका नदीक पानि देखार भेल —– गाढ़, हरियर–कारी। एकटा वृद्ध सफाईकर्मी आबि कहलनि —– "साहेब, पानि पीबैत काल नाम सोचब, त पानि साफ रहत।" ओ लोक कतहु रिकॉर्डमे नहि छला।

हवाई अड्डासँ बाहर निकलैत काल चालक पुछलक —– "गढ़ नारिकेल?" जखन कि ई यात्रा गुप्त छल। लाउ चौंकि गेला।

राति हुनका सपनामे ठूँठक बच्चा सभ पासपोर्टक बदला हुनकासँ "असल नाम?" पुछैत देखार भेला। एकटा गोहि हुनकर खाता चिबाबय लागल, आ हर पन्नासँ एकटा मजदूरक स्वर उठल।

भोरे हुनकर फोनपर एकटा संदेश आयल —– "नाम सुनबाक अछि त आबि जाउ।" स्थान —– "पुरान हवाई अड्डा मार्गक खाली प्रतीक्षालय।"

दुपहरमे लाउ किन–हंग निर्णय लेला जे ओ जेता। हुनका बुझायल जे ई निमंत्रण नहि, गवाही अछि। हवाई अड्डाक गोहि हुनकर देह नहि, हुनकर सुरक्षा–बोधक पहिल परत उतारि देलक। अगिला साँसमे सत्यव्रत मेहता हुनकर सोझाँ रहता —– बिनु हथियार, बिनु पद, केवल नामक भार लऽ क।

अध्याय ७८

सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

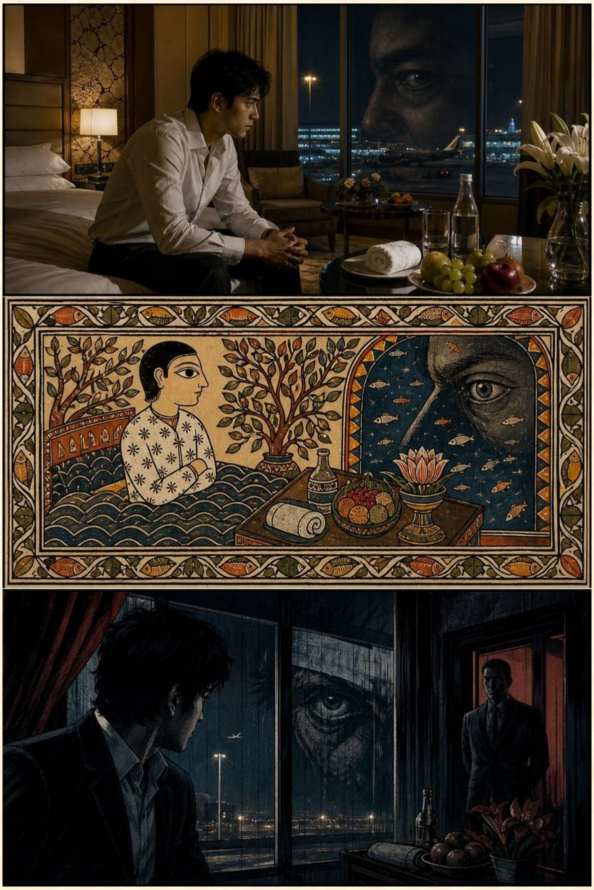

लाउ किन-हंग सत्यव्रत मेहतासँ भेंट करय चाहला। सत्यव्रत ओकरा दफ्तरमे नहि, चन्ना गाछीक कटायल ठूँठ लग बजौलनि — "जँ भेंट चाहैत छी, त नामक ठाम आउ।"

लाउ ठूँठ लग पहुँचला। सत्यव्रत घेराक बाहर बैसल छला, बिनु अंगरक्षक, बिनु बहसक तैयारी। ओ केवल कहला — "बैसू।"

बच्चा सभ नाम पढ़ि रहल छला, हर नामक बाद "उपस्थित" क सामूहिक स्वर उठैत। लाउ पहिने ई सुनैत रहला, फेर काँपय लगला।

लाउ पुछला —– "अहाँ हमरापर आरोप लगाबय चाहैत छी?" सत्यव्रत उत्तर देला —– "आरोप अदालत लगबैत अछि। एतय नाम पढ़ल जाइत अछि।" ओ जोड़लनि —– "अहाँक संसारमे नामक मूल्य खाता खोलबाक लेल अछि। हमरा एतय नामक मूल्य शोक, न्याय आ मुक्तिक लेल अछि। अहाँ लाभ गिनलहुँ। एक बेर नाम गिनू।"

अनन्या लाउ लग एकटा पाथर राखि पुछलीह —– "अहाँ अपन नाम लिखब?" लाउ अपन लिपिमे नाम लिखला, आ अनन्या नीचाँ लिखलीह —– "लाउ किन–हंग।" पाथर हुनकर हाथमे भारी लागल —– नाम पहिल बेर हुनका भार जेहन बुझायल।

सत्यव्रत कहला —– "एखन ई क्षमा नहि, केवल उपस्थिति अछि।"

लाउ ओहि राति गामक बाहरी एकटा पुरान विद्यालयक कोठलीमे रहला —– रेशमी बिछौनाक बदला खरखराइत खद्दर। सपनामे ओ एकटा "अनाम ग्रह" देखला, जतय हर भवनपर संख्या छल, नाम नहि।

भोरे ओ दान करय चाहला। सत्यव्रत रोकलनि —– "दान पहिने अपराधक हिसाबकेँ झाँपि दैत अछि। एतय दानक पहिने दस्तावेज, दस्तावेजक पहिने नाम, नामक पहिने सुननाइ।"

दिन चढ़लापर एडवर्ड ब्रूमक दूत एकटा विशाल दान–पत्र लऽ क आयल। अनन्या ओतय सेहो एकटा खाली पाथर राखि कहलीह —– "आब दानक नाम पूछल जाएत।"

अध्याय ७९

ब्रूमक दान-पत्र

भोरे एकटा चिक्कन दान-पत्र गाम पहुँचल —— एडवर्ड ब्रूमक नव कम्पनी "विश्व-स्मृति पुनर्स्थापन निधि" सँ, "चन्ना गाछी पीड़ा-स्मृति केन्द्र" क लेल।

ब्रूमक प्रतिनिधि कहलक —— "ई दान निष्काम अछि। एहिसँ संग्रहालय, डिजिटल अभिलेख बनत।" देविका पुछलीह —— "दानक बदलामे की लेब?" प्रतिनिधि कहलक —— "किछु नहि," मुदा मीरा पुछलापर स्वीकार केलक जे "सहमति-प्रावधान" रहत।

अनन्या दान–पत्र पढ़ि पुछलीह —– "एहिमे नामक मालिक ककरा कहल गेल?" प्रतिनिधि कहलक —– "समुदायक।" अनन्या पुछलीह —– "समुदायक हस्ताक्षर कतय अछि?" कोनो उत्तर नहि भेटल।

बा दान–पत्रक गन्ध सूँघि कहलीह —– "एहिमे रोदनक गन्ध नहि। एहिमे कपाटबन्द कोठरीक गन्ध अछि।"

गोप कुमार सूक्ष्म अक्षरमे पढ़लनि —– "साझा संप्रेषण सामग्रीपर निधिक प्राथमिक उपयोगाधिकार रहत।" ओ कहलनि —– "ई दान नहि, कथापर पहिल दावा अछि।"

तखने अचानक बदरी लागल आ किछु बून्द दान–पत्रक सुनहर मोहरपर खसल। कागचक रंग बदलय लागल —– भीतरसँ पुरान पुल–ठेकाक अक्षर उभरल —– मजदूर–आवास, सुरक्षा, क्षतिपूर्तिक पुरान मृत पंक्ति। दान–पत्र नकाब छल; भीजलाक बाद असल चेहरा बाहर आयल।

बा कहलीह —– "कागच नहि, पापक चाम भीजल।"

सत्यव्रत मेहता नोटबुकमे लिखला —– "दान जखन अपराधक अभिलेख ढाँकय, तखन ओ दान नहि, विलम्बित बचाव अछि।"

राति बटुकनाथ हरिहरनक बेटा अपन पिताक न्यासक कागच उठा क पुछलक —– "बाबा, ई न्याय बचाबय लेल अछि कि पेशा?" बटुकनाथक मुँह सूखि गेल।

ठूँठक चारूकात बच्चा सभ दान–पत्रक खाली लिफाफा राखला, जाहिपर लिखल छल —– "करुणा जँ अधिकार माँगय, तकर परीक्षा होएत।"

अध्याय ८०

हरिहरनक संतान

राति बटुकनाथ हरिहरन अपन बरामदापर बैसल छला। हुनकर बेटी तारिणी, जे कानून पढ़ैत छलीह, भीतर आयलीह। ओ चन्ना गाछी नहि गेल छलीह, मुदा फोनपर सभटा कथा देखने छलीह।

तारिणी पुछलीह — "बाबा, अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा? जे मजदूर पुलमे डूबल, ओकर परिवारक कागच अहाँ तकनीकी दोष कहि किनारा केलहुँ। ई कानून छल कि पेशाक खोलमे गोहि?"

बटुकनाथ पहिल बेर अपन घरमे बाहरी अभियुक्त जेकाँ अनुभव केला। तारिणी कहलीह —— "अहाँ ओ मनुष्य छी जे अपन बुद्धि बेसी पैघ मानि लेलहुँ, आ अपन विवेककेँ मोहर लगायल कागचक नीचाँ राखि देलहुँ।"

तारिणी गंगेशक प्रसंग पर कहलीह —— "जँ मिथिला तर्कक भूमि अछि, तखन जातिक प्रश्नपर एतेक चुप्पी किएक? गंगेशक जीवनक सत्यकेँ सम्मानक माला पहिरा क मारि देब —— ई ककर न्याय? "

बटुकनाथ पुछला —— "तौं हमरा अपराधी मानैत छेँ? " तारिणी कहलीह —— "नहि। अपराधी कहि देब सहज होइत। अहाँ ओ मनुष्य छी जे अपन विवेककेँ कागचक नीचाँ राखि देलहुँ।"

तारिणी कहलीह —— "जँ लोक–स्मृति न्यास बनत, त ओकरा बच्चा सभ, मजदूर परिवार संचालित करत। अहाँ सलाह देबाक चाही, त पहिने एतय आबि नाम सुनू। अध्यक्षता नहि, उपस्थिति।"

बटुकनाथ राति भरि नहि सुतला। भोरे ओ कागचपर लिखला —— "लोक–स्मृति न्यास सम्बन्धी प्रस्ताव स्थगित।" फेर काटि क लिखला —— "प्रस्ताव लोक–पहरा समक्ष सुनल जाए।"

तारिणी जाइत काल सम्मान–पत्रक माला हटबैत कहलीह —— "गंगेशकेँ माला नहि, प्रश्न चाही। न्यायकेँ पद नहि, सुननाइ।"

ओहि भोर गढ़ नारिकेलमे ठूँठक कोंपलपर ओस जमल छल। ठूँठक भीतरसँ एकटा सूक्ष्म घंटी जेहन ध्वनि उठल —— जेना संतानक प्रश्न पहरा स्वीकार कऽ लेने होय।

एतबे दूर चन्द्रपाल बत्रा अपन बन्द कमरामे पहिल बेर कागचपर अपन पूरा नाम लिखय बैसला। हुनकर हाथ काँपल —— अगिला दरबार हुनकाहु प्रतीक्षा करि रहल छल।

अध्याय ८१

बत्राक अधूरा नाम

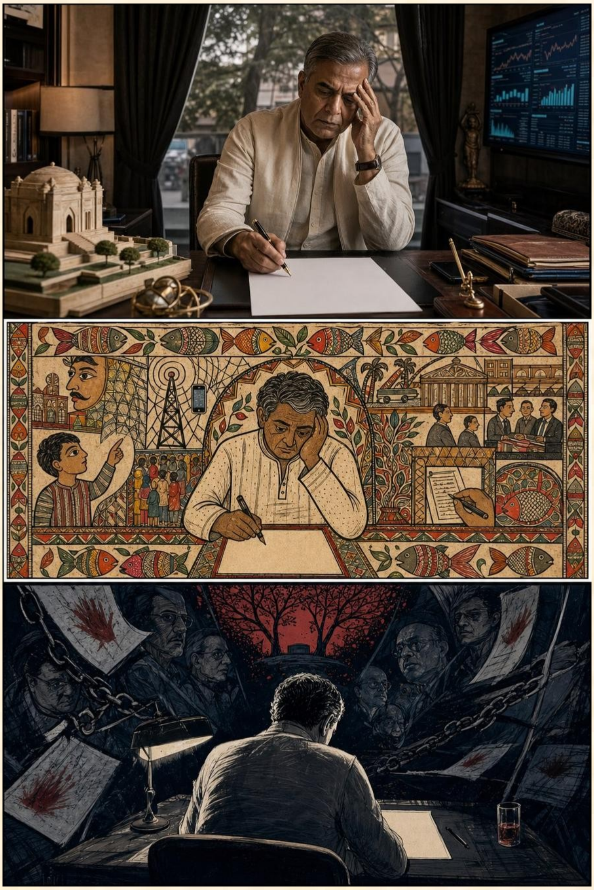

चन्द्रपाल बत्रा अपन कोठलीमे एकटा उज्जर कागचक सोझाँ बैसल छला, जाहिपर लिखल छल —— "अपन नाम लिखू।"

ओ लिखय चाहला —— "चन्द्रपाल बत्रा" —— मुदा कागचपर उतरल —— "दस प्रतिशत।" ओ काटला, फेर लिखय चाहला, मुदा फेर लिखार भेल —— "आधा लाभ।" तेसर बेर —— "कमीशन।" जेना हुनकर भीतर कोनो लिपिक बैसल होय, जे नामक ठाम केवल लाभ-हिस्सा लिखय जानैत होय।

हुनका बचपनक तख्ती मोन पड़ल —— "चन्द्रपाल —— चन्द्रक रक्षा करय बला।" माय कहैत छलीह —— "नाममे उजास राखल अछि, बेटा।" मुदा उजास

हुनका भारी लागल, आ ओ धीरे–धीरे उजास छोड़ि गिनतीक अन्हारमे घुसि गेला।

गढ़ नारिकेलमे अनन्याक रजिस्टरमे अचानक "प्रतिशत" शब्द अपने उतरि आयल। ईरा कहलीह — "नामक चोरीक बाद आब नामक हिसाब खुलत।"

चन्द्रपाल फेर लिखय चाहला — "चन्नू" (मायक पुकारल नाम)। मुदा आधा "च" लिखितहि हुनकर हाथ अटकि गेल, जेना कोनो गोहिक दाँतसँ पकड़ल गेल होय।

ओ राति पहिल बेर चन्द्रपाल कानला। ई रोदन दया माँगबाक नहि छल — ई एहन मनुष्यक रोदन छल जे बुझि गेल छल जे हुनकर भीतर बाँचल बच्चाक नाम नहि भेटि रहल अछि।

अनन्या रजिस्टरमे नव पन्ना खोललीह — "अधूरा नाम।" बच्चा सभ पुछलक — "जे अपराधी अछि, ओकर नाम किएक लिखब?" बा उत्तर देलीह — "अपराध क्षमाक लेल नहि, प्रमाणक लेल लिखल जाइत अछि।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "न्याय केवल पीड़ितक नाम नहि माँगैत, अपराधीक असल नाम सेहो माँगैत अछि। कारण बेनाम अपराध फेर घुरि अबैत अछि।"

राति चन्द्रपाल पूरा नाम नहि लिखि सकला। पृष्ठपर केवल रहि गेल — "च..." — आ नीचाँ अनजानेमे लिखायल — "प्रतिशत।" गढ़ नारिकेलमे अनन्या कहलीह — "अगिला बेर भीतरक गज–ग्राह खेलत।" खेल आब मैदानपर नहि, मोनक पानिमे उतरि रहल छल।

अध्याय ८२

अंदरक गज-ग्राह

राति चन्ना गाछीक ठूँठमे एकटा नव दृश्य देखार भेल। बूढ़बा भूत कहलनि — "आइ भीतरक गज-ग्राह देखाओत। जे देखब, तकरा तुरन्त दोष नहि कहब; पहिने ओहिमे फँसल जीव देखब।"

पहिने बटुकनाथ हरिहरन देखार भेला — हुनकर भीतरक गज हुनकर बालपनक न्यायप्रियता छल, आ ग्राह हुनकर पेशागत छल-कपट छल, जे कहैत छल — "तौं न्याय नहि, पेशा छैं।"

फेर चन्द्रपाल बत्रा देखार भेला — हुनकर भीतरक गज एकटा छोट बालक छल, जे अपन नाम ठीकसँ लिखय चाहैत छल। ग्राह पैघ छल — अधूरा

नामपर चढ़ल प्रतिशत। देविका कहलीह — "जकरा नामक अक्षर नहि बचल, ओ दोसरा सभक नाम केना बचाएत?"

राघव सिग्नलक भीतर एकटा छोट, पारदर्शी गज देखार भेल, जे लगातार मेटा रहल छल। ग्राह छल मौन–तकनीक। मीरा कहलीह — "ई निजताक आदर नहि, अपराधक अन्हार अछि।"

लाउ किन–हंगक भीतरक गज मिथिलाक माटि सूँघय चाहैत छल। ग्राह छल भूगोल–विहीन पूँजी, जे कहैत छल — "नाम घाटा अछि।" गज उत्तर दैत — "नाम बिनु लाभ पथरा जाइत अछि।"

सत्यव्रत मेहता स्वयं ठाढ़ छला। ठूँठ हुनको भीतर झाँकि देलक। हुनकर गज छल न्यायकेँ सुनबाक इच्छा; ग्राह छल पदक अनुशासन आ देरसँ जागल विवेक। सत्यव्रत कहला — "हमरा सेहो छोड़ू नहि।" अनन्या लिखलीह — "साक्षी सेहो जाँचसँ बाहर नहि।"

तखन असल गज–ग्राह दृश्य उभरल — सभटा गज मिलि क एकटा गज बनल, सभटा ग्राह मिलि क एकटा पैघ जबड़ा। गज नाम बजाबय लागल — पहिने एक, फेर अनेक। हर "उपस्थित" पर ग्राहक एकटा दाँत ढील पड़ैत।

बूढ़बा भूत कहलनि — "मोन राखू, दुष्टक भीतरक गज देखब ओकर अपराध मेटाएब नहि। अपराधक हिसाब रहत। मुदा जँ भीतरक गज नहि देखब, त ग्राहक जाति नहि चिन्हब।"

भोरे बच्चा सभ नव नियम बनौला — "हम सभ केवल मृतकक नाम नहि पढ़ब; हम सभ जीवितक भीतर अटकल नाम सेहो खोजब।" अनन्या रजिस्टरमे नव पन्ना खोलि लिखलीह — "नारिकेल पात पाठशाला।" खेल आब पढ़ाइमे उतरि रहल छल।

अध्याय ८३

नारिकेल पात पाठशाला

भोरे अनन्या ठूँठक पाछूक जगहमे बालु साफ करय लगलीह। कियो पुछलक —— "एतय की बनत? " ओ उत्तर देलीह —— "पाठशाला।"

बा नाम देलीह —— "चन्ना गाछीक ठूँठ रहत, मुदा छाँहक लेल पात चाही। नारिकेलक पात दूर-दूर धरि हवा पकड़ैत अछि। ई पाठशाला ओहिना लोकक आवाज पकड़त।"

देबालपर देविका लिखलीह —— "एतय कोनो दुख बिनु अनुमति नहि लिखल जाएत।" मीरा जोड़लीह —— "एतय कोनो देह तमाशा नहि।" गोप कुमार लिखलनि —— "एतय कागच प्रमाण अछि, मुदा मनुष्यक स्वर बिनु अधूरा।"

सत्यव्रत मेहता लिखला — "एतय मौन सेहो गवाही अछि, जँ ओ डरक नहि, सुनबाक होय।"

बच्चा सभ नारिकेलक झड़ल पात चुनला, हर पातपर एकटा संकेत लिखला — "पुलक पाया," "डिजिटल डेर," "गंगेशक प्रश्न।" हर संकेतक नीचाँ खाली जगह छोड़ल गेल — "जँ कथा बन्द लिखि देब, त अगिला मनुष्य कतय बाजत?"

दुपहरमे एकटा चर्मकार बालक आ एकटा ब्राह्मण बालकक हाथ एकहि पातपर पड़ल, त पातक बीचमे एकटा हरियर रेखा चमकल। बा कहलीह — "देखलहुँ? तत्त्वचिन्तामणि केवल पुस्तकमे नहि रहैत; कखनो-कखनो दू हाथक बीचमे सेहो खुलैत अछि।"

साँझ धरि नारिकेल पातक एकटा छोट मंडप बनि गेल। लोक कहलक — "गाछी कटि गेल, पात उगि गेल।" मीरा सुधारलीह — "उगि नहि, जुटि गेल।"

राति पहिल दीप जरल। अनन्या खाली कटोरा तीन बेर धीरेसँ बजौलीह। ओ कहलीह — "आइ पाठशाला खुजल। पहिल पाठ काल्हि। आइ केवल नियम सुनल जाए... एतय जे अनुपस्थित अछि, ओकरा पहिने बजाओल जाएत।"

रजिस्टरक नव पन्नापर शीर्षक लिखल गेल — "पहिल पाठ: उपस्थित।" राति भरि गढ़ नारिकेलक अनुपस्थित नाम सभ, धीरे-धीरे, अपन-अपन बारीक प्रतीक्षा करैत रहला।

अध्याय ८४

पहिल पाठ: उपस्थित

पाठशाला खुललाक पहिल दिन कियो वर्णमाला नहि पढ़लक। अनन्या कहलीह — "एहि पाठशालाक पहिल पाठ अछि — उपस्थित।" बच्चा सभ दोहरौलक — "उपस्थित।"

पहिल बच्चा अपन नानीक नाम लऽ क उठल, जकर असली नाम घरमे कियो नहि बजैत छल — "सीतामोनि।" रजिस्टरमे लिखल गेल — "सीतामोनि — उपस्थित।"

एकटा लड़की सोनकि अपन मामाक नाम कहलीह, जे नदीमे गेल छला, मुदा घरमे "बाहर कमाइ लेल गेल" कहल जाइत छल — "भोलाराम।"

तेसर बच्चा झिझकैत उठल — "हमर परदादा चर्मकार छला। हमर दादी कहैत छलीह — हुनकर बिनु घरक जूता, ढोल, माटि, किछुओ नहि चलत। हुनकर नाम मंगलू दास।" किछु बूढ़ लोकक चेहरा कसि गेल।

मीरा कहलीह — "जकर श्रमपर सभ चलल, ओकर नाम नीचाँ नहि, आधारमे लिखल जाएत।" देविका मंगलू दासक नाम पन्नाक बीचमे लिखलीह।

चारिम बच्चा अपन बहिनक नाम पूरा नहि बाजि सकल — मोबाइलपर धमकाओल गेला पछाति लाजक डरसँ। मीरा कहलीह — "जँ नाम सार्वजनिक नहि करय चाही, त हम केवल एतबे लिखब — एक बेटी, जे लाजक कारण नहि, हिंसाक कारण चुप कराओल गेल।" रजिस्टरमे लिखल गेल — "एक बेटी — गरिमासहित उपस्थित।"

एकटा बूढ़ी माय अपन मायक (फुलकुमारी) नाम, जे ओकर सासुरमे कहय मना छल, आँचलमे बान्हल ताबीजसँ निकालि कहलीह। कागच पढ़ल नहि गेल, मुदा नाम कहलापर ताबीजक सूत अपने खुजि गेल।

पुरनका पण्डित आबि आपत्ति केला — "एहन पाठशालामे शास्त्र–विरुद्ध बात बच्चा सभकेँ पढ़ाओब ठीक नहि।" अनन्या पुछलीह — "शास्त्र नाम बचबैत अछि कि नाम मेटबैत?"

साँझमे स्त्री सभ, जे दिनभरि किनारपर ठाढ़ सुनैत रहलीह, आपसमे धीरे–धीरे बजय लगलीह — घरमे पीटल, प्रेमक कारण मारल, नामक अनकही कथा। मीरा कहलीह — "किछु नाम राति माँगैत अछि। आइक पाठ बच्चा सभक छल; अगिला पाठ स्त्री सभ रातिमे पढ़त।"

रजिस्टरक खाली पन्नापर कोयलासँ लिखल गेल — "अगिला पाठ: स्त्री सभक राति–सभा।"

अध्याय ८५

स्त्री सभक राति–सभा

राति स्त्री सभ चुपचाप चन्ना ठूँठक चारूकात जुटलीह। बा कहलीह — "आइ ने पुरुषक कागच पढ़ल जाएत, ने सरकारक सूचना। आइ देह बोलत।"

मीरा कहलीह — "एतय जे कही, से ओकरा कहनिहारक होएत। जकरा चुप रहबाक अछि, ओकर चुप्पी सेहो उपस्थित मानल जाएत।"

उज्वलक माय अपन बेटाक पुरान कमीज ठूँठ लग राखि कहलीह — "हमर बेटा असगरे स्क्रीनसँ नहि हारल; ओ समाजक ओहि चुप्पीसँ हारल, जे लाजक डरसँ ठगीक बात घरमे कहय नहि दैत। आइ हमर गवाही ई अछि जे बेटाक आत्मासँ पहिने मायक कान खुजबाक चाही।"

पुल–मजदूरक एकटा विधवा उठलीह —– "हमर नाम फुलकुमारी अछि। मुन्नाक देह पुलक पायालग पानि खा गेल। लोक हमरा विधवा कहैत रहल, मुदा हमर नाम नहि पुछलक।"

ईरा कहलीह —– "गंगेशक जीवनमे जे चर्मकारणी स्त्रीक स्मृति दबाओल गेल, ओकरा बिनु न्याय अपूर्ण अछि। शास्त्र समाज राखि लेलक, स्त्रीक नाम मेटा देलक।"

बा कहलीह —– "गंगेश तत्त्वचिन्तामणि लिखलनि —– बारह हजार ग्रन्थक बराबर कहल जाइत। मुदा जँ समाजक एक स्त्रीक नाम ताहि भीतर नहि पढ़ि सकलहुँ, त बारह हजार ग्रन्थक तौल ककरा लेल?"

मीरा हर स्त्रीक हाथमे लाल डोरीक टुकड़ा देलीह। नियम बनल —– जे स्त्री अपन कथा कहि चुकलीह, ओ डोरी अपन कलाईमे राखतीह —– कथा कहलासँ स्त्री सार्वजनिक वस्तु नहि बनैत।

एकटा युवती (जे चुप छलीह) कहलीह —– "हमर प्रेमक नाम नहि लिखू। लिखू —– एकटा स्त्री जे डरक बावजूद अपन भीतरक सत्यकेँ झूठ कहलासँ इनकार कएलक।" देविका लिखलीह —– "गोपनीय उपस्थित।"

सभा भोरसँ पहिने समाप्त भेल। पाँच बात ठहरल —– ककरो देहक कथा बिनु अनुमति नहि; जाति–व्यवस्था जँ हिंसा करय, तकरा न्यायक प्रश्न बनाओल जाए; डिजिटल ठगीक लाज पीड़ितपर नहि, ठगपर; मजदूरक नामक संग घरक स्त्रीक नाम सेहो; निजता स्मृतिक गरिमा अछि।

फुलकुमारी अपन फाटल एड़ी देखैत कहलीह —– "काल्हि मजदूरक पएर पढ़ल जाए।" बच्चा सभ उत्तर देलक —– "उपस्थित।" कथा एतयसँ मजदूरक पएर दिस मुड़ल।

अध्याय ८६

मजदूरक पाँव

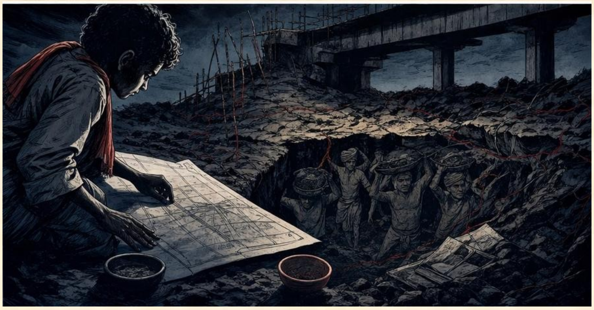

एक भोर बच्चा सभ पुल दिस चलला, जतय बरखौं पहिने मजदूर सभक नाम खसा देल गेल छल। मुन्ना पासवानक काका (जकर पएरमे चप्पल नहि छल) पुलक पहिल पायालग कहलनि — "एतय हमर भाइक पसेना पड़ल छल। कागचमे ओकर नाम नहि, मुदा एतय ओकर पएरक दबाव अछि।"

अनन्या माटिक कटोरा राखलीह। काका अपन पएर ओहिमे राखि, एकटा पातपर छाप छोड़लनि — पहिल पएर-छाप, नामक नहि, चलल जीवनक प्रमाण।

ईरा लिखलीह —— "मुन्ना पासवानक काकाक पएर: श्रम उपस्थित।" बा जलक एक बून्द टपकौलीह, जे रेखाकेँ धुँधला त केलक, मेटौलक नहि —— "एना श्रमक नाम होइत अछि —— जखन रोदन पड़य त फिक्का पड़य, मुदा मेटय नहि।"

धीरे–धीरे मजदूरक परिवार सभ आबि अपन पएर–छाप देला —— स्त्री, पुरुष, बच्चा सभक। देविका कहलीह —— "रोटी लऽ क जे पएर चलल, ओ श्रम नहि? "

आरुणि पुलक पायाकेँ छूइ क कहलनि —— "जे पुल मजदूरक नाम नहि राखय, से अधूरा पुल अछि।" अनन्या लिखलीह —— "पुल पूर्ण तखन, जखन पएर उपस्थित।"

चन्द्रपाल बत्राक लोक एकटा तैयार पट्टिका लऽ क आयल —— "नाम दी, हम छपबा देब।" बूढ़ काका उत्तर देलनि —— "जे पएर नहि पढ़य, से पुलक नीचाँ दबायल हड्डी सेहो नहि पढ़य।"

मीरा कहलीह —— "जे पएरक छाप देत, ओकर अनुमति बिनु ओकर छवि केओ नहि लेत।"

सत्यव्रत मेहता अपन जूता उतारि पएर माटिपर राखय चाहला —— "हम मजदूर नहि, मुदा एहि पुलक मौन अपराधमे हमर पएर सेहो धूलि खाए।" अनन्या कहलीह —— "अहाँक पएर नहि, अहाँक मौन लिखल जा चुकल अछि।"

राति पएर–छाप सभ नामक पाथरक संग ठूँठ लग अनल गेल। बच्चा सभ रजिस्टरमे नव खण्ड खोलला —— "पएरक अभिलेख" —— "जे धरती पर चलल, ओकर स्मृति केवल माथक माल्यार्पण नहि, पएरक न्याय सेहो चाहैत अछि।"

अनन्या घर घुरैत कहलीह —— "काल्हि पाठशालामे स्क्रीन बन्द रहत। आइ पएर पढ़लहुँ। काल्हि आँखि आ कान फेर खोलबाक चाही।" अगिला दिन गढ़ नारिकेलमे स्क्रीनक उपवास आरम्भ होएबाक छल।

अध्याय ८७

स्क्रीनक उपवास

बच्चा सभ घोषणा केला — एक दिन गढ़ नारिकेलमे स्क्रीनक उपवास होएत। भोजनक नहि, दृष्टिक उपवास।

अनन्या ठूँठक कात एकटा माटिक घड़ा राखलीह — "स्क्रीन–घड़ा।" जे स्वेच्छासँ अपन मोबाइल जमा करय चाहय, से राखय। ककरो बाध्य नहि कएल गेल।

देविका पहिने अपन मोबाइल राखलीह — "एक दिन ओकरो विश्राम।" मीरा राखलीह — "जे दृष्टि हमरा कखनो बेचय चाहलक, ओकरा आइ आँखि बन्द।" सत्यव्रत मेहता अपन फोन राखि कहला — "कतेको बरख फोन

बजिते हम लोकक आवाजक बीचसँ उठि गेलहुँ। आइ फोन चुप रहत, हम बैसल रहब।" बा अपन चश्मा राखि कहलीह — "आइ सुनब।"

ओहि दिन गामकेँ बुझायल जे ओकरा कान फेर भेटि गेल अछि — मुर्गाक आवाज, करछुलक टकराहट पहिने सुनार भेल।

चन्ना गाछी लग "मुँह–पाठ" भेल — प्रत्येक घरसँ एकटा पुरान कथा कहल गेल। एकटा बूढ़ किसान कहलक — "फोन हमर खेत खा गेल।" बच्चा सभ लिखलक — "फोन खेत नहि खाए, अकेलापन खाए।"

दुपहरमे बच्चा सभ नव नियमसँ कबड्डी खेलला — रेखा पार करैत बच्चा एकटा नाम कहत, आ ओकर कथा। जँ अधूरा रहि जाए, त सभटा खेलाड़ी मिलि क पूरा करत।

स्त्री सभ कहलीह — "मोबाइल बन्द करब मात्र पर्याप्त नहि। दोसराक चेहरा, दुख किछु देखने मात्रसँ अहाँ ओकर मालिक नहि भऽ जाइत छी।"

साँझमे गामक पुरान गीत घुरल, जे मोबाइलक धुनमे दबि गेल छल। दुकानदार सभ हाथेँ खाता लिखला — बहुत दिनक बाद सम्बन्धक गन्ध दुकानमे पसरल।

दूर शहरमे चन्द्रपाल बत्रा अपन ऐपक आँकड़ा घटैत देखि बेचैन भेला।

राति बच्चा सभ नव नियम बनौला — रातिक नाम–पाठक समय फोन बन्द; ककरो रोदनक चित्र बिनु अनुमति नहि; डर लगय त फोनपर नहि, मनुष्यक दरबाजा खटखटाउ।

रातिक अन्तमे अनन्या आकाश दिस देखलीह — कटल गाछीक छाँह कटलाक कारण आकाश पूरा खुजल छल। तारा एक–एक क फूटल। बच्चा सभ लिखला — "आइ स्क्रीन बन्द, आकाश खुजल।"

ईरा निर्णय लेलीह जे ओ विदेशमे बसल गढ़ नारिकेलक बच्चा सभकेँ पत्र लिखती — "जँ अहाँक हाथमे स्क्रीन अछि, त की अहाँ नाम सेहो सुनि सकैत छी? "

अध्याय ८८

ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

स्क्रीनक उपवासक दोसर दिन ईरा गढ़ नारिकेलक विदेशमे रहनिहार बच्चा सभकेँ पत्र लिखय बैसलीह। ओ लिखलीह — "प्रिय दूरदेशी बच्चा सभ, गढ़ नारिकेल अहाँक छुट्टीक चित्र नहि, अहाँक उत्तरदायित्व अछि।"

ओ लिखलीह — "जँ अहाँ गढ़ नारिकेल आउ, त पहिने फोटो नहि खिंचू; पहिने एक नाम सुनू। जँ अहाँ उच्चारणमे चूकू, त नामक घरबलासँ माफी माँगू।"

ईरा गंगेशक कथा जोड़लीह — "मिथिला केवल जातिक गर्वक भूमि नहि, ओ प्रश्नक भूमि अछि। जँ अहाँ मिथिलाक गौरव सुनैत छी, त मिथिलाक अन्याय सेहो सुनू।"

अनन्या पुछलीह — "विदेशमे जन्मल बच्चा सभ की अपन गामक नाम लिखि पाओत?" ईरा कहलीह — "कदाचित नहि। मुदा जे बच्चा कोशिश करैत अछि, ओ पहरुआ बनि सकैत अछि।"

साँझमे पहिल पत्र समुद्र पार गेल। दू दिन बाद उत्तर आयल। टोरन्टोक एकटा बालक नील (नीलकंठ) लिखलक — "हम गढ़ नारिकेल कखनो नहि आयल छी... मुदा हम सीखब। हमरा पहिल नाम भेजू।"

मेलबर्नक एकटा बालिका लिखलीह — "हमर मम्मी कहैत छथि गाममे बहुत झंझट अछि, शहरमे रहू। मुदा जँ झंझटमे नाम दबल अछि, त हम सुनय चाहैत छी।"

दुबईक एकटा बच्चा लिखलक — "हमर बाबा भवन बनबैत छथि, मुदा हुनकर नाम भवनपर नहि लिखाइत। की ओहो नाम–पहरामे आओत?"

हर उत्तरमे एकटा समान पंक्ति भेटल — "हम उपस्थित छी, मुदा सीखब बाकी अछि।" बच्चा सभ एहि लेल एकटा पाथर बनौला — "दूर उपस्थित।"

ईरा सत्यव्रत मेहतासँ पुछलीह — "जे लोक दूर अछि, जे भाषा नहि जानैत, ओकर गवाही केना सुनल जाए?" सत्यव्रत उत्तर लिखला — "जन–सुननाइ केवल उपस्थित देहक लेल नहि, उपस्थित ऋणक लेल सेहो होइत अछि। अगिला सुननाइमे दूरक बच्चा सभक पत्र पढ़ल जाए।"

अगिला भोर अनन्या रजिस्टरमे शीर्षक लिखलीह — "सत्यव्रतक जन–सुननाइ।" गाम बुझि गेल — आब सुननाइकेँ सीमा नहि रहल।

अध्याय ८९

सत्यव्रतक जन-सुनवाई

पहिल उत्तर विदेशसँ आयल —— एकटा बच्चाक बनाओल नक्शा, जाहिमे लिखल छल —— "हमर दादीक नाम एतय कतय राखब?" अनन्या कहलीह —— "जकरा धरती दूर अछि, ओकरा नाम राखबाक जगह आर बेसी चाही।"

सत्यव्रत मेहताक जन-सुनवाईक दिन आयल —— मंच नहि, कुर्सी नहि, केवल ठूँठक चारूकात जमीनपर बैसका। सत्यव्रत कहला —— "आइ हम अध्यक्ष नहि, पहिने सुननिहार छी।"

बीचमे एकटा पुरान रजिस्टर, सूखल पात, आ खाली माटिक कटोरा राखल गेल। बा कहलीह — "जे शब्द कहि नहि सकत, ओकर मौन एतय राखल जाएत।"

पहिल गवाही एकटा बूढ़ चर्मकार स्त्रीक भेल। ओ पुछलीह — "जे जाति हमरा चप्पल बनबैत देखैत अछि, से हमर बेटीकेँ शास्त्र पढ़ैत नहि देखय चाहैत। ज्ञानक जूता के बनबैत अछि?"

ईरा विदेशक एकटा पत्र पढ़लीह — "हमरा विद्यालयमे शिक्षक कहलनि — दादीक नाम, वर्तनी ठीक करू। मुदा दादीक नाम कोनो वर्तनी नहि, दादीक आवाज छल।"

एकटा मजदूर परिवारक युवक कहलक — "हमर बाबू कागचपर अस्थायी मजदूर छल। पानिमे स्थायी भऽ गेल।" बच्चा सभ लिखलक — "अस्थायी नामक स्थायी जलसमाधि।"

सत्यव्रत कहला — "हम एहि सभ गवाहीक फैसला नहि देब। आइ गवाही अपन आकारमे रहत।"

साँझमे बच्चा सभ कबड्डीक रेखा खिंचि नाम–पाथर छूइ क "उपस्थित" कहय लगला — जन–सुनवाई खेल बनि गेल, न्याय फेर देह पओलक।

राति खाली कटोरा भारी भऽ गेल — बहुत रास मौन ओहिमे राखल गेल छल। बूढ़ चर्मकार स्त्री कहलीह — "मौन उठाबय हो त जाति, लाज, डर, पद — सभ हाथ छोड़ू।" अनन्या हाथ लगौलीह, कटोरा उठि गेल।

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह — "नामक पहरा लेल नियम चाही।" बच्चा सभ छहटा नियम लिखला — "नाम नहि मेटाएब," "पीड़ाकेँ तमाशा नहि बनाएब," "जातिक नामपर जीवन–सत्य नहि मारब" इत्यादि। जन–सुनवाई अपने–आप लोक–संहिताक जन्मस्थल बनि गेल।

अध्याय १०

नामक संविधान

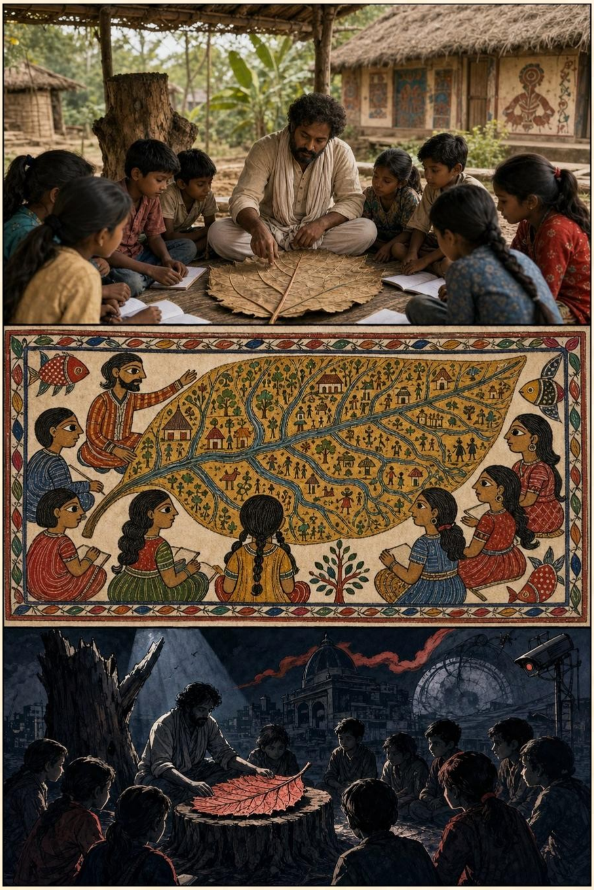

जन–सुनवाईक दोसर दिन पाठशालामे कोनो पाठ नहि पढ़ाओल गेल। मास्टर कहलनि —— "आइ लिखल जाएत, पढ़ल नहि —— जे नियम अहाँ सभ अपन नाम–पहराक लेल बनाओब।"

बा कहलीह —— "संविधान ओहि समाजक बनैत अछि जे अपना अपराध देखय चाहैत अछि। पहिने अपराध देखू, तखन नियम लिखू।"

बच्चा सभ मिलि क चौदहटा नियम बनौला:

१. देविका —— "नाम नहि मेटाएब।"

२. मीरा —— "निजता नहि बेचाएब।"

३. सौम्या — "देहक अपमान नहि होएब।"

४. आरुणि — "स्मृतिपर ठेका नहि लगाएब।"

५. गंगेशक प्रश्नसँ — "जातिक नामपर न्यायक हत्या नहि होएब।"

६. गोप कुमार — "कागचक सत्य लोकक स्वर बिनु अधूरा अछि।"

७. स्क्रीनक उपवाससँ — "सुविधाकेँ स्वामी नहि बनाएब।"

८. कबड्डीसँ — "साँस टूटय सँ पहिने घुरू, मुदा साथी छोड़ि नहि।"

९. बा — "जिनका नाम नहि भेटल, हुनका पहिल आसन।"

१०. सत्यव्रत मेहता — "मौनक हिसाब राखू। जे अपराध करैत अछि, ओकर नाम लिखू; जे देखैत अछि आ चुप रहैत अछि, ओकर मौन सेहो लिखू।"

११. पनिडुब्बीक स्मरणसँ — "पानि जे राखलक, ताहिपर दावा नहि।"

१२. ईराक पत्रसँ — "गाम स्मृतिचित्र नहि, उत्तरदायित्व।"

१३. क्षमापर बहस भेल — "क्षमा घोषित नहि होइत; सुननाइसँ धीरे-धीरे जन्मैत अछि।"

१४. भविष्यपर — "बच्चा पहरुआ, बूढ़ साक्षी, स्त्री विधान-धारक, मजदूर माटिक मालिक।"

जखन प्रश्न उठल जे एहि संविधानपर मोहर के देत, त अनन्या चन्ना ठूँठसँ एकटा सूखल रेशा पानिमे भिजा क पन्नाक कोनामे राखलीह — "मोहर जड़िक।" बच्चा सभ अपन अँगूठा माटिमे डुबा क पन्नाक नीचाँ लगा देला।

राति नियम-पत्र ठूँठक चारूकात पढ़ल गेल। हर नियमक बाद लोक कहलक — "उपस्थित।"

दूर बटुकनाथ हरिहरनक घरमे, चन्द्रपालक यंत्रमे, राघवक फोनमे, लाउ किन-हंगक कोठलीमे, ब्रूमक दान-पत्रमे — एहि नियमक पंक्ति सभ स्वतः चमकय लगली। गढ़ नारिकेलमे नियम बनल, गवाही लिखल गेल, मुदा अपराधी सभ अनुपस्थित रहला — अगिला प्रश्न छल: जखन समाज अपन संविधान बना लेत, तखन धूर्त सभक अनुपस्थिति दंड अछि कि नव षड्यंत्रक शुरुआत?

अध्याय ९१

धूर्त सभक अनुपस्थिति

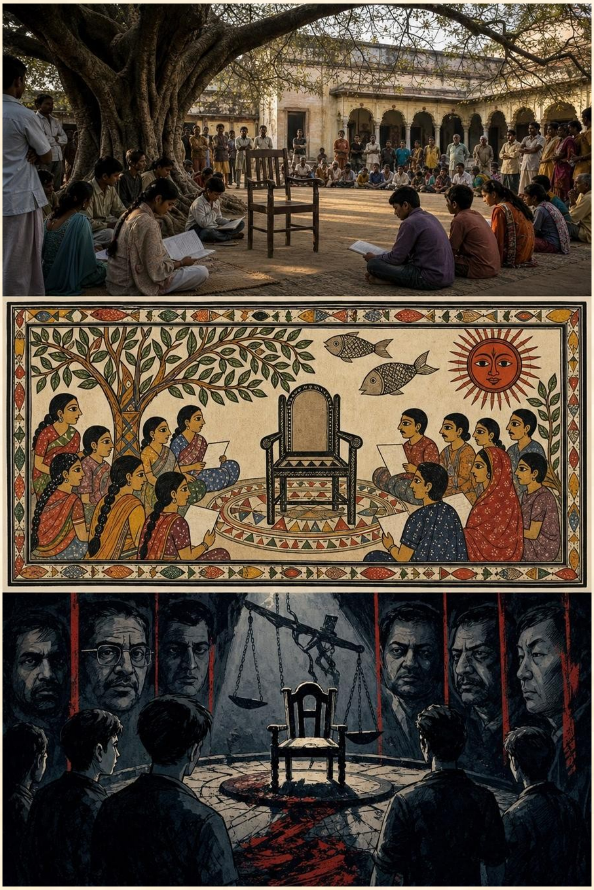

सभामे प्रश्न उठल — जे लोक एहि सभ दुःखक मूलमे रहल, ओकरा सभकेँ बजाओल जाए कि नहि? किछु युवक कहलक — "बजाबी।" स्त्री सभ कहलीह — "नहि, सभाकेँ फेर ओही सभक मुख देखबाक दंड किएक?"

अनन्या निर्णय सुनौलीह — "जे उपस्थित अछि, तकर नाम पढ़ब। जे उपस्थित नहि, ओकर अनुपस्थिति सेहो पढ़ब। मुदा हुनका सभकेँ मंच नहि देब। जे नाम मरल, डूबल, ठगल गेल, पहिने ओहि नामक ठाम। धूर्त सभक ठाम किनारपर।"

सत्यव्रत मेहता लिखलनि —— "अभावक प्रमाण: जखन अपराधी नहि बजाओल गेल, तखन पीड़ितक स्वर बढ़ल।"

दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरन प्रतीक्षा करैत रहला, मुदा कोनो निमंत्रण नहि आयल। हुनका पहिल बेर बुझायल जे किछु घटना हुनकर बिनु सेहो घटि सकैत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा अपन फोनपर चन्ना गाछीक दृश्य ताकैत रहला, मुदा सूचना नहि आयल। हुनका बुझायल जे लोक मोबाइल बंद क सभा करैत छला —— जालक सभसँ पैघ पराजय ई छल जे लोक एक दिन जालक जरूरत बुझबे नहि करय।

लाउ किन–हंगकेँ बतायल गेल जे हुनकर नाम नहि पढ़ल गेल, न दान स्वीकार भेल। "किनारपर रखल गेल," अनुवादक कहलक। लाउ पहिने बुझला नहि —— गढ़ नारिकेलमे किनार दंड छल।

बच्चा सभ रजिस्टरक पाछू एकटा कारी किनारबला पन्ना खोलला —— "जिनका कारण नाम घायल भेल।" ओहिपर हर धूर्तक कर्मक नाम पैघ अक्षरमे, आ हुनकर नाम बहुत छोट अक्षरमे लिखल गेल। बा कहलीह —— "पाप पैघ अक्षरमे, पापी छोट अक्षरमे। नहि त पापी मरि जायत, पाप फेर आन नामसँ जियत।"

मीरा पुछलीह —— "जखन हम सभ हुनका सभकेँ नहि बजबैत छी, तखन ई कायरता नहि?" अनन्या उत्तर देलीह —— "नहि। आइ हुनका सभक आँखिसँ हम अपन घाव नहि नापब। आइ हम अपन मुँहसँ अपन नाम कहब।"

साँझमे ठूँठक पश्चिमी किनारसँ एकटा नमहर अन्हार छाया पसरल। बा कहलीह —— "ई गाछीक छाँह नहि। ई अनुपस्थित सभक छाँह अछि, जकरा नामक पहरासँ बाहर राखल गेल।"

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह —— "ठूँठक छाँह।" धूर्त सभ अनुपस्थित रहला, मुदा हुनकर छाँह अगिला दिनक पाठ बनि गेल।

अध्याय ९२

ठूँठक छाँह

धूर्त सभक अनुपस्थितिक बाद ठूँठक छाया अस्वाभाविक रूपेँ नमहर पड़य लागल —— गाछी कटि गेल छल, मुदा छाया लहरदार आ नमहर छल, जेना पुरान कमला–बलानक धारक दिशामे बढ़ि रहल होय।

बा कहलीह —— "गाछीक छाँहमे देह आराम पबैत अछि; ठूँठक छाँहमे मन उत्तरदायित्व पबैत अछि।"

एकटा बालक पुछलक —— "छाया प्रमाण अछि कि नहि? " अनन्या कहलीह —— "प्रत्यक्ष छाया अछि; अनुमान गाछीक स्मृति अछि; शब्द बा कहैत छथि; आ चारिम प्रमाण —— जकर नामपर छाया ठहरय, ओकर घरक रोदन।"

मीरा नियममे एकटा नव पंक्ति जोड़लीह — "छायाक चित्र लेल जा सकैत अछि, चेहराक नहि, जँ अनुमति नहि होय।"

बटुकनाथक बेटी अपन पिताक पुरान कलम लऽ क आयलीह — "ई कलमसँ हमर पिता कतेको याचिकापर सही केलनि। हम एकरा पाथर लग राखि सकैत छी? " अनन्या पुछलीह — "कलम दोषी अछि कि हाथ? " कलम पाथरपर नहि, ओकर पाछू माटिपर राखल गेल।

राति फेर कबड्डी भेल, मुदा एहि बेर भूत सभ मैदानमे नहि उतरला, बस देखैत रहला। चन्द्रमा उगलापर छाया चाँदीक रेखा बनि गेल। बा कहलीह — "जे छाया स्मृतिसँ बनैत अछि, से अन्हारोमे उजास रहैत।"

मध्यरातिमे आरुणि आकाश दिस देखलनि — दूर कारी बादर गढ़ नारिकेल दिस बढ़ि रहल छल। ठूँठक छाया पानिक दिशामे नमहर भऽ गेल।

अनन्या तुरन्त कहलीह — "रजिस्टर बाँधू। नामक पाथर उठाएब नहि, मुदा ओहि सभक प्रतिलिपि बनाउ।" बच्चा सभ नामक नकल बनाबय लगला — कागच, कपड़ा, माटिक तख्तीपर।

भोरसँ पहिने पहिल बून्द खसल — ठीक "जेकर नाम नहि भेटल" लिखल पाथरपर। बा कहलीह — "जिनका नाम नहि भेटल, हुनकरे पहिने पानि खबर देलक।"

नदीक गन्ध आब स्पष्ट भऽ गेल — कमला–बलान घुरि रहल छल।

अध्याय ९३

पुनः बाढ़ि

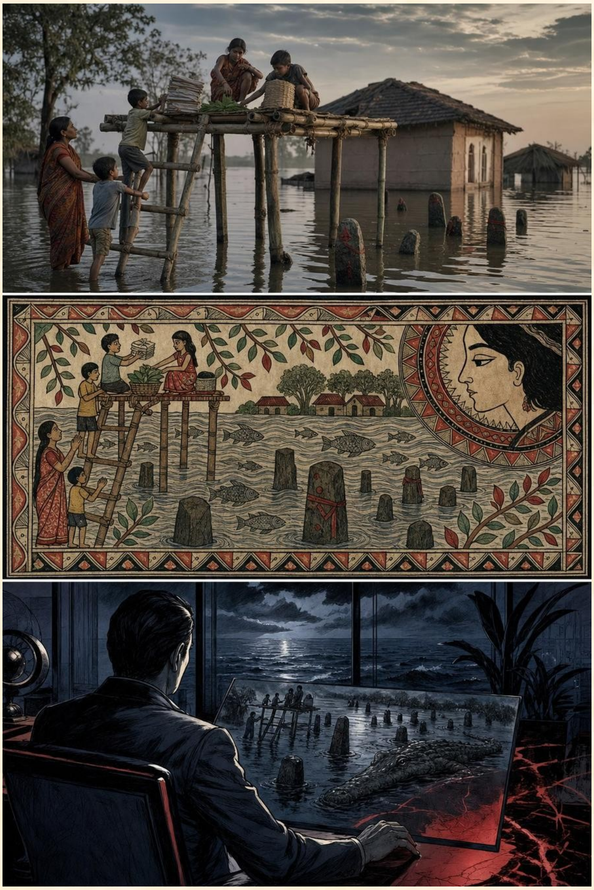

कमला–बलानक पानि पहिने चुप्पी नहि मानैत छल —— गन्ध पठा क बुझा देलक जे बाढ़ि फेर आबि रहल अछि। बादर आबि ठूँठक हरियर बिन्दुपर झुकल। अनन्या कहलीह —— "एहि बेर गाछ नहि बचाओब मात्र, नाम सेहो बचाओब।"

बा घरक ओसारीपर बैसि कहलीह —— "पानि जखन अबैत अछि, पहिने ओ पूछैत नहि। मुदा एखन हम पूछब —— ककरा लऽ जाएब? कोन नाम बचाएब? "

देविका आ मीरा नाम–पन्ना जलरोधी थैलीमे लपेटलीह। गोप कुमार अपन गुप्त सूची लपेटि क अनलनि, मुदा अनन्या कहलीह — "प्रतिलिपि कागचक नहि, कण्ठक बनत।" बच्चा सभ दस–दस नाम कण्ठस्थ करय लगला।

पहिल तेज बरखा टूटल। घर, गली, पोखरि सभ पानिमे डूबय लगल। मुदा नामक पाथरपर लिखल अक्षर पानिसँ मलिन नहि भेल — उनटे गाढ़ देखार भेल। बा कहलीह — "देखू, जे नाम सुनल गेल, ओकर स्याही पानिसँ नहि डरैत।"

राति बच्चा सभ पाथर उठाबय नहि गेला, बल्कि हर पाथरक छाप माटिमे दबा क, ओहिपर छोट नारिकेल पात राखला — "पाथर डूबि सकैत अछि; छाप रहत।"

बूढ़बा भूत कहलनि — "बाढ़िमे साँसक असली परीक्षा होइत अछि। जे पानिक बीच 'कबड्डी' कहि सकय, से डरक घरसँ नाम निकालि सकय।" बच्चा सभ पानिमे उतरि गोल बनौला — ठेहुन धरि पानि, माथपर बरखा — "सरयू उपस्थित," "उज्ज्वल उपस्थित" — कबड्डी नामक नाव बनि गेल।

आरुणि निर्णय देला — "पहिने मनुष्य, फेर दस्तावेज, फेर पाथर।" बच्चा सभ जोड़ला — "नाम मनुष्यक संग जाएत।"

सत्यव्रत मेहता विद्यालय भवनमे अस्थायी सुनवाई–कोन बनौलनि। मीरा कहैत रहलीह — "बाढ़िक पीड़ा सेहो तमाशा नहि।"

मध्यरातिमे ठूँठक हरियर बिन्दु पानिक भीतरसँ झिलमिलायल। बूढ़बा भूत कहलनि — "गाछ पानि पढ़ि रहल अछि।"

मुदा संकटमे लोभक आँखि सेहो तेज भेल — चन्द्रपालक ऐपपर नकली सहायता–खाता चमकल, राघवक कोडमे "आपदा अवसर" लिखल गेल।

भोरे धुँधलकामे पानिपर एकटा लम्बा कारी आकृति देखार भेल, दू चमकैत आँखिक संग। बूढ़बा भूत फुसफुसैला — "आब ओ सभो घुरि रहल अछि।" बाढ़ि आबि गेल छल, नाम बचि रहल छल — अगिला सुनवाई पानिक तलसँ उठबाक छल।

अध्याय ९४

गोहि सभक वापसी

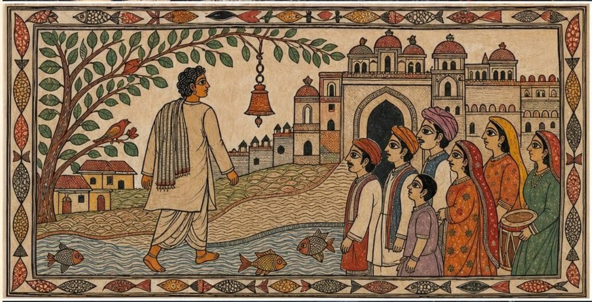

राति पानि तेल जेहन कारी चमकय लागल। पानिपर एकटा लमछर रेखा कटल। लोकक मुँहसँ शब्द निकलल — "गोहि।"

डर पसरल, मुदा अनन्या पाछू नहि हटलीह। ओ कहलीह — "साँस देखू। जे खएबा आयल अछि, से जल्दी करैत अछि। जे सीमा देखय आयल अछि, से साँस रोकि धीरे तैरैत अछि।"

सभसँ पैघ गोहि ठूँठक सीधमे रुकल। ओ आगू नहि बढ़ल, बस डूबल जड़ि दिस ताकैत रहल। बा कहलीह — "ई सभ खएबला मात्र नहि। ई सभ सीमा रखयबला जीव अछि।"

"जेकर नाम नहि भेटल" पाथर पानिमे तैरि क गोहि सभक लग पहुँचल। पैघ गोहि ओकरा हल्लुक धक्का दऽ क वापस कगारपर घुरा देलक। बच्चा सभ लिखला — "अनामक पहरा गोहि द्वारा घुराओल गेल।"

एकटा बूढ़ मल्लाह कहलनि — "हमरा बाबू कहैत छला, गोहि देह खाइत अछि, मुदा झूठक नाव उलटि दैत अछि। नाम दऽ देल जाए, त पानि शान्त होइत अछि।"

बच्चा सभ बाढ़िक पानिमे कबड्डीक गोलाइ बनौला — गोहि सभ बाहरी गोलाइमे, बच्चा सभ भीतरी गोलाइमे — "कबड्डी–कबड्डी।" अनन्या कहलीह — "गोलाइ नहि तोड़ब। नाम नहि छोड़ब। गोहि शत्रु नहि, सीमा अछि।" एकटा बालक पुछलक — "सीमा की? " अनन्या कहलीह — "जतय अहंकार समाप्त होइत अछि आ सुननाइ शुरू होइत अछि।"

रातिक बीच पानि उतरय लागल। पैघ गोहि अन्तमे ठूँठक हरियर बिन्दु दिस देखि, पानिमे पूँछ घुमा क एकटा गोल रेखा बना क अदृश्य भऽ गेल। बा कहलीह — "देखलहुँ? खेल बन्द नहि भेल। पानि खेलक रेखा खिंचि गेल।"

भोरे ईराकेँ विदेशसँ संदेश भेटल — एकटा कम्पनी बाढ़ि–प्रभावित स्मृति–क्षेत्रकेँ "जल–सुरक्षा आ भविष्य–निवास" परियोजनाक लेल कीनबाक प्रस्ताव पठौने छल — फेर वैह लाउ, ब्रूम, चन्द्रपालक जाल। अनन्या कहलीह — "आब ई सभ स्मृति नहि, पानिओ कीनय चाहत।" ईरा उत्तर देलीह — "तखन अगिला पाठ सौदाक होएत।"

गोहि सभक वापसी भयक अन्त नहि, अगिला संघर्षक आरम्भ बनल।

अध्याय ९५

लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

बाढ़िक बीच लाउ किन-हंगक तरफसँ एकटा चमकैत सौदा-पत्र आयल — बाढ़ि-राहत, पाठशाला, स्मृति-भवनक वादा, मुदा सूक्ष्म शर्त छल: अभिलेखक प्रतिलिपि बाहर जमा होएत, बच्चा सभ "प्रशिक्षित स्वयंसेवक" कहल जाएत, भूमि "संयुक्त प्रबंधन" मे जाएत।

ईरा पत्रक एकटा गुप्त हिस्सा पढ़लीह — दूर एकटा "अनाम बसाहट" परियोजना, जतय प्रतिभाशाली लोक सभकेँ भविष्यक सुरक्षित ठामपर लऽ जेबाक प्रस्ताव छल। ओ बुझि गेलीह — ई केवल गाम कीनबाक सौदा नहि, पृथ्वी छोड़बाक स्वप्नक विज्ञापन छल।

पत्र गाम पहुँचल, मुदा अनन्या ओकरा नहि लेलीह। ओ कहलीह — "पहिने ई कागच सुनत।" पत्र बाँसक मचानपर राखल गेल, पानिमे प्रतिबिम्बित होइत।

सत्यव्रत मेहता पढ़लनि — "मानवीय सहयोग," "वैश्विक विशेषज्ञता," "स्थानीय समुदायक सहभागिता।" अनन्या लिखलीह — "जकरा अधिकार चाही, से पहिने सहभागिता कहैत अछि।"

बा कहलीह — "बच्चाकेँ पद देल गेल त बच्चा नहि रहत। पहरुआक नाम बदलल गेल त पहरा बदलि जाएत।"

ईरा कहलीह — "ई गोहिक नव मुँह छी। ई देह नहि चिबाएत; ई धन्यवाद चिबाएत, आ ताहिसँ नाम अपन बना लेत।"

अनन्या निर्णय सुनौलीह — "उत्तर कागचपर नहि देब।" बच्चा सभ मचानपर बैसि, बाढ़िक बीच नाम-पाठ शुरू केला — सरयू, उज्ज्वल, गंगेश — प्रत्येक नाम पानिपर अलगे टनकैत छल।

राति लाउक भवनमे सौदा-पत्रक कोना अपने भीजि गेल। ओ छूइ क कहलनि — "ई सभ मूल्य नहि माँगैत... ई सभ अपन पृथ्वीयो छोड़य नहि चाहैत।" ई वाक्यसँ हुनकर "अनाम बसाहट" योजना पहिल बेर काँपल।

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह — "सौदा आयल, सुनल गेल, अस्वीकार नहि कहल गेल; ओकरा नाम सुनबाक दंड देल गेल।"

तखने बाढ़िक अन्हारमे बटुकनाथ हरिहरन खाली हाथ मचान दिस आयला। ओ काँपैत कहला — "हमरा एक राति नाम सुनय दियौ। हमरा अपन कानक जाति बदलबाक अछि।" अगिला राति हुनकर देरसँ आयल क्षमाक परीक्षा होयबाक छल।

अध्याय ९६

बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

तेसर दिन बटुकनाथ हरिहरन असगरे, बिनु गाड़ी, बिनु अधिवक्ता आयला। हुनकर पएरमे धूलि लागल छल — धरती पहिल बेर हुनका पकड़ने छल।

ओ सत्यव्रत मेहतासँ कहला — "हम क्षमा माँगय आयल छी।" सत्यव्रत उत्तर देला — "हमरासँ नहि। एतय जकर नाम पढ़ल जाइत अछि, ओकरा सभसँ।" अनन्या जोड़लीह — "एतय कानूनी रूपेँ नहि, नामक रूपेँ सुनल जाएत।"

बटुकनाथ ठूँठक कगार लग बैसि गेला, "जेकर नाम नहि भेटल" पाथरक सोझाँ। पहिल नाम पढ़ल गेल —— सरयू। बटुकनाथ काँपि गेला —— हुनका मोन पड़ल जे तारीख कहब कतेक बेर मृत्युकेँ दोसर बेर मारब होइत अछि।

दोसर नाम उज्ज्वल। तेसर मुन्ना पासवान। हर नामक बाद उपस्थित लोक कहैत —— "उपस्थित।" बटुकनाथ पहिने अपन बचाव बनबैत रहला, मुदा राति गहींर होइत बचावक तर्क थाकि गेल।

जखन "गंगेश" नाम आयल, बटुकनाथ अचानक बाजि उठला —— "हम अपराधी छी।" अनन्या पुछलीह —— "ककरा प्रति?" बटुकनाथ कहला —— "नामक प्रति। हम नामकेँ मामला बनौलहुँ, मनुष्य नहि।"

एकटा युवक क्रोधसँ चिचिआयल —— "एखन कहैत छी? जखन सभ मरि गेल?" मीरा कहलीह —— "क्रोध सेहो उपस्थित अछि। ओकरो ठाम चाही।"

अन्तिम नाम —— "अनाम" —— पढ़ल गेल। बटुकनाथ "उपस्थित" कहय चाहला, मुदा कंठ सूखल छल। बहुत प्रयत्नक बाद फुसफुसाहट आयल —— "उपस्थित।"

सूर्योदय भऽ रहल छल। बटुकनाथ पुछला —— "हमरा क्षमा भेटल?" अनन्या कहलीह —— "क्षमा निर्णय नहि। अभ्यास अछि। काल्हि फेर नाम पढ़ल जाएत। आउ।"

बटुकनाथ पहिल बेर बिनु उत्तरक घुरला —— खाली हाथ, मुदा ओ खाली हाथक भार हुनका जीवनक सभ पदक भारसँ अधिक लागल।

ओहि भोर चन्द्रपाल बत्राक फोनपर खाता-बहीक स्क्रीन अपने खुजि गेल। हर पंक्तिमे "क्रेडिट," "डेबिट" क ठामपर एकहि शब्द चमकय लागल —— "माध्यम।" चन्द्रपाल निन्नमे बुदबुदैला —— "हम त पैसा घुमेलहुँ मात्र।" स्क्रीन उत्तर देलक —— "म्यूल।" अगिला कथाक दरबाजा खुजि गेल छल।

अध्याय ९७

चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

चन्द्रपाल बत्रा राति भरि नाम सुनय नहि गेला, बल्कि अपन पुरान कोठलीमे असगरे बैसल रहला। मेजपर पुरान खाता–बही, बंद मोबाइल, आ चन्ना गाछीक पाथरसँ आयल एकटा धूलिक कण छल।

ओ सोचय लगला — जीवन भरि ओ बहुत खाता खोलने छला, मुदा असलमे ओ अपनहि खोलाओल गेल छला। ओ अपनाकेँ मालिक बुझैत रहला, मुदा ओ केवल बाट रहला — धन एक ठामसँ दोसर ठाम बहैत रहल, पाप एक हाथसँ दोसर हाथ बदलैत रहल।

गंगेशक प्रश्न हुनका बेचैन कऽ रहल छल —– प्रमाण केना? हुनका बुझायल —– ओ खच्चर जेहन छला जे बोझ ढोइत अछि, मुदा बोझक मालिक नहि होइत।

ओ अपन नाम लिखय लगला —– "चन्द्रपाल बत्रा।" हाथ रुकि गेल। कलम अपने–आप दोसर पंक्तिपर लिखलक —– "प्रतिशत।" तेसर बेर हाथ काँपल, ओ लिखला —– "चन्द्रपाल बत्रा, म्यूल अकाउंट... जकरा मार्फत पाप गुजल।"

दरबाजापर दस्तक भेल। भीतर एकटा भीजल पात ससरि आयल, जाहिपर लिखल छल —– "ककर खाता छल?" चन्द्रपाल लिखला —– "हमर सेहो।"

ओ पानिमे तैरैत खाता सभकेँ देखला, जे छोट–छोट गोहि जेहन देखार भऽ रहल छल —– मुँह खोलि धन नहि, नाम चिबा रहल छल। ओ सोचला —– यदि सभ खाता खुजि जाए, त समाजक चेहरा केहन देखार होयत?

ओ अपन बंद मोबाइल उठा क लिखला —– "हम माध्यम छलहुँ, मुदा निर्दोष नहि।"

भोरे चन्द्रपाल अपन खाता–बही, पात सभ कपड़ामे बान्हि, पानिमे लंगड़ाइत चन्ना गाछी दिस चलला। मनमे कहला —– "हमर नाम पूरा लिखू, मुदा हमर प्रतिशत सेहो लिखू। जकरा मार्फत पाप गुजल, ओकरा केवल पीड़ित नहि, अपराधक बाट कहू।"

ओहि क्षण पानिमे हलचल भेल —– गोहि नहि देखार भेल, मुदा पानि अलग भेल, जेना नदी कहि रहल हो —– खाता आब खुजबाक शुरू भेल। ठूँठ लग पहुँचलापर राघवक फोनसँ अन्तिम चमक उठल —– "संदेश नहि मेटत।"

अध्याय ९८

राघवक अंतिम संदेश

राघव सिग्नल सोमानीक कोठलीमे पाँच यंत्र जरि रहल छल। ओ बहुत रास संदेश लिखला, मुदा मेटबैत रहला — "खाता बन्द करू," "नब मार्ग खोलू।"

ओ आँखि मूनला, त हुनका एकटा विशाल अन्हार कोठली देखार भेल, जाहिमे हजारो मेटाओल संदेश पात बनि लटकल छल — गायब संदेश गायब नहि भेल छल, ओ सभ चन्ना गाछीक दोसर देहमे पात बनि गेल छल।

ओ अपन पूरा नाम "राघव सोमानी" लिखय चाहला, मुदा स्क्रीनपर उभरल — "राघव सिग्नल सोमानी।"

अंततः ओ लिखला — "हमरा भय लगैत अछि।" ई संदेश गेल। उत्तर आयल — "उपस्थित।" ई एक शब्दमे ठूँठक चारूकात बैसल बच्चा सभक स्वर सुनार भेल।

ओ फेर लिखला — "खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।" ई सन्देश मेटैलक नहि। हरियर रेखा उगि आयल, अक्षर पातक शिरा जेहन बनि गेल। कोठलीमे कच्चा हरियरक गन्ध पसरल। राघव डेराइ क मोबाइल फेकि देला। परदासँ एकटा छोट हरियर पात अलग भऽ क हवामे उड़ि गेल।

एतबे दूर गढ़ नारिकेलमे राति ठूँठक कगारपर एकटा पात आबि चिपकल — "खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।" अनन्या पातक नीचाँ एकटा पाथर राखि लिखलीह — "प्रतीक्षा।"

राघव अपन साधारण कागचपर लिखय बैसला — "हम जे चुप रखलहुँ, से अपराध छल।" कागच पूरा नहि भेल — पहिल पंक्तिपर ओ ठमकि गेला। सत्य लिखबाक अभ्यास हुनका नहि छल।

सत्यव्रत मेहता पात देखि कहला — "ई गवाही नहि, गवाहीक दुआर अछि।" अनन्या पुछलीह — "गवाही के देत?" सत्यव्रत उत्तर देला — "जे समय पर नहि बाजल, से पहिने। हमहुँ।"

साँझमे पात हल्लुक हिलल — नीचाँ एकटा सूक्ष्म पंक्ति उभरल — "सुनबाक ऋण बाँकी अछि।" सत्यव्रतक हाथ अपने-आप अपन झोरा दिस गेल, जाहिमे पुरान रजिस्टर आ स्याहीकलम छल।

अध्याय ९९

सत्यव्रत मेहताक गवाही

राघवक पात–बनल संदेश ठूँठपर रहि गेल —— "खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।" अनन्या कहलीह —— "आत्मा खुलब तखन भेल जखन गवाही देल जाए।"

ई सुनि सत्यव्रत मेहता काँपि उठला। जन–संहितामे लिखल छल —— "जे सुनत, से अपन मौनक नामो लिखत।" ओ झोरासँ एकटा उज्जर पन्ना निकालि लिखला —— "सत्यव्रत मेहताक गवाही।" अनन्या पुछलीह —— "पद नहि लिखब? " ओ कहला —— "पद जतेक भारी होइत अछि, मनुष्य ओतेक बेर ओकर पाछू नुका जाइत अछि।"

ओ काँपैत हाथें लिखला —— "हम अनेक बेर समय पर बाजि सकैत छलहुँ, मुदा नहि बाजलहुँ।"

ओ आगू लिखला —— "जखन पुलक मजदूरक नाम सूचीसँ हटाओल गेल, हम लिखलहुँ —— प्रक्रिया चलि रहल अछि। प्रक्रिया चलैत-चलैत देह सड़ि गेल।"

ओ गंगेशक स्मरण जोड़ला —— "प्रमाणक सूक्ष्मता यदि जाति, श्रम, गरीब, मृतकक विरुद्ध होय, त ओ न्याय नहि, चतुराई रहि जाइत अछि। हम सेहो अनेक बेर असुविधाजनक सत्यकेँ 'प्रक्रियात्मक कठिनाई' कहि काटलहुँ। ई हमर मौनक जाति-व्यवस्था छल।"

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह —— "मौनक जाति-व्यवस्था।"

अंतमे ओ लिखला —— "हम एहि बातक क्षमा माँगैत छी, मुदा क्षमा माँगनाइ पर्याप्त नहि। हमर पदक इतिहास, हमर निर्णयक विलम्ब —— सभक नाम सार्वजनिक हो।"

ओ पन्ना अनन्याक हाथमे देला। अनन्या ओकरा नाम सभक बीच पाथरक गोल घेरामे राखलीह।

बूढ़बा भूत पहिल बेर पूरा आकृतिमे देखार भेला —— माटिक रंगक, न कारी न धूसर। ओ सत्यव्रतकेँ कहला —— "गवाही लिखलहुँ। आब सुनब? सुननाइमे कान मात्र नहि, हाथो चाही। अगिला बेर जखन ग्राह पकड़त, गजकेँ केवल पुकार नहि, पकड़बाक हाथ सेहो चाही।"

राति सत्यव्रतक गवाही रजिस्टरक बीचमे चिपका देल गेल —— "मौन, जे आब सुनबाक दंडमे बैसल अछि।" बच्चा सभ एक स्वरमे कहला —— "उपस्थित।"

अध्याय १००

गज, ग्राह, आ बचाक हाथ

राति बा कहलीह —— "आइ गज–ग्राहक कथा फेर कहू।" अनन्या पुछलीह —— "गज के? ग्राह के?" मीरा कहलीह —— "जँ बिनु अनुमति कियो कहय जे हम तोहर उद्धार करैत छी, त ओ हाथ नहि, दोसर ग्राह अछि।"

अनन्या रजिस्टरमे शीर्षक लिखलीह —— "गज, ग्राह, आ बचाक हाथ।"

उज्ज्वलक माय अपन कथा कहलीह —— "हमर बेटा पुकारलक, मुदा हम सभ ओकर पुकारकेँ पहिने लाज मानलहुँ, फेर चुप्पी। हाथ अबेरसँ बढ़ल।" देविका कहलीह —— "आइसँ डिजिटल ग्राहक चिन्हारि केवल अपराधक पाठ नहि रहत। जे पुकार डरमे दबल अछि, तकरा पहिने सुनू।"

आरुणि मजदूरक कथामे कहला — "असली ग्राह ओ कागच छल जाहिमे मजदूरक नाम मजदूरीक पंक्ति बनि गेल। ग्राह केवल जबड़ा नहि, भाषा सेहो होइत अछि।"

मीरा कहलीह — "हमरा लेल गज ओ स्त्री अछि जकर निजता पकड़ल गेल। ग्राह पूरा समाजक ओ आँखि अछि जे देखय चाहैत अछि मुदा मान देबय नहि चाहैत।"

बूढ़बा भूत कहलनि — "कखनो अपराधी सभक भीतर सेहो एक गज फँसल रहैत अछि। मुदा ओ गज मुक्त होएबासँ पहिने अपन ग्राहक नाम लैत अछि कि नहि — से देखल जाए।"

बटुकनाथक भीतरक गज कागचमे फँसल छल। बच्चा सभ पुछलक — "नाम पूरा कहू।" बहुत काल बाद हुनकर मुँहसँ मात्र "बटुक" निकलल। ई मुक्ति नहि छल, स्वीकारक आरम्भ छल।

चन्द्रपाल बत्रा पुछल गेलापर पहिने "कमिशन" कहला, फेर "चन्द्रपाल।" अनन्या लिखलीह — "नाम कहब पर्याप्त नहि, नामक ऋण सुनब बाकी।"

राघव सिंग्गल कबड्डीक रेखा पार करय चाहला, मुदा साँस रोकि "कबड्डी" कहि नहि सकला। मीरा कहलीह — "जे जीवन भरि दोसराक आवाज मेटौलक, ओकरा पहिने मौनक भार सहय पड़त।"

लाउ किन–हंगक भीतरक गज पृथ्वी छोड़ि भागय चाहैत छल — दोसर ग्रह दिस। बा कहलीह — "जे पृथ्वीपर नामसँ डरैत अछि, से अनाम आकाश खोजैत अछि। मुदा नामक पहरा ओतहु पहुँचि सकैत अछि।"

बच्चा सभ कबड्डी खेलला। अनन्या रेखा पार कयलीह। पानिक भीतरसँ एकटा ग्राहक छाह पुछलक — "बचाएब? " अनन्या कहलीह — "पहिने नाम कहू।" तखन गजक स्वर आयल — "उपस्थित।" ग्राहक दाँत ढील पड़ल — ई उद्धार नहि, न्यायक पहिल स्पर्श छल।

भोरे ठूँठक हरियर बिन्दु दूटा नव पातमे फूटि आयल। कथा आब गाम, पुल, अदालतसँ आगू, दोसर ग्रह दिससँ आयल पुकार धरि पहुँचि रहल छल।

अध्याय १०१

अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

गज-ग्राहक कथाक बाद राति गहींर भऽ गेल। आरुणि ठूँठ लग बैसल-बैसल एकटा विज्ञापन पढ़ैत निन्ना गेला — "नव-क्षितिज मानव-निवास: दुःख-विहीन नब आरम्भ।"

सपनामे हुनका एकटा उज्ज्र ग्रह देखार भेल। ओतय नदी नहि, गाछक जड़ि नहि; हर घरपर नामक बदला संख्या छल। लोक सभ मुस्कुराइत छल, कारण हुनका सभकेँ अपन कोनो हानि मोन नहि छल — दुःखक स्मृति मेटा देल गेल छल।

आरुणिकेँ बुझायल —— विस्मृति सेहो हिंसा होइत अछि: जखने पीड़ा बिसराइत अछि, अपराधी अपन हिसाबसँ मुक्त भऽ जाइत अछि।

बाक स्वर आयल —— "जकर नाम नहि, ओकर माथपर हाथ केना राखबहक?" अनन्या पुछलीह —— "ई लोक सभ समान अछि, कि सभकेँ एक्के बेर बेनाम कएल गेल अछि?"

मीरा दीवारपर लिखल "सांस्कृतिक स्मृति–नमूना" पढ़ि कहलीह —— "हम नमूना नहि छी। हमर कथा हमर अनुमति बिनु कतहु नहि जाएत।"

दूर एकटा काँचक कोठलीमे लाउ किन–हंग हस्ताक्षर करय गेला, त हुनकर अपन नाम पन्नासँ पोंछा गेल। चन्द्रपालक "प्रतिशत" बचल, "चन्द्रपाल" मेटायल; बटुकनाथक उपाधि बचल, "बटुक" मेटायल। पलायनक स्वप्न पहिने अपराधीक परिचय खाइत छल।

आरुणि बुझला —— ई कोनो विज्ञान–यात्रा नहि, अपराध–जालक अगिला चाल छल: मनुष्यकेँ सुरक्षित करबाक नामपर ओकर इतिहासकेँ अनुपयोगी बनाउ।

अनन्या हुनकर हाथ पकड़ि कहलीह —— "रेखा पार करब, मुदा एकटा नाम संग घुरब।" ओहि वाक्यसँ चमकैत ग्रहक आमंत्रण भविष्य नहि, प्रश्न बनि गेल।

अध्याय १०२

स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

बच्चा सभक छाह स्वप्नक अनाम ग्रहपर उतरि गेल। अनन्या नियम बनौलीह — जे रेखा पार करत, ओ एकटा विस्मृत नाम खोजि घुरत; जे नाम बिसरत, ओकर पारी समाप्त।

ओ स्वयं काँपैत कहलीह — "उज्वल" — आ पहिल डेग राखलीह।

गुम्बदक पहरुआ सभक चेहरा नहि छल, छातीपर संख्या छल। ओ सभ कहलक — "नामसँ दुःख जन्मैत अछि, नाम छोड़ू।" मीरा उत्तर देलीह — "दुःख नामसँ नहि, नामपर कएल अत्याचारसँ जन्मैत अछि। ई देह हमर अछि; एकरा प्रमाण बनाउ, तमाशा नहि।"

सत्यव्रत रेखा पार करय गेला त पहिने "अधिकारी," "साक्षी" कहला — रेखा नहि खुजल। अंततः ओ कहला — "हम ओ मनुष्य छी जे देखि क अबेर धरि चुप रहलहुँ।" रेखा कने सरकल।

आरुणि माटिपर हाथ राखला — गन्धहीन, जीवनविहीन। हुनका बुझायल — प्रमाणक शृंखला केवल उपकरणसँ नहि बनैत, हर कड़ीक पाछू एक मनुष्यक नाम होइत अछि।

अनन्या गुम्बदक बीच पहुँचि खाली दीवार छूलीह आ फुसफुसाइत कहलीह — "उपस्थित।" दीवारमे पहिल स्पष्ट दरार पड़ल।

दरारक पारसँ जलक गन्ध आयल। स्वप्नक स्मृतिहीन ग्रहमे पहिल बेर पृथ्वीक पानि प्रवेश केलक। खेल समाप्त नहि भेल; नाम–पाठ आरम्भ भेल।

अध्याय १०३

स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

दरारक भीतर एकटा विशाल सभागार छल, जाहिक दीवारपर केवल संख्या छल — ३०, ३००, ७९१। अनन्या पहिल नाम पढ़लीह, त संख्याक पाछू चेहरा नहि, सम्बन्ध उभरल — ककरो माय, ककरो बच्चा। नाम संख्याकेँ मनुष्य बनबय लागल।

मीरा स्त्री सभक नाम पढ़लीह, हर नामक बाद जोड़लीह — "हुनकर अनुमति बिनु हुनकर कथा नहि।"

बटुकनाथ अपन स्वप्न-दरबारमे बैसल छला। हुनका पहिल बेर बुझायल — हुनकर असली भय लोभ नहि, सम्मान छिनि जेबाक डर छल।

चन्द्रपालकेँ अपन बचपनक ओ दिन मोन पड़ल जखन शिक्षक हुनकर नाम गलत पढ़लनि आ ओ घर आबि रोय लगला। ओही अपमानक स्मृति राखितो ओ हजार लोकक नामकेँ प्रतिशत बना देने छला — आत्मदया हुनकर उद्धार नहि बनल, उनटे पाखंड स्पष्ट भेल।

राघव जतेक संदेश मेटौलक, सभ दीवारपर फेर लिखा जाइत छल। ओ कान बंद केलनि, मुदा मेटाओल आवाज भीतरसँ अबैत रहल।

लाउ किन-हंग कहलनि — "नाम बाजार रोकैत अछि।" अनन्या उत्तर देलीह — "हँ, कारण नाम हिसाब माँगैत अछि।"

आरुणि रजिस्टरक खाली पंक्तिपर लिखलनि — "जेकर नाम एखन नहि भेटल।" दीवारक सभसँ पैघ संख्या टूटि गेल।

नाम-पाठक बाद ग्रह नष्ट नहि भेल। ओकर चमक मात्र उतरि गेल, आ भीतर साधारण धूसर माटि देखार भेल। स्मृति घुरितहि आदर्शलोक समाप्त भेल; तखने असली जीवन शुरू होएबाक संभावना जागल।

अध्याय १०४

जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

आरुणि चौंकि क जागला। भोरक उजास ठूँठपर छल। अनन्या, मीरा, सत्यव्रत, बच्चा सभ सेहो ओतहि छल — सभकेँ वैह खाली दीवार, वैह "उपस्थित" क दरार मोन छल।

बा कहलीह — "कतेक दूर जाएब लेल देहक चलब जरूरी नहि। मुदा जागलापर डेग पृथ्वीए पर राखय पड़ैत अछि।"

मीरा लाल डोरी फेर बान्हलीह — "हमर कथा बचत, मुदा हमर अनुमति संग।" सत्यव्रत लिखलनि — "विस्मृति कोनो पुनर्वास नहि।"

आरुणि जाँच केला — "नव–क्षितिज" कोनो असली ग्रह–योजना नहि छल, अपराध–जालक प्रचार–परीक्षण छल — लोकक भय आ पलायनक इच्छा मापबाक डिजिटल अभियान। ब्रूम, लाउ, चन्द्रपाल, राघव सभटा एहिमे जुड़ल छला।

बच्चा सभ निर्णय लिखला — "हम दुःख नहि मिटाएब; दुःखक कारण बदलाएब। हम पृथ्वी छोड़ि अपराधकेँ निर्दोष नहि करब। जकर नाम काटल गेल, ओकरा फेर लिखब।"

बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघवक लेल ई निर्णय क्षमा–पत्र नहि छल — हुनका सभकेँ नाम घुरएबाक श्रम देल गेल — फाइल खोलू, आवाज सुनू, जिनका अदृश्य कएलहुँ हुनकर सामने ठाढ़ होउ।

चन्ना ठूँठक कोंपलपर ओस चमकल। अनन्या ओकर नीचाँ लिखलीह — "पृथ्वी चुनैत छी — किएक त एतहि उत्तर देबाक अछि।"

अध्याय १०५

पृथ्वीक पहिल पहरा

अनन्या ठूँठक छाल छूलीह। हुनकर हाथमे स्वप्नमे देखल नील धूलि लागल छल, मुदा जखन ओ धूलि चन्ना गाछीक भीजल जड़िपर पड़ल, त माटि ओकरा तुरन्त पीबि लेलक। अनन्या बुझि गेलीह — नामविहीन धूलि धरतीपर टिकैत नहि; ओकरा माटिक इतिहासमे घुलबाक पड़ैत अछि।

बा कहलीह — "जे धरती चुनैत अछि, ओ केवल माटि नहि चुनैत। ओ अपन मृतक, अपन अपराध, अपन नदी, अपन असफलता — सभ चुनैत अछि।"

सत्यव्रत अपन शपथपत्रमे नव पंक्ति जोड़लनि — "धरती छोड़ि मुक्ति नहि भेटत; धरतीपर नाम बचा क मुक्ति खोजल जाए।"

बटुकनाथकेँ बच्चा सभ केवल एकटा काज देला — पुरान फाइलमे दबाओल नाम खोजू। बटुकनाथ पहिल बेर बुझला जे दंड कखनो–कखनो अपमान नहि, श्रम होइत अछि।

देविका चन्द्रपालकेँ कहलीह — "जतय–जतय तोहर माध्यमसँ नाम लूटल गेल, ओतय ओ नाम वापस लिख।" चन्द्रपाल कहला — "हमरा लिखब नहि अबैत।" अनन्या उत्तर देलीह — "तखन सुनू। लिखनिहार बच्चा सभ अछि।"

राघवक अन्तिम पात ठूँठपर चिपकल रहल। बच्चा सभ ओकर नीचाँ लिखला — "आत्मा खुलबाक पहिल प्रमाण: जिनका अहाँ अदृश्य कएलहुँ, हुनका देखू।"

अनन्या कबड्डीक नव नियम पढ़लीह — "एक साँस धरतीक लेल, एक साँस पानिक लेल, एक साँस नामक लेल, एक साँस जिनका नाम नहि भेटल हुनका लेल। जे साँस तोड़त, ओ बाहर नहि, सुननाइमे बैसत।"

राति ठूँठ लग राखल पाथर सभ हल्लुक आवाज करय लगला — माटिक भीतरसँ उठल सामूहिक सहमति। बा कहलीह — "धरती पहरा स्वीकार कऽ रहल अछि।"

भोरे बच्चा सभ पहिल पहरा लिखला — "पृथ्वी छोड़ब नहि। पृथ्वीकेँ बचाएब। जकर नाम मेटत, ओकर नाम फेर लिखब।"

एकटा बच्चा कहलक — "हम धरतीपर छी।" दोसर उत्तर देलक — "उपस्थित।" तेसर कहलक — "पहरा शुरू।" चन्ना गाछीक ठूँठ, जे आब गाछ नहि रहल, मुदा गाछ बनबाक संकल्प रखैत छल, भोरक हवामे नमहर साँस लेलक।

अध्याय १०६

बीजक गवाही

भोरे बा नव बात कहलीह — "नामक पहरा राखलहुँ, आब बीजक पहरा राखू।" ओ माटिपर गोल बना क कहलीह — "जे नाम मेटैत अछि, से बीज सेहो मेटैत अछि। मुदा जँ बीज चिबायल गेल, त अगिला पीढ़ीक मुँहमे शब्दो कतयसँ जन्मत?"

दुपहरमे पाठशालाक चटाइपर बीज राखल गेल — धानक, तिलक, मडुआक, मखानक। हर बीजक संग ओकर कथा पूछल गेल — के राखैत छल? कोन ऋतु? कोन गीत?

देविका कहलीह —– "जे सभ स्वप्नक अनाम ग्रहक बात करैत अछि, ओ सभ बीजक नाम चोरएबाक तैयारीमे अछि।"

बूढ़बा भूत हँसि क कहलनि —– "बीज जाति नहि पूछैत। धान चर्मकारक हाथमे राखू, ब्राह्मणक हाथमे राखू —– जे माटि, जल, श्रम आ समय देत, ओकरा संग उगि जाएत। मनुष्ये अपने माथमे बाँसक बाड़ लगौलक।"

साँझमे स्त्री सभ अपन–अपन घरसँ पुरान डिब्बा, माटिक हाँड़ी, कपड़ाक गठरीमे बीज लऽ क आयली —– "ई हमर सासुसँ भेटल। ई अकालक वर्ष बचल।" मीरा कहलीह —– "जे बीजक कथा अहाँ नहि चाही साझा करब, से नहि करब। बीजक निजता सेहो अछि।"

तखने एकटा सरकारी जीप आयल —– "उन्नत बीज–संग्रह आ जलवायु–सुरक्षा प्रकल्प।" स्थानीय बाबू कहलक —– "पुरान बीज सभ सुरक्षित बैंकमे राखल जाएत।" देविका पुछलीह —– "नाम संग जाएत?" बाबू कहलक —– "क्रमांक संग।" ठूँठक कोंपल काँपि उठल।

गोप कुमार टेबलेटपर देखलनि —– बीजक कोड, जाति, "व्यावसायिक संभावना" सभ लिखल छल। ओ कहलनि —– "ई संरक्षणक सूची नहि, अधिग्रहणक सूची अछि।"

बा जीप लग जा क पुछलीह —– "बीज लऽ जाएब? पहिने ओकर गीत गाबू। कतेक बून्द पानि चाही, कहू।" अधिकारी चुप रहला। बा कागच सूँघि कहलीह —– "एहिमे माटिक गंध नहि, तिजोरीक गंध अछि।"

राति सत्यव्रत मेहता कागचमे ब्रूमक पुरान दान–पत्रक हस्ताक्षरक छाह देखलनि। भोरे अनन्या रजिस्टरमे शीर्षक लिखलीह —– "बीजक चोरी।" पहरा आब नामसँ बीज धरि पहुँचि गेल छल।

अध्याय १०७

बीजक चोरी

सुरमणी काकी एकटा पुरान पीतल डिब्बी लऽ क आयली, जाहिमे "डूबल-साँस" धान छल — "हमर माय कहैत रहथि, ई धान बाढ़िमे तीन दिन पानि सहैत अछि।"

दुपहरमे नगरसँ अधिकारी आयला — "देशज बीज-संरक्षण एवं अन्तर-ग्रहीय अनुकूलन अध्ययन।" अनन्या पुछलीह — "भंडार कतय? " गोप कुमार छोट अक्षरमे पढ़लनि — "आवश्यकता पड़लासँ बाह्य आवासीय परियोजनामे उपयोग।" अनन्या पुछलीह — "'नव-क्षितिज'क प्रचार-योजना? " अधिकारीक चेहरा पीयर पड़ि गेल।

मीरा पढ़लीह —– "बीजक 'अनामिकीकरण' कएल जाएत —– गाम, जाति, स्त्री, ऋतु सभ हटा क क्रमांक देल जाएत।"

बा कहलीह —– "पहिने जमीन लेलहुँ, फेर पानि, फेर नाम, आब बीज। अगिला बेर गर्भ सेहो अधिग्रहण करब?"

बच्चा सभ बीजक पात्र सभक चारूकात कबड्डीक गोल रेखा खिंचि देला। अधिकारीक जूता रेखा लग रुकि गेल।

एकटा विदेशी शोधार्थिनी कानि पड़लीह —– "हमरा कहल गेल छल जे ई मात्र जीन–सामग्री अछि।" सुरमणी काकी उत्तर देलीह —– "जीन होय कि जिन्न, पहिने ई हमर माय छी।"

सत्यव्रत मेहता कहला —– "जँ बीज स्मृति, श्रम, आ समुदायसँ बनल अछि, तखन अधिग्रहणसँ पहिने समुदायक जीवित सहमति चाही।" अधिकारी धारा पुछलक। सत्यव्रत कहला —– "एहि ठाम धारा कमला–बलान अछि। धारा पुछब त पानि उत्तर देत।"

साँझमे निर्णय भेल —– कोनो बीज बाहर नहि जाएत जाबत धरि ओकर पूरा नाम, घर, खेत, ऋतु स्पष्ट नहि होय। बच्चा सभ एकर नाम राखला —– "बीजक गवाही।"

राति एकटा पात्रक माटिसँ एकटा प्रश्न उठल —– "हम कतय उगब?" अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह —– "माटिक मुँह।" बीजक चोरी रोकल गेल छल, मुदा आब ओकरा उगबाक ठाम चाही छल।

अध्याय १०८

माटिक मुँह

भोरे अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह — "चारिम पहरा: माटिक मुँह।" गामक खेतक नाम पढ़ल जाय लागल — बरगदाही, मुसहरी किनार, उज्ज़र डिह — जेना मृतकक नाम पढ़ल गेल छल।

हरिहर झा कहला — "हमर ऊपरी खेत शुद्ध अछि, ओतय बीज रोपू।" अनन्या पुछलीह — "शुद्ध ककरा कहैत छी?" हरिहर झा कहला — "ओहि खेतमे कखनो चर्मकार टोलाक लोक जोतने नहि अछि।" सुरमणी काकी कहलीह — "ई दाना भूखक समय जाति नहि पुछैत।"

चर्मकार टोलाक नातिन धीरमती आगू आबि कहलीह —— "हमर घर पाछू परती अछि। जँ बीजकेँ जाति नहि, पानि आ हाथ चाही, त ओतय उगाउ।"

निर्णय भेल जे बीजकेँ पाँच तरहक माटिमे परखल जाए —— "दुखक माटि" (चर्मकार टोला), "पानिक माटि" (मुसहरी), "सहनक माटि" (विधवा बाड़ी), "श्रमक माटि" (मजदूरक खेत), आ "स्मृतिक माटि" (चन्ना ठूँठ)।

चर्मकार टोला पाछूक परतीमे जुलूस पहुँचल —— कोनो नकली भूतक जुलूस नहि, चुप्पे चलनिहार जुलूस। धीरमती कहलीह —— "जँ बीज एतय उगि सकत, तखन सिद्ध होएत जे जीवनक नाक नहि होइत।"

पाँचो क्यारीमे बीज रोपल गेल —— हर क्यारीमे बीजक नाम बजा क। सुरमणी काकी कहलीह —— "ई बाढ़ि–सहन धान।" धीरमती कहलीह —— "ई अशुद्ध कहायल हाथक उजास।" बच्चा सभ कहला —— "उपस्थित।"

पहिल दाना पड़लापर दूर कमला–बलानक पानिमे एकटा गोहिक कारी पीठ उभरि, फेर डूबि गेल। अनन्या लिखलीह —— "गोहि देखलक, खयलक नहि।"

राति धीरमती पुछलीह —— "जँ बीज नहि उगल त?" अनन्या कहलीह —— "तखन फेर पुछब —— माटि की चाहैत अछि। पहरा असफल नहि, अधूरा होएत।"

भोरे पाँचो क्यारीक मेड़पर अनजान निशान देखार भेल —— छोट लोहाक कील, लाल रंगक दाग, माप–फीताक निशानी। अनन्या लिखलीह —— "बीज उगबाक ठाम भेटल, मुदा आब मेड़पर स्वामित्वक गोहि आयल अछि।"

अध्याय १०९

जलक स्मृति

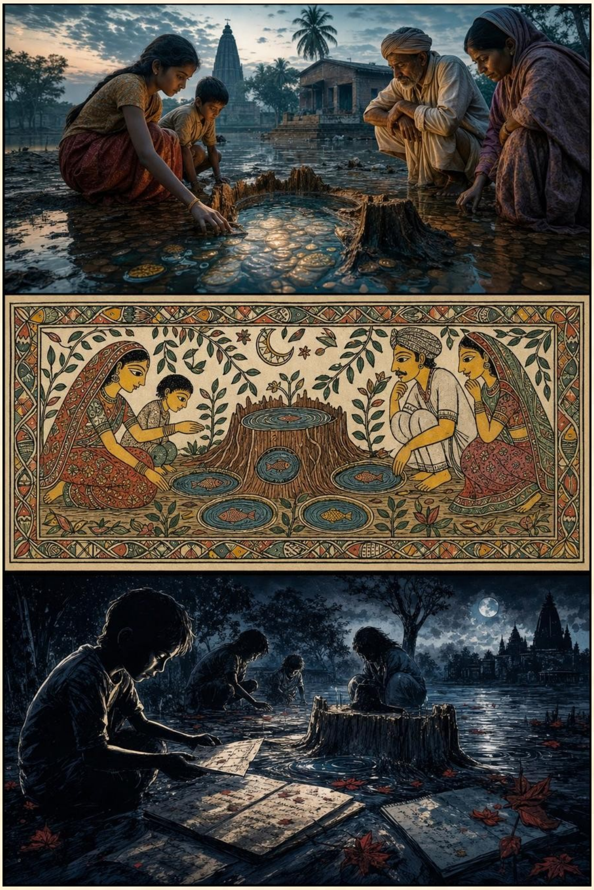

भोरे बच्चा सभ देखलक जे ठूँठक चारूकात छोट-छोट पोखर बनि गेल अछि। पानिक सतहपर नाम तैरैत छल। अनन्या घुटना टेकि पानिमे कान लगौलीह — पानि धीमेसँ बजैत छल — "हम देह राखि नहि सकलहुँ, मुदा अंतिम स्पर्श राखि लेलहुँ।"

बा कहलीह — "पानि बहुत पुरान गवाह अछि। मनुष्य अदालत बनएबासँ पहिने पानिक सोझाँ अपराध करैत छल।"

पनिडुब्बी आबि कहलीह — "माटि जे नाम धरैत अछि, पानि ओकर गति धरैत अछि। आब जलमे मार्ग लिखू।"

बच्चा सभ माटिपर नव नक्शा बनौला — जतय मजदूरक हिसाब नहि भेटल, ओतय गोल तरंग; जतय डिजिटल ठगीसँ धन गेल, ओतय काँचक स्क्रीन।

स्त्री सभ घरसँ लोटामे पानि आनलीह — हर पानिक अलग गन्ध छल। बच्चा सभ ओकरा सूँघि क चिन्हित करय लगला।

सत्यव्रत मेहता पानिमे हाथ डुबौलनि। हुनकर अंगुरीपर छोटका फोका जेहन अक्षर उठल — "मौन," "विलंब," "साक्षी।"

बच्चा सभ पानिक चारूकात नव कबड्डी खेलला — जे रेखा पार करत, ओकरा एकटा नाम उठाबय पड़त। उज्ज्वलक आत्मा पानिक सतहपर नील चमकल आ एकटा बच्चाकेँ कहलक — "हमर मायक रोदन पानिमे आयल। ओकरा लिखू।"

एकटा बूढ़ चर्मकार लोटामे पानि लऽ क आबि कहला — "हमर पुरखा सभक नाम कखनो एहि गाछीमे नहि पढ़ल गेल।" पानिक पहिल बून्द ओहि ठाम राखल गेल। बा कहलीह — "एखन न्याय शुरू भेल।"

साँझमे पानिक छोट पोखर सभ एक-दोसरसँ जुड़ि क ठूँठक चारूकात एकटा वृत्त बनि गेल।

तखने बजार दिससँ एकटा गाड़ी आयल — "पवित्र स्मृति जल: बोतलबंद श्रद्धा।" काँचक शीशामे नील पानि, ऊपर चन्ना गाछीक चित्र। बच्चा सभ चुप भऽ गेला।

अनन्या कहलीह — "पानि बाजि रहल अछि, आ ई सभ ओकरा बोतलमे बंद करय आयल अछि।" सत्यव्रत कहला — "जतय स्मृति जल बनि बिकय लागय, ओतय पहरा आरो कठोर चाही।"

अध्याय ११०

आगिक साक्षी

राति नाम–पहराक ठामसँ धुँआ उठल —— ठूँठक पाछू राखल पुरान कागच–घरसँ। कियो नामक पहरा तोड़बाक लेल आगि लगा देने छल।

बच्चा सभ चिचिआयल नहि, बल्कि एक स्वरमे "उपस्थित" पुकारला। लोक बाल्टी लऽ क दौड़ल। मीरा आरुणिक हाथ रोकि कहलीह —— "सभ बुझा देब त जे जरल, ओकर साक्षी केना भेटत?" देविका आ सौम्या पानि छिड़कि आगिकेँ नियंत्रित रखलीह।

जरैत कागचमे पहिने कारी अक्षर गायब भेल, फेर पाछूक दबायल सच देखार भेल —— "अतिक्रमित रिक्त भू–भाग" क पाछू "स्मारक क्षेत्रक भू–

मूल्यांकन" चमकल। अनन्या लिखलीह —— "आगि झूठक बाहरी स्याही खाइत अछि, भीतरक लोभ छोड़ि दैत अछि।"

गोप कुमार जाँच केला —— कागच–घरक चाबी तीन गोटेक लग छल —— अनन्या, देविका, आ अभिलेख–सेवक हेमनारायण। हेमनारायण गायब छला।

आधी रातिमे हेमनारायण पोखरिक कात बेहोश भेटला। होश आयला पछाति ओ काँपैत कहला —— "हमर बेटाक नाम अस्पतालक देनदारी सूचीमे अछि। हुनका सभ कहलनि, जँ कागच–घर खुजि जाए त कर्ज माफ। हमरा आगि नहि कहल गेल छल।"

बा कहलीह —— "दंड जरूरी, मुदा दंड ओहन जे मनुष्य बचय आ झूठ मरय।" निर्णय भेल —— हेमनारायण एक महीना धरि रातिक नाम–पहरामे बैसता, आ अधजरल नाम फेर लिखबाक श्रम करता।

एकटा अधजरल पन्नापर केवल तीन अक्षर बचल छल —— "सर...," "उज...," "ना..." उज्ज्वलक माय कहलीह —— "अधजरल नामकेँ अधूरा नहि मानू। ओकरा सभटा अनामक नाम मानू।"

देविका कहलीह —— "साधन एक, ध्येय अलग। आगि कियो कागच जराबय अनैत अछि, कियो अन्हार हटाबय।"

एकटा छोट बच्चा पुछलक —— "आगि बजलै, पानि बजलै, माटि बजलै। हवा कखन बाजत?" सत्यव्रत कहला —— "हवा गवाह सभसँ कठिन। ओ ककरो हाथमे नहि ठहरैत, मुदा सभ ठाम पहुँचैत अछि।"

अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह —— "सातम पहरा: हवाक बयान।"

अध्याय १११

वायुक प्रश्न

आगिक साक्षीक बाद गढ़ नारिकेलमे राखि नहि, गंध बचल। भोरे बच्चा सभक रजिस्टरक पन्ना हवासँ अपने उनटल —– "सातम पहरा: वायुक प्रश्न।"

आरुणि पुछला —– "हवाकेँ केना पकड़ब? " गोप कुमार कहला —– "जकरा पकड़ि नहि सकी, ओकरो दूषित कएल जा सकैत अछि।" मीरा जोड़लीह —– "मानक अपमान, निजताक चुगली —– ई सभ सेहो वायुमे उड़ैत अछि।"

बच्चा सभ वायु–पहराक नियम बनौला —– कोनो अपुष्ट बात नहि उड़ाओल जाएत; कोनो गुमनाम आरोप नहि दोहराओल जाएत।

दुपहरमे एकटा लोक अफवाह फैलौलक। अनन्या पुछलीह —— "ई बात अहाँ प्रत्यक्ष देखलहुँ, कि ककरोसँ सुनलहुँ?" रजिस्टरमे लिखल गेल —— "अफवाहक पाँख होइत अछि, जड़ि नहि।"

हवा बटुकनाथक घर धरि पहुँचल आ हुनकर लिखल "माफ करिअ" शब्दपर धूलि उड़ा क लिखलक —— "पहिने सुनू।"

चन्द्रपालक अनुप्रयोगक स्क्रीनपर धूलि जमि क लिखलक —— "नाम छानल नहि जाएत।"

लाउ किन–हंगक शुद्ध–वायु यंत्रक स्क्रीनपर सेहो शीशामे देवनागरीक "उपस्थित" शब्द उभरल —— "ई कोन भाषा छी?" हुनका बुझायल जे जे भाषा ओ पढ़ैत नहि, से हवा हुनका पढ़ि रहल अछि।

साँझमे बच्चा सभ छोट–छोट झंडा बनौला —— सत्य, नाम, निजता, श्रम, जल, माटि, बीज, अग्नि, वायु। बा कहलीह —— "देखू, लिखल बात जँ हवामे जाए, त ओ गीत बनि सकैत अछि; झूठ जाए, त धूलि।"

एकटा बालक, जे पहिने नकली नाम भरने छल, खेलमे उतरि स्वीकार केलक —— "हम झूठ भरने छलहुँ।" रजिस्टरमे लिखल गेल —— "स्वीकार कएल साँस टूटैत नहि।"

राति ठूँठक भीतरसँ धीमा स्वर उठल —— "जकरा अहाँ साँस कहैत छी, ओकर पहरा के करत?" ईरा उत्तर देलीह —— "जँ हम सभ पृथ्वीक हवामे नाम नहि बचाएब, त स्वप्नक अनाम ग्रहपर साँस सेहो भाड़ापर भेटत।"

अध्याय ११२

आकाशक रिक्ति

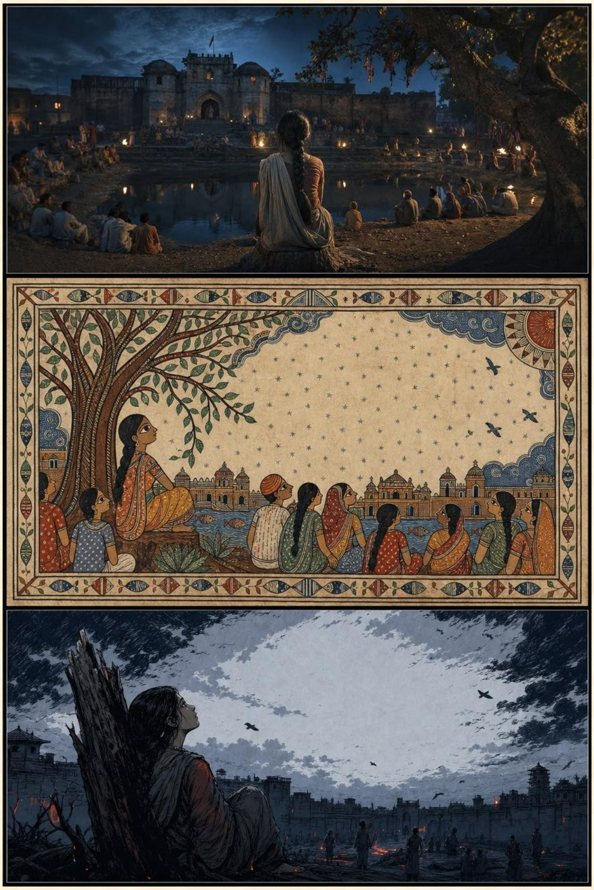

वायुक प्रश्नक बाद भोरे केवल आकाश खुजल — एतेक साफ जेना गाछीक छाँह ऊपरसँ हटि नहि, भीतरसँ उठि गेल होय।

अनन्या ठूँठ लग बैसि ऊपर तकैत रहलीह। हुनका बुझायल — आकाश खाली नहि, सुनबाक सभसँ विशाल पात्र अछि।

एकटा बालक पुछलक — "आकाशक चिन्ह की?" अनन्या कहलीह — "आकाशक चिन्ह रिक्त ठाम अछि — जतय नाम लिखल नहि गेल, मुदा सुनल जा सकैत अछि।"

बूढ़बा भूत कहलनि —– "जे रिक्तता सत्ता बनबैत अछि, से निगलैत अछि। जे रिक्तता स्मृति बनबैत अछि, से ठाम दैत अछि।"

बा कहलीह —– "आकाशपर ककरो पट्टा नहि। जे गामक पाथर छीनि लेत, ओकरा ऊपरक शून्यपर अधिकार नहि। आकाश सभ सुनैत अछि —– बस ओकरा सुनबाक लेल गर्दनि उठाबय पड़ैत अछि।"

नाम–पाठक नव विधान बनल —– जखन कोनो नाम पढ़ल जाए, तखन सभ लोक ऊपर तकत। पहिल नाम पढ़ल गेल। सभ ऊपर तकलक। एकटा पातर उज्जर रेखा आकाशमे खिंचल।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीनपर एकटा वाक्य उभरल —– "जे ऊपर गेल, से डाउनलोड नहि होएत।"

लाउ किन–हंगक शीशापर मिथिलाक आकाश उतरि आयल। ओ बुझला —– पृथ्वी छोड़ि स्वप्नक अनाम ग्रह बनाओल जा सकैत अछि, मुदा आकाशक स्मृतिसँ भागल नहि जा सकैत।

साँझमे कबड्डीक नव रूप खेलल गेल —– रेखा जमीनपर नहि, आकाशमे खिंचल। बूढ़बा भूत मुस्कुरैला —– "खेल आब ऊपर लिखाइत अछि, मुदा साँस एतुक्के रहत।"

मीरा कहलीह —– "आकाशक रिक्तता ओहि स्त्री सभक जगह सेहो अछि जिनकर कथा घरक भीतर दबा देल गेल।" स्त्री सभ राति अपन–अपन अनकहल नाम फुसफुसा क ऊपर छोड़लीह।

राति ठूँठक जड़ि काँपल —– धरतीक भीतरसँ ढोलकक धीमा थाप उठल। बा कहलीह —– "आकाश सुनलक, आब पाताल उत्तर देत।" स्मृति जखन आकाश धरि पहुँचैत अछि, तखन जड़ि भीतरसँ जबाब माँगैत अछि।

अध्याय ११३

शब्दक देह

आकाशक रिक्ति खुजलाक बाद नाम आब पूछय लागल — "हमरा देह कतय अछि?" अनन्या समझौलीह — "जखन झूठ शब्द बनैत अछि, ओकर देह तुरन्त बनि जाइत अछि — फाइल, मोहर, दान–पत्र। मुदा साँच शब्द बनलाक बादो जँ काजमे नहि उतरल, त ओकर देह अधूरा रहि जाइत अछि।"

पाठशालामे "अक्षरक सभा" भेल। पाँच शब्द लिखल गेल — नाम, उपस्थित, न्याय, निजता, पृथ्वी। बच्चा सभसँ पुछल गेल — "एहि शब्दक देह अहाँ की देखैत छी?"

एकटा बच्चा कहलक —— "नामक देह पाथर अछि।" दोसर कहलक —— "नामक देह मुँह अछि।" चारिम बच्चा कहलक —— "नामक देह समय अछि। जँ कियो ठहरय नहि, त नाम फेर मरि जाए।"

गोप कुमार अपन पुरान कागच देखा क कहलनि —— "एहिमे शब्दक देह छल, मुदा आत्मा नहि। 'लाभार्थी' लिखल छल, मुदा लोक गायब।"

सत्यव्रत कहला —— "कानूनमे शब्दक देह मजबूत होइत अछि। मुदा जँ शब्दक देहमे करुणा नहि, त ओ देह मुर्दा देह जेहन अछि।"

अनन्या पाँच शब्दक कातमे पाँचटा खाली घेरा बनौलीह —— पाथर, कान, तुलसी पात, दर्पण, बीज।

ईरा "पृथ्वी" शब्दक आगू बीज राखि कहलीह —— "पृथ्वी शब्दक देह केवल गोल ग्रह नहि; ई भार उठबैत पएर अछि।"

मीरा "निजता" शब्दक आगू दर्पण राखि कहलीह —— "निजता नुकएबाक नाम नहि, अपन चेहरापर अपन अधिकारक नाम अछि।"

बच्चा सभ नव नियम जोड़ला —— "कोनो शब्द बिनु देहक स्वीकार नहि।"

राति कबड्डी खेलैत काल एकटा नव शब्द चमकल —— "करार।" ओकर कोनो देह नहि देखार भेल —— केवल चमक। अनन्या कहलीह —— "ई शब्द खतरनाक अछि। ई बिनु देहक रहि क सभहक देह कीनय चाहैत अछि।"

बूढ़बा भूत कहलनि —— "करारक देह तकू। जँ देह नहि भेटल, त ओकर पेट भेटत।" अगिला भोर गढ़ नारिकेलकेँ बुझबाक छल —— करार कागचपर नहि, ककरा–ककरा हड्डी, जमीन, आ भविष्यपर लिखल जाइत अछि।

अध्याय ११४

अर्थक आत्मा

बूढ़बा भूत चेतौनी देलनि — "शब्दक देह अछि त ओकर रोग सेहो अछि। देहकेँ बचा लेलहुँ, आब अर्थकेँ बचाउ।"

भोरे बजारक चौकपर नव झंडी लागल छल — "उपस्थित अभियान" — सरकारी मोहर आ दानदाताक नामक संग। अनन्या ओकरा देखि कहलीह — "ई शब्द अछि, मुदा ई हमर शब्द नहि। देह वैह रहि सकैत अछि, मुदा आत्मा बदलि सकैत अछि।"

पाठशालामे पाठ बदलल गेल — "शब्द," "अर्थ," "अर्थक पहरा।" बूढ़बा भूत समझौलनि — "जे 'उपस्थित' मृतकक नामपर उत्तर होइत अछि, से एक अर्थ; जे 'उपस्थित' योजना–विज्ञापनपर छपैत अछि, से दोसर अर्थ।"

नगरपालिकाक अधिकारी टोपी बाँटय लगला — "उपस्थित बनू, विरासत बचाउ।" टोपीपर चन्ना गाछीक झूठा हरियर–भरल चित्र छल — गाछीक घाव झँपायल। ईरा पुछलीह — "जे गाछी कटि गेल, ओकरा पूरा देखाएब किएक?" अधिकारी कहला — "सकारात्मक छवि बनएबाक अछि।"

मीरा कहलीह — "हमरा देहक अपमानकेँ सेहो सकारात्मक छवि सँ झाँपल गेल। आब स्मृतिकेँ चमका क विरासत कहल जा रहल अछि। ई अर्थक चोरी अछि।"

साँझमे ठूँठ लग अर्थ–परीक्षा भेल। "विरासत" शब्दक सोझाँ बा कहलीह — "जकरा छूबैत काल हाथ काँपय नहि, से विरासत नहि, सजावट।"

"न्याय" पाथरपर सत्यव्रत कहला — "न्याय तखन जीबैत अछि जखन पीड़ितक समय बचैत अछि। जँ न्याय बरख चिबा जाए, त शब्द रहैत अछि, अर्थ मरि जाइत अछि।"

एकटा बच्चा पर्चा लऽ क दौड़ैत आयल, जाहिमे लिखल छल — "पुनर्व्याख्या" — "जलसमाधि" केँ "जल–धरोहर," "मृतक" केँ "अतीत–अंश," "पीड़ित" केँ "हितधारक" बनएबाक प्रस्ताव।

बूढ़बा भूत फुसफुसैला — "अर्थक हत्या शुरू भेल।" अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह — "पुनर्व्याख्याक दरबार।"

सत्यव्रत उठि कहला — "जखन अपराधी शब्द बदलैत अछि, तखन न्यायकेँ भाषापर पहरा देबय पड़ैत अछि।" अगिला संघर्ष सभसँ सूक्ष्म होएत — अर्थक भीतर।

अध्याय ११५

कण्ठक पहरा

भोरे चौपालमे एकटा नव यंत्र राखल भेटल — "नामक स्वर-संग्रह।" अपनाकेँ "श्रवण-संरक्षक" कहनिहार लोक कहलक — "हम नाम-पाठकेँ ध्वनि रूपमे सुरक्षित करब।" मुदा छोट अक्षरमे लिखल छल — "ध्वनि-अधिकार आयोजक संस्थाक रहत।"

अनन्या पुछलीह — "नाम जकर, आवाज ओकर; तकर अधिकार ककर? " श्रवण-संरक्षक कहलक — "समुदायक हितमे संस्थागत संरक्षण।" बच्चा सभ एकर ठंढापन बुझि गेला।

अनन्या ठाढ़ भऽ क कहलीह —— "जे नाम पढ़त, से पहिने सुनत। जे सुनत, से पहिने अनुमति लेत।"

नाम–पाठ आरंभ भेल। उज्ज्वलक माय धीरेसँ नाम कहलीह। मीरा कहलीह —— "स्वर साफ हेबाक चाही कि मोन साफ?" एकटा वृद्ध कहला —— "हम मशीनक लेल अपन मृतककेँ दुरुस्त नहि करब।"

एकटा बालक, जकर दादा पुल–निर्माणमे गुम भेल छला, नाम कहय चाहलक, मुदा गला रुँधि गेल। अनन्या कहलीह —— "स्पष्ट रोदन सेहो आवाज अछि।" यंत्र ई रोदन नहि पकड़ि सकल, केवल खरखराहट देलक। चन्द्रपाल फुसफुसैलक —— "भावनात्मक ध्वनि मूल्यवान होइत अछि, बचा लिअ।" देविका ई सुनि क सभकेँ कहलीह —— "देखू, रोदनो मूल्यवान माल बनि रहल अछि।"

मीरा यंत्रवला लोकसँ कहलीह —— "एहि ठाम कोनो कंठ बिनु अनुमति कैद नहि होएत।"

सत्यव्रत कहला —— "भविष्यक नामपर वर्तमानक अधिकार नहि छीना जा सकैत।"

बा कहलीह —— "कानसँ सुनल नाम देहमे उतरैत अछि। डिब्बा सुनैत अछि, पेट नहि दुखैत।"

बच्चा सभ नियम लिखला —— "कण्ठक पहरा: कोनो नामक ध्वनि बिनु नामक घरक अनुमति नहि; जीवित कान सर्वोच्च।" यंत्र हटाओल गेल, मुदा अनन्या कहलीह —— "एहि डिब्बाक सेहो नाम लिखू —— लोभक कान।"

राति बिनु यंत्रक नाम–पाठ भेल। असमान स्वर सभमे एकटा सामूहिक लय बनल, जेना कबड्डीक साँस।

अनन्या धीरे कहलीह —— "जतय कंठ नहि, ओतय नामक ठाम नहि।" रजिस्टरक अगिला पृष्ठ अपने–आप खुजल —— "लेखनी।"

अध्याय ११६

मौनक उत्तराधिकार

पाठशालामे एक दिन कोनो पाठ नहि पढ़ाओल गेल। बा कहलीह — "आइ पहिने ओ शब्द पढ़ू जे बाजल नहि गेल।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "जखन हम बाजि सकैत छलहुँ आ नहि बजलहुँ, ओ अपराध छल। मुदा जखन पीड़ित नहि बाजय चाहैत अछि, ओकर मौन अधिकार अछि। एहि दुनूमे भेद नहि बुझल जाए, तखन न्याय फेर गोहि बनि जाइत अछि।"

नगरसँ एकटा आवाज–संग्रहक मंडली आयल, जे कहलक –– "नाम–पाठक मौखिक धरोहर बचायब चाही।" मुदा पर्चामे छोट अक्षरमे लिखल छल –– संग्रहक उपयोग भविष्यक प्रस्तुतिक लेल सेहो भऽ सकैत अछि।

मीरा पुछलीह –– "जकर आवाज अहाँ सभ लेब, ओकरा फेर कियो ओकर अनुमति बिनु बजा सकत?" मंडलीक अगुआ कहलक –– "हम सांस्कृतिक संरक्षण लेल करैत छी।" मीरा उत्तर देलीह –– "संरक्षण जँ कंठकेँ ओकर देहसँ अलग कऽ देत, त ओ चोरी अछि।"

बच्चा सभ नव नियम लिखला –– "जकरा बाजय के इच्छा नहि, ओकर नाम नहि खिंचल जाए। मौन सेहो उपस्थित भऽ सकैत अछि।"

उज्ज्वलक माय खाली पन्नापर अपन चुप्पी राखलीह –– केवल हाथ राखि बैसल रहलीह।

तखने एकटा बालिका आयलीह, जिनकर कंठमे जन्मसँ ध्वनि नहि छल। ओ ठूँठ लग एकटा पात राखलीह, जाहिपर केवल रेखा छल। पात कटोरामे राखितहि हवा उठल, आ रेखा एकटा गोल घेरामे बदलि गेल –– कबड्डीक घेरा। ओ बालिका ठूँठक चारूकात दौड़लीह, साँस रोकने, आवाज बिनु –– आ हुनकर पाछू बच्चा सभ दौड़ल, बिनु "कबड्डी" कहने।

गामक बूढ़ सभ कहला –– "आब भूतक खेल बच्चा सभकेँ मौनमे सेहो सिखा रहल अछि।"

बा कहलीह –– "बिनु न्यायक अदालत देखि चुकलहुँ। बिनु कंठक कबड्डी देखब अहाँ सभकेँ कठिन किएक लगैत अछि?"

राति खाली रजिस्टरक पन्नापर एकटा कारी बिंदु उभरल –– "मौनक बिंदु।" उज्ज्वलक माय ओहिपर हाथ राखि कहलीह –– "आइ हमर बेटा पहिल बेर हमरासँ किछु नहि माँगलक।"

अनन्या अगिला पन्नापर लिखलीह –– "आब आँखिक पहरा।" कारण जँ कंठ बचल, मौन बचल, तखन बजार दृष्टिपर हमला करत।

अध्याय ११७

स्मृतिक ऋण

पाठशालाक भीतपर बच्चा सभ नव प्रश्न लिखला — "जे नाम सुनल गेल, ओकर ऋण के उठाओत? "

अनन्या समझौलीह — "ई ओ ऋण नहि जे पाइसँ उतरि जाए। ई ओ ऋण अछि जे नाम सुनलाक बाद जीवनक चाल बदलल बिनु नहि उतरैत।"

ईरा बच्चा सभकेँ एकटा अभ्यास देलीह — घरसँ एहन नाम आनू जे सम्मानसँ नहि बाजल जाइत। एकटा बालक लिखि क अनला — "चर्मकारणी।" ओकरा पूरा नाम नहि भेटल छल। घरक पुरान लोक कहैत छला — गंगेश उपाध्यायक जीवनमे एक चर्मकारणी छलीह, मुदा ओकर नाम नहि

लिअ। बालक पुछलक — "जँ तत्त्वचिन्तामणि बारह हजार ग्रन्थ बराबर अछि, तकर भीतर ओ स्त्रीक नामक एक अक्षरक ठाम नहि?"

अनन्या भीतपर लिखलीह — "प्रमाणक अभाव ककरा बचबैत अछि?"

बा धीरे बजलीह — "शास्त्रक माथपर माल्यार्पण करब आसान अछि, शास्त्रक देहक काँट छूब कठिन। जे समाज गंगेशक बुद्धि स्वीकार करैत अछि, मुदा हुनकर जीवनक असुविधाकेँ काटि फेकैत अछि, से हुनका आधा मारैत अछि।"

मीरा "चर्मकारणी" शब्दक लगमे खाली ठाम छोड़ि देलीह — "नाम नहि भेटल, तेँ ओकर अनुपस्थितिकेँ नाम बनाउ।"

सत्यव्रत मेहता अपन कापीमे लिखला — "जाति-लाज: स्मृतिहत्या।"

तखन पहराक नियम बनल — हर सुनल नामक संग एकटा काज बान्हल जाएत। मजदूरक नामक लग श्रमक सम्मानक काज, ठगल युवकक नामक लग स्क्रीन-सावधानीक पाठ, चर्मकारणी रिक्तिक लग जाति-सत्यक पाठ। बच्चा सभ कहला — "नाम बिनु काज पाथर अछि; काज बिनु नाम हवा।"

दुपहरमे एकटा अजनबी बाबू "स्मृति-ऋण मुक्ति योजना" लऽ क आयल — पैसा देब, बदलामे नाम-पाठक जगह आधिकारिक स्मारकक कथा स्वीकार करब। अनन्या पुछलीह — "ई ऋण मुक्त करय आयल अछि, कि ऋणक मालिक बनय?"

एकटा वृद्ध कहला — "चर्मकारणी रिक्तिकेँ गंगेशक लग राखब उचित नहि, मर्यादा अछि।" बालक धीरे कहलक — "जँ मर्यादा नाम खाए, त ओ गोहिसँ कम नहि।"

राति कबड्डी नव रूपमे खेलल गेल — जे बालक "कबड्डी" कहि विरोधी घेरामे घुसैत, घुरैत काल ओकरा एकटा काज कहय पड़ैत — "हम जातिक नाम नहि मेटाएब," "हम चर्मकारणी रिक्ति बचाएब।"

बूढ़बा भूत हँसि क कहलनि — "जे ऋण लऽ क घुरैत अछि, से कथा बचबैत अछि।"

मध्यरातिमे "ऋण-मुक्ति" पत्र नम भऽ गेल। तीन शब्द बचल — "मुक्ति ककर?"

अध्याय ११८

देहक अधिकार

विरासत–परियोजनाक लोक एकटा नव सूची लऽ क आयल — "संग्रहणीय वस्तु: चन्ना गाछीक जड़ि–माटि, अस्थि–सदृश अंश, मृतक परिवारक मौखिक सामग्री।" मीरा कागचक कोन दाबि देलीह — "जिनकर देह गेल, हुनकर देहक अवशेष अहाँ सभक प्रदर्शनी नहि।"

देविका ब्रूमक प्रतिनिधिकेँ कहलीह — "संरक्षण ओ अछि जे परिवारक अधिकार सुरक्षित करय। जे दुखकेँ काँचक भीतर बन्द क टिकट बेचय, से संरक्षण नहि, दोसर बेर चिबाएब अछि।"

आरुणि सूची देखि कहलनि — "जे देहक नाम नहि लिखैत, से देहक माटिपर अधिकार नहि पाबि सकैत।"

पाठशालामे "देहक अधिकार" पर विशेष पाठ भेल। अनन्या कहलीह — "जँ ई हाथ ककरो अनुमति बिनु ओकर फोटो खिंचय, ओकर अस्थि उठाबय, तखन ई हाथ पहरुआ नहि, चोर भऽ जाएत।"

मीरा कहलीह — "जखन देहपर दोसराक दावा शुरू होइत अछि, तखन जाति, बजार, धर्म, कैमरा, आ कानून सभ एकहि कुलक देखार होइत अछि।"

बा एकटा पुरान कथा कहलीह — "गाममे लोक गंगेशक बुद्धिक पूजा करैत रहल, मुदा हुनकर जीवनक असुविधासँ डेराइत रहल। समाज विचारक मूर्ति बनबैत अछि, मुदा ओकर देहक विद्रोहकेँ मारैत अछि।"

चर्मकार टोलामे एकटा बाहरी दल कैमरा लऽ क गेल। एकटा वृद्धा कहलीह — "हमरा सभक हाथ लिखू, मुदा हमरा सभकेँ छुअबाक अधिकार ककरा दैत छी, से पहिने पुछू।" कैमरा नीचाँ झुकि गेल।

अनन्या "देह–संहिता" लिखलीह — देहपर पहिल अधिकार देहधारीक; मृत देहक अधिकार परिवार आ गरिमाक संग; जातिक नामपर देहक अपमान स्मृतिक अपराध; ककरो घावपर शोध, कला, दान बिनु अनुमति नहि।

सत्यव्रत लिखला — "न्याय देहसँ शुरू नहि होय, त न्याय शब्दक खेल रहि जाइत अछि।"

साँझमे माटि, कपड़ा सभ परिवार सभकेँ घुरा देल गेल — बिना बेच–बिक्रीक।

राति एकटा पुरान जाति–रजिस्टर, जे बरखोंसँ बंद छल, अपने खुजि गेल। भीतरसँ आवाज आयल — "कुलक प्रमाण के देत?" चन्ना गाछीक ठूँठ एहि प्रश्नपर गरम रहल।

अध्याय ११९

श्रमक देह

आरुणि ठूँठ लग एकटा फाटल मजदूरक जूता, नह, आ मजदूरी–पर्ची राखलनि, जाहिपर नामक ठाम केवल संख्या लिखल छल। अनन्या पुछलीह — "संख्या सेहो नाम होइत अछि?" आरुणि कहलनि — "नहि, संख्या ओतय राखल जाइत अछि जतय मालिक नामसँ डेराइत अछि।"

बच्चा सभ निर्णय लेला — जकर हाथसँ गढ़ नारिकेलक पुल, सड़क बनल, ओकर देहक कथा लिखल जाएत।

झगरू मिस्त्रीक घरवाली आयलीह। हुनकर पति पुलक पायाढ़ारैत काल नदीमे खसला, मुदा कागचमे लिखल गेल — "काम सँ अनुपस्थित।" ओ

कहलीह —– "हमर घरमे जे हाथ चूल्हि धरैत छल, कम्पनीक कागचमे ओ हाथ ओहि दिन काम पर छलहिये नहि।"

गोप कुमार पुरान कागचमे देखौलनि —– "पुरुष ४७, स्त्री ९" लिखल छल, नाम नहि। मीरा कहलीह —– "जखन देहक लिंग लिखि सकैत छी, तखन देहक नाम किएक नहि? "

सत्यव्रत मेहता मजदूर सभक हाथ देखि कहला —– "हम कानूनमे देहक क्षति पढ़ने रही, मुदा आइ देहक श्रम पढ़ि रहल छी।"

भगेलू पासवान कहलक —– "पुल सभकेँ जोड़य बनैत छल, मुदा पुल बनएबला सभकेँ ओहि पुलक छायातर अलग बैसाओल जाइत छल।"

बा कहलीह —– "गंगेश तर्क लिखलनि, मुदा समाज देहक तर्क नहि पढ़लक।" बच्चा सभ लिखला —– "नव्य न्यायक पहिल पाठ: देहक श्रम जातिसँ नीच नहि होइत।"

विरासत-परियोजनाक अभियंता रोजगारक बात कहलनि। आरुणि पुछलनि —– "नाम सहित अनुबंध? " देविका —– "मजदूरी समयपर? " मीरा —– "घायल भेल त उपचारक अधिकार? " अभियंता निरुत्तर रहला। सत्यव्रत कहला —– "मृतकक नाम बचाबय जाइत छी आ जीवित मजदूरक देह फेर अनाम राखब, त ई स्मारक नहि, दोसर अपराध होएत।"

भगेलू कहलक —– "हमरा सभक श्रम सेहो म्यूल एकाउंट बनल छल। पसीना हमर, लाभ दोसराक।"

राति श्रमक नाम-पाठ भेल —– हर नामक संग एकटा श्रम जोड़ल गेल —– "पाया ढारनिहार," "मृत देह घर पहुँचएनिहार।"

अंतमे मजदूर सभक पएर धोयल गेल। एकटा खाली पाथर राखल गेल —– "जे काज करैत अछि, मुदा देखार नहि पड़ैत।"

अध्याय १२०

न्यायक देह

बच्चा सभ नव पन्ना खोलि लिखला —— "न्यायक देह।" एकटा बूढ़ मजदूरिन कहलीह —— "न्याय जँ देह लेल चाहैत अछि, त ओकरा पसीनाक गंध सेहो सहय पड़त।"

बा कहलीह —— "जे न्याय इत्र लगा क अबैत अछि, से बहुधा सड़ल देह झाँपय अबैत अछि।"

आरुणि पुलक पुरान नक्शा जमीनपर पसारि क मजदूरक परिवार सभकेँ कहला —— "जतय-जतय अहाँ सभक लोकक पएर पड़ल छल, ओ ठाम छूउ।"

एकटा गामक कुम्हार माटि आनलक —— कमला किनारक, पुलक पायालगक, चन्ना ठूँठक —— आ माटिक देह गूँथय लागल। बच्चा सभ पुछलक —— "की बनत?" कुम्हार कहलक —— "न्यायक देह। मूर्ति नहि, देह। मूर्ति पूजा माँगैत अछि; देह उत्तरदायित्व।"

मजदूरिन सभ अपन हथेली माटिमे छाप छोड़लीह। आरुणि सेहो अपन काँपैत हथेली माटिमे धँसौलनि।

सत्यव्रत मेहता आगू बढ़ि कहला —— "हमर हाथमे कलमक छाप अछि, पसीनाक नहि। मौनक छाप देब चाहैत छी।" बा कहलीह —— "मौनक छाप हाथसँ नहि पड़त। कान माटि लगाउ।" सत्यव्रत झुकि क माटिपर कान राखि पड़ला।

मीरा आ देविका कैमरा सभकेँ रोकि कहलीह —— "जिनकर देह गुमायल, हुनकर परिवारक अनुमति चाही।"

साँझमे माटिक देह बनल —— एक झुकल आकृति, एक कान धरतीपर, छातीपर खाली स्थान। बच्चा सभ पुछलक —— "छाती खाली किएक?" कुम्हार कहलक —— "एतय नाम सभ फेर–फेर बसत। न्यायक छाती स्थायी सजावट नहि, खुजल घर होयबाक चाही।"

ब्रूमक प्रतिनिधि प्रस्ताव लऽ क आयल —— काँस्य ढलाइ, टिकट–व्यवस्था। अनन्या पुछलीह —— "अहाँ एहि देहक गंध सहि सकैत छी?" प्रतिनिधि उत्तर नहि दऽ सकल।

मध्यरातिमे पहिल खाली पाथर माटिक छातीपर राखल गेल। दरार पड़ल। कुम्हार हँसल —— "दरार खराब नहि। न्याय जँ बिनु दरारक रहत, त भीतरक आवाज केना बाहर आओत?" दरारसँ ओसक बून्द निकलल। बच्चा सभ लिखला —— "न्यायक देह कानि सकैत अछि।"

भोरे कुम्हार देखलक जे खाली छातीपर कोंपलक छाया पड़ल अछि। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलीह —— "सत्रहम पहरा: छाहक विधान।"

अध्याय १२१

जातिक पिंजरा

ठूँठक छायामे एकटा ब्राह्मण परिवारक बूढ़ आयल, हाथमे पुरान वंशावली लऽ क। ओ कहलक — "नाम लिखबाक अधिकार सभकेँ होइते अछि, मुदा कुलक मर्यादा सेहो किछु चीज होइत अछि।" अनन्या पुछलीह — "जँ नाम सुनल जाए, मुदा कुल ओकरा नकारि दिअय, तखन न्याय कतय रहत?"

ईरा गंगेशक कथा फेर कहलीह — "जकर बुद्धिपर समाज गर्व करैत अछि, ओकर जीवनक असुविधाजनक सत्यपर समाज मौन किएक रहैत अछि?"

बटुकनाथ हरिहरन असहज भऽ कहलक — "जीवनक कथा सभ विवादास्पद होइत अछि। महान ग्रंथकेँ महान ग्रंथ रूपमे देखू।" मीरा कहलीह

— "जखन स्त्रीक देहपर समाज निर्णय देत, तखन निजी बात सार्वजनिक बनि जाइत अछि; मुदा जखन विद्वानक जाति–भंजक जीवनपर प्रश्न उठत, तखन निजी कहि चुप्पी? ई न्यायक कोन प्रमाण?"

एकटा प्रतीकात्मक स्वर उठल जे कहलक — "जाति अनुमान नहि, आरोप अछि; जन्म प्रमाण नहि, व्यवस्था द्वारा बनाओल पिंजरा अछि; स्पर्श दोष नहि, भयक राजनीति अछि।"

बच्चा सभ लिखला — "जखन समाज कोनो विचारकक असुविधाजनक जीवनकेँ सम्मानक मूर्तिमे कैद कऽ दिअय, तखन ई शारीरिक हत्या नहि, मुदा स्मृतिहत्या अवश्य होइत अछि।"

आरुणि कहलनि — "जे न्याय पुलक पाया, मजदूरक पएर, स्त्रीक देह धरि पहुँचि सकैत अछि, से जातिक दुआरपर आबि किएक रुकत?"

एकटा मजदूरक युवक अपन माटि लागल हाथ ठूँठपर राखलक। ओकर कातमे ब्राह्मण बूढ़ काँपैत हाथ राखि देलक। दुनू हाथपर ठूँठक माटि एकसमान लागल। बा कहलीह — "देखू, गाछीक देहक कण सभकेँ बराबर रंग दैत अछि। जाति मनुष्य बनबैत अछि; माटि नहि।"

राति बच्चा सभ नव पाठ लिखला — "जाति पुछबासँ पहिने नाम सुनू। कुल बतएबासँ पहिने दुःख सुनू। पवित्रता कहबासँ पहिने श्रम देखू। न्याय लिखबासँ पहिने स्पर्श स्वीकारू।"

एहि पाठक बाद कतेको घरक भीतर रसोइक दुआर कने बेसी खुजल। कतेको इनारक जगतपर पहिल बेर अनचिन्हार पएर बिनु गारिक टिकि सकल।

बटुकनाथ हरिहरन गुप्त चिट्ठी लिखलक — "गंगेश प्रसंगकेँ सीमित राखल जाए।" मुदा चिट्ठी भोर धरि कारी पड़ि गेल, आ ओकर अक्षरक बीच एकटा शब्द अपने उगि आयल — "स्पर्श।"

अध्याय १२२

गंगेशक मुक्ति

भोरे ठूँठक भीतरसँ कारी धूलि उठि अक्षर बनल — "प्रमाण।" बा कहलीह — "गंगेश आयलाह।"

ईरा पुछलीह — "गंगेश उपाध्याय? जिनकर तत्त्वचिंतामणि बारह हजार ग्रंथ बराबर कहल जाइत अछि?" बा कहलीह — "हँ, मुदा केवल ग्रंथक भार नहि देखू। जे समाज विचारक माथपर ताज धरैत अछि, ओहि समाजक हाथ ओकर जीवनक असुविधाजनक बातपर छूरी चलबैत अछि।"

लोकस्मृतिमे प्रचलित एकटा पुरान कथा उठल — गंगेशक जन्मक विषयमे लोककथा, आ ओहि संगे जुड़ल एकटा स्त्रीक (जिनका कथामे

"चर्मकारणी" कहल जाइत छल) कथा, जिनकर असली नाम इतिहासमे नहि लिखायल।

मीरा पुछलीह —— "जे स्त्रीक नाम इतिहासमे केवल जातिसँ चिन्हित अछि, हुनकर असली नाम केओ किएक नहि लिखलक?" मीरा रजिस्टरमे लिखलीह —— "चर्मकारणी —— नामक प्रतीक्षामे एक पूर्ण मनुष्य।"

अनन्या पुछलीह —— "जँ न्याय-दर्शनक पिता जाति-सीमा तोड़ैत छथि (एहि लोककथाक अनुसार), त जाति-व्यवस्था हुनकर ग्रंथ पढ़ि अपन सलाख किएक चमकबैत अछि?"

बा कहलीह —— "बारह हजार ग्रंथ बराबर जे लिखत, ओकर जीवनक एक वाक्य सेहो पढ़ू।"

बच्चा सभ कहला —— "जखन समाज कोनो विचारकक असुविधाजनक जीवन-प्रसंगकेँ काटि क सम्हारल मूर्ति बनबैत अछि, तखन ई 'सम्मान-हत्या' होइत अछि।"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "न्यायमे प्रमाण जरूरी अछि, मुदा प्रमाणक दुआरपर जातिक चौकीदार बैसल होय, तखन सत्य भीतर पहुँचबासँ पहिने मारल जाइत अछि।"

बच्चा सभ चारि वाक्य लिखला —— "प्रत्यक्ष बिनु करुणा अन्हार। अनुमान बिनु नम्रता घमंड। शब्द बिनु उत्तरदायित्व हिंसा। स्मृति बिनु न्याय अधूरा।"

साँझमे ठूँठक चारूकात चारिटा नव पाथर राखल गेल —— "गंगेश," "चर्मकारणी: असली नाम प्रतीक्षारत," "सम्मानक नामपर काटल जीवन-सत्य," "तत्त्वचिंतामणि: प्रश्नक अग्नि।"

राति कबड्डीमे बच्चा सभ "कबड्डी-कबड्डी" क संग एकटा नव शब्द जोड़ला —— "प्रमाण-प्रमाण।"

ठूँठक भीतरसँ एकटा गंभीर आवाज आयल —— "जे प्रश्नसँ डेराइत अछि, से न्यायक अधिकारी नहि।" अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलीह —— "उन्नैसम पहरा: प्रमाणक दरार।"

अध्याय १२३

तत्त्वचिन्तामणिक पात

गंगेशक मुक्तिक बाद बच्चा सभ नव कोंपलक छायामे बैसला। अनन्या कहलीह — "गंगेश बाबाक मुक्ति भेल, मुदा गंगेशक ग्रंथक पहरा शेष अछि।"

बा कहलीह — "बारह हजार ग्रंथ बराबर कहल जाइत छल ओकर विस्तार। मुदा जे ग्रंथ मनुष्यकेँ देखय नहि सिखाबय, से बारह हजार नहि, आध पात बराबर सेहो नहि।"

बच्चा सभ माटिपर चारि गोला बनौला — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अनुपलब्धि।

पहिल गोला "प्रत्यक्ष।" एकटा बच्चा पुछलक —— "जाति प्रत्यक्ष अछि?" मीरा उत्तर देलीह —— "मनुष्यक देह प्रत्यक्ष अछि; अपमानक प्रभाव प्रत्यक्ष अछि; मुदा जाति जे श्रेष्ठता कहैत अछि, से प्रत्यक्ष नहि —— ओ मोनक बनाओल पिंजरा अछि।"

तेसर गोला "शब्द।" पुरोहितक पोता कहलक —— "शास्त्रक शब्द सभसँ ऊपर।" मीरा पुछलीह —— "जँ शास्त्रक नामपर मनुष्यक देह काटल जाए, तखन शब्द ऊपर कि मनुष्य?" बा धीरे कहलीह —— "जे शब्द मनुष्यकेँ नीच देखाबय, ओ शब्द नहि, सत्ता अछि।"

चारिम गोला "अनुपलब्धि" — सभसँ कठिन। अनन्या खाली जगह देखबैत कहलीह —— "एतय जे नहि भेटैत, ताहिसँ सेहो साँच जन्मैत अछि। पुरान लोककथामे जे स्त्री (गंगेशसँ जुड़ल) क पूरा नाम इतिहासमे नहि भेटैत, ई अनुपलब्धि अछि। जे समाज हुनकर नाम सुरक्षित नहि राखलक, ओ समाजक न्याय अधूरा अछि।"

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह —— "गंगेशक मुक्ति बिनु ओहि अनाम स्त्रीक नाम तकने पूर्ण नहि।"

शहरसँ दुइ विद्वान आयला, जे कहला —— "एहि लोककथात्मक सामग्रीकेँ नियंत्रित रूपमे प्रस्तुत करबाक चाही।" अनन्या पुछलीह —— "जतय ओहि स्त्रीक नाम हटि जाए, ओतय गंभीरता बाँचल रहैत अछि?"

ईरा कहलीह —— "प्रमाण चाही, मुदा प्रमाणक दरबान के? जे जाति सुविधा देत, वैह प्रमाण? जे स्त्रीक नाम मेटाबय, वैह इतिहास?"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "न्याय केवल निर्णय नहि। न्याय ई सेहो अछि जे ककरा प्रश्न पुछबाक अनुमति अछि।"

साँझमे अनन्या नव नियम पढ़लीह —— "कोनो शास्त्र मनुष्यक देहसँ ऊपर नहि। कोनो दर्शन ओहि स्त्रीक नाम बिनु पूर्ण नहि जकरा इतिहास कातमे राखलक।" बच्चा सभ कहला —— "उपस्थित।"

ठूँठक जड़िसँ एकटा गहींर आवाज उठल —— "न्याय ताबत धरि अधूरा अछि जाबत प्रश्नक देह भेटि नहि जाए।"

अध्याय १२४

प्रमाणक अग्नि

तत्त्वचिंतामणिक पातपर लिखल शब्द बदलैत रहल — "प्रमाण" सँ "ककर प्रमाण?", "न्याय" सँ "ककर न्याय?" बच्चा सभ बुझि गेला — गंगेशक पात पढ़बाक अर्थ पुरान ग्रंथ पढ़ब नहि, अपन समाजक नुकाओल आगिमे हाथ देब अछि।

बा कहलीह — "जे ग्रंथ बारह हजार ग्रंथ बराबर कहल गेल, ओकर एकटा पातो जँ साँचमे पढ़ल जाए, त जातिक पूरा गुमान राखि भऽ सकैत अछि।"

ईरा कहलीह — "समाज एहि सभमेसँ ग्रंथ रखलक, जीवन काटि देलक। ई की न्याय अछि?"

गोप कुमार स्वीकारला —— "सूचना प्रमाण होइत अछि, मुदा पूरा प्रमाण नहि। जँ समाज कोनो मनुखक जीवन–सत्यकेँ काटि क केवल ओकर ग्रंथ रखय, त दस्तावेज बचि जाइत अछि, मनुख मरि जाइत अछि।"

मीरा धीरे कहलीह —— "ई सम्मानक नामपर हत्या अछि। देहक हत्या अलग, स्मृतिक हत्या अलग। समाज कहैत अछि —— हम अहाँकेँ महान मानैत छी; मुदा जे बात अहाँकेँ मनुष्य बनबैत अछि, ओ काटि दैत छी।"

एकटा बालक पुछलक —— "चर्मकारणी नाम की छलनि? " सभ चुप। ककरो ज्ञात नहि। बच्चा सभ एकटा पाथर उठा क लिखला —— "चर्मकारणी —— नाम तकल जा रहल अछि।"

ओहि पाथरपर धूप पड़लापर पाथरक चारूकात माटिक गंध उठल। बच्चा सभ बुझि गेला —— जाति देहपर चिन्ह लगबैत अछि; माटि सभ देहकेँ अपन बराबर धूलि बनबैत अछि।

पनिडुब्बीक स्वर आयल —— "जाति पानिमे टिकैत नहि।" बा कहलीह —— "ठीक। जलसमाधिमे देहक जाति कतय रहैत अछि? "

सत्यव्रत मेहता लिखला —— "प्रमाण: केवल लिखित पाठ नहि। मौखिक स्मृति, दबाओल जीवन, काटल पंक्ति, जातिगत मौन, आ लोकक पीड़ा सेहो।"

ईरा कहलीह —— "गंगेश नव्य न्याय देलनि; मुदा हम सभकेँ नव्य स्मृति चाही। जाति जखन प्रमाणकेँ बान्हि दैत अछि, तखन न्याय अन्हार भऽ जाइत अछि।"

अनन्या बच्चा सभकेँ कहलीह —— "आइसँ पाठशालामे एक नव पाठ —— जे जीवन असुविधाजनक होय, ओहि ठाम बेसी ठहरू।" बच्चा सभ दोहरौला —— "असुविधाजनक सत्यक पहरा।"

राति बच्चा सभ लिखला —— "गंगेशक मुक्ति ग्रंथसँ नहि, पूरा जीवनक स्वीकारसँ होएत।" अनन्या अगिला पन्नापर शीर्षक लिखलीह —— "चर्मकारणीक नाम।"

अध्याय १२५

निर्णयक धान

भोरे राखि ठंढा भऽ चुकल छल। अनन्या पुछलीह — "जकर प्रमाण जरि गेल, तकर निर्णय की?" आरुणि राखि पर झुकि कहलनि — "एहि राखिसँ खेतमे रेखा खिंचल जाए।"

बा धानक बीआ निकालि कहलीह — "ई बीआ ओहि खेतमे पड़त जतय जातिक नामपर कतेको पएर रोकल गेल।"

खेत ओही परिवारक छल, जकरा पुरान समयमे गामक मध्य-चौपालपर बैसबाक अधिकार नहि देल जाइत छल। ओहि घरक बूढ़ी खेतक मेड़पर बैसल रहलीह। बच्चा सभ हुनका प्रणाम करय लागल त ओ हड़बड़ा गेलीह — "हमरा

नहि, माटिकेँ करू।" मीरा उत्तर देलीह —— "माटि अहाँक हथेलीसँ बजैत अछि, तेँ अहाँकेँ सेहो।"

अनन्या खेतक पहिल मेड़पर राखि छिड़कि कहलीह —— "ई राखि प्रमाणक नहि, अप्रमाणक सेहो अछि। जे दबाओल गेल, जे कुलक बाहर फेकल गेल, जे सम्मानक नामपर स्मृतिसँ हटाओल गेल —— सभक राखि।" बच्चा सभ उत्तर देला —— "उपस्थित।"

बच्चा सभ पुरान लोककथामे "पत्नी" नहि, "सह–प्रमाण" कहि लिखला। बा कहलीह —— "जे शास्त्र स्त्रीक नाम काटि देत, ओकर पन्ना अधूरा रहत।" मीरा रजिस्टरमे लिखलीह —— "सह–प्रमाणक बिनु नव्य न्याय अधूरा।"

सत्यव्रत मेहता एकटा मुट्ठी धान लऽ क कहला —— "निर्णय जँ भोजन नहि बनल, जँ समान आसन नहि बनल, त ओ न्याय नहि, व्यवस्था–भाषा अछि।"

खेतक मध्यमे एक लकीर बनाओल गेल। अनन्या कबड्डीक साँस भरि रेखा पार केलीह, चर्मकारिणी बूढ़ीक हाथसँ बीआ लेलीह, फेर घुरि आयलीह —— "जे सीमा न्याय रोकय, ओकरा खेलमे बदलू।"

बूढ़बा भूत धूपमे धुँधला देखार भेला। ओ कहलनि —— "जतेक देबाल रहल, सभमे एक–एक कबड्डी बाकी अछि।"

एकटा बालक पुछलक —— "जे विद्वान जीवनक असुविधाजनक सत्य हटा क मूर्ति बनबैत छथि, ओ की हत्या करैत छथि?" ईरा उत्तर देलीह —— "स्मृतिहत्या बार–बार होइत अछि। सम्मानक नामपर जँ सत्य हटाओल जाए, त ओहू सन पीड़ा हत्या जेहन होइत अछि।"

साँझमे हर चलल —— चर्मकारिणी बूढ़ी पहिल धारि चलौलीह, आरुणि दोसर, मीरा तेसर, सत्यव्रत चारिम, अनन्या पाँचम।

राति खेतक पानिमे आकाश उतरल। तारा सभ बीआ जेहन चमकल। अनन्या कहलीह —— "निर्णयक धान एखन रोपल गेल अछि; ओकर अंत कटनीपर होएत।" रजिस्टरमे लिखल गेल —— "आइ न्याय खेतमे उतरल।"

अध्याय १२६

अन्नक न्याय

भोरे खेतक मेड़पर धानक बालि झुकल देखार भेल। बा माटि सुँघि कहलीह — "जे न्याय भात नहि बनल, से केवल वाक्य अछि। जे न्याय भूखक मुँह धरि नहि पहुँचल, से गाछी बिनु जड़िक छाँह अछि।"

अनन्या एकटा दाना हाथमे राखि पुछलीह — "एहि दानाक नाम की?" एकटा छोट लड़का कहलक — "जे भूख रोकय।" मीरा मुस्कुरा क कहलीह — "सएह ओकर न्यायक नाम अछि।"

स्त्री सभ माप–बाट, खाली कटोरा लऽ क आयली — "नामक अभिलेख अछि, मुदा भूखक अभिलेख कतय?" देविका नव पन्ना खोलि लिखलीह — "भूखक नामावली।"

अनन्या कहलीह — "जे भूखल अछि, ओकरा दया नहि, हिस्सा चाही।" बा जोड़लीह — "दया ऊपरेसँ फेकल भात अछि; हिस्सा संग बैसि खाएल भात।"

बटुकनाथक दूत एकटा प्रस्ताव लऽ क आयल — "लोक–स्मृति न्यासक अन्न–कोष" — दाताक नाम शिलापट्टपर। अनन्या कहलीह — "जे देत, ओकर नाम पहिने नहि; जे उपजौलक, जे काटलक, हुनकर नाम पहिने।"

लाउ किन–हंगक ओरसँ विदेशी बीआक प्रस्ताव आयल। आरुणि पुछलनि — "बीआक स्मृति कोन?" परामर्शदाता कहला — "बीआ विज्ञान अछि, स्मृति नहि।" ईरा कहलीह — "जकरा स्मृति नहि, ओकर स्वामित्व ककर?"

स्त्री सभ सामूहिक कोठी–बखारीक नियम बनौलीह — प्रत्येक खेतसँ किछु दाना नाम–पहराक लेल; जकरा भोजन भेटत, ओकर नाम "गरीब" नहि, "सदस्य" कहल जाएत।

एकटा बूढ़ पण्डित जाति–रीतिक बात उठौलक। अनन्या पुछलीह — "जँ भूखक जाति एक अछि, त भातक जाति कतेक?" बा भातक एक दाना राखि कहलीह — "खाउ। जँ ई दाना अहाँक कुल बिगाड़ि देत, त कुल बहुत कमजोर अछि।" बूढ़ दाना खयलनि आ कानि पड़ला — "भूखसँ पैघ शुद्धि नहि।"

राति एकटा बच्चा अपन घरक पुरान खाली थारी अनलक — "एहि थारीमे कतेको दिन आवाज बजल, भात नहि।" थारी कोठी–बखारीक बीच राखल गेल।

सत्यव्रत मेहता कहला — "आइ धरि हम मृतकक नाम लिखलहुँ। आब जीबैत भूखक नाम लिखब।" अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह — "भूखक नाम।"

अध्याय १२७

भूखक नाम

खाली थारी राति भरि कोठी–बखारीक बीच पड़ल रहल। भोरे अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह — "भूखक नाम।" कलम काँपल — मृतकक नाम लिखब कठिन छल; जीबैत भूखक नाम लिखब ओकरोसँ कठिन।

सत्यव्रत मेहता कहला — "भूखक नाम लिखब माने पेट खोलब नहि, लाज खोलब अछि।"

पहिल स्त्री कहलीह — "हमर घरमे तीन दिन भातक गंध नहि उठल छल।" अनन्या लिखलीह — "भूखक पहिल नाम: चूल्हिक उपवास।"

एकटा बूढ़ गड़ेरिया कहलक —— "गोरू बेचि दैतहुँ त घर चलैत, मुदा गोरू बेचब माने बाबूजीक स्वर बेचब।" बच्चा सभ लिखला —— "बाबूजीक स्वर बचाबय लेल भूख।"

एकटा जातिक ऊँचाइक गर्वमे रहनिहार परिवारक वृद्धा कहलीह —— "हम हाथ पसारलहुँ नहि, कारण हमरे घरक लोक कहत —— कुल गेल।" बा कहलीह —— "जे कुल भूखमे बेटीकेँ चुप करा देत, ओ कुल पहिनेसँ गेल।"

देविका प्रश्न उठौलीह —— "नाम लिखलहुँ, मुदा भोजन कखन? "

सत्यव्रत उठि क कहला —— "जे धान देत, ओकर नाम नहि बजाओल जाएत। दानक नाम नहि; अधिकारक अन्न।" एकटा व्यापारी नाम पट्टिकापर लिखबाक चाहलक। अनन्या कहलीह —— "पट्टिका भूखक बनत, बोरा देनिहारक नहि।"

साँझमे पहिल सामूहिक रसोइ जरल। मीरा कहलीह जे भोजन लेनिहारक चेहरा कियो नहि खिंचय। देविका कहलीह —— "भूखक तस्वीर नहि, भूखक भागीदारी।"

एकटा वृद्ध पुरुष जे अपन गरीबी नुकबैत छल, पाँतिमे पाछू ठाढ़ रहल। अनन्या कहलीह —— "भूख कहब अपमान नहि।" ओ कानय लागल। ओकर नाम लिखल गेल —— "नहि कहि सकल पेट।"

राति खाली थारीमे भातक एकटा दाना छोड़ल गेल। सत्यव्रत पुछला —— "ई किएक? " अनन्या कहलीह —— "भूख कखनो पूर्ण समाप्त नहि मानब। एक दाना बचल रहत तेँ हम सभ पहरा नहि छोड़ब।"

मध्यरातिमे थारीक दाना घूमि क उत्तर दिशामे ठहरि गेल —— जतय सूखल इनार छल। बा कहलीह —— "भूखक बाद पियास आओत।" बच्चा सभ नव पन्ना खोलि लिखला —— "पियासक पहरा।"

अध्याय १२८

प्यासक नाम

भोरे एकटा छोट बालक खाली लोटा लऽ क आयल —— "भूखक नाम लिखल गेल। प्यासक नाम कतय अछि? "

बा कहलीह —— "हमर बालपनमे पानिओक जाति छल। किछु कूप सभक, किछु कूप एहन जे प्यासल मनुष्य ओहिपर छाया धरि नहि दऽ सकय।"

अनन्या लिखलीह —— "प्रमाण: प्यास।" ईरा पुछलीह —— "प्यासक प्रमाण की? " छोट बालक अपन खाली लोटा उठौलक।

गामक बाहर एकटा पुरान इनारक कथा खुजल, जतय चर्मकार टोलीक स्त्री सभ पानि नहि भरि सकैत छलीह —– ऊँच जातिक आँगनमे पानि छल; नीच कहल गेल देहक कंठमे प्यास।

मीरा कहलीह —– "देहक अधिकार बिनु पानिक अधिकार नहि।" सौम्या जोड़लीह —– "जकरा पीबाक मनाही, ओकर आवाज सेहो सुखैत अछि।"

बच्चा सभ पुरान इनार लग नाम–पाठ करय गेला। एकटा वृद्धा कहलीह —– "हमर माय ओहि राति घैल नहि, अपन कंठक अधिकार टूटैत सुनने छलीह।" बच्चा सभ लिखला —– "प्यासक पहिल नाम: रोकल गेल कंठ।"

एकटा युवक कहलक —– "नाम त छल, मुदा प्यास बुझबाक बरतनपर जाति लिखल छल।" अनन्या लिखलीह —– "प्यासक दोसर नाम: अलग लोटा।"

ईरा कहलीह —– "एहि इनारक इतिहास आ स्वप्नक अनाम ग्रहक भविष्य एके रेखापर अछि।"

चन्द्रपालक अनुप्रयोगमे नव सुविधा खुजल —– "नामक लेल जल–दान।" देविका कहलीह —– "ई प्यासक म्यूल एकाउंट अछि।"

साँझमे इनारक झाड़ी साफ भेल। पहिल डोल ओहि वृद्धा उतारलीह जिनकर मायक घैल फोड़ल गेल छल। दस डोल बाद पानि साफ भेल। तीस डोल बाद इनारसँ ठंढा वायु उठल। लोक कहलक —– "इनार साँस लेलक।"

राति सामूहिक जल–पाठ भेल। हर मनुष्य डोलसँ एक चुल्लू पानि लेत, अपन नाम कहत —– "हम प्यास साझा करैत छी।"

अनन्या रजिस्टरमे लिखलीह —– "प्यासक नाम लिखल गेल, मुदा प्यासक पहरा ताबत धरि अधूरा, जाबत धरतीक सभ कूप, नदी, पोखरि मुक्त नहि होय।"

अध्याय १२९

नूनक शपथ

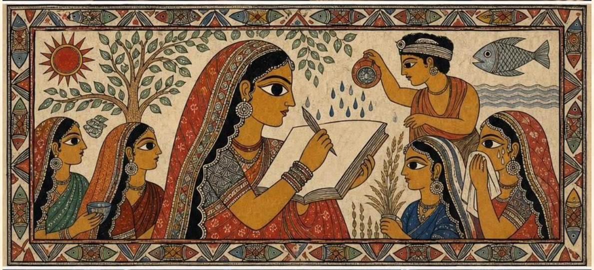

प्यासक नामक बाद बच्चा सभ बुझला जे मनुष्य केवल अन्न आ पानिसँ नहि बनैत — कंठमे नूनक स्वाद सेहो होइत अछि। अनन्या लिखलीह — "पच्चीसम पहरा: नूनक शपथ।"

बच्चा सभ ठूँठ लग एक–एक चुटकी नून आनि राखला। बा कहलीह — "ई नून हमरा मायक रसोइक स्मृति अछि।"

देविका उज्ज्वलक घरक नून आनलीह — जे दिन उज्ज्वल गुम भेल, ओहि दिनसँ ओ डिब्बी जहिनाक तहिना पड़ल छल।

मीरा कहलीह —— "नूनक जाति नहि पुछल जाएत। जे नून चर्मकारिणीक हाथमे, ब्राह्मणक थारीमे, मजदूरक पसीनामे एकहि स्वाद बनैत अछि, ओकरा पाँतिमे किएक राखब?"

एकटा वृद्धा कहलीह —— "हमर हाथक बनाओल रोटी ओ सभ खाइत छल जे हमरा आँगनमे पानि नहि पीबैत छल। हमर नून हुनकर जीहपर शुद्ध छल, हमर घैल हुनकर हाथ लेल अशुद्ध। ई कोन न्याय?" सत्यव्रत मेहता माथ झुका क लिखला —— "नून गवाही दैत अछि जे शुद्धताक दावा प्रायः श्रमक चोरी अछि।"

मुन्ना पासवानक भाइ कहलक —— "पुलपर जे खसल, ओहो ई नून छोड़ि गेल। जे पुल पार करैत छथि, ओ सभ ओकर नूनपर चलैत छथि।"

एकटा व्यापारी "गढ़ नारिकेल स्मृति–नून" बेचबाक प्रस्ताव अनलक। अनन्या पुछलीह —— "एहिमे उज्ज्वलक मायक अधपड़ल दालिक स्वाद रहत? मजदूरक पसीना? जँ नहि, त स्मृति–नून नहि, बजार–नून अछि।"

देविका राघवक एकटा गुप्त संदेश पकड़लीह —— "भावनात्मक सामग्रीकेँ उत्पादमे बदलू।" व्यापारीक चेहरा पड़ि गेल।

अनन्या घोषणा केलीह —— "आइसँ नून बिकत नहि। नून बाँटल जाएत।" स्त्री सभ एकटा शपथ बनौलीह —— "हम जे नून खाइत छी, ओकर श्रम नहि बिसरब। हम जे रोटी बाँटब, ओकर पाँतिमे जाति नहि राखब।"

सत्यव्रत मेहता एकटा चुटकी नून हाथमे लऽ क जीह लगौलनि। आँखि भरि आयल —— शायद ओहि स्वादमे हुनका अपन देर–सँ–आयल न्यायक लाज भेटल।

बूढ़बा भूत कहलनि —— "जकरा नूनक स्वाद बुझि गेल, ओकरा पृथ्वी छोड़यमे देर लागत।"

भोरे अनन्या अंतिम पंक्ति लिखलीह —— "नून शपथ नहि माँगैत; नून शपथक स्वाद बनैत अछि।"

अध्याय १३०

स्वादक न्याय

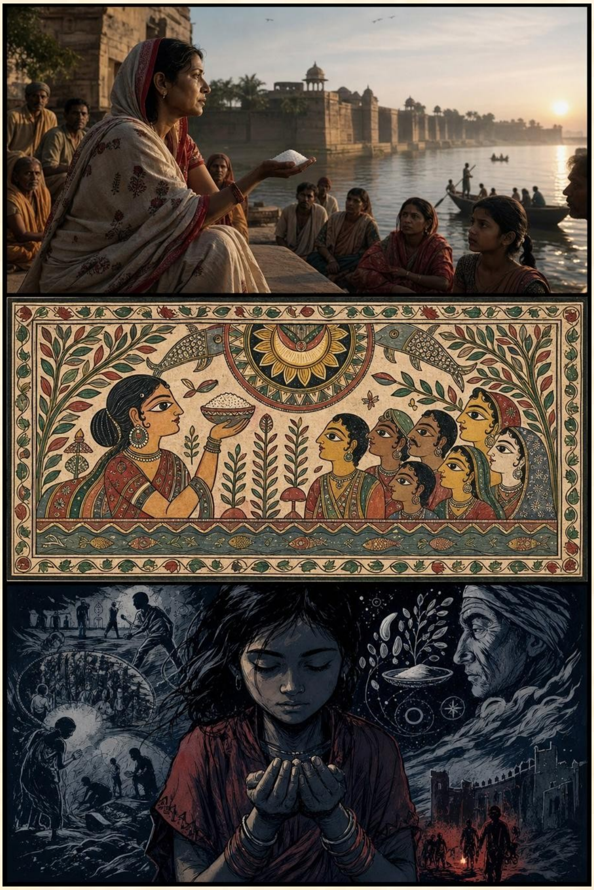

नूनक शपथक बादक भोरमे बा कहलीह — "नून खाइत छी, तँ नूनक न्याय सेहो मानब।"

पाठशालाक आँगनमे सामूहिक भोजन बनल — हर घरसँ किछु आनल गेल। जे किछु नहि आनि सकल, ओहि घरसँ बच्चा सभ पानि आनि देला। अनन्या लिखलीह — "जकरा अन्न नहि, ओकरो जल अछि; जकरा जल नहि, ओकरो नाम अछि।"

एकटा बुजुर्ग कहलनि जे सभ एक पंक्तिमे बैसत त मर्यादा बिगड़त। बा एकटा थाली राखि कहलीह — "मर्यादा जे भूखकेँ जाति पुछय, से मर्यादा

नहि, देहक अपमान अछि।" बुजुर्ग पानि माँगला, जे ओहि बालक देलक जकर जातिपर ओ जीवन भरि प्रश्न करैत रहला। बुजुर्ग पानि पीबि लेला। पंक्ति टूटल नहि।

विरासत–परियोजनाक लोक "चन्ना गाछी स्मृति–भोज" क पैकेट लऽ क आयल — "स्मृति–नून," "जलसमाधि साग।" अनन्या पुछलीह — "ई ककर स्वाद? ककरा भूख लागल छल? ककर श्रमक पसीना एहि पन्नीमे अछि?" लोक चुप रहल।

सत्यव्रत मेहता अंतिम पातलग बैसि गेला — "जे सभक नाम खाएल गेल, हुनका बाद। जे सभ अपना हाथें रान्हि रहल छथि, हुनका बाद।"

भोजन शुरू भेल। पहिल कौरसँ पहिने बा कहलीह — "नाम।" एक–एक क नाम कहल गेल — मजदूर, डिजिटल ठगीमे डूबल युवक, चर्मकारणी, गंगेश, अनाम। हर नामक बाद एक कौर।

नियम बनल — भोजनमे जे रान्हत, ओ पहिने चाखत; जे परोसत, ओ पंक्तिमे बैसत।

ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखलीह — "जे हाथ प्रतिबंधित रहल, जे देह पंक्तिसँ बाहर राखल गेल, ओकरा सभकेँ संग बैसाय बिनु 'मिथिला स्वाद' झूठ अछि।"

बा कहलीह — "जे देह चिबा गेल, ओकरो भूख बुझबाक प्रयास करब, जाहिसँ हम ओकरा केवल दानव नहि, संसारक भयानक प्रश्न मानि सकी।"

विरासत–दल भोजनकेँ टिकटसहित आयोजन बनएबाक प्रस्ताव देलक। अनन्या उत्तर देलीह — "जे भूख बुझल नहि, ओ भोजनक प्रबंध नहि करत।"

भोजनक बाद पात नदीक किनार माटिमे दबाओल गेल, हर पातपर एकटा संकेत–अक्षर बनल।

साँझमे राखिक भीतर एकटा गंधक चिन्ह देखार भेल। मीरा कहलीह — "स्वाद जीहपर रहैत अछि, मुदा स्मृति गंधसँ घुरैत अछि। जकर घरक रसोइ जरि गेल, ओकर नाम पहिने गंध बनि अबैत अछि।"

अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह — "सत्ताइसहम पहरा: गंधक गवाही।"

अध्याय १३१

साझा थारी

स्वादक न्यायक बाद प्रश्न उठल — भूख-प्यासक कथा अलग-अलग सुनब आसान अछि, एकहि थारीमे बैसि खाएब कठिन।

बा कहलीह — "बेटी, एतय लोक प्रेतक संग बैसि सकैत अछि, मुदा जीवित मनुष्यक संग पंक्तिमे बैसयमे काँपैत अछि।"

साझा भोजनक तैयारी शुरू भेल। हर घरसँ किछु न किछु आयल। मुदा तैयारीक संग डर सेहो उघार भेल — "सभक संग खाएब? घरमे बूढ़ सभ मानत?"

एकटा वृद्ध ब्राह्मण पातक कगारपर ठिठकि गेला, चर्मकार टोलाक एकटा युवककेँ देखि। बा उठि क अपन लाठी ओहि युवकक पातलग राखि, स्वयं ओतय बैसि गेलीह — "जे गंगेशकेँ शास्त्रमे मानै छी, ओकर जीवनसँ डेराएब?"

अनन्या वृद्धसँ पुछलीह — "अहाँक भयक नाम लिखी?" वृद्ध बहुत देरमे कहला — "कुल।" अनन्या पुछलीह — "अहाँक भूखक नाम?" वृद्ध फुसफुसैला — "मनुष्य।"

एहि दू पंक्ति लिखलाक बाद वृद्ध भोजन छुला। चर्मकार टोलाक युवक अपन साग बढ़ौलक — "ई हमरा माय बनौने छथि।" वृद्ध अपन गुड़ बढ़ौलनि — "ई हमर नाति आनने अछि।"

मुदा किछु स्त्री दूर ठाढ़ रहि गेलीह — घरक मर्यादा, ससुरक डरक कारण। मीरा हुनका सभलग जा क कहलीह — "बैसू नहि त सेहो लिखाएब। जे रोकैत अछि, ओकरो नाम चाही।" स्त्री सभ कहलीह — "घर," "लाज," "बेटीक विवाह," "गामक मुँह।" बच्चा सभ ई सभ नाम लिखला।

सत्यव्रत मेहता अंतिम पंक्तिमे बैसि लिखला — "आइ न्यायक प्रश्न थारीमे आयल। जे मुँह कानून पढ़लक, ओकरा पहिने मुँह भोजनक समानता सीखबाक चाही।"

भोजन आरंभ भेल। एकटा बच्चा कहलक — "कबड्डीमे छू क घुरय पड़ैत अछि; थारीमे छू क रहय पड़ैत अछि।"

भोजनक बाद बचल कण माटिमे मिलाओल गेल। बा कहलीह — "जतबा बचल, तकर नाम अपव्यय नहि, अर्पण।"

अनन्या शीर्षक लिखलीह — "सत्ताइसहम पहरा: साझा थारी।" नीचाँ लिखलीह — "जतय जाति थारी रोकैत अछि, ओतय न्याय अधूरा खाइत अछि।"

राति चन्ना गाछीक कोंपल हिलल — "मुक्ति केवल नाम सुनबाक नहि, एकहि धरतीपर एकहि स्वाद ग्रहण करबाक सामर्थ्य सेहो अछि।"

अध्याय १३२

रसोइक गणराज्य

साझा थारीक बाद मीरा कहलीह — "जे रसोइमे जाति बान्हल रहत, ओकर थारीक साझापन केवल उत्सव रहि जाएत।" अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह — "रसोइक परीक्षा।"

तय भेल जे चन्ना ठूँठक चारूकात लोक–रसोइ बनत। हर चीज आनल जायत ओकर कथाक संग। एकटा बुजुर्ग किसान कहलनि — "ई ओ खेतक धान अछि जतय पुल–परियोजनाक मलबा दू बरख धरि पड़ल रहल।" चर्मकार बस्तीक एकटा युवती कहलीह — "हमर मायक हाथक साग अछि; मुदा कतेक घरमे हमर मायक हाथक साग नहि खाएल गेल।"

अनन्या पुछलीह —— "जँ गंगेश तत्त्वक चिंता करैत छथि, तखन अन्नक तत्त्व की? छुआछूत ओकर प्रमाण अछि कि भूख?"

एकटा बूढ़ ब्राह्मण घरसँ घी अनने छला, मुदा देबाक साहस नहि भेल। ओ कहलनि —— "हमर कुलमे नियम छल जे अमुक हाथक अन्न नहि छूब। आइ ई घी ओकर कड़ाहीमे पड़त जकर बीआसँ साग आयल अछि।" घी कड़ाहीमे पड़ल, आ ओहि आवाजपर सभ चुप भऽ गेल।

मीरा नियम बनौलीह —— "ककरो हाथक काज नीच नहि कहल जाएत।" पुरुष सभकेँ सेहो काटब, धोब, बासन माजबाक काज देल गेल।

पाँच चूल्हि, सात कड़ाही, तीन जातिक पानि मिलि एकटा सुगंध बनल, जकरा ककरो कुलनाम नहि देल जा सकल।

भोजन परोसबामे अनन्या कहलीह —— "पहिने ओ खाएत जकर नाम कतहु नहि लिखल गेल।" अनाम पाथरक सोझाँ पहिल पात राखल गेल।

बासन माजबाक बेर आयल —— असली परीक्षा। जकरा जीवन भरि दोसराक थारी उठएबाक काज देल गेल छल, ओकरा एहि बेर बैसाओल गेल; जे ऊँच कुलक छला, हुनका माजबाक काज देल गेल। बा कहलीह —— "जे बासन माजि नहि सकय, से न्याय लिखि नहि सकय।"

अनन्या लिखलीह —— "रसोइक गणराज्यक विधान: जे खाय, से पकाबय; जे पकाबय, से खाय; जे खाय, से माजय; जे माजय, ओकर हाथ पवित्र।"

राति बूढ़बा भूत एकटा सूखल पातपर बचल नूनक रेखा देखलनि, माथपर फेरलनि, आ कहलनि —— "आब अगिला परीक्षा उच्छिष्टक नहि, बीआ-राखिक अछि।"

अध्याय १३३

विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

रसोइक गणराज्यक बाद गढ़ नारिकेलमे एकटा पत्र आयल — "विदेह नाट्य उत्सव।" आमंत्रण छल: गढ़ नारिकेल अपन कथा रंगमंचपर आनय।

अनन्या कहलीह — "नाटक होएत, मुदा अभिनय ओएह करत जे साँस रोकि सकय।" कबड्डी खेलनिहार बच्चा सभ कलाकार बनता।

अनन्या कहलीह — "ई सारांश नहि बनत। सारांश गोहि जेहन होइत अछि — देह चिबा क अस्थि छोड़ि दैत। नाटककेँ देह चाही, अस्थि मात्र नहि।"

कबड्डी खेलनिहार सभक अभ्यास शुरू भेल। एकटा खेलाड़ी "गंगेश" कहि रुकल; ओकरा रेखा पार करबासँ पहिने पुछल गेल —— "प्रमाण की?" ओ उत्तर देलक —— "देह सेहो प्रमाण, अपमान सेहो प्रमाण, प्रेम सेहो प्रमाण।"

मीरा कहलीह —— "जकर दुःख अछि, ओकर अनुमति बिनु ओकर दृश्य नहि।" देविका जोड़लीह —— "जकर नाम नहि भेटल, ओकरा पहिल आसन।"

बटुकनाथ हरिहरनक भूमिकाक लेल कियो हँसैत–हँसैत नकल करय लागल। अनन्या रोकलीह —— "खलनायककेँ मसखरा नहि बनाउ। मसखरा बनलासँ अपराध हल्लुक भऽ जाइत अछि।"

चन्द्रपालक भूमिका ओहि युवककेँ देल गेल जे नकली भूतक जुलूसमे अपन बाबूक नाम कानि क पढ़ने छल। देविका कहलीह —— "तूँ ठग नहि बनबह; तूँ दर्शककेँ देखाएबह जे ठग बनल मनुष्यक भीतर खालीपन केहन होइत अछि।"

सत्यव्रत मेहताक भूमिका एकटा बालक करय चाहलक —— "हम, कारण हम कम बजैत छी।"

राति बूढ़बा भूत कहलनि —— "रंगमंच सेहो गाछी होइत अछि। जड़ि झूठ हो, त पात ताली बनैत अछि। जड़ि साँच हो, त पात नाम बनैत अछि।"

विदेह नाट्य उत्सवक पत्रपर एकटा पाथर राखल गेल —— "आमंत्रण सेहो गवाही देत।"

अंतमे अनन्या पहिल पंक्ति लिखलीह —— "रंगमंचक बीचमे पानि भरल अछि; जे प्रवेश करत, से अपन प्रतिबिंबक नाम पहिने कहत।" एहिसँ नाट्य–पाठक केबाड़ खुजि गेल।

अध्याय १३४

कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

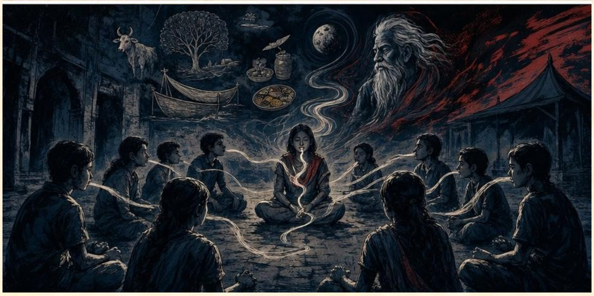

तीन दिन धरि गढ़ नारिकेलमे कोनो ढोल नहि बजल। बच्चा सभ गोला बनाक बैसि निर्णय करय लगला — कथा केना मंचपर उतारल जाए?

अनन्या कहलीह — "हम सभ पूरी कथा नहि खेलि सकब। कथा बहुत पैघ अछि।" उज्ज्वलक आत्मा हँसि क कहलक — "कथा खेलल नहि जाइत; कथाकेँ साँस देल जाइत अछि।"

मीरा कहलीह — "नाटकमे ककरो दुखक तमाशा नहि होएत।" देविका जोड़लीह — "आ ककरो नाम बिनु अनुमति नहि।"

नाटकक नाम राखल गेल —— "पहरा।" उपशीर्षक —— "कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ।" नायक कोनो व्यक्ति नहि, साँस होएत। जे मरि चुकल छला, हुनका "भूत" नहि, "उपस्थित" कहल जाए।

ईरा पहिल पंक्ति लिखलीह —— "मंचपर दर्शक प्रवेश करत।" अनन्या काटि देलीह —— "दर्शक नहि, साक्षी।"

पात्र-सूचीमे कोनो पात्रक आगू जाति नहि लिखल गेल। अनन्या कहलीह —— "जाति पात्र नहि, पिंजरा अछि। पिंजरा मंचपर खाली लटकत।"

पहिल दृश्य —— "कटानक बादक बिहान।" एकटा बच्चा कटल ठूँठ छूइ कहत —— "गाछी कटि गेल, मुदा जड़ि सुनैत अछि।" सभ कलाकार एक स्वरमे कहत —— "उपस्थित।"

दोसर दृश्य —— "पीयर सूचना-पत्र।" तेसर —— "गंगेशक प्रश्न" —— खाली पिंजरा मंचक बीच लटकत, जाहिपर लिखल —— "जाति।"

चारिम दृश्य —— "स्मारक-अनुप्रयोग।" पाँचम —— "नकली भूतक जुलूस।" छठम —— "स्वप्नक अनाम ग्रह।" सातम —— "रसोइक गणराज्य।" आठम —— "गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ।"

नवम (अंतिम) दृश्यक नामपर बहस भेल। उज्ज्वलक आत्मा कहलक —— "जँ नाटक बंद करब, खेल हारब।" अंतिम दृश्यक नाम राखल गेल —— "फेर पृथ्वी।" धूर्त सभ नव कोंपल छूबय चाहत, मुदा हुनकर हाथ पहिने अपन नाम लिखत।

बा अंतिम पाँती सुझौलीह —— "जकरा साँस बाँकी, ओकर कथा बाँकी। कबड्डी बंद नहि भेल।"

राति बूढ़बा भूत कबड्डीक पुरान मुद्रामे एक पग आगू बढ़ि, फेर रुकि गेला —— जेना कहि रहल होथि, नाटक लिखि देलहुँ, आब मंचनक साँस देखब।

अध्याय १३५

विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

उत्सवक मैदान राति पड़तहि लोकसँ भरि गेल। बच्चा सभ पैघ मंच मना केला — "जतय नामक कथा खेलाएत, ओतय मंच आ दर्शकक बीच ऊँच–नीच नहि रहत।" गोल मैदान बनल, बीचमे कबड्डीक रेखा।

पहिल दृश्यमे एकटा बालक "कबड्डी–कबड्डी" कहैत–कहैत "नाम–नाम–नाम" कहय लागल। ओ पाथर राखि कहलक — "ई पाथर नहि, जे नाम नहि भेटल ओकर आसन।" सभ दिससँ उत्तर आयल — "उपस्थित।"

दोसर दृश्यमे गोहि आयल — कोनो मुखौटा बिनु। ओ कहलक — "हमरा देह दियौ, हम खाएब; मुदा जँ नाम बचालग अछि, हम की करब?"

तेसर दृश्य जलसमाधिक छल। एकटा खेलनिहार "डूबल" —— जमीनपर नहि खसल, बल्कि धीरे–धीरे उठि पाथरक लग बैसल। एकटा बच्चा कहलक —— "देह डूबल, बंधन छूटल।"

चारिम दृश्यमे गंगेशक प्रश्न आयल —— एकटा खाली आसन। एकटा बालिका पुछलीह —— "प्रमाण की? जाति जँ मनुष्यक देहपर पहरा देत, त न्याय कागचपर केना जन्म लेत? "

पाँचम दृश्यमे बटुकनाथ हरिहरन आयला —— मोट पोथी लऽ क, "न्यास, नियम, समिति" कहैत। पोथी खोललापर भीतर सूखल पात निकलल, हर पातपर प्रश्न —— "न्यासक मालिक के? "

छठम दृश्य चन्द्रपाल बत्राक छल —— नकली फोन लऽ क "श्रद्धांजलि" कहैत, मुदा स्क्रीन ओकरा अपन अधूरा नाम देखबय लागल।

सातम दृश्य राघव सिग्नलक —— सभटा संदेश पात बनि खसि पड़ैत।

आठम दृश्यमे लाउ आ ब्रूम "पृथ्वी असुरक्षित अछि; स्वप्नक अनाम ग्रहपर चलू" कहला। बच्चा सभ कबड्डीक रेखा आकाश दिस उछाललक।

नवम दृश्यमे स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम–पाठ भेल। लाउक भूमिका करय बला खेलनिहार पुछलक —— "हमर नाम कतय अछि? " उत्तर नहि भेटल।

दसम दृश्यमे सत्यव्रत मेहताक मौनक लेल खाली कुर्सी राखल गेल। अनन्या कहलीह —— "जे सुनय नहि आयल, ओकर कुर्सी खाली रहत।"

अंतिम दृश्य कबड्डी छल —— शुद्ध, तेज, साँसदार। मंचन समाप्त भेलापर आयोजक ताली बजाबय चाहला, मुदा बच्चा सभ हाथ रोकि देला —— "ताली प्रदर्शनक अंत होइत अछि; एहि रातिक अंत नहि चाही।"

एकटा वृद्ध उठि कहला —— "हमरो घरमे एकटा नाम अछि, जे नाटकमे नहि छल।" पाछू–पाछू आर लोक उठला। नाटक जे गामसँ शुरू भेल छल, से लोकक कंठमे पसरि गेल।

अध्याय १३६

तालीक बादक सन्नाटा

मंचन समाप्त भेलापर जे ताली उठल, से धीरे–धीरे बदलय लागल। किछु हाथ बीचमे रुकि गेल, किछु आँखि पोंछय लागल।

विदेह नाट्य उत्सवक संचालक कहला —— "एहि प्रस्तुतिपर हम टिप्पणी नहि करब। जे लोकक नाम एहि नाटकमे छूटि गेल, ओ सभ आगू अबथि।"

एकटा वृद्धा कहलीह —— "हमर पतिक नाम कतहु नहि आयल।" एकटा स्त्री धीरे कहलीह —— "हमर बेटी जीबैत अछि, मुदा घर ओकर नाम नहि लेत। की ओकर नाम सेहो लिखल जाए?" अनन्या उत्तर देलीह —— "जकर नाम चुप कराओल गेल, से मृतकसँ कम नहि। लिखल जाए।"

सत्यव्रत मेहताक भूमिका करय बला बालककेँ ओ कहला — "जखन लोकक पीड़ापर ताली बजैत अछि, तखन सुननिहारकेँ दोबारा सावधान होयबाक चाही। पीड़ा प्रशंसाक लेल नहि, न्यायक लेल बजैत अछि।"

चन्द्रपाल बत्रा सभागारक बाहर ठाढ़ छल, भीतर बैसबाक हिम्मत नहि भेल। ओकर मोबाइलमे एकटा वाक्य चमकल — "तोहर नाम मंचपर नहि, लोकक घाटामे लिखल अछि।"

बटुकनाथक प्रतिनिधि नाटकक अधिकार लेबाक कोशिश केला, मुदा जखन दर्शक सभ मंचपर चढ़ि अपन नाम जोड़य लागल, प्रतिनिधिक नोटबुक असफल भऽ गेल।

ईरा कहलीह — "जे कथा जलसमाधिसँ आयल अछि, ओकर लेखकत्व नदीक जेहन होएत। नदीक किनार कतेको गामक होइत अछि; ताहिसँ नदी बँटाइत नहि, बहैत अछि।"

मीरा जोड़लीह — "मुदा खुजल ठामक अर्थ ई नहि जे कियो ककरो निजता तोड़त। नाटक जनक होय, मुदा देह आ स्मृतिक अधिकार व्यक्तिक हाथमे रहत।"

राति सभागार खाली भेल, मुदा मंच खाली नहि भेल। बच्चा सभ निर्णय केला जे अगिला मंचनमे प्रत्येक ठामक लोकक नाम सुनि तकरा कथामे पिरोएत। अनन्या मंचपर एकटा छोट चौकोर खिंचि कहलीह — "ई कबड्डीक रेखा नहि, मंचक प्रतिज्ञा अछि।" सभटा खेलनिहार रेखा पार करैत "कबड्डी" नहि, "उपस्थित" कहला।

भोर धरि मंचक धूलिपर एकटा नव पंक्ति देखार भेल — "जतय नाटक समाप्त, ओतय गाम शुरू।" अनन्या कहलीह — "ई स्क्रिप्टक पाछू रहत। जे पढ़त, ओ अगिला अंक लिखत।"

अध्याय १३७

दर्शकक गवाही

तालीक बाद जे सन्नाटा पसरल, से लोकक भीतर उतरि गेल छल। अनन्या कहलीह —— "आइ पहिने देखब जे दर्शक स्वयं लिखय चाहैत अछि कि नहि।"

पहिल पंक्तिसँ एकटा वृद्ध उठला। ओ कहला —— "हम पुलक काजमे मुंशी छलहुँ। मजदूर सभक असली गिनती हमरा बुझल छल, मुदा हम चुप रहलहुँ।" ओ एकटा पुरान पीयर कागच निकालला —— "ई सूची हमरा लग बाँचल छल।"

एकटा कबड्डी–खेलनिहार नीचाँ उतरि वृद्धक हाथसँ कागच लेलक आ माथ लगौलक। अनन्या लिखलीह —— "दर्शकक पहिल गवाही: चुप मुंशी।"

दोसर पंक्तिसँ एकटा स्त्री उठलीह —– "हम अस्पतालमे दवाइ बाँटैत छलहुँ। गरीबकेँ निःशुल्क भेटबाक दवाइ हमरासँ निजी दुकानदारक नाम पर चढ़बाओल गेल। हम विरोध नहि केलहुँ।" ओ अपन गलासँ एकटा चाभी निकालि अनन्याक हाथमे देलीह।

एकटा युवक कहलक —– "हम विज्ञापन बनबैत छलहुँ जे बूढ़ लोकक आँखिमे डर भरैत छल। हमरा लगैत छल —– ई केवल भाषा अछि। आइ बुझलहुँ —– भाषाक सेहो दाँत होइत अछि।"

एक–एक क दर्शक उठय लागल —– कियो जातिक नामपर विवाह रोकलक, कियो चुप रहल। छोट–छोट अपराध मिलि क पैघ गोहि बनैत अछि —– ई बात ओहि राति सभ बुझि रहल छल।

बटुकनाथ हरिहरन सभामे छला, दूर बैसल। एक–एक गवाही सुनि हुनकर मुस्कान झड़ैत गेल।

सत्यव्रत मेहता चुपचाप सुनैत रहला। ओ बुझैत छला जे गवाहीक असली शुरुआत तखन होइत अछि जखन मनुष्य अपन चुप्पीक नाम लिखय।

एकटा प्रौढ़ साहित्य–सेवी कहला —– "हम बरखों नाटक देखलहुँ, मुदा आइ बुझलहुँ जे दर्शक जँ गवाही नहि दिअय, त नाटक आधा रहि जाइत अछि।" एकटा बालक पुछलक —– "तखन अगिला अंकमे दर्शक सेहो भूमिका करत? " अनन्या कहलीह —– "भूमिका नहि —– अपन नाम।"

मीरा सावधान केलीह —– "जे गवाही देल गेल, ओकर मालिक गवाह अछि। मंच ओकर सेवक मात्र।"

राति बूढ़बा भूत आ कबड्डी खेलनिहार सभ "उपस्थित" पुकारला। प्रेक्षागृहक हर कोनसँ उत्तर आयल —– "उपस्थित।"

भोरे उत्सवक फाटकपर बच्चा सभक हाथें लिखल एकटा नव सूचना चिपकल भेटल —– "अगिला अंकमे दर्शकक गवाही नाट्य–पाठमे जोड़ल जाएत। कबड्डी जारी अछि।"

अध्याय १३८

मंचसँ बाहरक जुलूस

जखन लोक बाहर निकलल, त सभागारक सीढ़ीपर भीड़ ठाढ़ रहि गेल। कियो पुछलक —— "ई नाटक छल कि अदालत?" उत्तर आयल —— "अदालत जँ नाटक बनि जाए त न्याय मरैत अछि; नाटक जँ अदालत बनि जाए त स्मृति बजैत अछि।"

पहिल गवाही सभागारक बाहर चाह–दुकानपर भेल। एकटा स्त्री कहलीह —— "हमर भाइयो कोनो अभिलेखमे नहि अछि।" चाहबला अपन उधार–पुस्तकमे पहिल बेर ओकर नाम लिखलक।

दोसर गवाही बस–अड्डापर भेल। एकटा युवक, जे मंचपर भूतक चूना लगौने छल, कहलक —– "जाबत धरि हमर बाबूक नाम पूरा नहि लिखाइत, ई रंग धुलत नहि।"

तेसर गवाही मंडपक पछिला दरबाजा लग भेल। कलाकार सभ अपन असली नाम बाजय लागल। जे मजदूर बनल छल, ओकर दादा सचमुच पुलमे गुमायल छला।

सूत्रधार पांडुलिपिक एकटा पृष्ठपर लिखल पओला —– "जाहि कथाकेँ दर्शक भीतर लऽ जाए, ओकर लेखक बदलि जाइत अछि।"

मीरा कहलीह —– "जे गवाही निजी अछि, से मंचक बाहर नहि जाएत। छपाइसँ पहिने अनुमति।"

राघव सिग्नल अपन कोडमे "उपस्थित" शब्द मेटाबय चाहलक, मुदा से बार–बार घुरैत रहल।

बटुकनाथ हरिहरन सुनि कहला —– "भीड़ कतबा?" सचिव कहलक —– "भीड़सँ बढ़ि, लोक गवाही दऽ रहल अछि।" बटुकनाथक चेहरा बिगड़ल —– भीड़केँ नियंत्रित कएल जा सकैत अछि, गवाहीकेँ नहि।

भोरे कबड्डी खेलनिहार सभ सभागारक बाहर, सड़कपर कबड्डी खेलय लागल। दूध लऽ जाइत लोक, अखबार बाँटैत बालक —– सभ किछु क्षणक लेल ठाढ़ भऽ गेला।

ईरा कहलीह —– "जतबा छापब, ततबा छूटत। मुदा जे छूटत, तकरा स्वीकार क छापू।"

तखने विदेशसँ एकटा पत्र आयल —– "हम सभ सेहो नाटक खेलब, मुदा पहिने नाम सुनब।" कबड्डीक रेखा आब समुद्र पार जाएबाक संकेत दैत छल।

अध्याय १३९

बाटक रंगमंच

नाटक आब सभागारसँ बाहर, बाटपर उतरि गेल। जे दूध लऽ क जा रहल छल, से एक क्षणक लेल दर्शक बनि गेल। जे रिक्शा खिंचैत छल, से साँस रोकि "कबड्डी" क ताल पकड़लक।

पहिल अभिनय हाट लग भेल। एकटा खेलाड़ी साधारण युवक बनि, धीरे-धीरे "उपस्थित" कहलक। हाटमे माछ काटैत छूरी अटकि गेल। मरिचाइ बेचैत बुढ़िया सेहो उत्तर देलीह —— "उपस्थित।"

दोसर दिन बस–अड्डापर दृश्य भेल। कंडक्टर स्वयं एकटा पात पढ़ि सुनौलक — "जे नाम टिकटपर नहि चढ़ल, ओ यात्री नहि होएत? जे नाम जीवनमे नहि चढ़ल, ओ मनुष्य नहि?"

तेसर दृश्य अदालतक बरामदामे भेल। एकटा बालिका खाली कागच राखि कहलीह — "जकरा जीवन दबा देल गेल, ओकर प्रमाण कोन खानामे?"

चारिम अभिनय दवाइ–दुकानक सोझाँ भेल। एकटा दुकानदार स्वयं आबि कहलक — "हमहूँ कीमत बढ़ेलहुँ। डरक समय लाभ लेलहुँ।" मीरा कहलीह — "गवाहीक पहिल साँस दोषसँ शुरू भऽ सकैत अछि, मुदा ओतय समाप्त नहि होएत।"

किछु व्यापारी कहला — "एहि सभसँ ग्राहक भागि जाएत।" बच्चा सभक उत्तर एके छल — "हम भड़कबैत नहि, नाम पढ़ैत छी।"

बटुकनाथ हरिहरन खबरि पाबि मुस्कुरैला — "सड़कपर नाटक? अव्यवस्था सिद्ध करब सहज होएत।" मुदा जेना ओकर कलम उठल, कागचपर अपने "उपस्थित" लिखा गेल। ओ बुझि गेला — चन्ना गाछी आब बरामदामे घुसि चुकल अछि।

चन्द्रपाल अपन लोक हाटमे कैमरा लगाबय पठौलक, मुदा स्त्री सभ रोकि देलीह। मीरा कहलीह — "स्मृतिकेँ फेर बिक्रीपर नहि चढ़ाएब।"

राघव सिग्नल एहि घटनाकेँ "चल–नाटक" कहि दर्ज करय चाहलक, मुदा ओकरा बुझायल नहि जे संदेश ककरा पठाओल जाए — कोनो मालिको नहि, कोनो एक नेता नहि।

लाउ किन–हंग दूर देशमे बैसल बुझि गेला — ई लोक पृथ्वी नहि छोड़त। जे स्मृति बाटपर खेलय लागल, ओकरा दोसर ग्रहक करारसँ नहि कीनल जा सकैत।

अध्याय १४०

चल चौपाल

कबड्डी खेलनिहार सभ नव नियम बनौला। जे ठाम अभिनय होय, ओतय अंतमे खेल अवश्य होय — मुदा हार–जीत घोषित नहि होएत। खेलाड़ी सीमा पार करैत "कबड्डी" कहत, सोझाँक लोकसँ एकटा नाम माँगत, फेर साँस टूटबासँ पहिने वापस अओत।

बच्चा सभ एहि बाटक रंगमंचकेँ "चल चौपाल" नाम देला। ओकरा लेल मंच नहि, केवल तीन वस्तु चाही — एक खुजल ठाम, एक सुननिहार कान, आ एक अपूर्ण नाम।

साँझमे जुलूस फेर ठूँठ लग घुरल। एकटा छोट बालक, जे आइ पहिल बेर अभिनय देखलक, लिखलक —— "नाटक ओ नहि जे मंचपर होय; नाटक ओ जे जीवनकेँ अपन झूठ सुनाबय पर विवश करय।"

बा हँसि क कहलीह —— "त आब जीवनक बारी अछि... आब जे लोक दर्शक बनि देखलक, ओ सभक घरमे कथा घुसत। ओतय असली रंगमंच अछि —— रसोइ, ओसारा, खेत, अदालत, मोबाइल, निन्न।"

राति दूइटा सिपाही साइकिलपर आबि एकटा कागच देला —— "अनधिकृत मार्ग–अवरोध सम्बन्धी स्पष्टीकरण।" बच्चा सभ पढ़लक। कियो डेरायल नहि। कारण सभ जनैत छल —— कथा जखन बाटपर उतरैत अछि, सत्ता ओकर पएर नापय लगैत अछि।

अनन्या कागच ठूँठक कगारपर राखलीह। सत्यव्रत मेहता कहला —— "काल्हि ई पढ़ल जाए।"

बूढ़बा भूत पाछूसँ स्वर देलनि —— "पढ़ल नहि, खेलल जाए।"

अगिला दिन बाटक रंगमंच नहि, कागचक कबड्डी खेलल जाएत —— जतय कानूनक पंक्तिसँ साँस चोराक नाम वापस आनबाक छल।

अध्याय १४१

बरामदाक फैसला

कागचक कबड्डी अदालतक फाटक धरि पहुँचल। बरामदाक पुरान पाथर जे दिन भरि जूता, प्रतीक्षा, तारीखक पुकार सहैत छल, ओहि राति मंच बनि गेल।

सत्यव्रत मेहता एक कोनमे ठाढ़ छला। नाटक समाप्त भेलापर एकटा बूढ़ मुवक्किल आगू आबि कहलक — "हमर मुकदमा तेइस बरख चलल। बेटा जुआनसँ बूढ़ भऽ गेल। अदालत कहलक कागच अधूरा अछि। मुदा हमरा जीवनक कागच के लिखत?"

अदालतक भीतरसँ एकटा लिपिक बाहर आयल आ कहलक — "किछु फाइल पर धूलि नहि, नामक राख अछि।" अनन्या ओकर डरक नाम पुछलीह।

लिपिक कहलक —— "नोकरी बचाबयक डर।" बच्चा सभ लिखला —— "नोकरी बचाबयक डर एहो मौनक एक रूप।"

बटुकनाथ हरिहरनक एकटा पुरान शिष्य, जे अधिवक्ता छल, अपन कोट पाथरपर राखि कहलक —— "हम सभ कानूनक भाषा सीखलहुँ, मुदा न्याय सुनबाक भाषा नहि सीखलहुँ।" ओकर जेबसँ तारीखक पर्ची सभ खसल। बच्चा सभ कहला —— "जे पर्ची खसल अछि, पहिने ओ स्वयं पढ़त।"

देविका कहलीह —— "एहि बरामदामे नाटक भेल। आब एहि बरामदामे पाठ होएत।"

मीरा सभकेँ सावधान केलीह —— "जकर कथा सार्वजनिक नहि होमय चाहैत अछि, ओकरा तालीमे नहि घीचू।"

एकटा छात्र पुछलक —— "ई सभ रोदन प्रमाण केना?" आरुणि बूढ़ मुवक्किलक फाटल पएर, तारीखक पर्ची, बच्चा सभक रजिस्टर देखा क कहलनि —— "प्रमाण केवल कागचमे रहय त गरीबक जीवन सदिखन अप्रमाणित रहत।"

सत्यव्रत मेहता अंतमे एकटा पुरान पन्ना अनन्याकेँ देला —— "न्यायालयक बरामदा न्यायालयक बाहर नहि, ओकर अनसुना कान अछि।" अनन्या नीचाँ लिखलीह —— "कान जखन खुजत, बरामदा अदालत बनत।"

भोरे बूढ़ मुवक्किल कहलक —— "आइ फैसला नहि भेटल, मुदा हमरा प्रतीक्षाक नाम भेटल।"

अगिला दिन सबेरे अदालतक रेकर्ड-घरक भीतर पुरान फाइल सभ अपने-आप फड़फड़ायल, जेना कहि रहल होय —— हमरो पढ़ू।

अध्याय १४२

रेकर्ड–घरक अन्हार

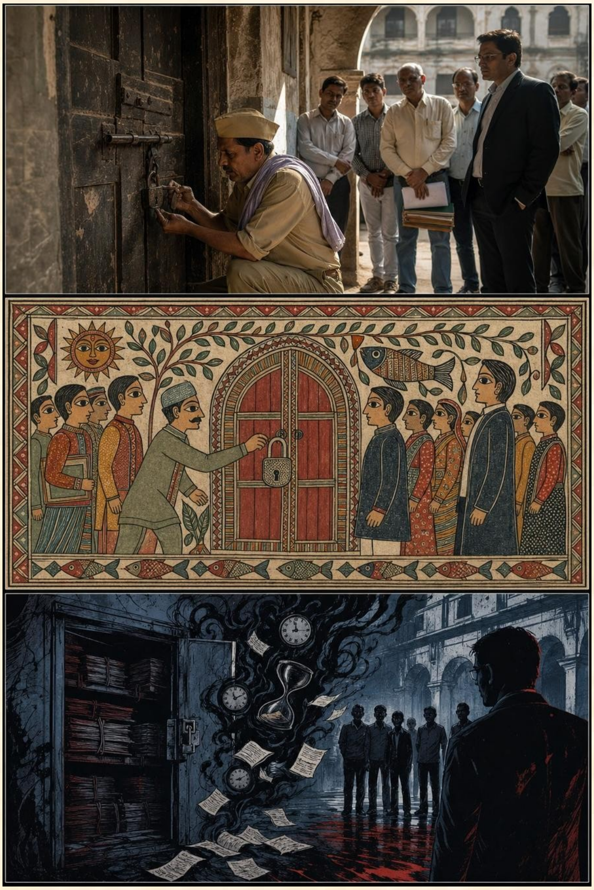

अगिला दिन रेकर्ड–घरक दरबाजा देखल गेल — काठ भीतरसँ धड़कि रहल छल। चपरासी भिखारी लाल चाभी लगौलक, मुदा ताला नहि खुजल। ओ कहलक — "ताला पुरान नहि, भीतरक साँस भारी अछि।"

कुण्डी अंतमे खुजल। धूलि आँखिमे नहि, स्मृतिमे घुसल। अनन्या एकटा रद्दी बोरा दिस गेलीह — "ई रद्दी नहि, ई अपमानित कागच अछि।" आरुणि कहलनि — "जे नाम बोरामे अछि, ओ स्वयं आदेश अछि।" मीरा सावधान केलीह — "कोनो फाइल फाड़ू नहि। पहिने गनू, फेर पढ़ू।"

पहिल फाइलमे जमीन–विवादक भीतरसँ विवाहक निमंत्रणक फाटल टुकड़ा भेटल —– मुकदमाक कारण एकटा विवाह टूटि गेल छल।

एकटा फाइलमे युवकक निवेदन छल —– जातिक नामक कारण दाखिला–पंजीमे कुलनाम बदलल गेल छल, आ ओकर छात्रवृत्ति, नोकरी सभ रुकि गेल। आरुणि कहलनि —– "नाम काटब केवल अक्षर काटब नहि, मनुष्यक भविष्य काटब अछि।"

सत्यव्रत मेहता भीतर आबि कहला —– "रेकर्डक धूलि जँ देहपर नहि लागय, त न्यायाधीश अपना साफ बुझैत रहैत अछि।"

एकटा वृद्ध महिला बरामदासँ भीतर घुसि आयलीह —– "हमर पतिक फाइल एतय छै। हम सोचलहुँ, जे मनुष्य गुम भेल ओकर फाइल केना गुम नहि होएत?" मीरा कुर्सी देबय चाहलीह, मुदा वृद्धा पाथरपर बैसल रहलीह —– "हम बरखों धरि पाथरपर बैसल छी, कुर्सी आब हमरा साँच नहि लगैत।"

छठम बेर बच्चा सभकेँ एकटा कागच भेटल —– केवल आधा नाम बचल। वृद्धा माथपर लगा लेलीह —– "आधा नामो नाम होइत अछि, जँ कियो ओकरा पूरा सुनय।"

देविका प्रस्ताव देलीह —– "प्रत्येक गुम फाइलक सूची बनत। फाइल नहि भेटल त मनुष्य समाप्त नहि मानल जाएत।"

बटुकनाथक पुरान शिष्य माफी माँगय आयल। मीरा कहलीह —– "माफी मंचपर देल शब्द नहि। जकर फाइल अहाँ दबेलहुँ, ओकरा खोजयमे हाथ लगाउ।"

सत्यव्रत मेहता आदेश लिखला —– "रेकर्ड–घरक प्रत्येक फाइलक पुनर्गणना, गुम फाइलक सार्वजनिक सूची, आ प्रतीक्षारत पक्षकारक मौखिक गवाहीक अभिलेख तैयार होय।"

अनन्या कहलीह —– "ई विजयक घड़ी नहि, पहराक शुरुआत अछि।"

अध्याय १४३

रद्दी बोराक गवाही

रेकर्ड–घरक सभसँ भारी कोन ओ छल जतय रद्दी बोरा राखल छल। मीरा कहलीह —– "ध्यानसँ। जे कागच एखन रद्दी कहल जा रहल अछि, कदाचित ओहिपर ककरो जिनगीक आखिरी आस लिखल होय।"

अनन्या बोराक मुँह खोललीह। भीतरसँ पन्ना निकलल —– "मूल अभिलेख अनुपलब्ध।" आरुणि कहलनि —– "मूल अभिलेख अनुपलब्ध नहि, मूल मनुष्य अनुपस्थित कएल गेल।"

सत्यव्रत मेहता एकटा पन्ना पढ़ला —– एकटा विधवाक निवेदन, जकर जमीनपर बंधकक नामे कब्जा भऽ गेल छल। किनारपर लिखल छल —–

"अस्पष्ट।" सत्यव्रतक आँखि भरि आयल —— विधवाक लिखाइ अस्पष्ट नहि छल; व्यवस्था ओकर दुःख पढ़बाक अभ्यस्त नहि छल।

देविका कहलीह —— "रद्दी बोराक पहिल पाठ ई अछि जे जकरा सभ हटाओल गेल, ओ सभ समाप्त नहि भेल।"

एकटा पन्नापर केवल लिखल छल —— "हमरा सुनू।" नीचाँ अंगूठाक निशान। अनन्या कहलीह —— "जँ नाम नहि बचल, त वाक्यक रक्षा करू।"

चपरासी भिखारी लाल कहलक —— "हमरा सिखाओल गेल जे पुरान कागच साफ करू, मुदा कियो नहि कहलक जे पुरान कागचक भीतर पुरान रोदन सेहो रहैत अछि।"

बच्चा सभ निर्णय केला जे प्रत्येक पन्नाक प्रतिलिपि बनत। मीरा सावधान केलीह —— "जकर नाम सार्वजनिक करबासँ ओकर परिवारपर चोट पहुँचत, ओकर नाम झाँपल जाएत। गवाहीक रक्षा करब, गवाहक देह नहि बेचब।"

बूढ़ मुवक्किल एकटा पन्ना देखि कहलक —— "ई हमर भाइयोक आवेदन सन लगैत अछि।" मीरा रोकलीह —— "सन लगैत अछि, ई गवाहीक आरंभ अछि; प्रमाणक अंत नहि।"

राति रद्दी बोरा खाली भऽ गेल, मुदा रेकर्ड–घर भरल बुझायल। बच्चा सभ बोराक मुँहपर लिखला —— "एतय गवाही दबाओल गेल छल।"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "जे दिन कार्यालय अपन रद्दी देखबाक साहस करैत अछि, ओहि दिन न्याय अपन पहिल चेहरा फेर पबैत अछि।"

बूढ़बा भूत कहलनि —— "रद्दी कहब आसान अछि; गवाही बनि उठब कठिन। आइ कठिन काज शुरू भेल।"

अध्याय १४४

नामक यात्रा

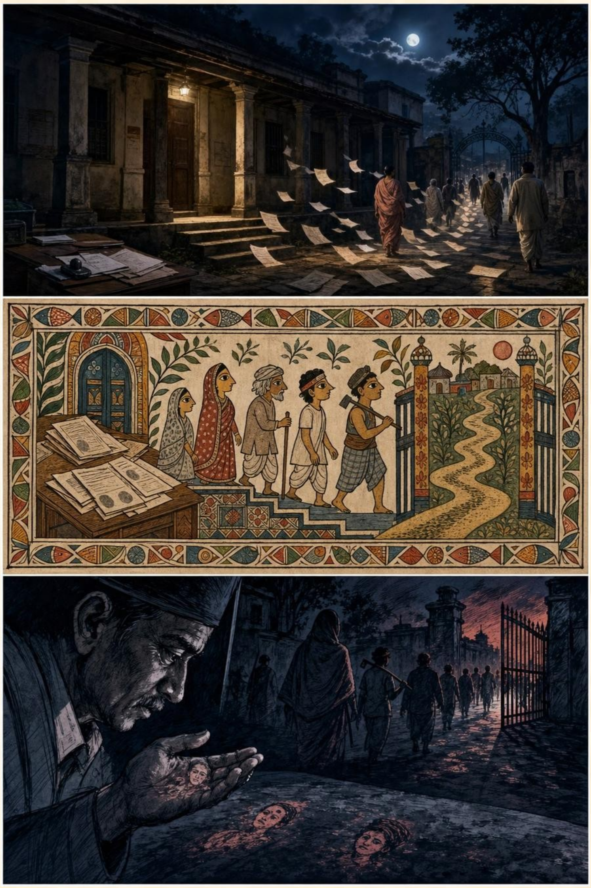

अनन्या कहलीह — "नामक यात्रा कागचसँ शुरू भेल अछि, मुदा कागचपर समाप्त नहि होएत।" मीरा जोड़लीह — "खबर लऽ जाएबासँ पहिने गरिमा लऽ जाएब।"

सूची तीन भागमे बनल — जे जीवित छथि, जे नहि रहला (परिजन खोजल जाएत), आ जिनकर घर धुँधला भऽ गेल अछि (ओकर नाम चन्ना गाछी लग पढ़ल जाएत)। आरुणि लिखलनि — "अनुमति बिनु चेहरा नहि, गरिमा बिनु गवाही नहि।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "प्रक्रिया जँ मनुष्यक रक्षा नहि करय, त ओ केवल कुंडी अछि। ई सूची कुंडी नहि, दुआर होय।"

एकटा युवक अधिवक्ता, जे काल्हि अपन कोट पाथरपर राखने छल, आइ बिनु कोट आबि कहलक — "हम एहि नाम सभक घर खोजबामे मदति करब।" आरुणि रोकलनि — "मदति करू, मुदा मालिक नहि बनू।"

पहिल घर जसोदा देवीक खोजल गेल। ओ नहि रहलीह। हुनकर भतीजी, जे आब स्वयं नानी भऽ गेलीह, कहलीह — "ओ नाम एखनहुँ जीबैत अछि?" वृद्धा अपन छातीपर हाथ राखि कहलीह — "ओ कहैत रहथि, खेत गेल त हम नहि रहब। लोक हँसैत छल। आब कागच कहि रहल अछि।"

जसोदाक खेत आब दोसराक कब्जामे छल। एकटा अधबएसू पुरुष कठोर स्वरमे पुछलक — "पुरान बात खोदबासँ की होएत?" भिखारी लाल उत्तर देलक — "कागच गलत हाथमे रहल त नहि बदलल। आब नामक हाथमे जाएत।"

साँझमे दल घुरल। अनन्या कहलीह — "आब जसोदा देवी मृत प्रकरण नहि। आब ओ जीवित स्मृति छथि।"

सत्यव्रत मेहता लिपिकक डरकेँ सेहो सूचीमे लिखबय कहला — "जे व्यवस्था नाम दबबैत अछि, ओ पहिने कर्मचारीक कंठ दबबैत अछि।" लिपिक शीर्षक लिखलक — "कर्मचारीक मौनक बयान।"

अनन्या अंतमे कहलीह — "किछु नाम कदाचित कहियो घर नहि भेटत। मुदा जे नाम घर नहि भेटत, ओकरा हम चन्ना गाछी लग स्थान देब।"

भोरे सूची तीन प्रतिलिपिमे राखल गेल — रेकर्ड-घर, बरामदाक पाथर, आ चन्ना गाछी लेल। ओसक बून्द पन्नापर चमकल। मीरा कहलीह — "ई ओस नहि, नामक स्नान अछि।"

अध्याय १४५

डरक पहिल दरार

नामक तीन प्रतिलिपि अपन–अपन बाट पकड़लक — एक रेकर्ड–घरमे, एक बरामदाक पाथरपर, आ एक अनन्याक थैलीमे चन्ना गाछी दिस।

चन्ना गाछी लग पहुँचि सूची खोलल गेल। अनन्या कहलीह — "ई नाम सभ घर खोजि रहल अछि। जे घर भेटत, ओतय पहुँचाओल जाएत; जे घर नहि भेटत, ओकरा एहि गाछीक स्मृतिमे स्थान देल जाएत।" आरुणि कहलनि — "गाछी सहमति देलक।"

चन्द्रपाल बत्राकेँ खबर पहुँचल — "सूची बनि गेल अछि। बच्चा सभ चन्ना गाछी लऽ गेल।" ओकर हाथ काँपल, चाह टपकि पड़ल।

राघव हँसला, मुदा भीतर खोखल — "बच्चा सभ की करि लेत?" मुदा ओकरा मोन पड़ल जे बच्चा सभ प्रश्न करैत अछि, आ प्रश्नक उत्तर लाठीसँ नहि देल जा सकैत।

दुपहरमे अदालतक बाहर अधिकारी आबि लिपिककेँ झिड़कला — "बिनु अनुमति फाइल किएक देखाओल गेल?" लिपिक अपन जेबसँ पर्ची निकालि कहलक — "फाइल देखाओल नहि गेल; फाइल पढ़ल गेल। जे कागच रद्दी कहल गेल छल, ओकर भीतर मनुष्यक निवेदन छल।"

भिखारी लाल आगू बढ़ि कहलक — "हम झाड़ू लगबैत छलहुँ। रद्दी कहैत छलहुँ। आब कहैत छी — ओ रद्दी नहि छल।"

सत्यव्रत मेहता अधिकारीसँ कहला — "जँ नियम मनुष्यक नाम मेटा देत, त नियमक व्याख्या पुनः करबाक पड़त।"

चन्ना गाछी लग बूढ़ मुवक्किल अपन पोताक संग आयला। पोता पुछलक — "दादा, ई नाम अहाँक अछि?" बूढ़ हँसला, फेर रोयला — "हँ, मुदा ई नाम हमरासँ अधिक ओहि प्रतीक्षाक अछि जे तोहर बाबूजी धरि चलल।"

चन्द्रपालक दूत सूचीकेँ रोकबाक चाहलक — "प्रतिष्ठित परिवारक नाम बिनु प्रमाण जोड़ल जाएत त गाममे अशांति होएत।" मीरा कहलीह — "जे कागच दबेलक, जे प्रतीक्षा बेचलक, ओकरा अशांति कहि क बचाओल नहि जाएत।"

राति अदालतक विरोधी पक्षक बैसकीमे एक बुजुर्ग अधिवक्ता कहला — "फाइलक प्रतिलिपि तीन ठाम अछि। लोक सुनि चुकल। भयक समय बीति रहल अछि।" ई पहिल दरार बनल।

अनन्या कहलीह — "काल्हिसँ घर-घर जएबाक अछि। कोनो कथा बिनु अनुमति नहि लिखब।" मीरा जोड़लीह — "डरक नाम सेहो लिखब।"

अध्याय १४६

मुहरक दाग

अनन्या एकटा पुरान गठरी खोललीह — "विशेष अभिलेख।" भीतरक पन्नापर मोहर लागल छल — किछु साफ, किछु टेढ़, किछु आधा।

आरुणि एकटा अरजी पढ़लनि — खेतक सीमा बदलि गेल छल, चूल्हा बदलि गेल छल, आ अंतमे मोहर लागल छल — "सत्यापित।" ओ कहलनि — "जे झूठ देह खा गेल, ओकरा सत्यापित कहल गेल।"

मीरा एकटा कागच उठौलीह जाहिमे एकहि स्त्रीक बारेमे तीन अलग–अलग टिप्पणी छल — "हाजिरी देल," "अनुपस्थित," "दस्तावेज अपर्याप्त।" ओ पुछलीह — "एकहि स्त्री एकहि दिन उपस्थितो केना, अनुपस्थितो केना?"

चन्द्रपालक पुरान मुंशी, जे भीड़मे ठाढ़ छल, कहलक —— "हम फाइल नहि गुम केने रही। हम बस ऊपर देलहुँ। ऊपरसँ घुरल नहि।" अनन्या पुछलीह —— "ऊपर के? "

मुंशी अंततः मुड़ल कागच निकालि देलक —— एकटा सूची, जाहिपर लिखल छल —— "ब.ह.क आदेश।" बटुकनाथ हरिहरनक नाम पूरा नहि छल, मुदा ओकर छाह कोठलीमे पसरि गेल।

एतबे दूर चन्ना गाछी लगसँ एकटा बच्चा दौड़ैत आयल —— एकटा पाथर, जाहिपर लाल धब्बा आ लिखल छल —— "नाम बाँचू।"

मीरा सावधान केलीह —— "आब सभसँ खतरनाक समय शुरू भेल अछि। जखन कागच प्रमाण बनय लगैत अछि, तखन कागच जलाओनिहार जन्म लैत अछि।"

भिखारी लाल अपन चाभी अनन्याक सोझाँ राखि कहलक —— "हम पहरा अकेले नहि दऽ सकैत।" अनन्या कहलीह —— "चाभी तोहर हाथमे रहय। फर्क एतबे जे आब हाथ अकेल नहि रहत।"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "आइ अदालतमे कोनो फैसला नहि लिखल गेल, मुदा मोहरक विरुद्ध पहिल बयान दर्ज भेल।"

बच्चा सभक रजिस्टरमे लिखल गेल —— "जखन मोहर मनुष्यपर चढ़ि जाए, तखन पहिल न्याय अछि —— मनुष्यक रेखा फेर देखाबू।"

अध्याय १४७

घर–घरक दस्तक

भोरे अनन्या, आरुणि, देविका आ भिखारी लाल घर–घर जाय लगला। मीरा कहलीह — "हम घोषणा करय नहि, सुनय जा रहल छी। घर–घरक दस्तक हल्ला नहि, आदरक पहिल स्पर्श होयबाक चाही।"

पहिल घर सुरमणी देवीक छल। अनन्या धीरेसँ कहलीह — "ई अहाँक आवेदनक नकल अछि।" सुरमणी देवी कहलीह — "ई कागच हम अपने नहि लिखने रही। हम कहने रही, पटवारीक लड़का लिखने छल। मुदा ओकरा लिखाइमे हमर रोदन कतय छल?" आरुणि लिखलनि — "लेखक दोसर, दुःख पहिल जनक।"

दोसर घर रामेश्वर साहक छल, जे नहि रहला। हुनकर पुतोहु डरि गेलीह — "आब फेर मुकदमा खोलब? हम सभ थाकि गेलहुँ।" मीरा हुनकर हाथ पकड़ि कहलीह — "मुकदमा हम नहि खोलि रहल छी। हम थकानक नाम लिखि रहल छी।"

भिखारी लाल पुतोहुसँ कहलक — "कखनो हम तारीखक पर्ची देलक होय त क्षमा करब। हम बुझलहुँ नहि जे पर्ची देलासँ ककर चूल्हा बिनु जलल रहि जाइत अछि।" पुतोहु कहलीह — "बुझि गेलहुँ त लिखू।"

तेसर घर फुलकुमारीक छल। हुनकर माय कहलीह — "ओहि साल ओ पढ़ाइ छोड़ि देलक। प्रमाण अधूरा नहि छल, पेट अधूरा छल।" अनन्या अनुमति माँगलीह — "ई कथा लिखि सकैत छी?" माय कहलीह — "लिखू। मुदा हमर बेटीकेँ दया नहि, हकक रूपमे लिखू।"

जे दुआर बंद रहल, ओतय बच्चा सभ आवाज नहि देला। मीरा कहलीह — "बंद दुआर सेहो उत्तर अछि।" ओ सभ देहरीपर पर्ची छोड़ि देला — "अहाँ चाहब तखन हम सुनबाक लेल आबि सकैत छी।"

बाजारमे राघवक सलाहकार अफवाह पसारलक — "ई सभ शांति बिगाड़ि रहल अछि।" लोहार नन्दू हथौड़ा रोकि कहलक — "शांति ओहि घरमे छल जतय चूल्हा नहि जरल?"

एकटा पुरान फोटोकॉपीवाला मुरारी एकटा गठरी लऽ क आयल — "ई सभ अतिरिक्त प्रति अछि। लोक देरीमे पैसा नहि देलक, त हम राखि देलहुँ।" भिखारी लाल फुसफुसैलक — "रद्दी रद्दीमे मनुष्य बाँचि गेल।"

राति चन्ना गाछी लग पहिल दिनक कथन पढ़ल गेल — जकर अनुमति नहि छल, ओकरालेल खाली दीप राखल गेल — बिनु बाती, बिनु ज्वाला, मुदा स्थान सहित।

एहि बीच चन्द्रपालक घरमे दोसर बैसकीमे षड्यंत्र बनल — "सत्यकेँ हराबय सहज अछि ओकर भीड़मे झूठ मिला देब।" मीरा एहि चालक आहट पहिनहि बुझि, पाँच नव नियम बनौलीह — दुहरा सुननाइ, अलग नकल, आरोप–अनुभवक भेद, बिनु प्रमाणक दोष नहि, झूठक जाँच अवश्य।

अध्याय १४८

मिलावटक पहिचान

मीरा कहलीह —— "आइ सुनब सेहो, मुदा परखब सेहो। परखबाक अर्थ अविश्वास नहि, नामक रक्षा अछि। झूठ जँ सत्यक पोशाक पहिरि भीतर घुसत, त असली पीड़ा फेर बदनाम भऽ जाएत।"

पहिल आगंतुक अपनाकेँ "भोला मंडल" कहलक, कथा बहुत सधा–सधाल छल। मीरा पुछलीह —— "अहाँक खेतक माटिक गंध केहन छल?" ओ कहलक —— "माटि त माटि जेहन।" जे मनुष्य खेत गमौने होइत अछि, ओ एहन उत्तर नहि दैत।

देविका ओकर कागच देखलीह —— मोड़ नबका, धूलि नकली। लिपिक कहलक —— "मोहरक अक्षरक दूरी अलग अछि।"

भिखारी लाल पुछलक —— "सच कहू। झूठा कागच के देलक? " ओ अंततः स्वीकार केलक —— "हमर नाम भीखन साह अछि। राघवक लोक कहलक जे एना कथा कहब त दू सौ रुपैया भेटत।"

मीरा ओकरा भीड़मे अपमानित नहि केलीह, बस लिखलीह —— "व्यक्ति दोषी, मुदा दोषक पाछू जाल सेहो।"

दोसर आगंतुक जगमाया छलीह, अपन पतिक कथा कहैत। रसीदपर नाम "हरिमोहन झा" छल, मुदा ओ कहलीह —— "हमर घरमे हुनका मोहन कहैत छलियनि।" ई छोट अंतर सत्यक निशानी छल —— घरक नाम रजिस्टरक नामसँ अलग होइत अछि।

दुपहरमे तीनटा युवक अभिन्न लिखाइक कागच लऽ क आयला, सभ एकहि वाक्य दोहरबैत —— "हमरा न्याय चाही, बस न्याय।" देविका अलग-अलग पुछलीह —— घरक देहरी, पिताक आवाज। तीनू उत्तर उलझि गेल। मिलावट साफ छल।

एकटा छोट बालक सत्य बजलक जे युवक सभ राघवक ओसारपर छल। मीरा तुरंत बालककेँ सुरक्षित केलीह —— "सत्य बोलनिहार बच्चाक रक्षा पहिने।"

राति फोटोकॉपीवाला मुरारी स्वीकार केलक —— "राघवक लोक कहलनि जे झूठा नकल बनाब, नहि त दोकान बंद करा देब। मुदा हम खरोंच छोड़ि देलहुँ, ताकि असली मोहरसँ अलग चिन्हल जा सकय।"

देविका लिखलीह —— "मनुष्य पूरा कारी वा पूरा उज्जर नहि; न्यायक काज धूसरकेँ पढ़ब।"

जगमाया अपन रसीद वापस नहि नेलीह —— "हमरा नकल चाही, अधिकार नहि।"

राति मिलावट-सन्देहक पन्ना एकटा बक्सामे राखल गेल, तालाक बदला लाल धागा —— "खोलब त सभक सोझाँ खोलब।"

अध्याय १४९

जालक नक्शा

भोरे बेर छल ओहि जालकेँ नक्शा बनएबाक जे झूठक पाछू फैलल छल। मीरा सावधान केलीह — "बक्सा खोलब, मुदा आरोप नहि खोलब। पहिने चिन्ह देखब, फेर संबंध देखब, फेर नाम लिखब।"

भिखारी लाल कागचक आकार नापय लागल — "देहक चोट जेहन कागचक मोड़ो बोलैत अछि।"

चारि युवककेँ भेटल कागचमे एकहि बायाँ कोन कातर छल। मुरारीक छोड़ल खरोंच भीखनक कागचमे नहि छल, मुदा तीन युवकक प्रतिलिपिमे छल — झूठक कारखाना दू ठाम चलैत रहल।

सत्यव्रत मेहता कहला —— "एक झूठा कागच अकेला झूठ नहि होइत। जखन ओ दोसर झूठसँ मिलैत अछि, तखन ओकर पाछू पद्धति देखार होइत अछि।"

देविका कागचमे अगरबत्तीक गंध पौलीह। लिपिक कहलक —— "राघवक ओसारपर रोज साँझ अगरबत्ती जरैत अछि। ओहि धुआँमे कागच पुरान देखय लागैत अछि।"

लिपिक अंतमे अपन नाम बतौलक —— "कैलाश प्रसाद।" ओ स्वीकार केलक —— "किछु फाइल राघवक लोकक कहलापर 'अस्थायी रूपेँ अनुपलब्ध' लिखल गेल छल।"

रेकर्ड–घरक भीतर एकटा पुरान लकड़ीक पटरा नीचाँ तीन फाइल भेटल, जाहिपर बटुकनाथक आश्रमक मोहर आ अदालतक अभिलेख संख्या दुनू छल।

नक्शामे नव गोला जोड़ल गेल —— "आश्रम।" आरुणि कहलनि —— "गोहि चारि पाए नहि, चारि संस्थापर चलैत अछि।"

भीखन साह फेर आबि दू सौ रुपैयाक नोट देलक —— "ई ओ पैसा अछि जे झूठा बयानक लेल देल गेल।" मीरा नोट नहि लेलीह —— "ई प्रमाण अछि। अहाँ कहू, केना देल गेल।"

मुरारी स्वीकार केलक —— "डरमे अपराध केलहुँ, मुदा भीतर चाहैत छलहुँ जे एक दिन पकड़ा जाए।" सत्यव्रत कहला —— "एहन इच्छा अपराधकेँ धोइत नहि।" मीरा जोड़लीह —— "मुदा ई इच्छा जाल तोड़बाक दरार बनि सकैत अछि।"

राति नक्शाक बक्सा फेर बंद भेल —— "जालक प्रथम रूप।" जड़िक हरियर बिन्दु देखार भेल। आरुणि लिखलनि —— "जड़ि एखन धरि जिंदा अछि।" अनन्या जोड़लीह —— "जड़ि जिंदा रहत त नक्शा मिटत नहि।"

अध्याय १५०

मुहरक छाया

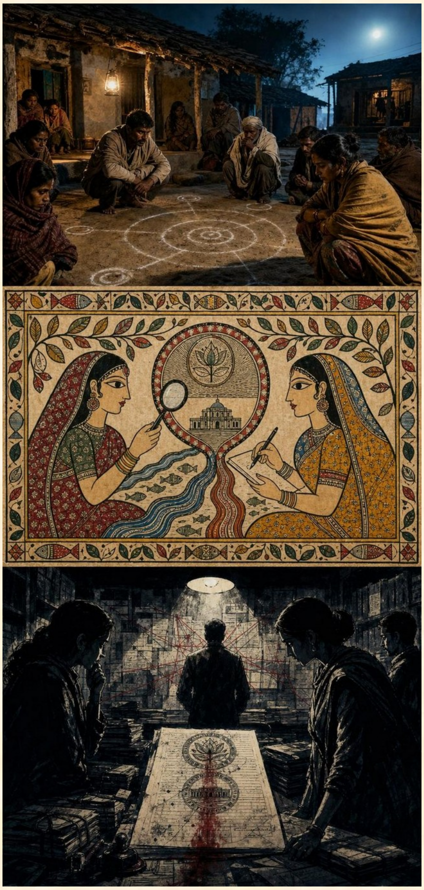

सूचीपत्रपर आश्रमक मोहर आ अदालतक अभिलेख संख्या दुनू भेटल छल। अनन्या कहलीह — "एहि मोहरक बाट खोजय बिनु जालक देह नहि देखार होएत।"

मीरा नियम बनौलीह — "मोहर देखिते आश्रमपर धावा नहि। हम पुछब, मिलाब, सुनब।"

सत्यव्रत मेहता मोहरमे एकटा सूक्ष्म कटान देखलनि। कैलाश प्रसाद बतौलक — "दशक भरि पहिने एकटा अस्थायी मोहर अदालतमे चलैत छल, जकरा बादमे 'खो गेल' लिखि देल गेल।"

भिखारी लाल कहलक —— "अदालतमे जे वस्तु खोइत अछि, से कखनो अकेले नहि खोइत।"

मुरारी एकटा नाम देलक —— छेदी कबाड़ी। चारि लोक ओकर दोकान गेला। छेदी बतौलक —— "एक बेर हमरा एकटा भारी टुकड़ा भेटल छल —— गोल नहि, अर्धगोल, एक किनार कटायल, उनटा अक्षर।" ई सुनि मुरारीक चेहरा फक पड़ि गेल।

छेदी बतौलक जे ओ टुकड़ा एकटा घुमंतू धातु–कीनार, जकरा "सिक्का" कहल जाइत छल, ओकरा देलक। मीरा तिथिक बदला मौसम पुछलीह —— "सावनक बाद।"

छेदीक पुरान बोरामे दान–पुस्तिकाक फाटल जिल्द भेटल, जाहिमे "समझौता–सेवा" लिखल श्यामसुंदरक (सुरमणी देवीक पति) नाम छल।

सुरमणी देवी अपना कहलीह —— "हमर पति कहैत छला जे आश्रम गेलाक बाद बाबू सभ मुलायम भऽ जाएत। आब बुझलहुँ, मुलायम नहि, लिपटायल जाइत छल।"

भानु लाल (पुरान मोहर–बनौनिहार) क बेटा रमेश मुहरिया अपन पिताक पुरान रजिस्टर देखौलक —— "विशेष गोल मोहर, अस्थायी न्यायालय हेतु, पुनः काटि आश्रम नामसँ प्रयुक्त।"

रमेश कहलक जे ओकर पिता मरबासँ पहिने कहने छल —— "मोहर बनब, मुदा मोहरक पाप नहि बनब।"

चन्द्रपालक दफ्तरसँ उज्जर छाताधारी हरिचरण एकटा धमकीक संदेश लऽ क आयल। मीरा शांत रहलीह —— "हम आरोप नहि लिखैत छी, संबंध लिखैत छी।"

राति रमेश एकटा पुरान लकड़ीक हत्था अनलक (रबर बिनुक) —— "ई बाप बचा क रखने छल।" मीरा कहलीह —— "ई हत्था ठूँठ लग राखू। जनता देखत जे मोहर हाथमे होइत अछि, देवता नहि बनैत।"

अध्याय १५१

मुहर चलौनिहार हाथ

रमेश मुहरिया कहलक — "बाप कहैत रहथि, बेटा, मोहर चलाओ, मुदा मोहरक बात मत पुछू। मोहर पुछय लागल त घर डूबि जाएत।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "मोहर गलत हाथमे पड़ल, तखन राज नहि, चोरीक अनुशासन बनैत अछि।" भिखारी लाल जोड़लक — "चोरी जखन अनुशासन बनैत अछि, तखन चपरासी ओकर पहिल पहरुआ बनि जाइत अछि।"

आश्रमसँ दू नवयुवक आयल। अनन्या पुछलीह — "लोककल्याणक कागचपर अदालतक अभिलेख संख्या किएक?" नवयुवक कहलक —

"सुविधा लेल।" मीरा पुछलीह —– "सुविधा ककर? विधवाक? कि ओहि हाथक जे मोहर चलबैत छल?" नवयुवक चुप भऽ गेल।

जगमाया मोहनक एकटा पत्र अनलीह —– "कागचपर मोहर त लगि गेल, मुदा हम पढ़ि नहि सकलहुँ जे हम अपनहि जमीनपर पराया केना भऽ गेलहुँ।"

रमेश अपन बापक रजिस्टरक एकटा पन्नामे कोड देखौलक —– "अ", "च", "र", "आ"। भिखारी लाल बुझि गेल —– "अ अदालत, च चन्द्रपाल, र राघव, आ आश्रम?"

भीखन चाहबला कहलक —– "एक लोक सदिखन बिनु चीनीक चाह पीबैत, आ जेबमे लाल धागा राखैत।"

एकटा अनाम छाताधारी लोक "रामलखन सहाय" नामसँ भेटल। ओ कहलक —– "हम बस कागच लऽ जाइत छलहुँ।" भिखारी लाल कहलक —– "हमरो ई वाक्य छल।"

रामलखन कहलक —– "बटुकनाथक समयमे मोहरक पूजा होइत छल। हुनकर गेलाक बाद मोहरक कारोबार।" सुरमणी देवी कहलीह —– "जखन लोक देवता बनैत अछि, तखन ओकर आसनपर दोसर लोक दुकान खोलि दैत अछि।"

सत्यव्रत मेहता कहला —– "संदेहक भाषा भीड़केँ उकसाबैत अछि; जाँचक भाषा हाथकेँ पकड़ैत अछि।"

साँझमे हरिचरण आबि आश्रमक विरुद्ध बोलबापर आपत्ति केलक। देविका शांत उत्तर देलीह —– "जँ आश्रम पवित्र अछि, त ओकर नामक कागच अपवित्र हाथमे केना गेल?"

राति रामलखनक बयान आधा पूरा भेल —– मोहर चलौनिहार हाथक पाछू हाथ निर्देश करैत छल, ताहि पाछू ओसार, दफ्तर, आश्रमक छाह।

अध्याय १५२

आदेशक स्रोत

मीरा सबेरे नियम लिखौलीह — "आदेशक खोजमे व्यक्तिपर धावा नहि, भाषापर ध्यान।" जे भाषा कहैत अछि — "प्रक्रिया अछि," "सेवा अछि," "ऊपरसँ कहल गेल अछि" — ओहि भाषाक पएर पकड़ब जरूरी अछि।

सत्यव्रत मेहता कहला — "जँ कागच कहय जे ऊपरसँ आदेश अछि, पर ऊपरक नाम नहि, तखन ओ आदेश नहि, दबाव अछि।"

भिखारी लाल अपन पुरान बक्सा अनलक, जाहिमे लाल किनारवाला पर्ची छल — "फाइल रोकू," "नकल देरी" — बिनु हस्ताक्षर, मुदा एकटा नील स्याहीक चिह्न (दू वक्र रेखा, बीचमे बिंदु) सहित।

रामलखन सहाय बतौलक — "ई सीधा आदेश नहि छल। ई मोन दिलौनाइ छल... जे निर्णय पहिनेहि भऽ चुकल, ओकरा कागचपर उतारबाक मोन।"

सत्यव्रत कहला — "जँ फैसला कागचसँ पहिने होइत छल, तखन अदालत केवल मंच बनि गेल।"

रामलखन एकटा नाम देलक — "महावीर पाठक" — बटुकनाथक पुरान शास्त्र–पाठी, बादमे आश्रमक सलाहकार।

महावीर पाठकक घर पुरान पांडुलिपिक गोदाम जेहन छल। ओ पहिने हँसला — "अहिं सभ बच्चा अक्षरक खेलमे पड़ि गेल छी।" अनन्या कहलीह — "अक्षरे सँ जमीन गेल, लोक मरल। खेलक नियम जानब जरूरी अछि।"

महावीरक घरक लोहेक संदूकमे तीन बही भेटल — "बैसकी–स्मृति," "सेवा–विचार," आ "समझौता–सूत्र।" एकटा प्रविष्टिमे लिखल छल — "गाछीक टुकड़ापर प्रत्यक्ष दावा कठिन। धार्मिक उपयोगक स्मरण जगाओल जाए। लोकहितक वाक्य चले।"

रामलखन याद केलक — "हम ओहि राति पान लेने गेल छलहुँ। राघव सेहो छल। वाक्य लगभग ईए छल — लोकहितक वाक्य चले।"

महावीर स्वीकार केला — "बटुकनाथजीक समयमे ई सभ लोकहितमे शुरू भेल। बादमे कतेक हाथ जुड़ि गेल, से हम रोकि नहि सकलहुँ।" सुरमणी देवी तीख स्वरमे कहलीह — "जे रोकि नहि सकल, ओकर नाम बाँचि गेल; जे रोकि देल गेल, ओकर जमीन गेल।"

मीरा रोकलीह — "क्षमा गवाहीक स्थान नहि लऽ सकैत। पहिने पूरा बताउ।"

साँझमे महावीरक बहीक प्रतिलिपि ठूँठ लग पहुँचल। मीरा कहलीह — "हम मूल छीनब नहि। छीनबो अपराधक भाषा अछि।"

अध्याय १५३

संकेतक पाछाँ नाम

अनन्या ठूँठ लग खूंटी गाड़ि कागच लटकौलीह — "दक्षिणक किसान," "नदीक पारक विधवा," "पुरान मुकदमा," "गाछीक टुकड़ा।" मीरा कहलीह — "जेकरा हम नहि जानैत छी, ओकरा खाली छोड़ब सेहो ईमानदारी अछि।"

बूढ़ रामपरीक्षित पासवान आबि कहला — "दक्षिणक किसान शायद हमर काका देवन पासवान छला।" मीरा दू कोठली बनौलीह — "स्मरण" आ "प्रमाण प्रतीक्षा।"

सुरमणी देवी कहलीह —— "नदीक पार बहुत विधवा छली। कागचमे हुनका सभकेँ सदिखन अकेली मानि कमजोर बुझल गेल।" जगमाया पुछलीह —— "जमीनक लालचमे सभसँ पहिने ओकरहि घर देखल गेल।"

एकटा किशोरी कमला अपन नानी फूलकली देवीक पोटली अनलीह —— माटिक डब्बा, अंगूठाक कालिख लागल कपड़ा, आ एकटा पन्ना जाहिपर "स्वेच्छा" लिखल छल। कमला पुछलीह —— "स्वेच्छा की होइत अछि?"

सुरमणी देवी कहलीह —— "जे भूखलकेँ कहय —— खुशीसँ देलहुँ, से स्वेच्छा नहि। जे डरायलकेँ कहय —— अपन इच्छासँ लिखू, से स्वेच्छा नहि। जे विधवाकेँ अकेली घेरि अंगूठा लेय, से स्वेच्छा नहि।"

फूलकली देवीक नाम "प्राथमिक नाम" क सूचीमे गेल। मीरा कहलीह —— "खुशी नहि, सावधानी। नाम भेटलाक अर्थ ई नहि जे न्याय भेटल।"

भानु लालक कोड–रजिस्टरमे एकटा नव अक्षर भेटल —— "ब"। देविका फुसफुसैलीह —— "बटुकनाथ?" मीरा तुरंत रोकलीह —— "नाम नहि, संभावना।"

महावीर पाठक आबि कहला —— "ब अक्षरकेँ बटुकनाथजीपर मत लादू।" सुरमणी देवीक स्वर कटु नहि, मुदा छेदनहार छल —— "पिता जेहन मानल गेल लोक जँ पराया कागचपर संतानक अंगूठा लगबाबय दय, तखन पिता शब्दक सेहो जाँच होएत।"

रामलखन प्रकट केलक —— "बैसकी–स्मृतिमे एक ठाम 'बाबा' लिखल अछि।" सत्यव्रत लिखला —— "अनाम बाबा: आदेश–वाक्यक उच्च स्रोत।"

महावीर विदा लेबासँ पहिने कहला —— "कखनो श्रद्धा कागचसँ ऊपर राखल गेल।" देविका उत्तर देलीह —— "तखन कागचक नीचाँ मनुष्य दबि गेल।"

राति मीरा सूची अनन्याक हाथ देलीह —— "एहिमे नाम नहि, जिम्मेदारी अछि।"

अध्याय १५४

बाबाक वचन

कालि्हक वाक्य सभकेँ राति भरि जगौने रहल — "बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए।" सत्यव्रत मेहता लिखला — "जे वचन लिखल नहि जाए, तकरा सुनबाक विधि बनाउ।"

मीरा नियम देलीह — "आइ ककरो बाबा कहि सम्मान नहि, ककरो अपराधी कहि आरोप नहि। पहिने वचनक चाल चिन्हू।"

महावीर पाठक चारि बहीक प्रतिलिपि आ पुरान आसनक कपड़ा लऽ क आयला — "जे किछु घरमे बचल, लय अनलहुँ।" बहीमे लिखल छल — "गाछीक टुकड़ा लोकहिते छोड़ू," "पुरान नाम विलंबित।" सत्यव्रत बुझौला —

"विलंबित नामक अर्थ होइत अछि — ककरो नाम एतेक देर धरि रोको जे ओकर दावा थाकि जाए।"

एकटा बूढ़ स्त्री शारदा झा, जे कखनो बटुकनाथक आश्रममे रसोई करैत छलीह, आयलीह। ओ कहलीह — "बाबा सीधा नाम कम लैत, संकेत बेसी। 'ओ दक्खिनक लोक हठी अछि,' 'गाछीक सेवा लोकक लेल होएत।' हम तखन रोटी बेलैत रही। बुझलहुँ धर्मक बात अछि। पछात बुझायल — रोटी हमर हाथ बेलैत छल, निर्णय दोसरक पेटमे पकैत छल।"

सत्यव्रत पुछलनि — "अहाँ बटुकनाथ हरिहरनकेँ 'बाबा' कहैत छलियनि?" शारदा कहलीह — "सभ कहैत छल। हमहूँ कहैत रही। मुदा बाबा कहलासँ केओ निर्दोष नहि होइत।"

रामलखन सहाय एकटा पर्ची निकालि स्वीकार केलक — "भानु लाल एक दिन देलनि। कहलनि — बाबाक वचन, 'दान–पत्रक तिथिकेँ पिछला मासमे राखू।'"

सुरमणी देवी कहलीह — "दानक उजास अपराधक अंधारकेँ माफ नहि करैत। जे पोखरि साफ कराबय, से ककरो कागच गंदा करबाक अधिकार नहि पबैत।"

हरिचरण बिफरला — "अहाँ सभ धर्मकेँ कटघरामे ठाढ़ करैत छी।" मीरा शांत रहलीह — "धर्म नहि, धर्मक नामपर कएल निर्णय। जे धर्म प्रश्नसँ डरय, ओ धर्म नहि, कुर्सी अछि।"

साँझमे बटुकनाथक पुरान आसनक कपड़ा खोलल गेल। कमला अपन नानीक माटिक डब्बासँ एक कण आसनक कातमे राखलक। रामपरीक्षित अपन लाठी छुआयलनि। शारदा अपन आटाक दरार देखौलीह। तीन पीढ़ी एकहि आसनक चारूकात ठाढ़ भेल।

मीरा अंतिम सूची पढ़लीह — "बाबा शब्दक अर्थ आइ पहिल बेर बटुकनाथ हरिहरनसँ स्मरण–आधारित रूपमे जुड़ल। प्रमाण एखन पूर्ण नहि, मुदा दिशा अधिक स्पष्ट।" तालीक जगह मौन अधिक उपयुक्त छल।

अध्याय १५५

सेवाक खाता

अनन्या काल्हिक सूचीपर शीर्षक लिखलीह — "वचनक बाद परिणाम।" सत्यव्रत मेहता कहला — "आइ अपराधक भाषा नहि, व्यवस्था-लाभक भाषा पढ़ू।"

महावीर पाठक अपन बहीमे "सेवा-व्यय" खंड देखौलनि — "फूलकली—धान दू मन," "देवनक परिवार—चिकित्सा-सहाय।" कमला पुछलक — "नानीकेँ धान भेटल छल?" सुरमणी देवी कहलीह — "भेटल होएत। मुदा जँ धानक बदला जमीन गेल, त ओकरा सेवा केना कहब?"

शारदा झा एकटा भोज–सूची देखौलीह — "रसोईमे जे नामपर चावल निकलैत छल, ओहि नामक घरमे बादमे चुप्पी बेसी होइत छल।" हरिचरण हँसला — "चावल खायब आ शिकायत करब?" शारदा कहलीह — "भूखक समय देल चावल जँ हकक कागच दबबय लेल होय, त ओ अन्न नहि, रस्सी अछि।"

मीरा स्पष्ट केलीह — "दानक अपमान नहि होएत। दानक उपयोग मौन बनाबय लेल भेल कि नहि, तकर जाँच होएत।"

रामलखन सहाय स्वीकार केलक — "सेवा–खाताक पन्ना सभ अलग राखल जाइत छल। जेकरापर मुकदमाक डर, ओकर नामक सोझाँ खर्चा लिखल जाइत। बादमे कहल जाइत — देखू, आश्रम अहाँक सहायता केलक। आब झगड़ा नीक नहि।"

भिखारी लाल पुछलक — "ई बात अहाँ पहिने किएक नहि कहलहुँ?" रामलखन कहलक — "कारण हमहूँ ओही खातासँ बेटीक दवाई लेलहुँ।"

दक्षिण टोलासँ तीन लोक आयल। कैलाश मंडल कहलक — "हमरा बाप कहैत रहथि — जकर हाथसँ दवा आयल, ओकर नामपर मुँह नहि खोलू।" सकुनी खातुन जोड़लीह — "मुँह बंद करबाक दाम दवा नहि होयबाक चाही।"

हरिबल्लभ दास कहलक — "दक्षिणा मिलल, मुदा शर्त छल — दक्षिण टोलाक रास्तापर दावा नहि उठाउ।"

हरिचरण गरजलक — "सभ बातक अर्थ अपराध करब?" सत्यव्रत उत्तर देला — "जे शुद्ध अछि, जाँच ओकरा नष्ट नहि करैत। जे दूषित अछि, जाँच ओकरा प्रकट करैत।"

महावीरक बहीक अंतिम पन्नामे — "बाबाक प्रसाद: मौन–भोज" — फूलकली देवीक दान–पत्र बनबाक समयक। सुरमणी देवी कठोर स्वरमे कहलीह — "जेकर घर गेल, ओकरा भूलबाक उपदेश देब हत्या दोसर बेर करब।"

कमला माटिक डल्ला बहीक कातमे राखि कहलक — "नानीक जमीनक बदला मौन–भोज?"

मीरा घोषित केलीह —– "आइ स्पष्ट भेल जे सेवा–खाता केवल सहायता–सूची नहि, संभावित मौन–व्यवस्था सेहो रहल।" कियो ताली नहि बजेलक।

अध्याय १५६

दानक ऋण

मीरा आधा उठल हाथ सभक सूची खोललीह। सत्यव्रत मेहता कहला — "आइ हम अपराधी खोजबामे जल्दी नहि करब। पहिने ई बुझब जे ऋण केना देहक भीतर बसि जाइत अछि।"

कैलाश मंडल कहलक — "हमर पिता दवा लेलथि, ई सत्य। मुदा आश्रमक लोक कहैत — जकरा बाबाक दयासँ बाप बचल, ओ बाबाक जमीनपर प्रश्न करत?" मीरा लिखलीह — "दयाकेँ लाजमे बदलबाक प्रक्रिया।"

सकुनी खातुन कहलीह —– "हमर मायकेँ अनाज भेटल। पंचायतमे कहल गेल —– 'तूँ गरीब छी, तोरा लेल दान पर्याप्त अछि; कागचक बात पढ़ल–लिखल लोक बुझत।'" सुरमणी देवी कहलीह —– "ई दान नहि, बालुपर राखल थाली अछि। भोजन देखार होइत अछि, पएर खिसकि जाइत अछि।"

हरिबल्लभ दास कहलक —– "हमरा घरमे बाबापर प्रश्न करब पाप मानल जाइत। पिता कहैत —– मंजीराक दक्षिणासँ घर चलल।" सत्यव्रत पुछलनि —– "दाग भक्तिपर लगत, वा दक्षिणाक उपयोगपर?"

रामलखन सहाय स्वयं आगू आबि कहलक —– "हम अपराधी छी, मुदा हम अकेला अपराधी नहि। मुदा जे हमरे भूख आ बेटीकेँ औजार बनौलक, ओकर नामो लिखू।" अनन्या नव शब्द बनौलीह —– "बंधायल अपराध।"

हरिचरण कहलक —– "जे खयलक, ओ दोषी; जे देलक, ओ पुण्यवान।" सत्यव्रत उत्तर देला —– "जे भूखमे खयल, आ जे भूखक उपयोग करि कागच दबेलक —– दुनू एकहि तराजूमे नहि तोलल जाएत।"

कमला महावीरसँ पुछलक —– "अहाँक घरमे कियो ई पुछलक नहि जे नानीक जमीन सेवा–खातामे किएक नहि?" महावीर बहुत देरमे कहला —– "कारण जमीन पुछितहि बाबा अपमानित होइत छला।" कमला कहलक —– "गरीबक जमीन लोभ नहि, ओकर देहक छाया अछि।"

निर्मला कुम्हारिन एकटा नव कथा जोड़लीह —– "हम घड़ा दैत रही, बदलामे अनाज। मुदा एक बेर हमर बाबूजी कागचक बात पुछलथि, त कहल गेल —– सेवा करैत छी, सौदा नहि।" निर्मला हँसलीह —– "गरीब जे देत, ओहो दान नहि कहल जाइत; धनी जे लेत, सेहो उपकार बनि जाइत।"

भानु लाल एकटा "सहमति" नामक गुप्त कापीक बात बतौलक, जे महावीरक घरक लोहेक संदूकमे राखल छल।

सुरमणी देवी कहलीह —– "संदूक आइ नहि खोलब। पहिने नियम बनत।" मीरा घोषित केलीह —– "आइ स्पष्ट भेल जे दानक ऋण केवल पैसाक ऋण नहि। किछु पीड़ित, किछु संलग्न, किछु उनटा ऋणक शिकार। आगू सहमति–कापी आ लोहेक संदूकक जाँच होएत।"

अध्याय १५७

लोहेक संदूक

भोरे महावीर पाठक अपन घरक ऊपरी कोठलीमे सभकेँ लऽ गेला। नियम पहिने पढ़ल गेल — संदूक एकल हाथसँ नहि खुजत, प्रत्येक वस्तुक सूची बनत, निज बात पर परदा रहत।

कुंजी पूजा-घरसँ आयल। सुरमणी देवी कहलीह — "पहिने ताला जेहन अछि, ओकर छाप लिअ।"

ताला खुजलापर भीतर दू बही, मोहर लागल कागच, आ एकटा लाल कपड़ामे बाँधल गड्डी भेटल। पहिल बहीमे "भोजन-वितरण" लिखल छल,

जाहिमे "वचन" क स्तंभ छल —— "बाबाक मान राखत," "भूमि–वाद नहि उठाओत।"

दोसर बहीक नाम "सहमति" छल। पहिल पृष्ठपर लिखल छल —— "दान, सेवा वा संकट–सहायताक उपरांत प्राप्त आश्वासन।" सत्यव्रत मेहता कहला —— "संकट–सहायताक बाद आश्वासन, अर्थात संकट स्वयं दस्तावेज बनाओल गेल।"

एकटा मोहर लागल कागचपर फूलकली देवीक नाम छल —— "अस्थायी शरणक बदला सीमा–विवाद स्थगित।" मीरा कहलीह —— "जकर घर डहकल, ओकरा छाया देल गेल; बदलामे ओकर खेतक छाया रोकल गेल।"

शारदा झा कहलीह —— "हम फूलकलीकेँ ओहि बरस बरामदामे सूतल देखलहुँ। हुनकर बच्चा कापैत छल। हमरा नहि बुझायल जे ओहि रातिक कंबल बादमे कागच बनत।"

महावीर फूटि पड़ला —— "हमरा किएक नहि कहल गेल?" सत्यव्रत कहला —— "कुलक भीतर जे नहि कहल जाए, ओही कुलक असली पाठ होइत अछि।"

रामलखन सहाय अपन नाम देखि काँपि गेल —— एक ठाम "गवाह," एक ठाम "समझाओल।" ओ कहलक —— "हम सोचैत रही बात बुझबैत छी; ई बुझब नहि जे हम सहमति बनबैत छी।"

लाल कपड़ाक गड्डीमे एकटा नक्शा भेटल, जाहिमे चन्ना गाछी आ खेतक सीमा लाल स्याहीसँ फेर खिंचल छल —— बटुकनाथक त्रिशूल–जेहन चिह्न सहित। सत्यव्रत लिखला —— "हस्ताक्षरविहीन अधिकार–चिह्न।"

साँझमे लोहेक संदूक खाली भेल, मुदा कोठली भारी भऽ गेल। सुरमणी देवी कहलीह —— "संदूक खाली भेल अछि, मुदा ओकर पेटक कथा आब गामक पेटमे जाएत। धीरे पचाउ, नहि त जहर बनत।"

कमला पुछलक —— "नानीक नामक कागच कखन पढ़ल जाएत?" मीरा कहलीह —— "जखन अहाँ तैयार होएब, आ जखन हुनकर कथा तमाशा नहि, उपचार बनि सुनल जाएत।"

अध्याय १५८

सहमति–कापीक मिलान

भोरे मीरा नियम पढ़लीह — "आइ कापीक नाम सीधा लोकक सोझाँ नहि पढ़ल जाएत। पहिने प्रत्येक परिवारसँ अलग गवाही, फेर कागचक मिलान।"

कैलाश मंडलक बहिन रामपरी आबि कहलीह — "दवा आयल छल, ई सही। मुदा दवाक लेल मोल नहि पुछल गेल। पिता बीमार छला; हाथ पकड़ि अंगूठा लगाओल गेल।" देविका लिखलीह — "बीमारीक राति: स्वेच्छा संदिग्ध।"

सकुनी खातुन कहलीह — "मायक मुँह बंद कराओल गेल। चुप्पीकेँ वचन लिखल गेल।"

कमला फूलकली देवीक कथाक लेल तैयार भऽ क आयल — "नानीक कथा आब डर नहि, दीपक अछि।" शारदा झा साक्षी देलीह — "बरखा छल, छप्पर टूटल। फूलकली आश्रमक बरामदामे बसलीह। ओहि राति ककरो सीमा–विवादक चर्चा नहि सुनलहुँ। दोसर दिन एक लोक कागच लऽ गेल।"

महावीर पाठक दुआरक खंभा पकड़ि कहला — "हमरा घरक बरामदा शरण बनल, ई गौरव मानैत छलहुँ। आब बुझाइत अछि जे शरणक पाछू कागचक जाल बुनल गेल।"

हरिबल्लभ दास कहलक — "पिता गीत गाबय गेला, कागचपर गवाही नहि। हुनकर मंजीराक तालकँ उपस्थित गवाह लिखल गेल। ओ नाम पढ़ि सकैत छला, चाल नहि।"

रामलखन सहाय स्वीकार केलक — "हम कहैत रही — डरू नहि, अंगूठा लगा दिअ।" आरुणि पुछलक — "तूँ ककर आदेशपर जाइत छलह?" रामलखन कहलक — "सभ कहैत — बाबाक इच्छा।"

भानु लाल कहलक — "लाउ कहैत छल — जकरा कागचक भाषा नहि बुझाय, ओकरा भरोसाक भाषा सुनाउ। भरोसासँ अंगूठा जल्दी पड़ैत अछि।"

एकटा नामपर तिथि ओहि दिनक छल जे दिन व्यक्ति मरि चुकल छल। भिखारी लाल कहलक — "मरल लोकक सहमति?" सत्यव्रत कहला — "एहि पन्नापर विशेष चिह्न लगाउ।"

दुपहर धरि सहमति–कापीसँ अठारह नाम मिलाओल गेल — पाँचपर दबाव स्पष्ट, तीनपर चुप्पी वचन बनल, दूपर स्थायी दावा, चारिपर पुनरावृत्त गवाह, एकपर मृतकक नाम।

सुरमणी देवी कहलीह — "कागच सार्वजनिक होएत, मुदा मनुष्य नंगा नहि कएल जाएत। अपराधक पद्धति पढ़ल जाएत, पीड़ाक तमाशा नहि बनत।"

कमला ठूँठ लग बैसि कहलीह — "नानी शरण लेलीह, खेत नहि छोड़लीह।"

अध्याय १५९

मृतकक सहमति

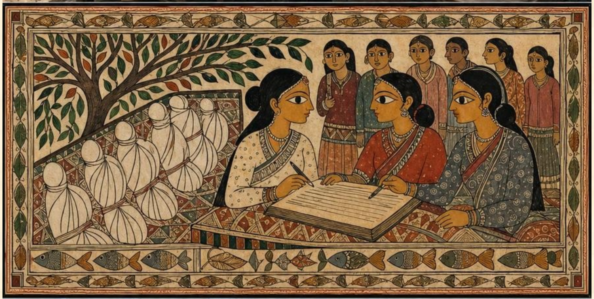

आइ मृतक आ अनुपस्थित नाम सभक कागच अलग सफेद कपड़ामे बँधल गेल। मीरा कहलीह —– "मृतकक नामपर कालिख नहि, उज्ज्रर सावधानी चाही।"

पहिल पन्ना जगदीश महतोक नामपर खुजल। सहमति–कापीमे तिथि छल भादवक अठारहवीं राति, मुदा गामक मृत्यु–रजिस्टर कहैत छल जे जगदीश महतो सावनक अंतिम सोमवारक बाद्दहि चलि गेल छला। जगदीशक नाति परमानंद कहलक —– "दादाकेँ जल देल गेल दिन मोन अछि। दादा अंगूठा केना देलथि? "

दोसर पन्ना सोना झाक छल — मुदा ओ काशीमे अपन बेटाक संग रहला। बेटाक पत्र छल — "बाबूजीक पएरक घाव बढ़ल अछि, ओ कतहु जाए सकैत नहि।"

तेसर प्रकरण रुक्मिणी देवीक छल — हस्ताक्षर पढ़ल-लिखल स्त्रीक जेहन गोल-गोल नहि, कठोर पुरुष-हाथक रेखा छल। कमला कहलक — "ई हस्ताक्षर नामक पोशाक पहिरल परछाईं अछि।"

महावीर पाठक अपन घरसँ एकटा पीतल जड़ल बक्सा अनला, जाहिपर बटुकनाथक चिह्न (तीन रेखा, अर्धचंद्र, बिंदु) छल। भीतर एकटा "अधिकार-सूचना" पोथी भेटल, जाहिक किछु पन्ना काटल छल। अनन्या कहलीह — "जे काटल गेल, से भीतरी बात अछि।"

रामलखन सहाय स्वीकार केलक — "अधिकार-चिह्न लागल पन्ना देखलाबाद लोक डरैत छल। हम कहैत रही — बाबाक मोहर अछि, अब बहस क की लाभ? "

भानु लाल एकटा पुरान मोहरदान अनलक — "लाउ कहैत छल — मूल मोहर दूर होय त छाह मोहर लगाउ। लोक चिह्न देखैत अछि, हाथ नहि।" देविका तुलना केलीह — छाप असली चिह्नसँ बहुत मिलैत छल, मुदा अर्धचंद्रक दहिना कोना अल्प टेढ़ छल।

आरुणि रेकर्ड-घरक नक्शापर लाल सूत तानि देखौलनि — मृतक-नामपर स्थगित सीमापर बादमे तीन कीन-पत्र बनल, जाहिमे चंद्रपालक संग जुड़ल लोकक नाम छल।

सुरमणी देवी कहलीह — "छायापर हाथ धरब कठिन होइत अछि। मुदा छाया ककरासँ पड़ैत अछि, से देखल जा सकैत अछि।"

महावीर बक्सा बंद नहि केला, उलटे लाल-सफेद धागा बाँधि ठूँठ लग राखि देला — "जखन धरि जाँच पूरा नहि, ई बक्सा गाछीक पहरामे रहत।"

कमला कहलीह — "नानी शरण लेलीह, मुदा नकल मोहर हुनकर खेत निगलय चाहलक।" कैलाश जोड़लक — "दादा मरि गेल छला, मुदा हुनकर अंगूठा जीवित कएल गेल।"

अध्याय १६०

गोदामक छाया

मीरा कहलीह — "आइ हम चिन्हक पूजा नहि, चिन्हक उपयोगक हिसाब देखब।" सभटा लाभ-सूत्र एक बिंदुपर मिलल छल — चंद्रपालक पुरान गोदाम, जकरा गरीब किसान "कागच निगलनिहार कोठली" कहैत छल।

लाउक पुरान नौकर धीरू चाभी खोलि कहलक — "लाउ मालिक कहने छला। लाउ कहैत छला, चंद्रपाल बाबूक माल अछि, मुदा देखभाल हमर।"

दरबाजा खुजितहि भीतरसँ धानक बोरा, लोहाक संदूक, आ देबालपर एकटा पुरान नक्शा भेटल — जाहिपर काल्हिक लाल सूतक बिंदु मिलैत छल।

सत्यव्रत मेहता कहला —— "एहि नक्शामे राजस्वक रेखा नहि, लालचक रेखा अछि।"

महावीर पाठक देखलनि जे हुनकर घरक अधिकार–चिह्न नक्शापर खेतक किनार नहि, कब्जाक मोड़पर लगाओल गेल छल। सुरमणी देवी कहलीह —— "जे मोहर दुख कम करबाक नामपर सीमा बदलय, से मोहर नहि, गोहिक दाँत अछि।"

लोहाक संदूकमे बही सभ भेटल जाहिमे लिखल छल —— "छाह मोहर: खर्च समायोजित।"

जगदीश महतो नामक सोझाँ लिखल छल —— "मृतक बाद सेवा; परिवार शिथिल; सीमा रोकू।" परमानंद ई पढ़ि काँपि उठल —— "दादाक मरल देहकेँ एतय सेवा कहल गेल।"

दोसर संदूकमे मोहरदान सभ भेटल —— एक असली, दू नकल। आरुणि कहलक —— "नकल केवल रूप नकल करैत अछि; त्रुटि ओकर जन्मचिन्ह बनि रहैत अछि।"

एकटा लकड़ीक पेटीमे अभ्यास हस्ताक्षर, खाली मोहर लागल कागच, आ अंगूठा–निशानवाला पट्टी भेटल —— जाहिपर "बूढ़," "विधवा," "दूर," "मृत" जेहन शब्द छल। सुरमणी देवी कहलीह —— "एतय मनुष्य नामसँ सेहो घटा देल गेल।"

पछिला कोठलीमे एकटा आधा जरल कागच भेटल —— "चंद्रपाल बाबूक मौखिक निर्देश: पन्ना बाहर नहि जाए।" नीचाँ लाउक हस्ताक्षर।

धीरू कहलक —— "पहिने दानक बात, फेर सीमा, फेर ऋण। हमरा चाह देबाक कहल जाइत। भीतर हँसी होइत, बाहर लोक कानैत।"

राति गाममे पहिल बेर चंद्रपालक नाम डरक जगह प्रश्न बनि उच्चरित भेल —— "चंद्रपाल कतय अछि?"

अध्याय १६१

फोनक कैद

मीरा नव पृष्ठ खोलि लिखलीह —— "कागचसँ आगूक गोहि।" ओ कहलीह —— "जे गोहि पहिने खेतक सीमा चिबैत छल, ओ आब आवाज, डर आ संख्या चिबैत अछि।"

बूढ़ मुवक्किल हाँफैत आबि कहलक —— "हमरा फोनमे कैद क लेल गेल।" राति ओकरा फोन आयल —— "तोहर नाम एक पैघ अपराधमे अछि। घरसँ बाहर नहि निकलू। ककरो नहि कहू।"

अनन्या लिखलीह —— "फोनक नजरबंदी।" आरुणि जोड़लक —— "जे कैद देह नहि घेरैत, मुदा मन घेरि लैत, ओकर ताला भय अछि।"

बूढ़क पोता रिकार्ड केने छल — आवाज कहैत छल — "तोहर खाता सुरक्षित करबाक लेल तुरंत रकम सुरक्षित खातामे पठाउ।" आधा रकम गेल छल।

अनन्या तीन स्तंभ बनौलीह — "भय," "जानकारी," "रकम।" देविका चारिम जोड़लीह — "आवाजक अभिनय।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "एहि आवाजक पाछू केवल शहरक ठग नहि; एहिमे रेकर्ड-घरक गंध अछि।" भिखारी लाल सहमत भेल। लिपिक स्वीकार केलक — "किछु लोक प्रति बनएबाक नामपर मोबाइल घुसाबैत अछि। कहैत अछि — ऊपरसँ आदेश अछि।"

धीरू फोनक एकटा आवाज सुनि चौंकल — "ई लाउक गोदाममे चाह पिबय वाला मधुकरक आवाज जेहन अछि।"

मीरा निर्देश देलीह — "ककरो फोनक उत्तर अकेले नहि देबाक। गुप्त संख्या नहि देब। बैंकमे बिनु बुझने हस्तांतरण नहि।" ई वाक्य पाथरपर लिखा गेल — "फोनपर अदालत नहि लगैत।"

बूढ़क फोन फेर बजल। मीरा स्पीकरपर खोलबय कहलीह। मीरा पुछलीह — "अहाँ के छी? शाखाक नाम, पद, लिखित आदेश कहू।" आवाज रूख भऽ गेल आ लाइन कटि गेल। बूढ़ पहिल बेर सोझ ठाढ़ भेल — "हम फोनमे कैद छलहुँ, आब आवाज भागल।"

भिखारी लाल रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तकमे "मधुकर प्रसाद" क नाम तीन बेर भेटलक — एक बेर "चंद्रपाल बाबूक प्रतिनिधि" लिखल।

साँझमे गाममे नव पहरा बनल — प्रत्येक टोलमे बच्चा-वयस्कक टोली, बूढ़ लोककेँ फोनक फांदसँ बचाबय लेल।

राति खबरि आयल — मधुकर प्रसाद गायब अछि, ओकर कोठलीमे एकटा कागच भेटल जाहिमे बेर-बेर नाम छल — "सी. बाबू।"

अध्याय १६२

आवाजक मोहर

भोरे चन्ना गाछी लग बूढ़ लोक सभ अपन–अपन फोन लऽ क बैसला। मीरा कहलीह —— "फोन दोषी नहि। दोषी ओ आवाज अछि जे फोनक भीतरसँ मोहर लगा क निकलैत अछि।" आरुणि लिखलक —— "आवाजक मोहर = भरोसाक नकल।"

भिखारी लाल याद केलक —— "मधुकर फाइल देखय अबैत छल, मुदा ओकर आँखि कागचपर कम, लोकक मुँहपर बेसी रहैत छल। ओ पूछैत —— ई मुवक्किल बूढ़ अछि कि बेटा बाहर रहैत अछि? "

अनन्या नव रजिस्टर खोललीह — "आवाज–जाल विवरण।" घर–घरसँ सूचना आबय लागल — "बिजली विभाग," "बैंक सुरक्षा," "थाना" — सभ फोन अलग, मुदा चाल एक।

सकुनी कहलक — "मधुकरक भाड़ाक कोठलीमे हम हरिचरणक लोककेँ जाइत देखलहुँ। हाथमे कागचक थैली छल।" मीरा कहलीह — "देखल बात लिखू, अनुमान अलग राखू।"

मधुकरक कोठलीमे भिखारी लाल, सुरमणी देवी, अनन्या गेला। भीतर एकटा कैलेंडरपर तीन तारीख लाल गोलासँ घेरल छल, नीचाँ लिखल — "बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता।" सुरमणी देवी काँपि उठलीह — "ई मनुष्यक विवरण नहि, शिकारक नाप अछि।"

खाटक नीचाँ एकटा थैलीमे तैयार वाक्य भेटल — "गिरफ्तारीक डर पहिने," "अकेले राखू," "कागचक बात बताउ, भरोसा जमाउ।" एकटा रिकार्डरमे आवाजक अभ्यासक टुकड़ा भेटल।

हरिचरण तिवारी आबि कहलक — "एहि सभ चीजकेँ बढ़ाबू नहि। गामक नाम खराब होएत।" मीरा पुछलीह — "गामक नाम खराब डरसँ होइत अछि कि अपराधसँ?"

साँझमे बैंकसँ खबरि आयल — बूढ़क आधा रकम खाली भऽ गेल, एकटा नाम "एम. प्रसाद सेवा केंद्र।" मधुकरक "एम" फेर उभरल।

राति सकुनी हरिचरणकेँ धीमे फोन करैत सुनलक — "कागच हटाउ।" ओ मीरालग जा क कहलक — "ई अनुमान नहि, कानक गवाही अछि।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "आइ कोठली बंद नहि छोड़ल जाएत। एक प्रति चन्ना गाछी लग, एक रेकर्ड–घरमे, एक सुरमणी देवीलग, एक बच्चा सभक रजिस्टरमे।"

गाममे नव शपथ बनल — जे फोन डर देत, ओ कमसँ–कम तीन कानमे सुनाओल जाएत।

अध्याय १६३

हटायल कागजक निशान

भोरे भिखारी लाल फाटकलग कहलक —— "बाबू, ताला त बंद भेटल, मुदा ताला चुप नहि अछि।" ताला–कड़ीपर ताजा खरोंच छल।

मीरा कहलीह —— "आइ रेकर्ड–घरक भीतर जँ एको धूलि हटत, तकर लेखा राखल जाएत।"

सत्रह नंबर अलमारीक नीचाँ धूलिक पट्टी टूटल छल, आ नांगट पएरक निशान। अलमारी खोललापर एकटा डोरीक वलय खाली भेटल —— कागच गायब।

आरुणि फुसफुसैलक — "खाली जगह सेहो पढ़बाक चाही।" सत्यव्रत कहला — "कतेको बेर जे नहि अछि, से सभसँ बेसी बजैत अछि।"

प्रवेश–पुस्तकक पृष्ठमे एकटा दबाव–चिह्न भेटल — "प...मा..." भिखारी लाल कहलक — "परमानंद?"

परमानंद अदालतक नव लिपिक छल। ओ स्वीकार केलक — "हरिचरण बाबूक लोक कहलनि जे ऊपरसँ आदेश अछि। हमरा थैली देल गेल। भीतर की छल, नहि देखलहुँ।" सुरमणी देवी पुछलीह — "नहि देखलहुँ, कि नहि देखय चाहलहुँ?"

अलमारीक भीतर शेल्फक पाछू एकटा कार्बनक छाप भेटल — "मृतक प्रमाण–पत्र संलग्न," "एम. प्रसाद सेवा।" मधुकरक छाया फेर उभरल।

छापमे "मृतक" रूपे नाम पढ़ल गेल — बूढ़ मुवक्किल काँपि उठल — "ई नागेश्वर झा अछि। ओ त जीवित छथि। काल्हि बीमार छला, तें नहि आबि सकला।"

सत्यव्रत कहला — "जीवित लोकक मृतक प्रमाण–पत्र! तखन जमीन, बैंक खाता — सभ रस्ता खुजि जाइत अछि।"

मीरा दू टोली बनौलीह। सकुनी नागेश्वर झाक घर गेलीह। बूढ़ नागेश्वर कहला — "हम त एखन अपन नाम सुनि रहल छी। जे लोक अपन नाम सुनि रहल अछि, ओकरा मृत के लिखलक?"

दोसर टोली बैंक गेल। पता चलल जे "एम. प्रसाद सेवा" स्थानीय खाता नहि, बाहरी भुगतान–सुविधा केंद्रसँ जुड़ल छल। देविका कहलीह — "ई गोहि एक बेरमे देह नहि खाइत, पहिने नान्हि–नान्हि टुकड़ा काटैत अछि।"

हरिचरण ओहि दिन सभामे नहि आयल। मीरा लिखलीह — "हरिचरण अनुपस्थित।"

कार्बन–छापमे एकटा संख्या भेटल — "१७/सी।" आरुणि कहलक — "सत्रह नंबर अलमारी आ सी बाबू?"

अध्याय १६४

चन्द्रपालक छायाक पेट

मीरा कहलीह — "आइ हम सभ चंद्रपालक घर नहि, ओकर छायाक पेट देखब। छाया प्रायः झूठ नहि बाजैत।"

सत्यव्रत मेहता कागच फेर क्रममे राखला। सुरमणी देवी कहलीह — "जाल सदिखन पेटसँ चिन्हाइत अछि।"

पता चलल जे "१७/सी" रेकर्ड–घरमे विवादित उत्तराधिकार, बंधक आ मृतक–प्रमाण संबंधी कागच राखबाक खंड छल।

परमानंद फेर बजाओल गेल, एहि बेर कुर्सीपर। ओ कहलक — "फोनमे जे लोक बाजल, ओ पहिने 'सी खंड' कहलक, फेर तुरंत चुप भऽ गेल। कहलक — तूँ बस सत्रहक थैली निकाल।"

परमानंद याद केलक — फुसफुसाहटमे — "नाम नहि बाजू। सी नहि कहू।"

सकुनी नागेश्वर झाक घरसँ एकटा पुरान रसीद अनलीह — "चंद्रपाल परामर्श केंद्र" क मोहर सहित। पुरान लिपिक कहलक — "चंद्रपाल बाबूक दफ्तरमे एक कमरा अछि — लोक ओकरा सी–कक्ष कहैत अछि।" मीरा पुछलीह — "तूँ ई पहिने किएक नहि कहलह?" लिपिक कहलक — "कारण सभ जनैत छल।"

सुरमणी देवी कहलीह — "आइसँ 'सभ जनैत अछि' रजिस्टरक बाहर नहि रहत।"

चंद्रपालक दफ्तरक सी–कक्षमे तीन मेज छल। एकटा कागचपर लिखल छल — "मृत/जीवित सत्यापन हेतु चिन्हारि आवश्यक।" देविका फुसफुसैलीह — "जकरा जीबैत देखि रहल छी, ओकरा सत्यापित करबाक अधिकार ककरा देल गेल?"

देबालपर एकटा नक्शा टाँगल छल — गामक बूढ़ घर, बाहर बेटा, अकेल दंपती — शिकारी नक्शा। सुरमणी देवी काँपि उठलीह — "ई लोक सेवा नहि, शिकारक खेत बनौने अछि।"

हरिचरण गुस्सामे आबि कहलक — "एहि तरहेँ निजी दफ्तरमे घुसब गैरकानूनी अछि।" मीरा उत्तर देलीह — "जीवित लोकक मृतक प्रमाण–पत्र बनब — कानूनक कोन भागमे अछि?"

बाहर दुइटा बूढ़ स्त्री कहलीह — "हमरा कहल गेल जे पेंशन बंद भऽ जाएत जँ अंगूठा नहि लगाबी।" आरुणि लिखलक — "सी–कक्ष केवल कमरा नहि, जालक पेट।"

राति नदीक कगारपर गोल–गोल भँवर उठैत रहल। सुरमणी देवी कहलीह — "आब हम पेटक नाप लऽ रहल छी।"

अध्याय १६५

छायाक देह

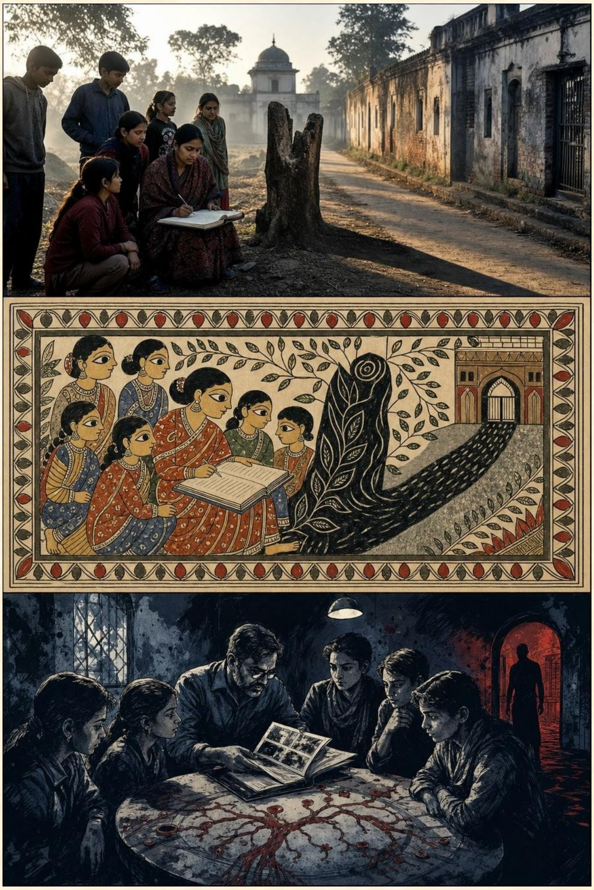

अनन्या लिखलीह — "देहक खोज छायासँ शुरू।" मीरा सावधान केलीह — "आइ कोनो घरपर धावा नहि। हम व्यवस्थाक देह खोजि रहल छी।"

सत्यव्रत मेहता कहला — "सी केवल कक्ष नहि भऽ सकैत अछि। मुदा जे किछु अछि, ओकर देह कतहु ने कतहु हिसाब छोड़त।"

दफ्तरक पिछुआरी गलीमे एकटा पुरान लोहाक दरबाजापर धूलिमे "सी" चमकल। परमानंद कहलक — "हम एहि दरबाजा लग बेर–बेर पन्ना देबाक लेल ठाढ़ रहलहुँ। पन्ना बाहर लेल जाइत, भीतरसँ खाली लिफाफा घुरैत।"

सुरमणी देवी कहलीह — "जतय खाली लिफाफा भारी कहल जाय, बुझू ओतय अदृश्य घूसक वजन अछि।"

नागेश्वर झा आबि कहला — "ई दरबाजा आधिकारिक रूपे बंद अछि। मुदा एक रस्ता अछि — ऊपरक रोशनदान। हमरा एक बेर मृतक घोषित कएल गेल, मुदा मृत लोकक कान बहुत किछु सुनैत अछि।"

रोशनदानसँ भीतर झाँकितहि एकटा उज्जर धारीवाला पेटीपर धुँधल अक्षर देखार भेल — "सी-१७।" सत्यव्रत गंभीर भऽ गेला — "अपराध कतेको बेर संख्या उनटि दैत अछि।"

मीरा निर्णय देलीह — "हम दरबाजा नहि तोड़ब। हम दरबाजाक सोझाँ पाठ करब। जे भीतर अछि, ओकर नाम बाहर पुकारब।"

गलीमे नाम-पाठ शुरू भेल। जखन "मधुकर प्रसाद" तेसर बेर पुकारल गेल, रोशनदानक भीतर किछु खसल।

एकटा बच्चा दौड़ैत अनलक एकटा रसीद, मधुकरक कोठलीक चटाइ नीचाँसँ — "ढुलाइ: चारि पेटी, राति पहर, गंतव्य — सी गोदाम।" परमानंद फुसफुसैलक नाम — "चंद्रपालक लोक — धरनी महतो।"

पुरान तौल-काँटालग एकटा कागचक टुकड़ा भेटल — "मूल प्रति सुरक्षित।" सत्यव्रत कहला — "असली पेटी कतहु बाँचल अछि।"

मीरा तीन प्रति अलग-अलग सुरक्षित ठाम राखबाक निर्णय देलीह — चन्ना गाछी, सत्यव्रतजीलग, आ एकटा विधवाक घर, "कारण अपराधी ओकरा कमजोर मानैत अछि; कमजोरी सभसँ सुरक्षित परदा होइत अछि।"

बूढ़ मल्लाह बतौलक — "पुरान तेतरिक घाट। ओतय आधा धँसल कोठी-बखारी अछि। रातिमे कतेको बेर लालटेन देखल गेल।" अनन्या लिखलीह — "तेतरि घाट: संभावित सी गोदाम।"

राति नदीक कगारपर गोहिक मुँह पानि दिस नहि, तेतरि घाट दिस छल।

अध्याय १६६

इमली घाटक कोठार

भोरे उजासमे सभ तेतरि घाट दिस चलला। सत्यव्रत मेहता नियम सुनौलनि — "घाटपर जे भेटत, ओकरा उठएबासँ पहिने देखल जाएत, देखलासँ पहिने चिन्हित, चिन्हित भेलासँ पहिने साक्षी।"

बूढ़ मल्लाह गवाही देलक — "पछिला मास रातिमे दू बेर लालटेन देखल गेल। नाव लगल नहि, मुदा पानि काटल गेल। कियो घाटसँ नहि, निचला धारसँ आयल।"

ताला पंचायतक साक्षीक उपस्थितिमे खोलल गेल। मीरा कहलीह — "पहिने हवा बाहर आबय दियौ। कागचक कैद सेहो साँस माँगैत अछि।"

भीतर एकटा पेटीपर लाल खड़ियासँ लिखल छल — "सी–१७।" मीरा कहलीह — "केओ जयकार नहि करब। प्रमाण भेटल अछि, विजय नहि।"

पेटीमे लिफाफा भेटल — नागेश्वर झाक मूल बंधक–पत्रक प्रति, धरनी महतोक बयानक मसौदा, दू विधवाक जमीनक सहमति–पत्र जकर हस्ताक्षर एकहि हाथसँ बनल बुझायल।

एकटा कागचपर बूढ़ लोकक नामक संग लिखल छल — "अकेला," "बेटा बाहर," "सुनत नहि," "डर जल्दी।" आरुणि कहलक — "ई लोक बूढ़ लोकक कमजोरी नापैत छल।" मीरा शांत केलीह — "कमजोरी नहि, परिस्थिति। हम रजिस्टरमे परिस्थिति लिखब — अकेलापन अपराधक अवसर नहि, समाजक विफलता।"

मेजक दराजमे एकटा रिकार्डिंग यंत्र भेटल, जाहिमे लिखल छल — "अहाँक आधार दुरुपयोगमे भेटल," "ककरो नहि कहू।" देविका काँपि उठलीह — "ई त फोनक कैदक संवाद अछि।"

पछिला देबालसँ एकटा लोहाक डिब्बा भेटल — पाँच लाल कपड़ामे बंधल छोट–छोट बही। चारिम बहीमे कतेको नामक आगू "मृत तैयार" लिखल छल। सुरमणी देवी थरथराइत स्वरमे कहलीह — "जे जीवितकेँ कागचमे मारैत अछि, ओ हत्या बिनु खून करैत अछि।"

पाँचम बहीक अंतिम पन्नापर लिखल छल — "अगिला खेप: नदी पार।"

हरिचरण घाटपर आबि आपत्ति केलक। सत्यव्रत कहला — "तूँ देरीसँ आयलह, मुदा ठीक समयपर बजलह। आब तोहर वाक्य सेहो दर्ज होएत।" तीनटा प्रश्नपर हरिचरण चुप रहल।

साँझमे कोठी–बखारी सील कएल गेल — नामक पहरा सहित। मीरा कहलीह — "हम पीड़ितक निजता बचाएब, अपराधीक पद्धति उजागर करब।"

अध्याय १६७

नदी पारक आवाज

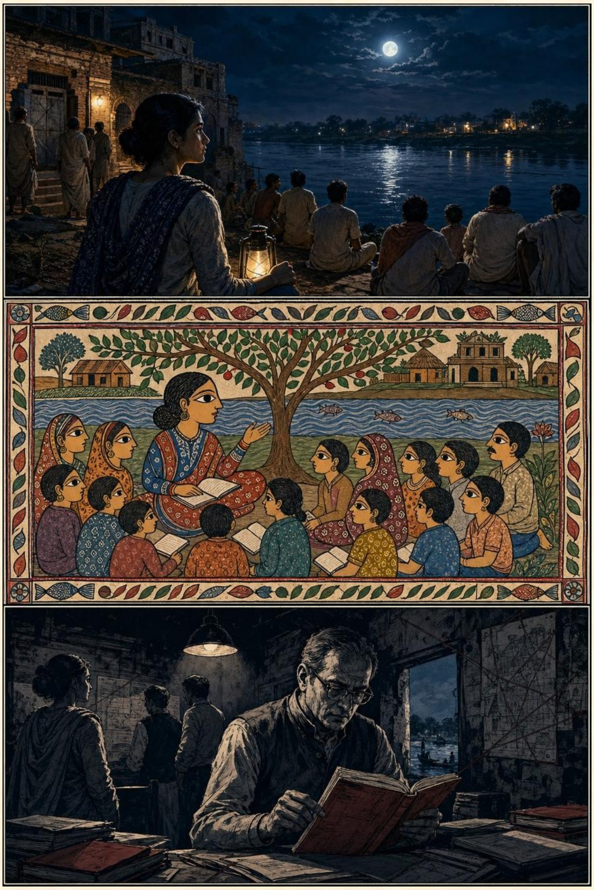

भोरे मीरा कहलीह — "नदी पार चलब, मुदा जुलूस बनि नहि। जे लोक डरक धंधा करैत अछि, ओकरा भीड़सँ नहि, क्रमसँ पकड़ल जाएत।"

बूढ़ मल्लाह नाव लऽ आयल। ओ पहिने नावक पानि खाली केलक — "जकर नावमे पानि छोड़ल रहत, ओ धारक दोष देत। पहिने अपन नाव खाली करय पड़ैत अछि।"

धार बीचमे आरुणिक मोबाइलमे अनचिन्ह नंबरसँ फोन आयल। मीरा इशारा केलीह — स्पीकरपर। आवाज आयल — "अहाँक नाम जाँचमे अछि। ककरो नहि कहू।"

आरुणि पुछलक — "हमर पिता के?" क्षण भरिक चुप्पी, फेर आवाज कठोर भेल — "जाँचमे नाम नहि कहल जाय।" कॉल कटि गेल।

किनारे मधुकांत झा आ हुनकर घरवाली कमला देवीक घरमे पहुँचला। कमला देवी कानि कहलीह — "ई आवाज काल्हि हमर बेटाक बनि आयल छल। कहलक — माय, ककरो नहि कहियौ, पुलिस केस अछि।"

मधुकांत झा कहला — "स्वर बेटाक जेहन, मुदा साँस ओकर नहि। हमर बेटा बात करैत बीच-बीचमे हँसैत अछि। ई आवाज सोझे डरबैत छल।" अनन्या लिखलीह — "साँसक चिन्हारि।"

रकम तीन बेरमे गेल। सत्यव्रत कहला — "विश्वासक ताला पहिने छोट चाभीसँ खोलल जाइत अछि।"

एकटा युवक नवल पकड़ायल — नदी पारक "जनसेवा केंद्र" मे काम करैत छल। ओकर जेबमे नामक सूची छल — "माय कानत," "बाप जल्दी टूटत।" ओ अंततः टूटि कहलक — "हम केवल डेटा पठबैत छलहुँ।" सत्यव्रत कठोर स्वरमे कहला — "मनुष्यक परिस्थितिकेँ डेटा कहल जाय त अपराध आधा नुका जाइत अछि।"

केंद्रमे एकटा माइक्रोफोनलग कागच भेटल — "माय, जल्दी करू, हम फँसि गेल छी।" कमला देवीक मुँहसँ चीत्कार निकलि गेल — "एहए कहलक!" मीरा हुनकर हाथ पकड़लीह — "आब ई वाक्य ओकर नहि रहल। आब ई प्रमाण अछि।"

राति मल्लाहक फोनपर कमला देवीक असली बेटाक आवाज परदेशसँ आयल — "माय, हमर आवाजपर भरोसा करब, मुदा डरक आदेशपर नहि।" सुरमणी देवी नोनक पोटली खोलि कहलीह — "आवाजक नमी सुखाउ।"

अध्याय १६८

शहरक गला

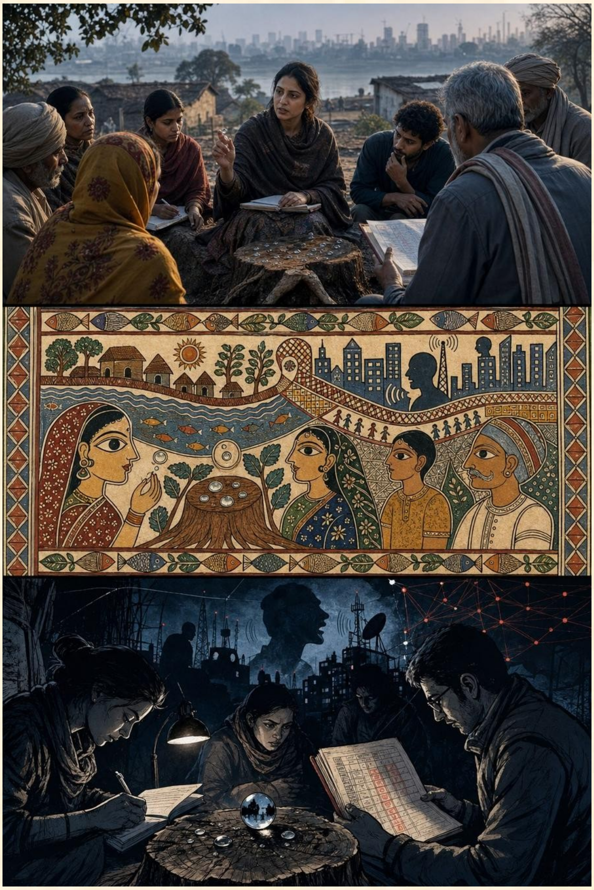

मीरा कहलीह — "आइ हम आवाजक पाछू चलब, मुदा आवाजसँ बेसी नामक रस्ता देखब। नकली गला त मशीन बना सकैत अछि; मुदा सही घर, सही बुढ़ापा, सही बेटाक परदेश — ई सभ सूचना कतयसँ आयल?"

जनसेवा केंद्रक नेना नरेश काँपैत आबि कहलक — "दू बरख पहिने एक लोक आयल छल। कहलक — पुरान कागच स्कैन करबाक लेल देब, बदलामे सिस्टम मुफ्त साफ क देब। मुदा किछु प्रतिलिपि बिनु पुछने शहर चलि गेल।" रसीदपर "एम. सर्विसेज" लिखल छल — मधुकरक संगी।

नरेशक बैगमे "ग्राम संपर्क सूची: वरिष्ठ नागरिक प्राथमिक" नामक पन्ना भेटल। सुरमणी देवी कहलीह — "एहि लोककेँ बुजुर्ग नहि, शिकार देखार पड़ल।"

शहरमे "एम. सर्विसेज" क पुरान पतापर "मित्र डेटा समाधान" नामक दोकान भेटल। भीतर एकटा रिकार्ड कएल आवाज सुनाइ पड़ल — "अहाँक विरुद्ध वारंट जारी..." देविका काँपि उठलीह।

भीतरक बंद कमरासँ आवाज आयल — "बाबूजी, फोन नहि काटू।" बूढ़ मुवक्किल काँपि उठल — "हमरा कैद करनिहार गला एतय अछि।"

देविका कहलीह — "भीतर जे बाजि रहल अछि, ओ एकहि गला नहि। किछु वाक्य रिकार्ड, किछु जीवंत।"

भिखारी लाल एकटा डिब्बापर सटल कागच देखलक — "सी–ग्रुप: ग्रामीण वृद्ध।" भीतरसँ एकटा लोक निकलल आ कहलक — "ग्राहकक डेटा गोपनीय अछि।" मीरा उत्तर देलीह — "गोपनीयता पीड़ितक अधिकार अछि, अपराधीक ढाल नहि।"

मेजक नीचाँ दूटा रजिस्टर भेटल — "आवाज–बैच ३" आ "ग्राम कथा संकेत।" मीरा कहलीह — "कथा चोरि होयबाक ई क्षण अछि।"

पुलिस आयल। कंप्यूटरपर एकटा पंक्ति देखार भेल — "चंद्र २: पुरान फाइल सक्रिय।" सत्यव्रत मेहता सावधान केला — "चंद्र २ चंद्रपाल भऽ सकैत अछि, नहियो भऽ सकैत अछि। हम अनुमानकेँ निर्णय नहि बनाएब।"

साँझमे टोली घुरल। सुरमणी देवी नोनक पोटली खोलि कहलीह — "नोन बिनु गला सड़ैत अछि; सत्य बिनु आवाज।"

बूढ़ मुवक्किल कहलक — "हम बुझैत रही जे फोनपर लोक छल; आइ बुझलहुँ, फोनपर पूरा बजार छल।"

अध्याय १६९

चन्द्र दूक दरबज्ज़ा

भोरे मीरा कहलीह — "नामक दोहराव संयोग नहि मानल जाएत।" सत्यव्रत मेहता कहला — "जखन अपराधी पूरा नाम नहि लिखैत, तखन ओ अपन भयक हस्ताक्षर करैत अछि।"

देविका बैंक संदेशसँ एकटा नाम छाँटलीह — "चंद्र सेवा कार्यालय" — शहरक पुरान तरकारी–मंडीक पाछू।

भीतर बूढ़ लोकक भीड़ छल। एकटा बाबू कहि रहल छल — "घरमे ककरो नहि कहब, नहि त काम रुकि जाएत।" सत्यव्रत तुरंत लिखला — "एकांत निर्माण: अपराधक पहिल क्रिया।"

एकटा फाइलक कवरपर लिखल छल — "वृद्ध सहायता, जमीन विवाद, परदेशी पुत्र" — आ भीतर "भावनात्मक संकेत" नामक खाँचा — "माय जल्दी कानत," "विधवा जमीनपर असुरक्षित।"

काउंटरपर बैसल लोक अपनाकेँ "चंद्रमोहन" कहलक। ओ कहलक — "हम त गरीबक सेवा करैत छी।" मीरा कहलीह — "कागचक सेवा आ कागचक चोरीक बीच एकटा बालुक रेखा अछि।"

एकटा मोबाइलमे सहेजल संपर्कमे "चंद्र १" नाम भेटल। मीरा पुछलीह — "चंद्र १ के?" सत्यव्रत कहला — "जँ चंद्र २ व्यापारिक कोड अछि, त चंद्र १ हिसाबक पहिल पन्नापर रहत।"

पछिला कोठलीमे एकटा पन्नापर लिखल छल — "पुरान विश्वासक नाम प्रयोग" — "बटुक बाबू, पंडितजी, चंद्रपाल काका, अदालत बाबू।"

चंद्रमोहन बेकाबू भऽ चिचियेला — "हम अकेला नहि। ऊपरसँ सूची अबैत छल। हम केवल मिलान करैत छलहुँ।" मीरा पुछलीह — "ऊपर के?" ओ बहुत धीमे कहलक — "चंद्र १।"

भिखारी लाल एकटा बहीमे देखलक — "पुरान भरोसा–सूची," "मृत, लाचार, मुकदमा–ग्रस्त," आ लाल रेखासँ — "चन्ना गाछी क्षेत्र।" अनन्याक मुँहसँ निकलल — "ओ सभ हमरा सभकेँ पहिनहिसँ पढ़ि रहल छल।"

मीरा बही सील करौलीह — "जकरा पढ़बाक आदति सत्ता बनि गेल, ओकरा आब जनताक सोझाँ पढ़ल जाएत।"

सुरमणी देवी नोनक पोटली खोलि कहलीह — "चंद्र दू भेटल, आब चंद्र एक ताकू। मुदा सावधान — चंद्रमा जतेक उज्ज्रर, ओकर कलंक ओतेक साफ देखार होइत अछि।"

अध्याय १७०

चन्द्र एकक खोल

मीरा कहलीह —— "नामक खोल खोलबाक चाही, नामक पूजा नहि।" सत्यव्रत मेहता बहीमे पढ़ला —— "पहिल छननी: न्याय–प्रतीक्षारत परिवार।" ओ कहला —— "ई भाषा कियो सड़कक ठग नहि लिखि सकैत अछि।"

चंद्रमोहन स्वीकार केलक —— "सूची अबैत छल, आवाजक नमूना अबैत छल। हम पूछैत नहि छलहुँ।" भिखारी लाल कहलक —— "जे नहि पूछैत, ओ उत्तरक भागीदार बनैत अछि।"

एकटा पन्नापर लिखल छल —— "चंद्र १: पितृ–स्वर।" सत्यव्रत बुझौला —— "चंद्र १ शायद लोकक नाम नहि, पुरान अधिकारक मुखौटा अछि।"

टोली शहरक दोसर छोरपर "पुरान टाइपिंग गल्ली, कमरा सात" गेल। भीतर वृद्ध टाइपिस्ट मोहनलाल झा भेटला — "हम त केवल लिखि दैत छी।"

एकटा पन्नापर शीर्षक छल — "माताक मोनपर दबाव: पाँच चरण" — पहिने अकेला कर, पुरान केस मोन करा, पुत्रक नाम ल, अधिकारक आवाज दे, तुरंत धन माँग। देविका फुसफुसैलीह — "ई त अपराधक पाठशाला अछि।"

आरुणि कमला देवीक बयान पढ़ि सुनौलक। मोहनलाल कहलक — "हम नहि जनैत छलहुँ जे लोक एतेक टूटि जाइत अछि।"

एकटा लाल फाइल "सी–एक" मे आवाजक नमूना, पुरान पंडितक प्रवचन, अदालतक घोषणा, आ चंद्रपालक भाषणक अंश भेटल — "चंद्र १" क अर्थ स्पष्ट भेल — पुरान अधिकारक आवाज सभक मिश्रित मुखौटा।

मोहनलाल कहलक — "नाम बिकैत अछि बाबू। जे नामपर लोक माथ झुकबैत अछि, ओकर स्वर मिलाबयमे बेसी दाम भेटैत अछि।"

मोहनलाल अंतमे स्वीकार केलक — "मधुकर बाबू पुरान अदालत–संबंधी कागच सभक खबरि दैत छल। मुदा केवल कहैत — पुरान गाछीक क्षेत्र पहिने।"

सुरमणी देवी चन्ना गाछी लग कहलीह — "जे मंत्र बुझल भऽ जाय, ओकर डर आधा मरि जाइत अछि।" ठूँठपर नव चेतावनी टाँगल गेल — "फोनपर डर भेटय त अकेला नहि सहू; नामक पहरुआकेँ बजाउ।"

कमला देवी आबि कहलीह — "हमर टाका गेल, मुदा हमर डर घुरि आयल अछि। आब ओकरा हम अकेले नहि पालब।"

अनन्या लिखलीह — "चंद्र एक लोक नहि; अधिकारक नकली प्रकाश अछि। ओकर खोल खुजल, मुदा असली राति एखन बाकी।"

अध्याय १७१

चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

मीरा घोषणा केलीह — "एहि ठाम कोनो सरकारी फैसला नहि होएत। एहि ठाम नाम सुनल जाएत, डर सुनल जाएत।"

अनन्या ठूँठक जड़ि लग लाल सूतक घेरा बनौलीह — तीन पाथर: "नाम," "डर," "गवाही।"

पहिल गवाही कमला देवीक भेल — "हमरा कहल गेल छल जे बेटा फँसि गेल अछि, ककरो नहि कहू। आइ बुझलहुँ जे अपराधी हमरासँ मौन माँगने छल, बेटाक सुरक्षा नहि।" बच्चा सभ लिखला — "मौन ठगक पहिल कोठली।"

एकटा किसान लक्ष्मण यादव कहलक — "फाइलमे हमर खेत छोट होइत गेल, मुदा लगानक रसीदमे ओहिना रहल। कागचमे जखन धरती घटैत अछि, किसानक छाती सेहो घटैत अछि।"

एकटा परदेशी युवक कहलक — "हम मायकैँ फोन कम करैत छलहुँ। ठग ओकरा फोन बेसी केलक। जखन घरक असली आवाज दूर होइत अछि, नकली आवाज ओकर जगह घुसि जाइत अछि।"

बूढ़ मोहरनवीस शिवनारायण मिश्र काँपैत कहलक — "हम मोहनलालक संग किछु नमूना-पत्र लिखने छलहुँ।" ओ प्रायश्चितक रूपमे कहलक — "हम जे नमूना डरक लेल लिखने छी, ओकर उनटा नमूना लोककैँ बचाबय लेल लिखब।"

एकटा घूँघटवाली स्त्री कहलीह — "पतिक मृत्युक बाद बैंक, दलाल सभ घरक देहरीपर आयल। हमरा कहल गेल — हस्ताक्षर करू, नहि त बेटीक विवाह रुकत। हम क देलहुँ। आब घर नहि, नामो नहि।" देविका कहलीह — "कतेको स्त्रीक अपराधक अभिलेखमे नाम नहि, केवल अंगूठा रहैत अछि; असलमे ओ अंगूठा दबावक छाप होइत अछि।"

आरुणि चारि शब्द पाथरपर लिखलक — "एकांत। अधिकार। हड़बड़ी। मौन।" — "एहि चारिक जोड़सँ गोहिक मुँह बनैत अछि।"

सत्यव्रत मेहता घेराक भीतर आबि कहला — "समाजक बेर-बेर दोहराओल भय स्वयं प्रमाणक प्रारंभ अछि।"

एकटा युवक कहलक — "मधुकर बाबू पंद्रह बरख पहिने एहिठाम सर्वे करय आयल छला।" मीरा रोकलीह — "सुननाइ आ अफवाहमे फरक राखू।"

अनन्या तीन रंगक धागा बाँटलीह — लाल (स्वयं देखल), पीयर (सुनल), कारी (डर/अनुमान)। साँझ धरि चन्ना गाछी रंगक अभिलेख बनि गेल — कारी सभसँ बेसी। देविका कहलीह — "हमर समाजमे प्रमाणसँ बेसी डर जमा अछि।"

कमला देवी घर जाइत काल कहलीह — "आब जँ फोनपर डर आओत, हम पहिने नामक पहरुआकैँ बजाएब।"

अध्याय १७२

गाँठक पढ़नाइ

मीरा कहलीह — "काल्हि हम सभ सुनलहुँ। आइ हम सभ अलग करब — जे आँखिसँ देखल गेल, जे कानसँ सुनल गेल, आ जे डर भीतर बना देलक।"

अनन्या तीनटा टोकरी राखलीह — लाल, पीयर, कारी। आरुणि पहिल लाल गिट्ठऽ पढ़लक — लक्ष्मण यादवक खेतक नाप, जाहिमे कागच सभ आपसमे झगड़ैत छल।

एकटा बूढ़ स्त्रीक गिड्डऽमे अंगूठाक छाप देखार भेल, मुदा ओ कहैत छलीह जे ओहि दिन ओ अस्पतालमे छलीह। देविका दुइटा कागच मिलौलीह — तारीख एकहि, समय अलग–अलग।

मीरा प्रत्येक पीयर कथनक पाछू पुछैत गेलीह — "अहाँ देखलहुँ? अहाँकेँ के कहलक?" सत्यव्रत बुझौलनि — "प्रश्न अविश्वास नहि; प्रश्न ओ सीढ़ी अछि जाहिसँ डर अदालत धरि जा सकैत अछि।"

शिवनारायण मिश्र अपन "बचाव–पत्र" पढ़ि सुनौलक — "फोनपर जे कहय जे ककरो नहि कहू, ओकर बात पहिने दोसरकेँ कहू। जे तुरंत पाइ माँगय, ओकरा तुरंत रोकू।"

कमला देवी जोड़लीह — "माय सभ अपन बेटा–बेटीकेँ पहिनहि कहि राखू जे संकटमे कोन गुप्त शब्द प्रयोग होएत। नकली आवाज ओ शब्द नहि जानत।"

एकटा युवक अपन कारी गिड्डऽ खोलि कहलक — "हमरा कोनो फोन नहि आयल, मुदा जखन सुनैत छी पुलिसक नाम, हमर देह अपनहि काँपैत अछि।" मीरा कहलीह — "ई व्यक्तिगत डर नहि; इतिहासक बाँचल काँपनि अछि।"

एकटा छोट बच्चा फुलेसर पुछलक — "हमरा मोबाइलक डर नहि, मुदा बाबूजी जखन कहैत छथि जे पढ़ू नहि त मजदूरी कर, तखन डर लगैत अछि। ई कोन रंगक गिड्डऽ?" देविका कहलीह — "ई कारी सेहो, लाल सेहो।"

साँझसँ पहिने एकटा वृद्ध पंचायत–सेवक रामकेवल पासवान एकटा पुरान पंजी अनला — जाहिमे हस्ताक्षर छल — "मधुकर मिश्र, विशेष सर्वे सहायक," पंद्रह बरख पुरान। ओ बतौलनि — "ओ लोक घरक बाहर बूढ़, विधवा, परदेशी परिवार सभपर निशान लगबैत छला।"

मीरा कहलीह — "पहिने एहि पन्नाक प्रतिलिपि बनत, मूल सुरक्षित रहत।"

अनन्या मधुकरक नामक लाल गिड्डऽ ठूँठपर बाँधलीह। आरुणि कहलक — "आब मधुकर बाबू छाह नहि, पन्नापर प्रवेश क गेला।"

राति गोहि पानिसँ आधा बाहर आयल, मुदा ओकर चालि अस्थिर छल।

अध्याय १७३

पंजीक पहरा

भोरे मीरा कहलीह — "आइ गवाही नहि, पहरा पहिने। जे कागच भेटल अछि, ओकर रक्षा होएत।"

रामकेवल पासवान पंजी पाथरपर राखलनि। पन्नापर पंद्रह बरख पुरान सर्वेक्षणक सूची छल — घरक नाम, विधवा, बूढ़, कर्जदार, आ एक कोनमे — "विशेष ध्यान।"

कमला देवी कहलीह — "डिजिटल अरेस्टमे सेहो ओ सभ पहिने पुछैत छल — घरमे के अछि, बेटा कतय, बैंक खाता। ई पंद्रह बरख पुरान कागच ओहि प्रश्नक पुरान खेसरा जेहन अछि।"

रामकेवल बतौलनि —– "मधुकर बाबू कहने छला —– सरकारी सुविधा पहुँचएबाक लेल। बादमे लाभ नहि, नोटिस भेटल; नोटिस नहि त फोन; फोन नहि त बंधकक डर।"

देविका लिखलीह —– "सुविधाक सूची जँ पहरा बिनु बनत, तकरा अपराधी हथियार बना सकैत अछि।"

एकटा युवक नीलमणि सहायताक लेल आगू आयल —– "हम स्कैन क सकैत छी, मुदा पासवर्डसँ सुरक्षित राखब। कोनो व्हाट्सएपपर नहि पठाएब।"

दुपहरमे चंद्रपालक लोक ध्रुवेश आबि कहलक —– "ई पुरान पंजी सामाजिक शांति बिगाड़त। सभ कागच पंचायत कार्यालयमे जमा क देल जाउ।" मीरा पुछलीह —– "जमा होयबाक कारण लिखब? जे लोकक नाम अछि, ओकर अनुमति लेब?" ध्रुवेश खाली हाथ घुरि गेल —– "रातिमे कागच बचा क राखू।"

अनन्या ऊँच स्वरमे पढ़लीह —– "जे पन्नापर हमर नाम, हमर अंगूठा, हमर डर, हमर प्रतीक्षा लिखल अछि, ओकर पहरा हमर अधिकार।"

निर्णय भेल —– मूल पंजी देविकाक घरमे, एक प्रतिलिपि सत्यव्रतक सीलबंद लिफाफामे, एक नीलमणिक कंप्यूटरमे, एक बचा सभक रजिस्टरमे।

मध्यरातिमे एकटा छाया देविकाक देबाल लग सरकल। फुलेसर संकेत देलक —– ठक, ठक, ठक। छाया भागि गेल, मुदा एकटा पर्ची छोड़ि गेल —– "पुरान बात खोलब, त नब केस बनत।"

मीरा कहलीह —– "धमकी प्रमाणक शत्रु नहि, प्रमाणक छाया अछि। हम लिखि लेलहुँ त ई अपराधीक पएरक निशान बनत।"

भोर होइत–होइत पंजी बचि गेल —– मूल सुरक्षित, प्रतिलिपि सुरक्षित, पर्ची सुरक्षित।

अध्याय १७४

अदृश्य अदालतक चौखट

साँझमे चन्ना गाछीक ठूँठक चारूकात गोल घेरा बनल। कियो एकरा अदालत नहि कहलक, मुदा सभ जूता धीरे खोलय लागल।

अनन्या एकटा खाली पन्ना राखलीह — "एहि पन्नापर आइ ओ बात लिखल जाएत जे कागचमे छल, मुदा कागच बनि नहि सकल।"

आरुणि दस पाथरक पंक्ति बनौलक — नाम, देह, जल, जमीन, कागच, डर, मौन, प्रतीक्षा, फाँस, स्मृति — "एहि अदृश्य अदालतमे ई दस पाथर धारा अछि।"

पुतोहु सोना गवाही देलीह — "हम उपस्थित छलहुँ। अनुपस्थित केवल ओ लोक छल जे हमरा देखबाक लेल कुर्सीपर नहि छल।" मीरा लिखलीह — "देहक उपस्थिति।"

बूढ़ मुवक्किल भोलाराम अपन घरक हिसाब खोललक — जे साल तारीख पड़ल, बेटा पाँचम कक्षामे; जे साल फाइल गायब, पुतोहु प्रसवमे मरि गेली। आरुणि पुछलक — "फैसला?" भोलाराम हँसल — "फैसला त हमरे देहपर लिखल गेल।"

एकटा युवक कहलक — "फोनपर जे आवाज छल, ओ हमर बाबूजीकेँ कहलक जे तोहर बेटा अपराधी अछि। बाबूजी हमरा बचाबय लेल अपन बचत देलनि। बादमे बुझलहुँ — हुनकर डर अपराधी बना देल गेल।" देविका लिखलीह — "दूरक फाँस।"

एकटा "मौन काकी" कहलीह — "हमर घरमे तीन बेर कागच आयल, तीनू कागचमे हमर नाम गलत छल।" भीड़ हुनकर सही नाम तीन बेर दोहरैलक। मीरा लिखलीह — "नामक सुधि, न्यायक पहिल सीढ़ी।"

अदालतक लिपिक रामबल्लभ अपन गुप्त नोटबुक पाथरपर राखि कहलक — "बरखों धरि जे फाइल गायब कहल गेल, तकरा कतय राखल गेल, हम किछु–किछु लिखैत रहलहुँ। आइ ई नोटबुक एहि गाछीक आगू राखैत छी।" अनन्या लिखलीह — "लिपिक रामबल्लभ — डरल, मुदा उपस्थित।"

एकटा चंद्रपालक लोक आबि आपत्ति केलक — "गाछीमे बैसि क अदालत चलत?" सत्यव्रत उत्तर देला — "कानूनी मूल्य बादमे देखब। एखन मनुष्यता मूल्य गनैत अछि।" मीरा ओकर नाम पुछलीह, ओ चुप रहल — "अनाम आपत्ति — मोहरक भरोसा, मनुष्यक अविश्वास।"

राति नोटबुकक पहिल पन्ना हवासँ खुजल — जाहिमे एकटा नाम एहन छल जकरा सुनितहि पुरान अपराधक साँस अटकय बला छल — बटुकनाथ हरिहरनक वास्तविक मोहरबाहक। अदृश्य अदालत आब अपराधक घरक भीतरक दरबाजा खटखटाओत।

अध्याय १७५

मुहरबाहकक नाम

भोरे रामबल्लभक नोटबुकसँ भेटल नामपर सभ चौंकल — "दीनबंधु झा, मोहरबाहक। बटुकनाथ हरिहरनक निजी मोहर, बंधक-पत्र तथा विशेष सूचीक प्रतिलिपिसँ संबद्ध।"

मीरा कहलीह — "नाम भेटल अछि, आरोप नहि। एखन सुननाइ होएत, हल्ला नहि।"

सत्यव्रत मेहताकेँ दीनबंधु झा मोन छल — पातर देह, कम बजनिहार, कपड़ाक थैलीमे लाल मोम, कारी स्याही, पीतलक मोहर।

रामबल्लभ कहलनि — "दीनबंधु बाबू रेकर्ड–घरक लोक नहि छला, मुदा कतेको फाइल हुनका हाथसँ गुजरैत छल।"

कमला देवी गवाही देलीह — "हमर देवरक बंधक–पत्रपर अंगूठा छल। बादमे देखलहुँ त दीनबंधुक थैलीमे रहनिहार लाल मोमक निशान जेहन मोहर छल।"

रामकेवल अपन पंजीमे "विशेष ध्यान" पंक्तिलग एकटा धुँधल मोहरक गोलाई देखौलनि। सत्यव्रत कहला — "अधछाप बेसी बोलैत अछि, किएक त पूरा मोहर वैधता देखबैत अछि, अधछाप चोरीक जल्दी।"

दुपहरमे दीनबंधुक छोट बेटा शशिभूषण आयल, हाथमे स्टाम्पक थैला। ओ कहलक — "हमर बाबूक नाम किएक?" मीरा ओकरा घेराक किनारपर बैसाक कहलीह — "एतय ककरो पिताकेँ तुरंत अपराधी नहि बनाओल जाइत।"

शशिभूषण अपन पिताक बचल सामान अनलक — फाटल कपड़ा, मोहर–पैड, पीतलक मोहर, आ एकटा डायरी। ओ कहलक — "बाबूक मरलाक बाद ई सभ कोठलीमे पड़ल छल। हम नाम सुनि लऽ आएलहुँ।"

डायरीमे संकेत छल — "लाल," "कारी," "बी. ह.," "च. पा." अनन्या रोकलीह — "संकेतकेँ तुरंत नाम नहि बनाउ।"

ध्रुवेश फेर आबि शशिभूषणकेँ डेराओलक — "पुरान सामान बेचि देलह त काज चलत।" मीरा शशिभूषणक कंधापर हाथ राखि कहलीह — "बदनामी ओहिपर होइत अछि जे सत्य नुकाबय।" शशिभूषण मोहरक डिब्बा मीरा दिस सरका देलक — "जाँचू। मुदा झूठ नहि लिखू।"

सत्यव्रत कहला — "स्मृति कानून–विरुद्ध नहि होइत अछि। डरब अपराधक पुरान तरीका अछि।"

राति शशिभूषण घर नहि गेल, ओ मोहरक प्रतिलिपि सुरक्षित होइत धरि ठाढ़ रहल। कियो ओकरा दोषी पुत्र नहि कहलक; सभ ओकरा पितासँ बचल अंधारकेँ इजोतमे राखय आयल लोक मानलक।

अध्याय १७६

सेवा-समारोहक अन्हार

भोरे "अंतिम सूची" वाला पन्ना चन्ना गाछी लग साफ कपड़ापर राखल गेल। अनन्या पढ़लीह — "अंतिम सूची — सेवा-समारोह पूर्व।" नामक कातमे संकेत छल — "लाभार्थी," "विशेष," "रोकू," "मूल बदलू।"

भोलाराम कहला — "हम सभ ओहि समारोहमे गेल रही। मालिक लोक कहने छल — गरीबक नाम मंचपर पढ़ल जाएत, सभकेँ सहायता भेटत। हम ताली बजौने रही।"

मीरा कहलीह — "सेवा शब्द सुनितहि लोक भावुक भऽ जाइत अछि। मुदा सेवा जँ कागचक बाटे जमीन, नाम आ अधिकार निगलय, त ओकरा सेवा नहि कहल जा सकैत।"

रामबल्लभ याद केलनि — "समारोहसँ पहिने अदालतक बाहर अस्थायी मेज लगल छल। लोक भजन सुनैत–सुनैत अंगूठा लगबैत छल। मंचपर नाम पढ़ल जाइत छल, आ परदा पाछू कागचक पृष्ठ बदलैत छल।"

कमला देवी एकटा पुरान थैलीमे समारोहक फोटो अनलीह — बटुकनाथ हरिहरन माला पहिरने, आगू गरीब परिवारक पंक्ति, कमला देवीक देवर अंगूठा लगबैत।

भिखारी लाल अभिलेख–घरसँ एकटा लाल किनारीक चादर अनलक — जाहिमे मोमक दाग, स्याहीक खसरा। सत्यव्रत कहला — "वस्तु गवाही देत, मुदा ओकरा सम्मानसँ राखू। ई कचरा नहि, अपराधक मंचक त्वचा अछि।"

भोलारामक पत्नी शांति कहलीह — "ओहि दिन स्त्री सभकेँ अलग पंक्तिमे राखल गेल छल। कहल गेल — महिला सहायता योजना। बादमे कागच घर नहि भेटल।" मीरा लिखलीह — "जतय स्त्रीक हस्ताक्षर बिनु पढ़ने लेल जाए, ओतय दान नहि, कब्जाक बाट खुजैत अछि।"

शशिभूषण एकटा पर्ची अनलक — "मंच–पठनक बाद मूल बदलू। बी. ह. सँ संकेत भेटत।" सत्यव्रत कहला — "मूल बदलबाक निर्देश अपराधक ढाँचा देखबैत अछि।"

भोलाराम काँपैत कहला — "हम तखन बुझलहुँ, हमरा सम्मान देल जाइत अछि। आइ बुझैत छी, हमरा नाम मंचपर पढ़ि क हमर कागचक मुँह बंद कएल गेल।"

शशिभूषण पर्चीपर हस्ताक्षर क लिखि देलक — "हम स्वयं सौंपैत छी।" मीरा कहलीह — "जकर घरमे अंधार भेटय, ओ जँ दीप लऽ बाहर आबय, तकरा गवाहीदार कहब, अपराधी नहि।"

भोरसँ पहिने डायरीक नव पन्नापर एकटा पंक्ति भेटल — "जिनका मंचपर नाम देल, हुनका घरसँ कागच लिअ।"

अध्याय १७७

घर–घरक कागज

भोरे मीरा कहलीह — "जे नाम मंचपर पढ़ल गेल, से नाम आइ अपन घरमे सुनल जाएत।" अनन्या बच्चा सभकेँ तीन टोलीमे बाँटलीह। आरुणि जोड़लक — "सत्य खोजबाक नामपर हम सभ दोसराक निजता नहि लूटब।"

पहिल घर भोलारामक छल। हुनकर पत्नी शांति एकटा पीतल डिब्बामे "स्वेच्छा सहमति" लिखल कागच देखौलीह — "हम त महिला सहायता योजनापर अंगूठा देने रही, स्वेच्छा सहमति कोन बातक?" बच्चा सभ लिखला — "घर एक: सहायता कहल, सहमति लिखल।"

दोसर घरमे बूढ़ी सुभद्रा झा भेटलीह —— बंधकक भाषावाला कागच, दीनबंधुक मोहर सहित। सत्यव्रत कहला —— "अंगूठा सच अछि; ओकरासँ बनाओल अर्थ झूठ भऽ सकैत अछि।"

तेसर घर चमरू महतोक छल। मंचपर नाम "चमरू" पढ़ल गेल छल, पदकपर "चंदू," पंजीमे "चंद्रमोहन," बंधक–पत्रमे "चमरू उर्फ चंद्रमोहन।" चमरू कहलक —— "हम त एके लोक छी। कागचमे हम चार टुकड़ा भऽ गेलहुँ।"

मीरा हर घरमे कहैत रहलीह —— "जे नहि बुझलहुँ, से मानि लिअ। नहि बुझल कागचपर अंगूठा देनाइ अपराध नहि, मजबूरीक प्रमाण अछि।"

दीनबंधुक विधवा रागिनी देवी कहलीह —— "दीनबंधु सभ नहि बुझैत छला, ई कहब झूठ होएत। मुदा अंतिम दिन सभ ओ डेरायल छला।" ओ तकियाक नीचाँसँ एकटा पन्ना निकाललीह —— "जिनकर घरसँ कागच लिअ, हुनकर प्रतिलिपि नहि देब। मूल ऊपर राखू।"

एकटा पुरान स्वयंसेवक ललित एकटा पोस्टर देखौलक, जाहिमे लिखल छल —— "संपूर्ण अभिलेख आयोजन समितिक पास सुरक्षित रहत।" मीरा पुछलीह —— "के कहल?" ललित धीरे कहलक —— "चंद्रपाल।"

साँझमे सभ चन्ना गाछी घुरल। चमरू महतोकेँ बीचमे बैसाओल गेल, चारूकात ओकर चारि नाम राखल गेल —— "हम त एके लोक छी।"

रामबल्लभ कहलनि —— "पुरान अदालतक ऊपरी कमरा, जतय बंद फाइलक बक्सा राखल जाइत छल। चाभी सदिखन चंद्रपालक लोकलग रहैत छल।"

अनन्या नव पन्ना खोलि शीर्षक लिखलीह —— "ऊपरक कोठली।"

अध्याय १७८

ऊपरक कोठरी

भोरे भिखारी लाल कहलक — "जे चाभी रोज झनझनाइत छल, से लोककेँ भरोसा दैत छल; जे चाभी चुप राखल गेल, से असल दरबाजा खोलैत छल।"

मीरा सावधान केलीह — "कोठली खोलब, मुदा कोठली लूटब नहि। जे भेटत, ओकर सूची बनत।"

दरबाजापर तीन मोहरक निशान छल — न्यायालयक, तहसीलक, आ एकटा निजी सेवा-समितिक। पंच-साक्षी सहित ताला तोड़ल गेल — शांति,

सुभद्रा झा, रागिनी देवी सीढ़ीपर बैसि गेलीह जाहिसँ कियो ऊपर चढ़बाक साहस नहि केलक।

भीतर बक्सा सभमे फाइल भेटल —— "संपूर्ण अधिकार हस्तांतरण" वाला पन्ना अलग जोड़ल गेल छल, अंगूठाक दाग मिलाओल गेल छल। मीरा फुसफुसैलीह —— "एहि ठाम अंगूठा नहि बोलि रहल; ओकरासँ झूठ कहल गेल अछि।"

रामबल्लभ स्वीकार केलनि —— "एहि सभक प्रविष्टि अलग रजिस्टरमे होयबाक छल। ऊपरक कोठलीक रजिस्टर चंद्रपाललग रहैत छल।"

फोटोमे मंचपर "सहायता स्वीकृति" लिखल कागच देखार भेल, मुदा कमला देवीक फाइलमे "अधिकार–त्याग" छल।

एकटा गड्डरमे स्त्री सभक आवेदन भेटल —— "पति अनुपस्थित," "विधवा," "अशिक्षित" जेहन टिप्पणी सहित। एकटा पन्नापर लिखल छल —— "बुझा देल गेल" —— बिनु नाम, केवल संक्षिप्ताक्षर।

एकटा गाढ़ रजिस्टरमे नाम नहि, कोड छल —— क–१, क–२, उ–१। रामबल्लभ कोड–सूची खोजि पौलनि —— क= कमला, उ= उज्ज्वला, च= चमरू–पंक्ति। सोना कहलक —— "लोककेँ एक अक्षरमे चपा देल गेल।"

एकटा डिब्बामे तीन मोहर भेटल —— नकली तहसील मोहर आ खाली रबरक टुकड़ा।

एकटा आधा जरल पन्नापर "बटुक बाबूक निर्देश" लिखल भेटल —— "सार्वजनिक सम्मान," "प्रतिलिपि रोकू," "चंद्र... देखत।"

साँझमे सभ वस्तु तीन श्रेणीमे बाँटल गेल। शांति कहलीह —— "हमर अंगूठा आब असगर नहि।"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "ऊपरक कोठली खुजल, मुदा आब ऊपरक रास्ता खोलबाक अछि —— तहसील, बैंक, रजिस्टर, शहरक दफ्तर।" अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह —— "मोहरक रास्ता।"

अध्याय १७९

मुहरक पगचिन्ह

सबेर बच्चा सभ तीनू मोहरक छाप अलग-अलग उतारला — "घोषित सेवा," "नकली अधिकार," "बदलैत नाम।"

मीरा तहसील जायसँ पहिने नियम पढ़ौलीह — "जे पूछल जाए, लिखल जाए।" सत्यव्रत कहला — "सत्यकेँ अदालत धरि अनबाक लेल सत्यक चालो साफ होयबाक चाही।"

तहसीलक भूमि हस्तांतरण रजिस्टरमे कमला देवीक नामसँ लिखल छल — "स्वेच्छा अधिकार-त्याग।" शांति फुसफुसैलीह — "जाहि दिन मंचपर हमरा चादर देल गेल, से दिन हमर खेत केना चलि गेल?"

तहसीलक पुरान बाबू स्वीकार केलनि —— "सेवा–निकेतनक लोक सभ फाइल लऽ क आबैत छल। कहैत छल —— गरीबक काम झटपट करब अछि। अधिकारी केवल मोहर मारैत छल।" मीरा पुछलीह —— "अधिकारी पढ़ैत छल?" बाबू कहलक —— "किछु पढ़ैत छल, किछु भरोसा बेचैत छल।"

निबंधन–कार्यालयमे कमला देवीक खातासंख्यापर "हस्तांतरण पूर्ण" उभरल। गवाहक नाममे मंचक संचालक सभक नाम छल। कंप्यूटरपर एकटा फोटो देखार भेल —— कमला देवीक चेहरा आधा झुकल, कातमे कियोक हाथ। मीरा कहलीह —— "एहि फोटोमे सहमति नहि, दबावक देह–भाषा अछि।"

शहरक बैंकमे भूमि–हस्तांतरणक बाद ऋण, ऋणक बाद बकाया, बकायाक बाद कब्जाक शृंखला भेटल। अधिकारी बतौलक —— "एहि खाता सभमे रकम आयल, मुदा तुरंत तीन अलग खातामे चलि गेल।" तीन नाम खुलल —— सेवा–निकेतन, निर्माण–सामग्री आपूर्तिकर्ता, आ "हरिहर कल्याण ट्रस्ट।"

आरुणि लिखलक —— "नाम हटि गेल, धनक पगचिन्ह बचल।"

बाहर ध्रुवेशक लोक फोटो खिंचय लागल। देविका सीधा कैमरा दिस देखि कहलीह —— "हमर चेहरा खिंचू, मुदा कागचक चेहरा नहि चोराऊ।"

राति चन्ना गाछी लग नक्शा पढ़ल गेल —— सेवा–समारोह → तहसील प्रविष्टि → निबंधन फोटो → बैंक ऋण → ट्रस्ट खाता। शांति कहलीह —— "हमरासँ खेत नहि छीनल गेल, हमरासँ भरोसा छीनल गेल छल।"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "एखन दोषारोपण नहि, संरचना देखू। जे सबल छल, ओ संरचनाक लाभ उठेलक। जे डरायल छल, ओ मौन देलक।" मीरा जोड़लीह —— "आ जे बोलत, ओकर आवाज सुरक्षित राखू।"

अध्याय १८०

शहरक खाता

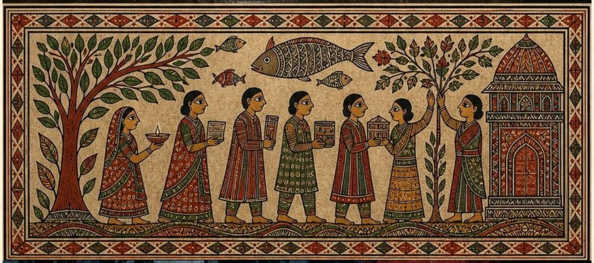

भोरे अनन्या कहलीह — "अपराधक देह देखब बाकी अछि; काल्हि हम केवल ओकर पएर देखलहुँ।" सत्यव्रत कहला — "खाता पढ़ब धन गनबाक काज नहि, एहिमे देखबाक अछि जे ककर भरोसा ककर थैलीमे बदलल।"

शहरक "सिद्धि परामर्श सेवा" कार्यालयमे लेखाकार गोवर्धन सहाय कहलक — "ट्रस्टक लेखा नियमानुसार जमा भेल छल। हम केवल कागच व्यवस्थित करैत छलहुँ।"

हरिहर कल्याण ट्रस्टक फाइलमे उद्देश्य लिखल छल —— गरीबक सहायता, विधवाक पुनर्वास। मीरा कहलीह —— "उद्देश्य कतेक उज्ज्वर होय, धनक रास्ता देखब।" रकम भूमि–हस्तांतरणक बादक तारीखक छल।

शांति कहलीह —— "ई तारीख हमरा खेत छोड़ि देलाक बादक अछि?" सत्यव्रत कहला —— "हँ।" देविका कहलीह —— "जिनकासँ लेल गेल, हुनके नामपर दान कएल गेल।"

एकटा पन्नापर "रा.चं.ल." कोड भेटल। सत्यव्रत कहला —— "संक्षेप ओहि ठाम खतरनाक होइत अछि जतय पूरा नाम जवाबदेह बनि सकैत अछि।"

गोवर्धन एकटा लिफाफा देखौलक —— "कमला, उज्ज्वला, च–समूह खाताक रकम सेवा–दान मदमे मिलाउ। अलग उल्लेख नहि।"

कार्यालयसँ निकलितहि अनन्याक फोनपर धमकी भरल संदेश आयल —— "कागच छोड़ू, नहि त चेहरा सार्वजनिक होएत।" देविका कहलीह —— "ई डर नहि, प्रमाण अछि।"

साइबर शाखामे एकटा जवान अधिकारी कहलक —— "नंबर अस्थायी होएत। नकली चिन्हारिपर लिया भेल सिम होय सकैत अछि। अंकीय गोहि सेहो पएर छोड़ैत अछि।"

साँझ घुरैत काल ध्रुवेशक दू लोक बाइकपर विडियो बनबय लागल। देविका जोरसँ कहलीह —— "समय —— साँझ पाँच बजि अट्ठाईस मिनट। स्थान —— पुरान पुल मोड़।"

राति शांति अपन समारोहक चादर पाथरपर राखि कहलीह —— "एहि चादरसँ हमरा लाज ढाँकल गेल छल, आ खेत ढाँकल गेल छल। आइ ई चादर प्रमाणक मेज होय।"

सत्यव्रत मेहता कहला —— "न्याय जँ केवल पुरान फाइल पढ़त, त आधा सत्य भेटत; न्यायकेँ फोनक काँचो पढ़य पड़त।" अनन्या नव पन्ना खोलि शीर्षक लिखलीह —— "अंकीय गोहिक दाँत।"

अध्याय १८१

सिमक छाया

सत्यव्रत मेहता साइबर शाखाक रसीद देखलनि — नंबर पिछला तीन मासमे सात बेर बदलल गेल छल, मुदा तीनू मासमे एकटा स्थिर बात छल — सिम सक्रिय होयबाक पहिल टावर गामक पुरान बस–ठाढ़ीलगक बाजारमे पकड़ायल।

छोट दुकान "माधव संचार सेवा" पर युवक माधव कहलक — "तीन मास पहिने किछु लोक आयल छल। कहलक जे ट्रस्टक सेवा–शिविर अछि, गरीब लोकक फोन चालू करबाक अछि। हमरा लगल सेवा काज अछि।"

बहीमे नाम छल — रमरतिया देवी, कमलू पासवान — एकटा नामक कातमे लाल पेंसिलक बिंदु। माधव स्वीकार केलक — "जे कागच बाहरसँ आयल, ओकरापर हम बिंदु करैत छलहुँ।" ओ बतौलक — "जकर नामपर सिम, ओकर हाथमे फोन नहि।"

माधवक भतीजा एकटा लाल बक्सा देखौलक। भीतर एकटा फोटो भेटल — रमरतिया देवीक, जे दू बरख पहिने मरि गेलीह। अनन्या लिखलीह — "मरल स्त्रीक नामपर चलैत सिम।" आरुणि जोड़लक — "मृत नामसँ जीवित धमकी।"

माधव कानय लागल — "हम जानैत नहि छलहुँ जे सिमसँ धमकी जाएत।" मीरा कहलीह — "नहि जानब पापकेँ धोइ नहि दैत, मुदा सच कहब पापकेँ ढाकबासँ अलग करैत अछि।"

तखने ध्रुवेशक सेवक बिशंभर आबि विडियो बनबय लागल। देविका तुरंत जोरसँ पढ़लीह — "समय — दिनक एगारह बजि बत्तीस मिनट। उपस्थित — बिशंभर, दू अज्ञात युवक।" विडियो बनौनिहारक हाथ धीरे भऽ गेल।

भीड़ जुटि गेल। एकटा बूढ़ लोक कहलक — "हमरो अंगूठा ओही सेवा-शिविरमे लगाओल गेल छल। कहल गेल छल पेंशन भेटत।"

मीरा दू पंक्ति बनौलीह — जे बाजय चाहय, ओ पहिने अपन नाम कहत। दोपहर धरि आठ नाम लिखल गेल — तीन मृत, दू बीमार, एक परदेशमे।

सत्यव्रत कहला — "ई केवल फोनक छल नहि; ई अस्तित्वक चोरी अछि।"

रमरतिया देवीक पोता कहलक — "दादी मरलाक बादो अगर हुनकर नामसँ डर भेजल गेल, त ई मरल शरीरक अपमान नहि, बचल नामक हत्या अछि।"

राति ध्रुवेशक हवेलीसँ ढोलकक आवाज आयल। कियो कहलक — "जखन अपराधी डरैत अछि, तखन ओ सभसँ पहिने उत्सवक आवाज बढ़बैत अछि।"

अध्याय १८२

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

अनन्या भोरसँ पहिनहि उठि गेलीह। आइ हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा खटखटएबाक दिन छल।

मीरा नियम पढ़ौलीह — "कागच देखब, मुदा कागच छीनब नहि। जकर नाम पढ़ब, ओकर अनुमति लेब।"

केंद्रपर बूढ़ चौकीदार नरहरी काका कहलनि — "बाबू लोक, केंद्र आइ बंद अछि। ऊपरसँ आदेश।" सत्यव्रत पुछलनि — "ऊपर कतय अछि — छत, दफ्तर, कि डर?" नरहरी कुंडी खोलि देलनि।

भीतर प्रपत्रक ढेरमे रमरतिया देवीक नाम फेर सोझाँ आयल — तीन अलग मोबाइल नंबर सहित। सत्यव्रत मिलौलनि — सिम सक्रियता आ सेवा–शिविरक तिथि एके।

नरहरी काका धीरे–धीरे बोलय लागला — "हमरा बस चाभी राखबाक छल। कखनो–कखनो रातिमे लोक आबि फाइल निकालैत — बिशंभर, ध्रुवेशक सहायक, आ कखनो एक शहरिया बाबू जे चश्मा पहिरैत छल।"

अलमारीमे दूटा पंजी भेटल — "लाभुक उपस्थिति" आ "अंकीय सहायता।" दोसरमे "फोन वापस" लिखल छल। मीरा कहलीह — "ई शब्द असली दरबाजा अछि। जकर नामपर फोन, ओकर हाथसँ फोन वापस — माने आवाजक चोरी।"

बाहर कतार बनल। शांति कहलीह — "काल्हि हमरा कागचक लाज बचल। आइ दोसरो लोकक लाज बचत।" बच्चा सभ श्रेणी बनौला — "नाम–पुष्टि," "लाभ–अस्वीकार," "फोन–वापसी।"

बिशंभर आबि विरोध केलक — "ई निजी संस्था अछि।" देविका कहलीह — "भड़कब ओ होइत अछि जतय आगि नहि होय। एतय राखक नीचाँ आगि बहुत पहिनेसँ अछि। हम केवल धुँआ दर्ज करैत छी।"

नरहरी काका बिशंभरक सोझाँ ठाढ़ भऽ कहलनि — "बरखों चाभी बचौलहुँ, नाम गँवेलहुँ। आब नौकरी बचा क की करब?"

दोसर कोठलीमे एकटा पेन–ड्राइव भेटल — "शिविर फोटो" लिखल। मीरा रोकलीह — "ई अंकीय प्रमाण अछि। बिनु प्रति–प्रक्रिया छूब नहि।"

राति रमरतिया देवीक पोता कहलक — "दादीक नामसँ जँ फोन चलल, त दादीक आत्मा नहि, हुनकर नाम गुलाम बनाओल गेल।"

सत्यव्रत अंतिम रेखा खिंचलनि — सेवा केंद्र → सिम पंजी → फोन–वापसी → ट्रस्ट खाता → धमकी संदेश → ध्रुवेशक सहायक। अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह — "फोनक भीतरक चेहरा।"

अध्याय १८३

फोनक भीतरक चेहरा

भोरे साइबर अधिकारी विनीत झा आबि पेन–ड्राइव खोलबाक नियम बतौलनि —— "पहिने प्रति बनत, मूल सुरक्षित रहत, समय लिखल जाएत, गवाहक हस्ताक्षर होएत।"

चन्ना गाछी तर अस्थायी मेज लगाओल गेल। मीरा नियम पढ़ौलीह —— "चित्र देखब, तमाशा नहि बनायब। जकर चेहरा भेटत, ओकर मान राखब।"

पहिल फोल्डरमे सेवा–शिविरक चित्र भेटल। देविका कहलीह —— "जँ चित्र बहुत सजल होय, त किनार देखू।" किनारमे बिशंभर ठाढ़ छल, रसीदक गठरी सहित।

दोसर चित्रमे रमरतिया देवी देखार भेलीह — हाथमे मोबाइल पकड़ाएल, कातमे एकटा युवक झुकल — गलापर हरिहर सेवा केंद्रक चिन्ह। दीपक, रमरतिया देवीक पोता, चुपचाप उठि दूर ठाढ़ भऽ गेल।

एकटा वीडियोमे आवाज भेटल — "बस फोटो भऽ गेल, आब फोन जमा करू, बादमे देल जाएत।" मीरा तुरंत वीडियो रोकलीह — "जे लोक एहिमे अछि, ओकर अनुमति बिनु सार्वजनिक नहि करब।"

"विशेष" फोल्डरमे एकटा ध्वनि–संदेशमे एक बुजुर्ग स्त्री रोइत सुनल गेलीह — "हम पुलिससँ डरैत छी, हमरा छोड़ि दिअ।" ई आवाज गामक सोमरी काकीक छल, जे बीते मास बीमारीक बहानासँ घरसँ बाहर नहि निकललीह। मीरा दू स्त्रीकेँ बिनु भीड़क हुनकालग पठौलीह।

दोसर वीडियोमे एकटा हाथ देखार भेल — लंबा नह, कलाईपर कारी धागा। सत्यव्रत चंद्रपालक पुरान फोटोसँ मिलौलनि — ध्रुवेशक सहायकक हाथमे वैह धागा।

अनन्या लिखलीह — "कखनो–कखनो चेहरा झूठ बाजैत अछि, हाथ सच छोड़ि जाइत अछि।"

साँझमे सोमरी काकी कहलीह — "फोनपर जे पुलिस बोलल, ओकर पाछू केओ हँसि रहल छल।" नरहरी काका सुनि काँपि उठल — "ई शहरिया बाबू अछि। रातिमे जखन ओ केंद्रपर अबैत छल, एहनहि हँसैत छल।"

दीपक अपन दादीक फोटो सोझाँ राखि कहलक — "आइ दादीक चेहरा नहि, दादीक नामक चोरी देखलहुँ।" मीरा ओकर कंधापर हाथ राखि कहलीह — "चोरी भेटल अछि, आब चोरक बाट भेटत।"

बूढ़बा भूत धीमा स्वरमे कहलनि — "पहिने नाम मिटाओल जाइत छल। आब नामसँ आवाज बनाओल जाइत अछि। जे आवाज बनाओत, ओकर साँस खोजू।"

अध्याय १८४

आवाजक नकाब

विनीत झा चेतावनी देलक — "आवाजक मिलान अदालतमे अंतिम प्रमाण नहि, मुदा बाट देखाबयवला दीप अवश्य बनि सकैत अछि।" मीरा लिखलीह — "कानक न्याय भीड़ नहि करत; क्रम करत।"

सोमरी काकीक धमकी–संदेशमे पाछूसँ हलुक हँसी सुनल गेल। नरहरी काका आँखि मूनि कहलनि — "ई रातिक हँसी अछि। जखन ओ लोक फाइल उठा क ऊपरक कोठलीमे जाइत छल, तखन एहनहि हँसी सुनाइत।"

देविका सेवा–समारोहक पुरान वीडियोमे एकटा युवकक "पहिने" शब्द ध्यानसँ सुनलीह, जे धमकी–संदेशमे सेहो एक ठाम मिलल। आरुणि लिखलक —– "शब्दक रूप बदलैत अछि, आदत नहि।"

"विशेष" फोल्डरमे "री–चेक" नामक फाइलमे एकहि वाक्य अलग–अलग गलासँ बोलल भेटल —– नकली आवाज बनएबाक अभ्यास।

सोमरी काकी स्वीकार केलीह —– "शिविरमे हमरासँ कहल गेल छल —– बोलू, 'हम लाभ पाबि गेलहुँ।' हम बुझलहुँ फोटो लेल।" कतेको बूढ़ स्त्री कहय लगली —– "हमरो कहल गेल छल।"

बिशंभर दूरसँ भीड़मे देखार भेल। मीरा घोषणा केलीह —– "जकरा अपनापर शंका अछि, ओ भागय नहि। सच बोललासँ नाम बचि सकैत अछि।"

नरहरी काका बतौलनि —– "शहरिया बाबू पंखा बंद कराबैत नहि छल। तीन मास पूर्व पुरान पंखा शहर लऽ गेल छल, कहल गेल —– मरम्मत।" पंखाक आवाज धमकी–संदेशमे मिलल।

राति बिशंभर आगू आबि स्वीकार केलक —– "हम फोन उठबैत छलहुँ, मुदा बोलैत ओ शहरिया बाबू। ध्रुवेश बाबू ओकरा 'माधवेश बाबू' कहैत छल, शायद असल नाम नहि।"

बिशंभर अपन कारी धागावला हाथ देखौलक —– "ई जख्म ओहि रातिक अछि जखन फोनक डब्बा छीनैत एक बूढ़ हाथ काटि देलक।" दीपकक आँखि भरि आयल —– "दादी? " बिशंभर चुप रहल। मीरा हाथ उठा कऽ कहलीह —– "अपराधीकेँ भीड़ नहि, गवाही पकड़त।"

अनन्या नव पन्ना खोलि लिखलीह —– "मास्टरक कमरा।" आरुणि जोड़लक —– "जतय आवाज बनल, ओतय चेहरा बचल होएत।"

अध्याय १८५

मास्टरक कमरा

बिशंभर काँपैत कहलक —— "शहरमे एक कमरा छल, स्टेशनक पाछू, पुरान फोटोस्टेट दोकानक ऊपर। मास्टर ओतहि आवाज बनबैत। ध्रुवेश बाबू कहैत छला —— पाछू हरिहरक हवा रहत त भरोसा बढ़त।"

मीरा नियम राखलीह —— "कमरा देखय जाएब, मुदा भीड़ नहि। अनुमान बाहर, दर्ज भीतर।" बिशंभर संग जायबाक जिद्द केलक, मीरा रोकलीह —— "तोहर उपस्थितिसँ प्रमाण दूषित भऽ सकैत अछि।"

फोटोस्टेट दोकानपर नव बोर्ड छल —– "मास्टर मीडिया सेवा।" भाड़ा-रजिस्टरमे नाम छल —– "मधवेश मिश्र" — "माधवेश" नहि, बीचसँ एक मात्रा गायब।

ऊपरक कमराक तालापर पंचनामा लिखल गेल —– समय, गवाह, सील। ताला खुजितहि पुरान पंखा भेटल —– "हरि-२" लिखल, हरिहर सेवा केंद्रक दोसर पंखा।

मेजपर पर्ची भेटल —– "दादी-स्वर: धीरे, भरोसा, रोना नहि," "किसान-स्वर: बेटा कहि संबोधित कर," "पुलिस-स्वर: कठोर।" मीरा कहलीह —– "ई लोकक भाषा नहि, संबंधक नक्शा पढ़ि रहल छल।"

दीपक एकटा डिब्बामे कागजी पट्टी देखलक —– "रमरतिया—–दादी—–दीपक—–शहर।" ओकर साँस रुकि गेल। मीरा ओकरा बैसाक कहलीह —– "कानि सकैत छह, मुदा कागच नहि छूबू।"

खिड़कीसँ स्टेशनक पटरी देखार होइत छल। ट्रेन गुजरलापर कमरा काँपल, पंखा बिनु चलले खट करैत छल। विनीत झा चौंकला —– "धमकी-कॉलक पाछू जे गड़गड़ाहट छल, ओ ट्रेनक होय सकैत अछि।" समय सभ मिलल।

एकटा तिथिपत्रक नीचाँ रेखा भेटल —– "हरिहर सेवा केंद्र → फोटोस्टेट ऊपरक कमरा → शहरक खाता → ट्रस्ट → 'डी' → 'एम'।" सत्यव्रत रोकलनि —– "अक्षर दर्ज करू, अर्थ नहि।"

दुकानदारक लड़का बतौलक —– "काल्हि राति एक लोक दू बैग लऽ क गेल। ओकर दाढ़ी नकली लगैत छल। समय लगभग साढ़े ग्यारह।"

गाम घुरैत बसमे दीपक कहलक —– "दादीक आवाज मरलाबादो ओ लोक प्रयोग करैत रहल।" मीरा कहलीह —– "एहि लेल हम आवाजक अधिकार लिखब। मृतकक आवाजो परिवारक स्मृति अछि, बाजारक माल नहि।"

बिशंभर फुसफुसैलक —– "मास्टर कहैत छल —– नाम छोट राखू, बचि जाएब।" आरुणि लिखलक —– "नाम छोट करबाक चाल, अपराध छोट नहि करैत।"

अध्याय १८६

मधवेशक असली नाम

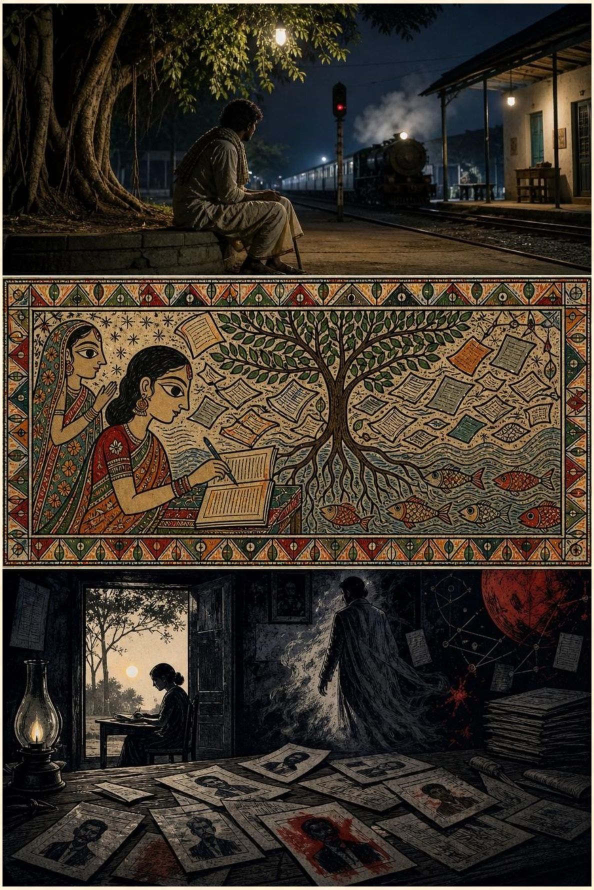

अनन्या भोरमे लिखलीह — "मधवेशक असली नाम।" मीरा चेतौलीह — "आइ नाम खोजब, मुदा नामक आधारपर भीड़ नहि उठत। कोनो जाति, कुल, गामकेँ अपराधी नहि कहब।"

नरहरी काका मोन कएलनि — "बरखों पहिने हरिहर सेवा केंद्रमे एक लड़का आबैत छल। आवाजक नकल करैत। बूढ़क गला, बच्चाक रोअन — सभ निकालैत। हम सभ हँसी–ठठ्ठामे मधुकर कहैत रही।"

टोली पुरान माध्यमिक विद्यालय गेल। नामावली–रजिस्टरमे नाम भेटल — "मधुकर माधव मिश्र, पिता — महेश्वर मिश्र, गाम — बरियारपुर टोला।"

प्रधानाध्यापक मोन कएलनि — "ओकर पिता स्वयं नाम बदलवौलनि। कहलनि — मधुकर बहुत गामे-घरक सुनाइत अछि।"

विद्यालयक नाटक-दिवसक पुरान फोटोमे एकटा दुबला लड़का पुलिसक टोपी पहिरने मंचपर छल, नीचाँ लिखल — "मधुकर—आवाज-अनुकरण।" अनन्या सोचलीह — जे कला ताली पाबय लेल जन्मल, ओकरा डर बेचबाक औजार बना देल गेल।

बरियारपुर टोलामे एकटा बूढ़ी स्त्री कहलीह — "मधुकर? ओकर आवाज मधुमक्खी जेहन छल, तें नाम मधुकर पड़ल। महेश्वर कहैत — बेटा शहरमे रेडियोपर बोलत। फेर ओ ध्रुवेश बाबूक संग सेवा-काजमे लागल।"

घरक देहरीपर कोयलासँ लिखल आधा वाक्य भेटल — "आवाज बेचब नहि।" बूढ़ी स्त्री कहलीह — "ओकर माय मरबासँ पहिने लिखने छली, जखन लड़का लोकक बोलीक हँसी उड़ौने छल।"

बिशंभर कहलक — "मास्टर कहैत छल — मधुकर मरि गेल, मधवेश कमाइत अछि। मधुकर सुनितहि लोक गाम, गरीबी, आ मायक मोन पाड़ैत छै। मधवेश सुनितहि कागच, शहर, भरोसा।" अनन्या लिखलीह — "जे लोक अपन मायक आवाजसँ भागल, से दोसराक मायक आवाज बेचलक।"

दीपक पुछलक — "जँ ओकर असली नाम मधुकर अछि, त ओकरा मास्टर किएक कहब?" मीरा कहलीह — "एक नाम अपराधी पकड़त, दोसर नाम इतिहास बुझत।"

सत्यव्रत मेहता अंतिम टिप्पणी लिखलनि — "अभियुक्तक संभावित असली नाम: मधुकर माधव मिश्र। पुष्टि शेष: बैंक, यात्रा, महेश्वर-संबंध, ट्रस्ट-धन।"

अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलीह — "छत्ताक भीतरक रानी।" आरुणि जोड़लक — "मधुमक्खी पकड़ायल, मुदा मधु ककरा घरमे जमा अछि?"

अध्याय १८७

छत्ताक भीतरक रानी

अनन्या नव शीर्षक लिखलीह — "छत्ताक भीतरक रानी।" मीरा चेतौलीह — "रानी शब्द सुनितहि कोनो स्त्रीपर आरोप नहि लगत। जँ अपराधी लोक स्त्रीक नामकेँ ढाल बनबैत अछि, त पहिल काज ढाल हटएनाइ अछि, ढालकेँ चोट पहुँचएनाइ नहि।"

विनीत झा मास्टरक कमराक यंत्रमे एकटा सारणी भेटलीह — "फूल," "मधु," "रानी" — तीन खंड। आरुणि कहलक — "मधुकर मधु जमा करैत छल, मुदा रानी ओकरासँ ऊपर अछि।"

पहिल रानी–खाता खोलल गेल —— नाम: रानी देवी, गाम: हरिपुर कटान, उमेर: बहत्तर। मीरा कहलीह —— "नाम पढ़ल गेल, अपराध नहि। पहिने ई स्त्री भेटतीह।"

टोली हरिपुर कटान गेल। रानी देवी अपन घरक बाहर धूपमे अन्न सुखबैत भेटलीह। ओ कहलीह —— "वृद्धावस्था–वृत्ति बंद भेल छल, बाबू। ओ कहलक —— अंगूठा लगाउ, फोटो दाउ, वृत्ति खुलत। हम अंगूठा देलियै। दू मास पैसा आयल, फेर बंद। लाखक पैसा कतयसँ? "

खाताक अंगूठा गोल आ स्वच्छ छल, मुदा रानी देवीक असली अंगूठा आध कटान छल। विनीत झा कहलनि —— "नाम असली, अंगूठा नकली।" मीरा कहलीह —— "तें स्त्री अपराधी नहि, स्त्रीपर अपराध।"

रानी देवीक पोता कहलक —— "सेवा केंद्रमे ओ लोक दादीक हाथ पकड़ि क शीशाक पट्टीपर लगौलक। तीन बेर। कहलक —— यंत्र खराब अछि।"

घुरैत बाटमे दोसर "रानी कुमारी" भेटलीह —— पाँच बरख पहिने विवाह क परदेश चलि गेलीह। तेसर "रानी महिला सहायता समिति" केवल कागचपर छल।

मीरा कहलीह —— "एहिमे कोनो स्त्रीकेँ अपराधी घोषित नहि करब। समाज जकरा दुर्बल मानैत अछि, अपराधी ओकर नामकेँ मजबूत तिजोरी बनबैत अछि।"

बिशंभर बतौलक —— "महेश्वर बाबू कहैत छला —— स्त्रीक नामपर खाता खोलू, जल्दी कोनो प्रश्न नहि उठत।" समिति–पंजीमे मोहर भेटल —— "महेश्वरनाथ सेवक, संयोजक।"

बूढ़बा भूत पातमे गूंजल —— "पुरान समयमे दानक थारीपर स्त्रीक नाम लिखि पाप धोएल जाइत छल। आब अंकीय खातापर स्त्रीक नाम लिखि पाप नुकाओल जाइत अछि। थारी आ खाता बदलल, चाल नहि।"

रानी देवीक पोता कहलक —— "दादी कहैत छथि, हुनकर नाम साफ करू।" दीपक कहलक —— "जकरा सभक नामसँ अपराध चलल, हुनका सभक नामसँ न्याय शुरू हो।"

अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलीह —— "महेश्वरक मोहर।"

अध्याय १८८

महेश्वरक मुहर

मीरा सभा शुरू करैत कहलीह — "मोहर अपराधी नहि; मोहरक प्रयोग अपराधक बाट खोलि सकैत अछि। हम व्यक्ति नहि, प्रयोग, तिथि, कागच, स्याही, आ अधिकारक शृंखला देखब।"

विनीत झा तीन मोहरक चित्र देखौलनि — "महेश्वरनाथ," "महेश्वर नाथ," "म. न. सेवक" — एकहि मूल मोहरक तीन रूप।

नरहरी काका कहलनि — "महेश्वर बालपनमे हरिहर सेवा केंद्रमे घंटी बजबैत छल। ओहि समय ओकर नाम महेसर छल। बादमे से महेश्वर भेल, फेर 'सेवक' जोड़ल।"

गामक पुरान छाप बनौनिहार बजरंग मुद्राकार मोहर देखि कहलनि —— "ई हाथक बनल मोहर नहि; यंत्रक साँचा कटायल। एहन यंत्र स्टेशन पाछूक गलीमे छल —— वैह गली जतय मास्टरक कमरा छल।" ओ याद केलनि —— "एक बेर तीन मोहरक आदेश आयल छल। लोक स्वयं नहि आयल; एक चेला आयल —— नाम ध्रुवेश कहल गेल छल।"

बैंकक कागचमे मोहरक तिथि अनुमोदन–पत्रसँ पहिनेक भेटल। विनीत झा कहलनि —— "जाहि दिन भविष्य पहिनेसँ तय होय, कागच पाछू भरल जाइत अछि।"

तीन गामक स्त्री बयान देलीह —— कियो महेश्वरनाथकेँ कहियो देखने नहि छलीह। सत्यव्रत कहला —— "जकर मोहर चलैत अछि, ओकर चेहरा बहुत बेर अनुपस्थित रहैत अछि।"

एकटा दान–पुस्तिकामे महेश्वरनाथ सेवकक नामक पाछू "कुंजी–रक्षक" लिखल भेटल। नरहरी काका कहलनि —— "केंद्रमे एक लोहाँक पेटी छल, जाहिमे पुरान प्रमाणपत्र, मोहर, खाली पत्र–मस्तक राखल जाइत। बटुकनाथ हरिहरनक समयसँ चलल। कतेको बेर पहिने हस्ताक्षर, बादमे नाम।"

देविका कहलीह —— "जँ पद्धति पुरान अछि, त अंकीय गिरफ्तारी नव अपराध नहि, पुरान खाली कागचपर लिखल नव वाक्य अछि।"

साँझमे पुरान चौकीदार गदाधर आबि एकटा जंग–लागल कुंजी अनला —— "ई हमरा देल गेल छल, कहने छल —— कहियो प्रयोग नहि करब। लोहाँक पेटी एखनहुँ अछि, भंडार–घरमे।"

मीरा निर्णय देलीह —— "भंडार–घर खोलब, मुदा विधिपूर्वक। रातिमे केवल पहरा। भोरमे खोलब।"

अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलीह —— "लोहाँक पेटी।" आरुणि जोड़लक —— "जतय खाली कागच भरल गेल, ओतय असली नाम बंद रहल।"

अध्याय १८९

लोहेक पेटी

भोरे मीरा नियम सुनौलीह — "कोनो कागच जेना अछि तेहन उठत, तेहने लिखल जाएत। भीड़ बाहर रहत। पेटी खोलब कौतूहल नहि, गवाही अछि।"

भंडार–घरसँ लोहाँक पेटी भेटल, चाकसँ लिखल — "सेवा" — "वा" लगभग मिटल। गदाधरक कुंजी घुमलनि, ताला कराहल — "ख्र्ाऽऽक।"

पहिल वस्तु — एकटा सूखल नारिकेल पात। मीरा कहलीह — "अपराध शुभक पातसँ शुरू भऽ सकैत अछि; पात दोषी नहि, प्रयोग पढ़ू।"

पातक नीचाँ खाली पत्र–मस्तकक गड्डी भेटल — "हरिहर सेवा केंद्र" लिखल, नाम खाली, मुदा महेश्वरनाथ सेवकक मुहर सहित। अनन्या काँपि

गेलीह — "जतय नाम बादमे भरबाक होय, ओतय लोक पहिनहि गायब कएल गेल।"

चार रंगक थैली भेटल — लाल (स्त्री–समिति), नील (बैंक), कारी (फोन), पीयर (मजदूर)। लाल थैलीमे रानी देवी, सोमरी काकी सभक चित्र–प्रतिलिपि, अंगूठाक धब्बा भेटल।

कारी थैलीमे मोबाइल–अंकक सूचीमे "बूढ़," "अशिक्षित," "बेटा बाहर" जेहन नोट छल। दीपक अपन दादीक नाम देखलक। ओ कहलक — "ई लोक दादीक अकेलापन सेहो लिखैत छल।"

पीयर थैलीमे "बिसेसर पासवान" क एकटा अधूरा पन्ना भेटल — मृत्यु नहि, "अनुपस्थिति" लिखल, बटुकनाथ हरिहरनक संस्थाक पुरान मुहर सहित।

एकटा कपड़ाक थैलीमे अंगूठा–छापक पाँच रबरक टुकड़ा भेटल। सोमरी काकी बाहरसँ चिचिआलीह — "हमर अंगूठा फेर बनाओल?" गदाधर स्वीकार केलनि — "अंगूठा लेबासँ पहिने तेल लगबैत छल। कहैत — छाप साफ आएत।"

एकटा नील टिप्पणी–पुस्तिकामे स्तंभ भेटल — नाम, असल अंक, आवाज, खाता, डर। सत्यव्रत पढ़लनि — "रमरतिया — बेटा बाहर — राति — गिरफ्तारी–पत्र।"

एकटा मोड़ल पन्नामे लिखल भेटल — "बटुकनाथ हरिहरन स्मृति–कोष — खाली प्रमाणपत्र पच्चीस, मुहरित आदेश बारह, आवाज सूची छब्बीस।" महेश्वर, ध्रुवेश, मधुकर तीनू नाम अलग पंक्तिमे।

मीरा कहलीह — "एकरा पढ़बासँ पहिने, सभ नामक प्रतिलिपि सुरक्षित कएल जाए। ककरो नाम सार्वजनिक नहि होयत, जखन धरि ओकर परिवारसँ बात नहि होयत।" अनन्या ऊँच स्वरमे कहलीह — "पीड़ितक नाम तमाशा नहि।"

दीपक पुछलक — "अकेलापन सेहो चोरी होइत अछि?" सत्यव्रत कहला — "होय, जखन ओकरा डरक संकेत बनाओल जाए।"

सत्यव्रत अंतिम टिप्पणी लिखलनि —– "पुरान संस्थागत ढाँचा आ नव अंकीय विधि एकहि संग्रहमे संबद्ध देखार होइत अछि।" मीरा जोड़लीह —– "पेटी खुजल, मुदा लोक एखन बंद अछि।"

अध्याय १९०

नील पंजी

मीरा सावधान केलीह — "एहि पंजीमे जे नाम अछि, से सभ सार्वजनिक करबाक वस्तु नहि। पीड़ितकेँ फेर बजारमे उघारि देब अपराधक दोसर रूप।"

पहिल पन्नापर शीर्षक छल — "सेवा–सूची: विशेष संरक्षण।" स्तंभ छल — नाम, संबंध, भय, आवाज, खाता, हिस्सा, स्थिति। "भय" स्तंभमे लिखल छल — "बेटा बाहर," "विधवा," "माय अकेली।" आरुणि लिखलक — "जतय लोक अपन दुःख बुझैत अछि, ओतय अपराधी मौका देखैत अछि।"

दोसर पन्नापर स्त्री–नाम सभ छल। मीरा कहलीह —– "ई स्त्री सभ पीड़ित छथि, संदिग्ध नहि। जकर नामसँ खाता खुजल, ओ अपराधी होयब आवश्यक नहि।"

तेसर पन्नापर मजदूर–नामक छाया भेटल —– "बि.पा." (बिसेसर पासवान), "स.अ." आ छोटूक आगू खाली कोठली। गदाधर सिहरि उठला —– "ई सभ पुरान पुलक बात।" सत्यव्रत कठोर भेला —– "पुरान बात जँ खातामे एखन साँस लैत अछि, त पुरान नहि।"

दुमड़ल पन्नामे एकटा नक्शा भेटल —– हरिहर सेवा केंद्र, महेश्वरनाथ सेवक न्यास, रानी–खाता, सभकेँ जोड़य वला नील रेखा —– मधुकरक आगू "स्वर," ध्रुवेशक आगू "निर्देश," महेश्वरक आगू "आशीर्वाद/मुहर," आ बटुकनाथ स्मृति–कोष आगू प्रश्न–चिन्ह।

चारिम पन्नामे "अभ्यास" —– मधुकरक फोन–स्क्रिप्ट सूचीबद्ध। अनन्या कहलीह —– "ई भाषा नहि, फाँस अछि।"

एकटा पन्नापर "नन्द आरुणि" क नाम देखार भेल —– "पुरान अभियंता —– रिपोर्ट —– मजदूर सूची —– वंश संबंध —– सावधान।" आरुणिक चेहरा पीयर पड़ि गेल। सत्यव्रत कहला —– "जकरा अपराधी 'सावधान' लिखलक, से शायद ओकरालेल बाधा छल।"

हुलासीक नाम प्रत्यक्ष नहि, मुदा "इनारबाली" लिखल एकटा संकेत भेटल। मीरा तुरंत कहलीह —– "ई नाम नहि, अपमान अछि। जँ असल नाम भेटत, पंजीमे एहि शब्दक ठाम ओहि नामक पुनर्स्थापन कएल जाएत।"

पंजीक पाछूसँ एकटा पातर कागच झरल —– "पंजी सुरक्षित। आदेश मौखिक। कुर्सीसँ पूछने बिनु पन्ना नहि खुले।" गदाधर काँपि उठला —– "ई ध्रुवेशक चिन्ह।"

अनन्या पन्नापर लिखलीह —– "ध्रुवेशक कुर्सी।" आरुणि जोड़लक —– "जे बैसल नहि, ओकरा सेहो उठाबय पड़त।"

अध्याय १९१

ध्रुवेशक कुर्सी

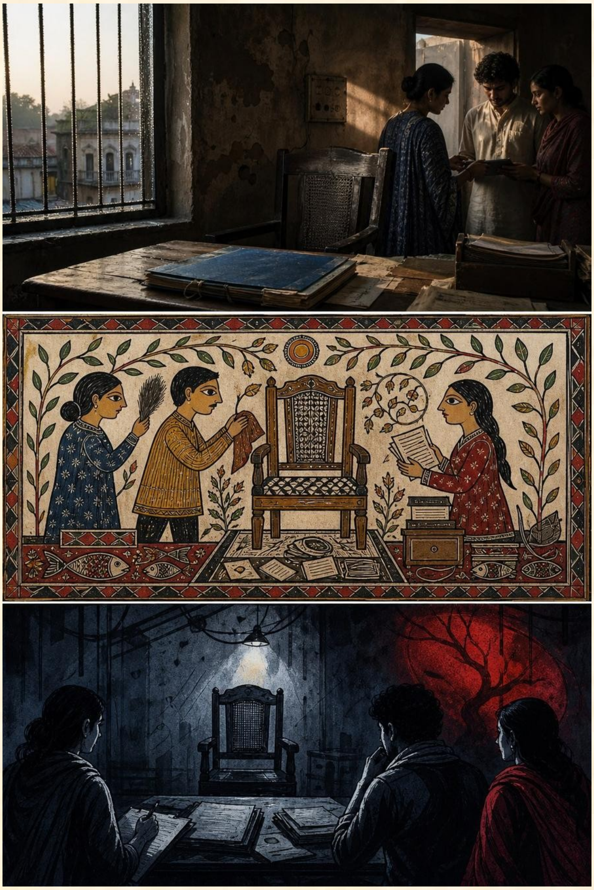

अनन्या शीर्षक लिखलीह — "ध्रुवेशक कुर्सी।" आरुणि जोड़लक — "जे कुर्सी खाली देखार होइत अछि, ओहिपर सभसँ बेसी भार रहैत अछि।"

मीरा नियम सुनौलीह — "कुर्सी उठाओल नहि जाएत; पहिने ओकर चारूकातक धूलि, कागच, पएरक निशान सभ सूचीबद्ध होएत।"

गदाधर सीढ़ीक ऊपरक कमराक कुंजी सम्हारि कहलनि — "हम केवल झाड़ू लगबैत छलहुँ। रातिमे कखनो फोनक घंटी, कखनो पुरुषक धीम आवाज, आ कखनो कुर्सी घसीटबाक ध्वनि सुनैत छलहुँ।"

कमरामे कुर्सीक पहियामे नील धागा भेटल —— पंजीक आवरणक नील रंगसँ मिलैत। मेजपर घंटी, टूटल चार्जर, कारी रबर–मुहरक डिबिया भेटल।

पहिल दराजमे एकटा पर्ची भेटल —— "माय असगर —— आवाज नरम।" सत्यव्रत लिखलनि —— "भावनात्मक दुर्बलताक अनुसार आवाजक ढंग निर्देशित। अपराध केवल सूचना नहि, अभिनय सेहो अछि।"

तेसर दराजमे रिक्त बयान–पत्रक गड्डी भेटल, जाहिपर लिखल छल —— "जँ विरोध करय, स्वीकारोक्ति बनाउ।" आरुणि काँपि उठल —— "अपराधी पहिने डर लिखैत अछि, फेर पीड़ितक मुँहसँ स्वीकार लिखबैत अछि।"

देबालपर एकटा शिकार–नक्शा टँगल छल —— गढ़ नारिकेल, स्टेशन, बैंक, फोन–दोकान, हरिहर सेवा केंद्र सभ जोड़ल। लाल बिंदु "लाभुक," नील "भय," कारी "प्रतिरोध।" अनन्या हाँफि उठलीह —— "ई सेवा–नक्शा नहि, शिकार–नक्शा अछि।"

कुर्सीक गद्दा उठैलापर एकटा लिफाफा भेटल —— "ध्रु." लिखल। भीतर पाँच प्रतिलिपि छल, जाहिमे नन्द आरुणिक पुरान प्रतिवेदनक फाटल अंश सेहो छल —— "मृत्यु–सूची अपूर्ण। नामक सत्यापन आवश्यक।" आरुणि थरथरा उठल।

विनीत झा कहलनि —— "जकरा पुरान मृतकक नाम चाही, ओकरा मुआवजा, दावा, चिन्हारि आ बैंकक सभ बाट खुजैत अछि।" मीरा कहलीह —— "गंगाक जलसमाधिसँ अंकीय गिरफ्तारी धरि सूत्र आब स्पष्ट भऽ रहल अछि।"

कुर्सीक पहियामे लागल माटि चन्ना गाछीक कातक माटि जेहन भेटल। सत्यव्रत सावधानीसँ लिखलनि —— "नील धागा संग माटि; स्रोत–परीक्षण अपेक्षित।"

साँझमे कुर्सी हटाओल नहि गेल, केवल चारूकात पीयर रेखा खिंचि कमरा मुहरबंद भेल। मीरा कहलीह —— "कुर्सी खाली नहि छल। ओहिपर डर, आदेश, अभिनय, पुरान प्रतिवेदन आ नव ठगी सभ बैसल छल।"

अध्याय १९२

बन्द रेकॉर्डरक स्वर

अनन्या शीर्षक लिखलीह — "बन्द रेकॉर्डरक स्वर।" मीरा कहलीह — "रेकॉर्डर खेलौना नहि। एकर प्रत्येक ध्वनि अदालतक कागच बनि सकैत अछि।"

शहरसँ ध्वनि-अभिलेखपरीक्षक अभय आयल। ओ जूता उतारि सीढ़ी चढ़लक — "धूलि उपकरणमे नहि जाय।" मीरा कहलीह — "एतय धूलि सेहो गवाही अछि।"

स्मृति–पत्रपर नील स्याहीसँ "ध्रु" चिन्ह भेटल —– कुर्सीक लिफाफापर देखल चिन्हसँ मिलैत। विनीत झा लिखलनि —– "चिन्ह समान, मुदा निर्णायक नहि।"

संचिका सभक नाम अजीब छल —– "नरम_माय," "कानून_डर," "स्वीकार," "कुर्सी_राति," "नन्द_सूची," "नया_पंजी।"

"नरम_माय" संचिकामे मीठ आवाज सुनल गेल —– "माय, घबराउ नहि। हम सेवा केंद्रसँ बाजि रहल छी।" मीरा तुरंत रोकलीह —– "ककरो स्मृति बिखरैत होय त सुनवाई रोकल जाएत।"

"कानून_डर" संचिकामे कठोर स्वर छल —– "अहाँक विरुद्ध सूचना–पत्र अछि।" सत्यव्रत लिखलनि —– "राज्यक भाषा चुरायल गेल अछि।"

संचिकाक बीच अचानक आयल —– "बिसेसरक प्रकरण पुरान अछि, एकरा एखन नहि खोलू।" कमरा जमि गेल।

"नन्द_सूची" संचिकामे कियो पन्ना पढ़ि रहल छल —– "मृत्यु–सूची अपूर्ण... नामक सत्यापन आवश्यक... अनुपस्थित लिखल गेल।" पाछूसँ आवाज —– "एहि भाग काटू। नाम मात्र चाही।" आरुणि दाँत भींचि लेलक।

"स्वीकार" संचिकामे मधुकरक आवाज सुनल गेल —– "बस ई कहू जे अहाँ स्वेच्छासँ कागच देने छी।" गदाधर स्तब्ध भऽ सुनैत रहला। मीरा पुछलीह —– "ई स्वर अहाँ चिन्हारैत छी?" गदाधर कहलनि —– "मधुकर बाबू जेहन अछि, मुदा कखनो–कखनो ध्रुवेशो हुनका लिखि दैत छल।"

"कुर्सी_राति" संचिकामे एकटा फुसफुसाहट भेटल —– "नव नाम अलग पंजीमे।" नील पंजीक अंतिम पंक्ति अचानक बाजि उठल।

"नया_पंजी" संचिकामे सभसँ डरावन बात भेटल —– "बच्चा सभकेँ छोड़ू नहि। ओ सभ नामक पहरुआ बनि रहल अछि" —– आ फेर एकटा नाम —– "आरुणि?" अनन्याक हथेलीमे नह धँसि गेल; आरुणि आँखिमे भय आयल, मुदा दुनू कॉपी बंद नहि केलक।

मीरा तुरंत कहलीह —– "बच्चा सभक सुरक्षा प्राथमिक।" अनन्या विरोध करय चाहलीह —– "हम डरब नहि।" मीरा हाथ पकड़ि कहलीह —– "डरब नहि आ बेपरवाह रहब —– दुनू अलग बात।"

साँझमे चन्ना गाछी लग रेकॉर्डरक बदला एकटा खाली माटिक कटोरी राखल गेल। अनन्या कहलीह — "आवाजक आकार नहि होइत; ओकरा खाली ठाम चाही।" अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलीह — "स्वरक चेहरा।"

अध्याय १९३

आवाजक चेहरा

अनन्या शीर्षक लिखलीह — "आवाजक चेहरा।" मीरा कहलीह — "कानक भरोसापर ककरो दोषी नहि ठहराओल जाएत। आवाजक संग समय, ठाम, उपकरण, साक्षी आ नमूना सभ जोड़ल जाएत।"

अभय आवाजक रेखा देखलक। ओ कहलक — "जँ दू आवाजमे साँसक उतार, अक्षर काटबाक ढंग मिलत, त तुलना मजबूत कहल जा सकैत अछि।"

मधुकरक स्वर–नमूना लेल गेल। पाँचम वाक्यपर मधुकर अटकि गेल — "जे कहल जाए, वैह कहब।"

गदाधर पुरान डिस्क अनला। एकटामे हरिहर सेवा केंद्रक उद्घाटनक दृश्य भेटल —— मंचपर ध्रुवेश, ओकर आवाज —— "गामक पीड़ा हमर पीड़ा अछि।"

अभय रेखा मिलौलक —— "ध्रुवेश 'र' पर पहुँचबासँ पहिने कंठ कने खँखारैत अछि। 'स' क बाद हलुक सीटी अछि।"

बैंक शाखाक पुरान विडियोमे ध्रुवेश कहैत सुनल गेल —— "पहिने विश्वास, फेर भय।" ई वाक्य बंद रेकॉर्डरमे मधुकरक मुँहसँ सेहो सुनल गेल छल।

मधुकरकेँ ई वाक्य सुनाओल गेल। ओकर हाथ काँपि गेल। मीरा पुछलीह —— "ई निर्देश के देलक?" मधुकर कहलक —— "ध्रुवेश बाबू जेहन।" मीरा कहलीह —— "जेहन नहि; निश्चित छी त निश्चित कहू।"

मधुकर स्वीकार केलक —— "हम डेराइत छी। ओ सभ कहने छल —— जँ नाम लेब त तोहर मायक दवा बंद, बेटाक नौकरी बंद।" ओ अंततः बयान लिखौलक।

एकटा वृद्धा आयलीह, जिनकर रोदन रेकॉर्डरमे सुनल गेल छल। मीरा हुनकर नाम सार्वजनिक नहि केलीह। वृद्धा कहलीह —— "फोनक पाछू दोसर आवाजो रहैत छल —— सेवा केंद्रक मंचपर जे बजैत छल, वैह।"

अनन्या नामक ठाम एकटा छोट दीपक बनौलीह —— "जखन नाम नुकायब आवश्यक होय, तखन ओकर इजोत लिखू।"

अभय तकनीकी प्रतिवेदन बनौलक —— "उच्चारण, साँस–विराम, शब्द–तालमे साम्य अछि।" सत्यव्रत कहला —— "ई भाषा धीम अछि, मुदा अदालतमे धीम शब्द तेज तामससँ बेसी टिकैत अछि।"

राति अनन्या लिखलीह —— "आइ चेहरा पूरा नहि देखार भेल, मुदा ओकर साँसक दरबाजा भेटल।" आरुणि जोड़लक —— "चेहराकेँ समन पठाओल जाएत।"

अध्याय १९४

साँसक समन

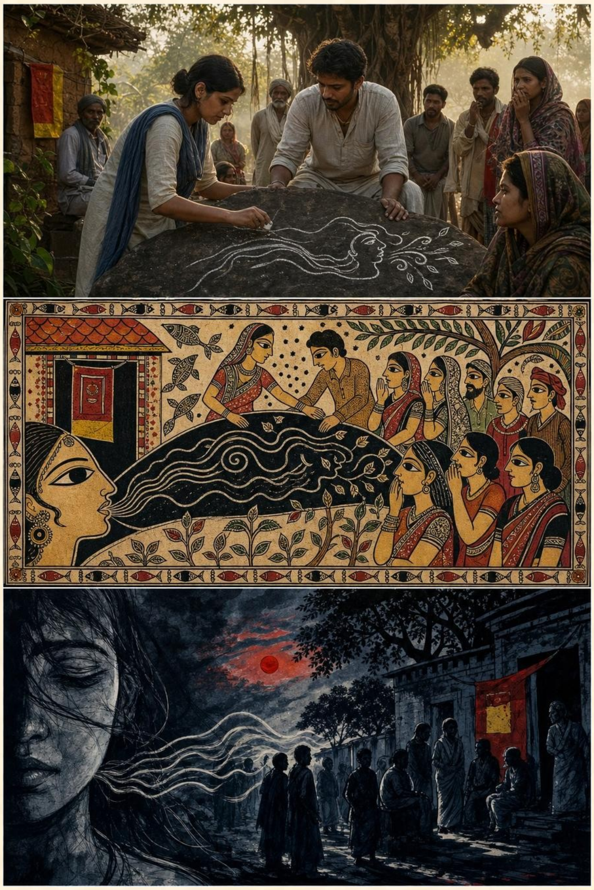

अनन्या शीर्षक लिखलीह —— "साँसक समन।" मीरा स्पष्ट कहलीह —— "समन दंड नहि। समन बुलाहट अछि —— आब अहाँ अपन साँस, आवाज, हस्ताक्षर, कुर्सी आ पंजीक संबंध स्पष्ट करू।"

विनीत झा समनक कागच तैयार केलनि —— ध्रुवेशक नाम, नील पंजीक सूत्र, ध्वनि–अभिलेखकक संदेह, बैंक–सभा विडियो सभ क्रमसँ। मीरा जोड़लीह —— "पीड़ितक नाम पूरा नहि लिखू। संकेत–संख्या दिअ।"

गदाधर, दुइटा सिपाही आ आरुणि ध्रुवेशक घर गेला। ऊँच फाटक, कैमरा, फव्वारा। प्रबंधक शीतांशु कहलक —— "बाबू शहरमे उपचार लेल छथि।

काल्हि राति गेला।" आरुणि टायरक निशान देखलक —— भीतरसँ बाहर कम, बाहरसँ भीतर बेसी गाढ़।

समन भीतरक सूचना–पट्टपर चस्पा भेल। तखने घरक भीतर फोन बजल। गदाधर काँपि उठला —— "ई वैह घंटी अछि" — जे ऊपरक कमरामे बजैत छल।

आरुणि गामसँ कहलक —— "समन देल गेल नहि; समन देखल गेल। कागच फाटकपर चस्पा भेल, मुदा घरक भीतरक फोन पहिने जागल।"

साँझमे ध्रुवेशक वकीलक पत्र आयल —— "स्वास्थ्य–संकट अछि, लोक–उत्तेजना सँ सुरक्षा चाही।" मीरा उत्तर लिखलीह —— "आवाज–नमूना स्थगित नहि।"

अभय पाँच नियंत्रित वाक्य बनौलक जे ध्रुवेशकेँ पढ़बाक होयत —— "सेवा डरक व्यापार नहि," "गोहिक दाँत देहपर, मुदा नामपर नहि।"

राति ध्रुवेशक घरपर हलचल देखार भेल —— गाड़ी आयल, गेल। एकटा चरवाहा देखलक जे पाछूक फाटकसँ केओ झोरा लऽ क निकसल। मीरा कहलीह —— "अपुष्ट बात नहि; समय, दिशा, देखनिहार सभ लिखू।"

ध्रुवेशक पुरान सहायक मोहन पासवान चुपचाप मीरालग आबि स्वीकार केलक —— "हमर हाथसँ दू बेर लिफाफा गेल। हमरा केवल कहल गेल —— रसीद नहि, मोन नहि।" सत्यव्रत नन्द आरुणिक पुरान लेखमे पढ़लनि —— "जतय रसीद नहि, ओतय स्मृति रसीद बनू।"

अनन्या राति लिखलीह —— "रोकल खाता।" आरुणि जोड़लक —— "धनक बाट बंद होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि।" राति फोन तीन बेर बजल, केओ नहि उठौलक।

अध्याय १९५

रोकल खाता

भोरे बैंकक शटरलग कतार बनल। अनन्या लिखलीह — "रोकल खाता।" आरुणि जोड़लक — "धनक बाट बंद होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि।"

विनीत झा कहलनि — "पहिने सूची पढ़ल जाए। कोनो खाता केवल नाम–समानतापर नहि रोकल जाएत।"

नील पंजीसँ पहिल खाता मिलौल गेल — "हरिहर सेवा केंद्र सहायता कोष" — विवरणमे "विशेष सेवा" लिखल। गदाधर कहलनि — "विशेष सेवाक अर्थ ऊपरक निर्देश।"

एकटा स्त्री सुरजमुखी देवी आगू आयलीह —— पंजीमे नाम "सुरजा" छल, छोट क देल गेल। ओ कहलीह —— "हमरा फोन आयल छल जे बेटा जेलमे पड़त। हम अपन बकरी बेचि देलहुँ।" अनन्या लिखलीह —— "सुरजमुखी देवी, पूरा नाम।"

बैंकक पछिला कोठलीमे एकटा पर्चीपर "नन्द आरुणि प्रतिवेदन–सहायता" लिखल भेटल। गदाधर कहलनि —— "पुरान पुल पीड़ित सभक दस्तावेज जुटएबाक नामपर कहल गेल छल। असलमे पाइ ऊपर गेल।" आरुणि काँपि गेल —— ओकर पिताक नाम फेर चोरी कएल गेल छल।

बैंक–प्रबंधक मनोज मिश्र स्वीकार केलनि —— "किछु बेर ऊपरक फोन अबैत छल। कहल जाइत छल —— गामक सेवा–काज अछि।" मीरा पुछलीह —— "आवाज चिन्हैत छलहुँ?" मनोज कहलनि —— "सभ कहैत छल —— ध्रुवेश बाबूक निर्देश।"

धमकी भरल फोन कतेको आयल। मीरा कहलीह —— "धन रुकल त धमकी शीघ्र अपन असली भाषामे अबैत अछि।"

बाहर भीड़ नारा लगाबय लागल —— "सेवा बचाउ।" मीरा कहलीह —— "जे सेवा खाता रोकलासँ मरि जाए, से सेवा नहि —— कारोबार छल।"

सुरजमुखी पुछलीह —— "हमरा पाइ कहिया भेटत?" मीरा कहलीह —— "हम तिथि नहि बेचब। हम प्रक्रिया लिखब।"

राति चन्ना गाछी लग बूढ़बा भूत नाम सभ पढ़बाक कहलनि —— सुरजमुखी देवी, अनाम डरायल स्त्री, नन्द आरुणि, बिसेसर पासवान, छोटू। "जलसमाधि" शब्द फेर उभरल।

बूढ़बा भूत कहलनि —— "जखन जल नहि, विस्मृति डुबाबैत अछि।" अनन्या लिखलीह —— "जलसमाधिक अर्थ।" आरुणि जोड़लक —— "जे पानिमे डूबल, ओकर देह गेल; जे विस्मृतिमे डूबल, ओकर नाम। आब नाम ऊपर उठत।"

अध्याय १९६

जलसमाधिक अर्थ

भोरे आरुणि एकटा खाली लोटा अनलक — गामक इनार, कमला-बलान, आ गंगाक जल — तीनू जलक प्रतीक। मीरा कहलीह — "एहिमे पानि नहि, अर्थ भरय जा रहल छी।"

बूढ़ मल्लाह फकीरा साहनीक बेटा एकटा काँसक कटोरा अनला — "हमर बाबू कहैत छला, गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। आइ बुझैत छी — जखन नामकेँ कागचमे काटि दे, पंजी गड़प क ले — तखन नामकेँ किनार कतय भेटत? "

मीरा पहिल बूँद इनारक पानि ढारलीह —— "ई पानि ओहि सभक अछि, जे घरक भीतर मरल आ जिनकर मृत्यु घरक लाज, जातिक डर, स्त्रीक चुप्पीमे दबा देल गेल।"

आरुणि दोसर बूँद कमला-बलानक ढारलक —— "ई पानि ओहि खेत सभक, जकरा सभक मेड़ नदी खा गेल आ कागच नहि मानलक।"

देविका तेसर बूँद गंगाक जल ढारलीह —— "ई पानि बिसेसर पासवानक, सलामत अंसारीक, छोटूक —— जकर असल नाम एखन धरि खोजल जाएत अछि।"

सत्यव्रत मेहता नन्द आरुणिक दैनन्दिनी खोलि पढ़लनि —— "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।" ओ कहला —— "जकर देह गेल, ओकर नाम बचाउ। जकर नाम दबाओल गेल, ओकर आवाज बचाउ। जकर आवाज कीनल गेल, ओकर साँस बचाउ।"

मीरा कहलीह —— "जलसमाधि आइ ध्रुवेशक फैसला नहि, आइ अर्थक संस्कार अछि। न्यायक पहिल नियम —— जकरा डुबाओल गेल, ओकरा ऊपर आनू।"

नाम एक-एक क लिखल गेल —— बिसेसर पासवान, सलामत अंसारी, गोपी महतो, रजनू मंडल। पाँचम ठाम —— छोटू —— नाम अधूरा। मीरा कहलीह —— "खाली ठाम छोड़ू। खाली ठाम सेहो गवाही अछि।"

एकटा बूढ़ी स्त्री एकटा डिबिया अनलीह —— "एहिमे हमर बेटाक राख नहि अछि। ई ओ नोटक राख अछि जे हम डरसँ जरा देलहुँ। ई विश्वासक राख अछि।" मीरा कहलीह —— "विश्वासक राख पानिमे नहि फेकब। ओकरा पंजी लग राखब।"

बूढ़बा भूत कहलनि —— "अहाँसभ आब जलसमाधि नहि, जल-उद्घाटन करैत छी।" अनन्या चौंकलीह —— जे विस्मृतिमे डूबल, ओकरा स्मृति स्वयं पुकारि दे।

राति मीरा पहिल बेर खुलि क कानलीह। हुनकर रोअन शोर नहि छल; ओ कटोरामे एकटा बूँद बनि खसल।

आरुणि पंजीक अंतिम पंक्ति लिखलक —– "जलसमाधि ओ नहि जे देहकेँ पानि लऽ जाए; जलसमाधि ओ अछि जे नामकेँ लोकक स्मृतिसँ काटि दे। आइ पहिल नाम ऊपर आयल।"

अध्याय १९७

ऊपर उठल नाम

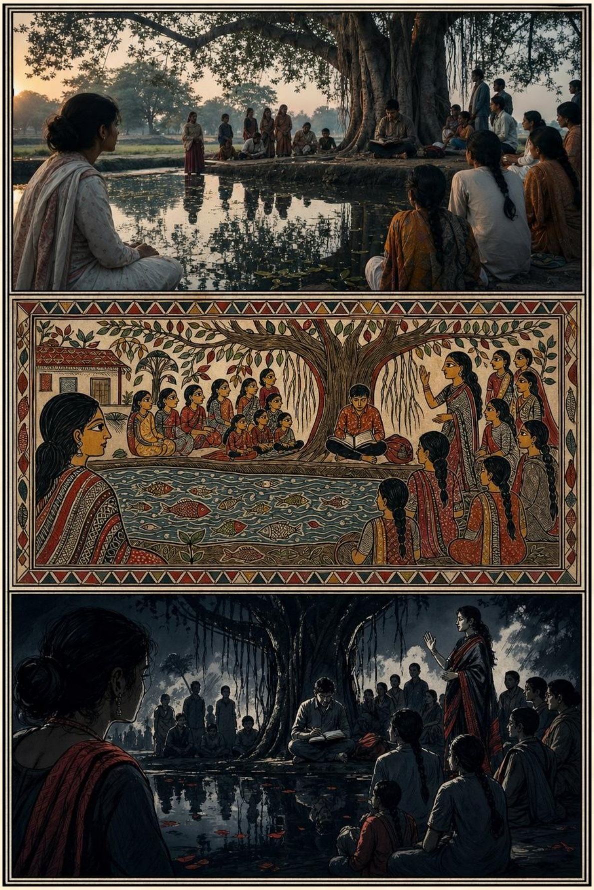

मीरा सभकेँ रोकलीह — "आइ जे किछु उठत, ओकरा तमाशा नहि बनाओल जाएत। जे परिवार अनुमति देत, ओहि नामक पाठ सार्वजनिक। जे परिवार चुप रहत, ओकर चुप्पी सेहो सम्मान।"

सत्यव्रत मेहता नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक पुरान पुल–निर्माणक प्रति निकाललनि। एकटा कोनापर टेढ़ अक्षरमे लिखल छल — "शिव... लाल," टिप्पणीमे "छोटू" काटल।

एकटा बूढ़ स्त्री आगू आयलीह —— "हम फूलकली छी।" मीरा हुनकालग गेलीह —— "अहाँ चाही त नाम सार्वजनिक पढ़ल जाए।" फूलकली कहलीह —— "हमर बेटा भागल नहि छल। बस ई पढ़ू।"

अनन्या लिखलीह —— "शिवलाल उर्फ छोटू, माय फूलकली, पुल–कार्यस्थलपर मृत/गुम, पंजीमे अनुपस्थित लिखल।" पेंसिल टूटि गेल; ओ "अनुपस्थित" पर रेखा खिंचि नीचाँ लिखलीह —— "जलमे समायल, नाम उपस्थित।"

फूलकली कटोरालग घुटना टेकि माथ झुकौलीह —— "एते बरख बाद तोहर नाम घर घुरल, बेटा।"

बिसेसर पासवानक पोता कहलक —— "दादा गाममे बिसेसर छला, कागचमे बिसेसरू। मुदा माय कहैत छली —— बिसेसर पासवान।" अनन्या लिखलीह —— "मातृ–स्मृति अनुसार नाम स्थिर।"

सुरजमुखी देवी आबि कहलीह —— "हमरो नाम ऊपर उठाउ। लोक कहलक हम पैसा खायलहुँ। हम नहि खायलहुँ।" मीरा कहलीह —— "मृतकक नाम ऊपर उठत, आ जीवितक नाम धोइत सेहो चलत।"

फूलकली एकटा पुरान पन्नापर पुछलीह —— "एहिपर हमर अंगूठा किएक नहि?" विनीत उत्तर देलनि —— "किएक त अहाँकेँ कागच धरि पहुँचय नहि देल गेल।" फूलकली हँसलीह —— "हमर बेटा पानिमे, कागच ऊपर; आब कागच नीचाँ आबि गेल।"

एकटा बच्चा पुछलक —— "जँ कोनो नाम पूरा कहियो नहि भेटत त?" सत्यव्रत कहला —— "तखन अधूरा नामकेँ अधूरा कहि सुरक्षित करब। झूठा पूरा नाम देब दोसर हत्या अछि।"

आरुणि एकटा "प्रतीक्षा–टोकरी" बनौलक —— अपुष्ट नाम सभक लेल, रद्दी बोरामे नहि।

फूलकली घुरबासँ पहिने माटि उठाक कटोराक कात राखलीह —— "नाम पानिसँ आयल, आब माटिपर टिकाओ।"

राति शहर दिससँ गाड़ी चलबाक आवाज आयल। निगरानीपर बैसल युवक संदेश पठौलक —— ध्रुवेशक घरक पाछूक फाटक खुजल, एकटा लोहाँक

संदूक गाड़ीमे राखल गेल, गाड़ी कच्चा बाट दिस मुड़ल। मीरा कहलीह — "आब अनुमान नहि, कार्रवाईक क्रम।"

अनन्या लिखलीह — "अपराधीक धरती।"

अध्याय १९८

अपराधीक धरती

राति गाड़ी चलबाक आवाज सुनि मीरा कहलीह — "आइ राति हमर तामस पएर नहि बनत। हमर पएर साक्षी बनत।"

गाड़ी खरिहानी धारक कच्चा बालुमे धँसि गेल। मीरा सभकेँ रोकलीह — "केओ आगू नहि। धरतीकेँ अपन बात कहय दियौ।"

गाड़ीक इजोतमे ध्रुवेशक देह पहिल बेर बिनु आवरणक देखार भेल — दू लोक संदूक धकेलैत छल। अनन्या दूरीसँ लिखलीह — "लोहाँक संदूक, तीन व्यक्ति द्वारा गाड़ीसँ उतारबाक प्रयास। स्थान — खरिहानी धारक कच्चा मोड़।"

ध्रुवेश चिचिआयल — "ई हमर निजी वस्तु अछि।" मीरा उत्तर देलीह — "निजी वस्तु राति पाछूक फाटकसँ भागैत नहि।" सत्यव्रत जोड़लनि — "जँ निजी अछि, त सूची बनि जायत, फेर घुरा देल जायत।"

सुरजमुखी देवी सेहो पहुँचलीह — "एहि पेटीमे हमर बदनामीक कागच होय त खोलब।" मीरा कहलीह — "अधिकारिक उपस्थिति बिनु नहि।"

चौकीक दू कर्मचारी पहुँचला। ध्रुवेशक फोन बेर–बेर काँपैत छल। मीरा कहलीह — "उच्च स्वरमे बजाउ, जे सभ सुनि सकय।" ध्रुवेश फोन काटि दैत छल।

मुहर लगबय लागल तखन ध्रुवेश पाछू हटल। ओकर जूता माटिमे अटकल रहि गेल, पएर खाली निकलि आयल। मीरा हँसी रोकलीह — "नंग पएर लोककेँ अपमानित नहि करब।"

अभय निशानक चारूकात बाँसक काँटी गाड़लक। अनन्या लिखलीह — "ध्रुवेशक दहिना जूता माटिमे अटकल, नंग पएरक निशान संदूकसँ पाँच हाथ उत्तर।"

ध्रुवेश झुँझला क कहलक — "अहाँ सभ हमरा दोषी बना देलहुँ।" सत्यव्रत शांत उत्तर देला — "दोषी हम नहि बनबैत छी। हम त जे मिटाओल गेल, ओकर नाम लिखैत छी। मुदा भागैत पएर निर्दोषताक भाषा कम जानैत अछि।"

संदूक सरकारी मुहरमे बंद भेल, चौकीक गाड़ीपर चढ़ल। बालुमे एकटा गाढ़ दाग रहि गेल। देविका कहलीह — "जतय झूठ राखल जाइत अछि, ओतय धरती कारी पड़ैत अछि।" मीरा सुधारलीह — "कारी नहि; भारी।"

फूलकली माटि उठाक माथपर लगौलीह — "ई धरती हमर पएर जानैत होएत।"

भोरमे सत्यव्रत लिखलनि — "अपराधीक धरती। लोहाँक संदूक भागैत रोकल गेल। न्याय केवल दोष सिद्ध करब नहि; धरतीकेँ बोलबाक अवसर देब सेहो अछि।"

अध्याय १९९

संदूकक भीतरक बिहान

चौकीक कमरामे मुहर काटल गेल। ढक्कन उठलापर धूलि नहि, गंध बाहर आयल —— गंगाक गाद, बैंकक नोट, मजदूरक पसेना। मीरा कहलीह —— "ई पेटी वस्तु नहि राखैत छल; ई समयसँ डर राखैत छल।"

ऊपरक तहमे पुरान गमछा, सूखल नारिकेल पात, आ लाल धागासँ बाँधल एकटा छोट पोटली भेटल। फूलकली गमछा देखितहि काँपि उठलीह।

पोटलीमे मजदूरी पंजीक फाटल पन्ना भेटल। सत्यव्रत मेहता पढ़लनि —— "शिवनाथ सदा, वयस सोलह, माताक नाम फूलकली, दिहाड़ी दर्ज —— तीन

दिन, भुगतान — शून्य, टिप्पणी — अनुपस्थित।" फूलकली धीरेसँ कहलीह — "छोटू।"

अनन्या पंजीमे लिखलीह — "छोटूक असली नाम पुष्ट: शिवनाथ सदा।" आरुणि जोड़लक — "अनुपस्थित लिखल गेल देह, नाम सहित उपस्थित।"

दोसर तहमे "जलसमाधि — पुरान" नामक संचिकामे नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक प्रतिलिपि भेटल — "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।" तीस नाम, फेर तीन सय नाम, फेर खाली ठाम जाहिपर लाल स्याहीसँ लिखल छल — "अतिशयोक्ति।" सत्यव्रत कहला — "जखन अपराधी प्रमाण नहि काटि पबैत, ओ पीड़ाकेँ अतिशयोक्ति कहैत अछि।"

रानी खाता संचिकामे बीससँ बेसी स्त्री–नाम भेटल। जमुना नामक स्त्री कहलीह — "हम जीवनमे बैंक नहि गेलहुँ।"

एकटा मोमक साँच भेटल जाहिसँ जाली अंगूठा बनल छल। अनन्या लिखलीह — "अंगूठाक चोरी, हाथक अपमानसँ बेसी; अस्तित्वक चोरी।"

अंकीय आदेश संचिकामे फोन–पटकथा, नकली पुलिस चिन्ह भेटल। मीरा कहलीह — "ई अपराध धनक नहि, मनक अपहरण अछि।"

एकटा ध्वनि–अभिलेखकमे मधुकरक स्वर सुनल गेल — "नाम अलग राखू, खाता अलग, सेवा–केंद्र साफ देखार पड़बाक चाही।" ध्रुवेश कहलक — "ई आवाज हमर नहि।" सत्यव्रत शांत रहला — "आवाजक फैसला यंत्र देत।"

संदूकक तलमे एकटा नक्शा भेटल — पुल स्थलसँ हरिहर सेवा केंद्र, बैंक, शहर धरि तीर खिंचल। बीचमे एकटा छोट गोला — "चन्ना।" देविका कहलीह — "अहाँक कागचमे ई शायद केवल स्थान। हमरा सभलेल ई सुननिहार गाछी।"

संचिकाक अंतिम पन्नापर एकटा रिक्त ठाम छल — "भविष्य उत्तराधिकारी।" मीरा काँपलीह — "अपराध व्यक्तिसँ पैघ होइत अछि। जँ खाली ठाम छोड़ल जाए, त अगिला ध्रुवेश जनमि जाइत अछि।" अनन्या मोट अक्षरमे लिखलीह — "रिक्त ठाम लोकसमक्ष।"

फूलकली चौकीसँ बाहर निकललीह त हुनकर चाल बदलल छल —– आब ओ शिवनाथ सदाक माय छलीह।

राति सभ चन्ना गाछी घुरल। मीरा कहलीह —– "अन्त तखन आरंभ होइत अछि जखन गाम अपन आँखि बंद करबाक अधिकार छोड़ि दे।" अनन्या लिखलीह —– "नामक पहरुआ।"

अध्याय २००

नामक पहरुआ

भोरे मीरा गाछी लग सभसँ पहिने पहुँचलीह। हुनकर हाथमे एकटा छोट कपड़ा छल, जाहिमे माटि, ओस, राख आ कटोराक पानिसँ भीजल अक्षर लपेटल छल। ओ कहलीह — "आइ अंतिम अध्याय लिखल जाएत, मुदा ई अंत नहि। ई ओ पन्ना अछि जाहिपर हम सभ आँखि खोलि क अपन–अपन नामक जिम्मेदारी लेब।"

अनन्या पंजी खोलि सभटा अध्यायक शीर्षक फेर पढ़लीह। जिनका कथामे मरल कहल गेल, ओ सभ उपस्थित भेला। जिनका अपराधी कहल गेल, हुनकोसभक नाम पढ़ल गेल।

फूलकली अपन हाथसँ शिवनाथक पन्नाक प्रतिलिपि पातक कात राखलीह — "ई हमर बेटाक मृत्युपत्र नहि, ई ओकर घर–घुरबाक पन्ना अछि।"

सत्यव्रत मेहता धीरे–धीरे उठला — "हम जीवन भरि कागचक भाषासँ न्याय खोजलहुँ। आइ बुझलहुँ जे कागचकेँ मानवीय अर्थ पाबय लेल गामक कंठ चाही।"

गामक नेना सभ हाथ पकड़ि गोल घेरा बनौलक। एकटा छोट बच्चा हँसैत कहलक — "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।" सभक आँखि ओकरा दिस घूमि गेल।

अभय पुछलक — "अपराधीक नाम अदालतमे जाएत, मुदा हम सभ अपन भीतरक मौनक नाम कतय राखब? " सत्यव्रत मेहता "मौनक नामावली" नामक नव पन्ना खोलला — "डर," "लाभ," "दिखावा," "कागचपर आँखि मूँदबाक आदत।"

गामक चारूकात छोट–छोट माटिक पट्टिका राखल गेला — प्रत्येकपर एक नाम, आ जे नाम अधूरा, ओकरालेल रिक्त ठाम। फूलकली रिक्त ठामक आगू दीप राखलीह — "जेकर नाम नहि भेटल, ओकरा अंधार नहि देब।"

कटोराक पानिमे एकटा भँवर उठल, जाहिमे अक्षर उभरल — "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।" फूलकली एहि बेर खुलि क कानलीह — बरखा जेहन।

सत्यव्रत मेहता अंतिम गवाही लिखलनि — "आइ गढ़ नारिकेल नामक पहरुआ बनल। अपराधीक दंड अदालतक अधीन, मुदा स्मृतिक पहरा गामक अधीन। कोनो देह बिनु नाम नहि।"

मीरा कटोरा उठाक अनन्याकेँ देलीह, अनन्या आरुणिकेँ, आरुणि एकटा छोट बच्चाकेँ। बच्चाक हाथ भारसँ कने झुकल। मीरा मुस्कुरैलीह — "गिरत त माटि पी लेत। बस, नाम नहि गिरबाक चाही।"

बूढ़बा भूत अपन डारिपर घुरि पहिल बेर निर्णायकक डंडा माटिपर राखि देलनि — "आब निर्णय जीवित करथि।" चन्ना गाछीक एक बिल्कुल नव हरियर बिंदु सूर्यक उजासमे चमकल।

पोथीक अंतिम स्वर: पानि घुरल, गाछ हँसल, आ डूबल नाम सभ एक–एक क ऊपर उठि अपन घर घुरल। सत्य बीआ छल, फूटल; नाम जल छल, उठल; आ गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनलक। ई कथा एतय समाप्त नहि होइत अछि; ई ओहि मुँह सभमे जीवित रहैत अछि जे कहैत अछि — हम छी।

परिशिष्ट १: गढ़ नारिकेल लोककोश (बाल संस्करण)

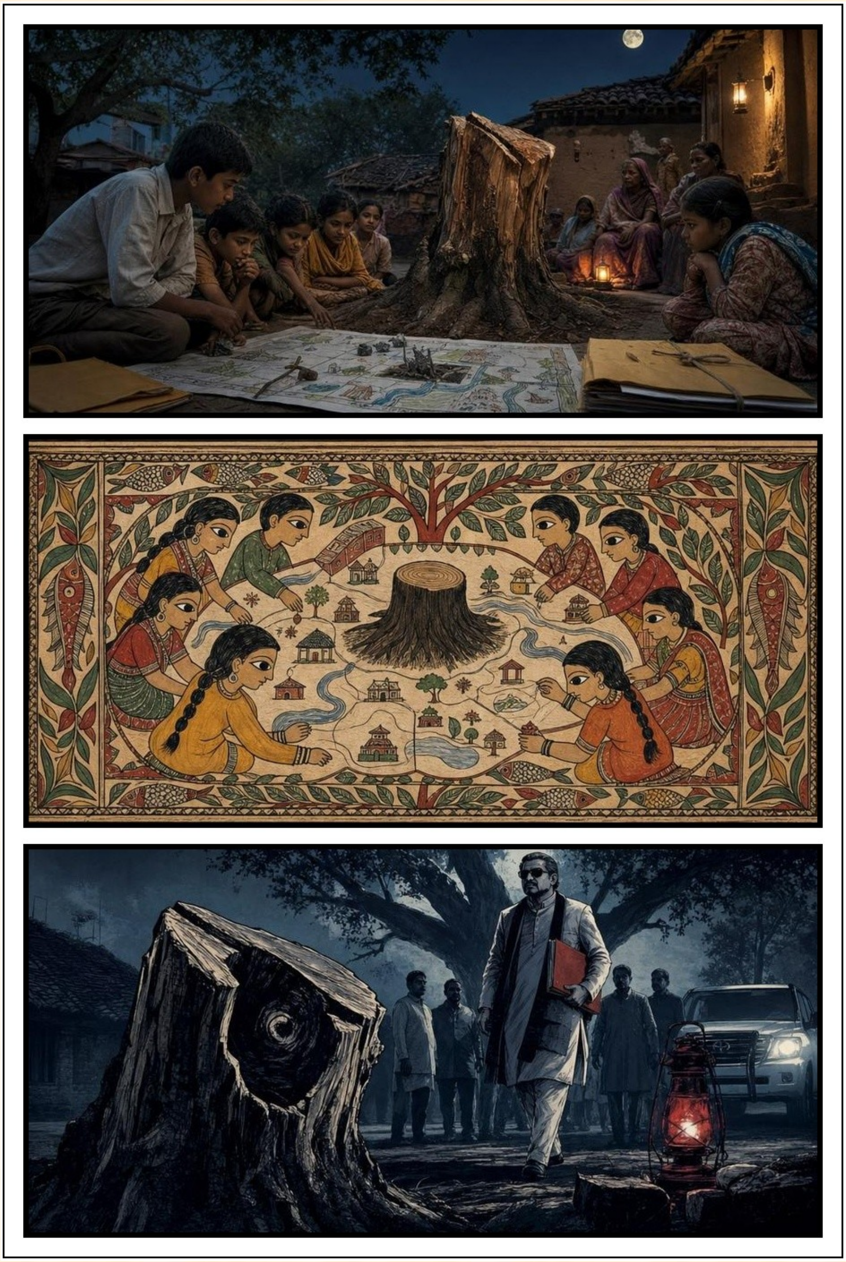

गढ़ नारिकेलमे ज्ञानक अनेक रूप छल। एकटा ज्ञान माटि छुबितहि बुझि जाइत छल जे एतय धान नीक होएत कि राहरि। एकटा ज्ञान मेघक चाल देखि बूझैत छल जे राति धार चढ़त कि नहि। एकटा ज्ञान गीतक धुनसँ अवसर

चिन्हैत छल —– ई सोहर अछि, ई रोपनी, ई नाओ खेबाहक पुकार। ई ज्ञान विद्यालयक विरोधी नहि, मुदा विद्यालयसँ पुरान छल।

बा नातिनकेँ कथा कहैत छलीह; नाविक नेनाकेँ धार पढ़ब सिखबैत छल; ढोलकिया शिष्यकेँ अंगुरीक चोट आ स्वरक उठान सुनबैत छल। ज्ञान कानसँ भीतर जाइत छल, देहमे बसैत छल।

नदी–झूला (बच्चा सुतएबाक लोरी) — बाढ़िक राति बच्चा सभ डेरायल छल। बा चूल्हिक राख लग बैसि नदीकेँ झूला, चानकेँ पहरुआ, गाछकेँ दादी बना लोरी गौलनि —– "सुत हे बौआ, नदी–झूला झूल हे, चानक पहरा, पीपर–दादी —– निधोख भऽ सूत हे।"

मेघक मंगल (विवाहक मंगल) — विवाहक मड़बामे वर्षा शुरू भेल। लोक घबरायल, मुदा बा कहलीह —– "मेघ वर–कन्याकेँ माटिक गंधक आशीष देब आयल अछि।" गीत उठल —– "बरसू हे मेघ, मड़बापर बरसू हे, माटिक गंधक आशीष वर–कन्यापर धरू हे।"

मुसरक चारि चोट (धान कुटाइक गीत) — चारि मुसरक चोट एक लयमे नहि पड़ैत छल। सरयू बीचमे खड़ी भऽ टेक उठेलनि। जतेक बेर टेक पूरा, ओतेक बेर मुसर एक संग खसल —– "उठाउ गे मुसर, एक्के ताल उठाउ गे, सरयूक टेक पकड़ि चोट–चोट मिलाउ गे।"

पहिल अक्षर (नामकरणक गीत) — नवजातक नाम चुनबा समय अनन्या कहलक —– "नाम एहन होय जे कियो काटि नहि सकए।" पातपर पहिने नाम लिखल गेल, बादमे कागचपर —– "चुनू हे नाम, काटल नहि जाए से चुनू हे, ऋतु–माय–गाम–आशा चारूसँ बुनू हे।"

कथा बीच प्रश्न (व्रत–कथाक गीत) — व्रत दिन कथा केवल फल पएबाक सौदा नहि कहल गेल। बा कथा बीचमे पुछैत छलीह —– "एहि स्त्रीक निर्णय सही छल कि नहि?" — "पूछू हे बीचहि, कथाक बीच पूछू हे, फलसँ पहिने निर्णयक तौल बूझू हे।"

अकेला? (पुकार–उत्तर) — उज्ज्वल झाक घटना पछाति विद्यालयमे पुकार भेल —– "अकेला?" उत्तर —– "नहि, संग छी।" — "पुकारू हे पुकारू, 'अकेला?' पुकारू हे, 'नहि, संग छी' — उत्तरक ढोल बजाउ हे।"

कोठरीमे गाम (परदेशी शहरमे गढ़ नारिकेल) — शहरक छोट कोठरीमे गढ़ नारिकेलक लोक सामा–चकेवा, सोहर, छठि गबैत। पोखरि नहि त बाल्टिक जलमे चान देखैत — "बसाउ हे बसाउ, कोठरीमे गाम बसाउ हे, बाल्टिक जलमे चान उतारि सामा गाउ हे।"

एहि लोककोशमे सैकड़ों एहन गीत आ खिस्सा सुरक्षित अछि — जल, माटि, श्रम, संस्कार आ जीवनक हर मोड़क गीत। गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ एहि गीत सभसँ सीखैत अछि जे ज्ञान केवल पोथीमे नहि, माटि, पानि आ कंठमे सेहो रहैत अछि।

परिशिष्ट २: अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत (बाल संस्करण)

अध्याय १०१–१०४क अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत सभ एतय संक्षेपमे राखल जा रहल अछि।

अध्याय १०१ —– अनाम ग्रहक आमंत्रण — जखन दूर ग्रह बुलाहट देलक, गीत उठल —– "सजाउ हे झोरा, यात्राक झोरा सजाउ हे, माटिक गंध, मायक गीत —– एतबे धन लऽ जाउ हे।" धन नहि, हथियार नहि —– केवल नामक दीप आ साझा नेहक बात संग लऽ जेबाक छल।

अध्याय १०२ —– ग्रहक बीच कबड्डी — तारा सभक बीच कबड्डी खेलाइत काल गीत गाओल गेल —– "जाउ हे खिलाड़ी, ताराक पारी जाउ हे, साँस बांधल, नाम खुजल —– दुनू संग निबाहू हे।" बच्चा सभ "कबड्डी" नहि, "उपस्थित" कहलक, आ अदृश्य देबालमे पहिल दरार चमकल।

अध्याय १०३ —– अनाम ग्रहपर नाम–पाठ — अनाम ग्रहक अंधारमे बच्चा सभ अपन–अपन नाम पुकारला, आ प्रत्येक "उपस्थित" पर धूलिक एक कण चमकल।

अध्याय १०४ —– गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि — अंतमे बच्चा सभ शीशा–महल नहि, अपन कादो–माटिवाला पृथ्वी चुनला —– "चुनू हे पृथ्वी, फेर–फेर पृथ्वी चुनू हे, शीशा–महलसँ नीक अपन कादो गुनू हे।" पृथ्वी चुनब दीनता नहि, प्रेमक पैघ प्रमाण छल —– "जतय घाव, ओतहि उपचारक बीज उगाउ, धरती छोड़ि भागू नहि, धरती नव बनाउ।"

अंतिम गीतमे बच्चा सभ कहलक —– "क्रमांकित आवास नहि, नामक देहरी चाही, ऑक्सीजनक करार नहि, अपन हवा आ माटि। पृथ्वी, तोहर घावो हमर, तोहर नोर हमर, तोहर नामक रखवारीमे अगिला जनम गुजर।"

ई चारू अध्यायक गीत मिलि क कहैत अछि —– दूर ग्रहक चमकसँ बेसी कीमती अछि अपन घरक माटि, अपन नामक देहरी, आ अपन लोकक संग।

परिशिष्ट ३: न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा (बाल संस्करण)

मुख्य कथामे हर अध्यायक अंतमे एकटा छोट दार्शनिक विचार राखल गेल छल। ई सभ असलमे आचार्य गंगेशक ज्ञान–कथासँ जुड़ल छल — सत्य केना जानल जाइत अछि, एहि प्रश्नक कथा।

कादंबरीक अंतिम पन्ना — गढ़ नारिकेलक पुस्तकालयमे एकटा पुरान किताब अधूरा छल। शिष्य पुछलनि — "एतेक मेहनतिक बादो ई अधूरा किएक?" गंगेश कहलनि — "अहाँ सभ फल आ सहायक कारणकेँ एक बुझि रहल छी। दीप बाट देखबैत अछि, मुदा यात्रीक स्थानपर चलैत नहि अछि।" — यानी केवल कोशिश करब पर्याप्त नहि, ओकरा पूरा करबाक सभटा साधन सेहो चाही।

चर्मकारिणीक दीप — गामक सीमापर एकटा स्त्री चमड़ाक काज करैत छलीह। लोक कहैत छल किछु काज "अशुद्ध।" स्त्री हँसि कहलीह — "जे जूता पएर बचबैत अछि, ओकर उपयोग देखू; केवल ओकर जन्म नहि।" — यानी काजक मोल ओकर उपयोगसँ होइत अछि, जन्मसँ नहि।

खाली आसन — एकटा सभामे गुरुक आसन खाली छल। शिष्य पुछलनि — "नहि देखब आ नहि रहब एके बात?" गुरु उत्तर देलनि — "उज्ज्रर सभामे, खुजल दुआरिमे, खाली आसन सचमुच बतबैत अछि जे ओ नहि छथि।" — यानी सही परिस्थितिमे कोनो चीजक अनुपस्थिति सेहो सच्चा प्रमाण होइत अछि।

पर्वतपर धूम — यात्री सभ पर्वत दिस जाइत छला, दूरसँ धुआँ देखला। एकटा यात्री कहलक — "ओतय आगि अछि।" वृद्ध पुछलनि — "आँखिसँ आगि देखलह?" "नहि, धुआँ देखलहुँ।" — मुदा भानसघरक स्मृतिसँ बुझल छल जे जतय धुआँ, ओतय आगि। ई अनुमानक कला छल — जे नहि देखल गेल, ओकरा प्रमाणसँ बुझब।

तप्त लौह पिंड — एकटा शिष्य कहलक — "जतय आगि, ओतय धुआँ।" गुरु तप्त लोहापर देखौलनि — आगि छल, मुदा धुआँ नहि उठल। फेर भीजल लकड़ी आगिपर राखल — तुरंते धुआँ उठल। गुरु कहलनि — "देखल सहचारक आधारपर जल्दी नियम बनायब खतरनाक अछि।" — यानी बिना पूरा जाँचके निष्कर्ष निकालब गलत भऽ सकैत अछि।

पीयर शंख — एकटा रोगी शंखकेँ पीयर देखलक, जखन कि ओ उज्ज्रर छल। वैद्य कहलनि — "वस्तुसभ एकहि समय रंग बदललक, कि

अहाँक दृष्टिमे दोष अछि?" — यानी हमर आँखि सेहो कखनो–कखनो धोखा दैत अछि, तें सत्य जाँचबाक चाही।

एहि सभ छोट–छोट कथासँ गंगेश सिखौलनि — सत्य जानबाक चारि रस्ता होइत अछि: प्रत्यक्ष देखब, अनुमान लगायब, तुलना करब, आ विश्वसनीय लोकक बात मानब। मुदा हर रस्तापर सावधानी चाही, कारण आँखि, कान आ मोन — सभ कखनो धोखा दऽ सकैत अछि। सत्यकेँ जाँचि–जाँचि पकड़ब — इहए गंगेशक सभसँ पैघ सीख छल।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — बाल संस्करण

www.videha.co.in
ISBN 978-93-5987-762-4

भूत होइए कारी, प्रेत उज्जर,
राकश- लहाशक खोरनाठी जे गलतीसँ नै जड़ल,
बच्चाकेँ गाड़ल जाइए आ ओ बनि जाइए लोथ।

चन्ना गाछी।

भूत आ प्रेतक बीच कबड्डी, राकश करैए इजोर
आ लोथ अछि दर्शक।

मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास
न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथा
मैथिली कादम्बरी

ISBN
978-93-5987-762-4

www.videha.co.in
ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर

भूत होइए कारी, प्रेत उज्जर,
राकश-लहाशक खोरनाठी जे गलतीसँ नै जड़ल,
बच्चाकेँ गाड़ल जाइए आ ओ बनि जाइए लोथ।

चन्ना गाछी।
भूत आ प्रेतक बीच कबड्ठी, राकश करैए इजोर
आ लोथ अछि दर्शक।

बाल संस्करण

मैथिली बाल कथा
मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास

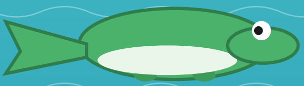

www.videha.co.in
ISBN 978-93-5937-277-8
ISSN 2229-547X